S.K.C.

RAJASTHAN MEIN HINDI KE
HASTLIKHIT GRANTHON KI KHOJ III

GNCA

S.K.C.
H
091
BHA

# राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

( तृतीय भाग )

लेखक

उदयसिंह भटनागर

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

उदयपुर [ राजस्थान ]

प्रथम संस्करण ] सन् १९५२ [ मूल्य ५ )

प्रकाशक—
**साहित्य-संस्थान**
**राजस्थान विश्व विद्यापीठ**
उदयपुर ।

891.43
उदय
H
091
BHA
IGNCA LIB
S-8563
Indira Gandhi National Centre for the Arts
SV 05
SUNITIKUMAR COLLECTION
Acc. No.
Date
CALCUTTA-29

मुद्रक—
**विद्यापीठ प्रिंन्टिग प्रेस**
उदयपुर

# प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान में प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास एवं कला-विषयक प्रचुर सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुई है। आवश्यकता है, उसे खोज कर संग्रह और सम्पादित करने की। राजस्थान विश्व विद्यापीठ [ तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ ] उदयपुर ने इस आवश्यकता को अनिवार्य अनुभव कर विक्रम सं० १९९८ में "साहित्य-संस्थान" ( उस समय प्राचीन साहित्य शोध संस्थान ) की स्थापना की और एक योजना बनाकर राजस्थान की इस साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक निधि को एकत्रित करने का काम हाथ में लिया। योजना के अनुसार "साहित्य-संस्थान" के अन्तर्गत विभिन्न प्रवृत्तियाँ निम्न छः स्वतन्त्र विभागों में विकसित हो रही हैं: ( १ ) प्राचीन साहित्य विभाग, ( २ ) लोक साहित्य विभाग, ( ३ ) पुरातत्व विभाग, ( ४ ) नव साहित्य-सृजन विभाग, ( ५ ) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग एवं, ( ६ ) सामान्य विभाग।

१. 'साहित्य-संस्थान' द्वारा सर्व प्रथम राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए हस्तलिखित हिन्दी के ग्रन्थों की खोज और संग्रह का काम प्रारम्भ किया गया। प्रारंभ में विद्वानों को इस प्रकार के ग्रंथालयों को देखने में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी। राजकीय पुस्तकालय, जागीरदारों के ऐसे संग्रहालय एवं जहाँ भी ऐसी पुस्तकें थीं, देखने नहीं दी जाती थी, धीरे २ इसके लिये वातावरण बना कर काम कराया जाने लगा। सबसे पहले साहित्य संस्थान द्वारा पं० मोतीलाल मेनारिया द्वारा सम्पादित "राजस्थान में हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज प्रथम भाग,

प्रकाशित कराया गया और उसके बाद बीकानेर के प्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा सम्पादित उक्त ग्रन्थ का दूसरा भाग छपाया एवं प्रस्तुत तीसरा भाग श्री उदयसिंह भटनागर की देख-रेख और सम्पादन में 'संस्थान' ने तय्यार करवाया हैं; जो आपके हाथों में है। इसी प्रकार चौथा, पांचवा और छठा भाग भी क्रमशः श्री अगरचन्द नाहटा, श्री नाथूलाल व्यास एवं श्री भोलाशंकर-व्यास द्वारा सम्पादित किये जा चुके हैं। इनका प्रकाशन शीघ्र ही किया जाने वाला है।

प्राचीन साहित्य विभाग में हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज के अतिरिक्त १२.००० चारण गीत विभिन्न विषयों के एकत्रित किये जा चुके हैं।

२. लोक-साहित्य विभाग द्वारा हजारों कहावतें, लोकगीत, मुहावरें, लोक-कहानियाँ, वात-ख्यात, ख्याल, पहेलियाँ, बैठकों के गीत आदि संग्रह किये जा चुके हैं। पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा सम्पादित–मेवाड़ी कहावतें और श्री रतनलाल मेहता द्वारा सम्पादित मालवी "कहावतें" पुस्तक रूप में प्रकाशित की जा चुकी हैं। कहावतों के दो भाग और प्रकाशन के लिये तय्यार हैं। 'लोक वार्ताओं' के दो संग्रह, गीतों के दो संग्रह प्रेस कॉपी के रूप में तय्यार हैं। आर्थिक सुविधा होते ही इनको प्रकाशित करा दिया जायगा।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

३. पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत पट्टे, परवाने, ताम्र पत्र और ऐतिहासिक महत्व के अन्य कागज-पत्रों को संग्रह किया जाता है। प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, शिला लेख, चित्र तथा अन्य कला कृतियाँ एकत्रित की जाती हैं। इसमें अच्छी सामग्री एकत्रित करली गई हैं।

४. नव साहित्य-सृजन विभाग से अब तक तीन पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। पं० जनार्दनराय नागर द्वारा लिखित "आचार्य चाणक्य" नाटक, पं० कन्हैयालाल ओझा द्वारा रचित "तुलसीदास" ब्रज भाषा काव्य, एवं श्री हुक्मराज मेहता द्वारा लिखी गई "नया चीन" आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें विद्वानों से लिखवाई जारही हैं।

५. अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग में अब तक १००० हस्तलिखित महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं २२०० मुद्रित ग्रन्थ एकत्रित किये जा चुके हैं। यह धीरे २ एक विशाल संग्रहालय का रूप ले सकेगा. ऐसी आशा है।

६. सामान्य विभाग के अन्तर्गत राजस्थानी के प्रसिद्ध महाकवि श्री सूर्यमल की स्मृति में "सूर्यमल आसन" और राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा

पुरातत्ववेत्ता स्व० डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा की पुण्य स्मृति में "ओझा आसन" स्थापित किये गये हैं। इन आसनों से प्रति वर्ष संबंधित विषयों पर अधिकारी विद्वानों के तीन भाषण समायोजित कराये जाते हैं। और उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है। "सूर्यमल-आसन" से अब तक डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचन्द नाहटा तथा रा० ब० रामदेवजी चौखानी के भाषण कराये जा चुके हैं। और डॉ० चाटुर्ज्या के भाषणों की "राजस्थानी-भाषा" नामक पुस्तक 'संस्थान' से छप चुकी है।

"ओझा आसन" से प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता सीतामऊ के महाराज कुमार डॉ० रघुबीरसिंह के तीन भाषण "पूर्व आधुनिक राजस्थान" विषय पर हो चुके हैं और यह पुस्तक प्रकाशित की जा चुकी है। दूसरे अभिभाषक डॉ० दशरथ शर्मा थे, जिनके भाषण शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

साहित्य-संस्थान से शोध-सम्बन्धी एक त्रैमासिक "शोध-पत्रिका" श्री डॉ० रघुबीरसिंह, श्रीअगरचन्द नाहटा, श्रीकन्हैयालाल सहल, श्रीदेवीलाल सांभर एवं श्री भगवतीलाल भट्ट के सम्पादन में प्रकाशित होती हैं। हिन्दी के समस्त शोध-विद्वानों का सहयोग इस पत्रिका को प्राप्त है, इसलिये यह शोध-जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है।

इस प्रकार साहित्य-संस्थान अपनी बहुमुखी कार्य योजना द्वारा राजस्थान के बिखरे हुए साहित्य को एकत्रित कर प्रकाश में लाने का नम्र प्रयत्न कर रहा है लेकिन यह काम इतना व्यय और परिश्रम साध्य है कि कोई एक संस्था इसे पूरा करना चाहे तो असम्भव है। हमारे देश की प्राचीन साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं तथा चिन्तन-स्रोतों को सदैव गतिशील एवं अमर बनाये रखना है तो इस काम को निरन्तर आगे बढ़ाना होगा। देश के धर्नामानी सेठ-साहुकारों, राजा-महाराजाओं, जागीरदारों तथा जमींदारों को ऐसे शुभ सरस्वती के यज्ञ में सहायता एवं सहयोग देना ही चाहिये। राजस्थान और भारत के विद्वानों, विचारकों और साहित्यकारों का इस प्रकार के शोध-पूर्ण कार्यों की ओर अधिकाधिक प्रवृत्त होना आवश्यक है।

साहित्य-संस्थान हिन्दी के आदि ग्रन्थ "पृथ्वीराज रासौ" का प्रामाणिक संस्करण अर्थ और भूमिका सहित शीघ्र ही प्रकाशित करवा रहा है। "रासौ"

का सम्पादन-कार्य इस विषय के मर्मज्ञ विद्वान श्री कविराव मोहनसिंह, उदयपुर कर रहे हैं। इसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक कमी की पूर्ति होगी।

आशा है विद्वानों, कलाकारों और धनी-मानियों द्वारा संस्थान को इसके कार्य में पूरा सहयोग प्राप्त होगा। इसी आशा के साथ—

विक्रम सं० २००६
सन् १६५२.

गिरिधारीलाल शर्मा
मन्त्री
साहित्य-संस्थान

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

## "दो शब्द"

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर ने अपने १५ वर्षों के कार्यकाल में अनेक संघर्षों, संकटों और कठिनाइयों को झेलते हुए भी निस्सन्देह ऐसे कार्य किये हैं, जो उसके अस्तित्व तथा उपयोगिता के लिये प्रमाण रूप माने जा सकते हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत स्थानीय कवि-गोष्ठियों और साहित्य-चर्चाओं से लगाकर राजस्थान एवं अखिल भारतीय महत्व के सम्मेलन समायोजित किये जा चुके हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ की स्थापना का मुख्य लक्ष्य ही राजस्थान की साहित्यिक्, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शिक्षणात्मक उन्नति करना था। इसी लक्ष्य को मूलाधार मानकर इसके अन्तर्गत वे सभी विविधि प्रवृत्तियाँ तथा काम प्रारंभ किये गये, जो देश के सर्वांगीण विकास तथा निर्माण के लिये आवश्यक एवं अनिवार्य थे। लोक शिक्षण द्वारा उत्तरदायी लोक तन्त्रात्मक लोक-जीवन निर्माण का काम राजस्थान में सर्व प्रथम इसी संस्था द्वारा प्रारम्भ किया गया।

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ) ने संवत् १९९८ में प्राचीन साहित्य की शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन के लिये साहित्य-संस्थान (उस समय खोज विभाग) की स्थापना की और राजस्थान के प्राचीन साहित्य-विशेषकर डिंगल-के ग्रन्थों की शोध-खोज प्रारम्भ की। साहित्य-संस्थान ने इसकी महती आवश्यकता अनुभव की कि राजस्थान के प्राचीन ठिकानों, मन्दिरों, उपाश्रयों और रामद्वारों में पड़ी हुई अमूल्य साहित्यिक निधि को अन्धकार से प्रकाश में लाने का जब तक योजनाबद्ध कार्य नहीं किया जायगा तब तक अतीत का गौरवपूर्ण महिमामय राजस्थान आधुनिक जनतन्त्रात्मक प्रगतिशील भारत के साथ संयोग साधकर प्रगति कर सके, यह संभव नहीं है। इसीलिये समस्त राजस्थान के प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की गवेषणा का कार्य व्यापक आधार पर देश के विद्वानों की सहायता से करने का नम्र प्रयत्न किया जा रहा है। ऋषि-मुनियों की इस पुरातन तपोभूमि में अनेक

सरस्वती-पुत्रों ने वर्षों तक साधनारत रहकर सरस और सुन्दर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रचनायें मुखरित की हैं, उन्हें आज हम अपनी असावधानी और प्रमाद से नष्ट हो जाने दें तो इससे बढ़कर क्या लज्जा की बात हो सकती है ?

साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ ने अब तक प्राचीन साहित्य की शोध-खोज कर विवरणियों ( बिबलियोग्राफी ) के तीन भाग प्रकाशित कर दिये हैं और तीन भाग अभी आर्थिक कठिनाई के कारण अप्रकाशित रखे हैं। ज्यों ही आर्थिक सुविधा प्राप्त होंगी, उन्हे भी प्रकाशित कर दिया जायगा।

दस वर्षों के निरंतर शोध-खोज के कार्य के बाद इस वर्ष राजस्थान-सरकार ने साहित्य-संस्थान क 'प्रकाशन-कार्य' के लिये १०,०००) न्यूनतम सहायता प्रदान की है; उसी सहायता से इस "राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग-३ का प्रकाशन किया जा सका है। सरकार द्वारा 'प्रकाशन कार्य' के लिये प्रदत्त सहायता को स्वीकार करते हुए मैं संस्था की ओर से सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजस्थान-सरकार, उसके मंत्रीगण तथा शिक्षा विभाग के अधिकारी महाशय ऐसे गभीर और गवेषणापूर्ण साहित्यिक्-सामग्री को प्रकाश में लाने का प्रोत्साहनपूर्ण सहयोग देते रहने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करेंगे।

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ के सभी सहायकों, हितैषियों और शोध-खोज के विद्वानों का मैं उनके सहयोग के लिये-अत्यन्त आभारी हूँ। यह तो उन्हीं का काम है और उन्हीं के लिये इस संस्था द्वारा ,किया जा रहा है-अतः उनका सहयोग तो निस्सन्देह मिलेगा ही।

गुरु गोविन्दसिंह जयन्ति
दिसम्बर १९५२

जनार्दनराय नागर
एम० ए०, साहित्यरत्न
प्रोपकुलपति
राजस्थान विश्व विद्यापीठ

## अपनी ओर से—

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ किसी भी देश की संस्कृति–उसकी भावना और चिन्तन के विकास की परम्परागत निधि है। युद्धों की परम्पराओं के बीच जीते–जागते राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की अमूल्य निधि का संग्रह उसकी सांस्कृतिक सजीवता का द्योतक है। अविश्वास और परम्परागत दकियानूसीपन इस निधि की रक्षा में विशेष सहायक हुआ है। फिर भी उत्तम कोटि के राजपूत शैली के चित्रों के समान अनेकों अमूल्य ग्रन्थ भी यूरोप और अमेरिका में चले गये हैं और वहाँ के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

उदयपुर के विद्यापीठ में, अपने आरम्भिक जीवन से ही इन ग्रन्थों के संग्रह, संरक्षण, प्रकाशन आदि की ओर मेरी विशेष रुचि थी। अतः इसका विभाग खोला गया और मेरे संयोजन में कार्य आरम्भ हुआ। मुझे आज यह व्यक्त करते हुए हर्ष है कि यह विभाग संस्था का एक प्रधान और सजीव अङ्ग बनकर कार्य कर रहा है। इसकी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य बहुत बड़ा है, व्यापक और विस्तृत है। इसके लिये अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से मेरा यह कार्य एक प्रयोग मात्र था। फिर भी मैंने इससे बहुत बड़ा अनुभव लाभ किया। कई स्थानों से तो मुझे कई बार निराश लौटकर आना पड़ा। परन्तु मैंने उन लोगा को प्रसन्न करने और उनसे ग्रन्थ निकलवाने का विश्वास भी प्राप्त किया, और उसके परिणाम स्वरूप मैं लगभग १५०० ग्रन्थों के विस्तृत विवरण ले सका। प्रस्तुत रिपोर्ट में उन सब का विस्तार बहुत कठिन था। यद्यपि इस प्रकार की विवरणी के लिये मेरा एक भिन्न दृष्टिकोण है। विवरण व्यापक और विस्तृत होने चाहियें, जिससे ग्रन्थ पर एक आलोचनात्मक अध्ययन हो सके, उससे सम्बन्धित भाषा, साहित्य, इतिहास, जीवन-चरित्र, महत्वपूर्ण घटनाएँ, सामाजिक परिस्थितियों आदि की ओर भी आवश्यक संकेत हों; क्योंकि सभी ग्रन्थों का न तो प्रकाशन सम्भव है और न उनकी बार बार प्राप्ति ही। विवरण अधिकतर इसी दृष्टि से लिये गये थे। परन्तु, इतनी विस्तृत सामग्री के प्रकाशन की व्यवस्था भी तो एक समस्या है। अतः मैंने लगभग ५०० रचनाओं का विवरण देना निश्चय किया।

प्रस्तुत रिपोर्ट का कार्य सन् १९४२ के दिसम्बर में ही समाप्त हो गया था। १ सितम्बर १९४२ में मैंने इस कार्य को आरम्भ किया और पूरे चार महिने तक बराबर घूमने और विवरण लेने

का कार्य किया गया। इसका बहुत सा श्रेय मेरे उन सहयोगियों को है जिन्होंने मेरे साथ घूमकर विवरण उतारे और मेरे कार्य में सहायता प्रदान की। यद्यपि अपने क्रम में इस रिपोर्ट का प्रकाशन दूसरे भाग के रूप में होना चाहिये था, परन्तु इसका प्रकाशन आज पूरे दस वर्ष के पश्चात् हो रहा है। इसका बहुत कुछ श्रेय मेरे इस कार्य के सहयोगी भाई श्री गिरीधारीलाल शर्मा को है। एक प्रकार से उनका यह कर्तव्य ही था, क्योंकि इन विवरणों को लिखने के लिये उन्हें भी मेरे साथ घर-घर की खाक छानने के कष्ट अनुभव करने पड़े हैं। श्री पुरुषोत्तम मेनारिया को भी मैं भूल नहीं सकता। उन्होंने भी इसी प्रकार मुझे उतना ही सहयोग दिया और इसकी प्रेस प्रति बनाने में अथक परिश्रम किया। आज मुझे इस बात का गर्व है कि ये दोनों ही व्यक्ति अपने विषय में संलग्न और अपनी धुन के पक्के हो गये हैं। मेरे पश्चात् इस विभाग ( शोध-संस्थान ) का कार्य इन्होंने बारी बारी से सम्हाला और इसका विकास किया। अतः ये दोनों ही बधाई के पात्र हैं। उन सज्जनों का मैं अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने विश्वास के साथ अपने ग्रन्थों को मेरे सन्मुख लाकर रख दिया तथा मुझे उनसे विवरण उतारने दिये। श्री मोतीलाल मेनारिया के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ। समय-समय पर उनकी सम्मति ने मेरे कार्य में उत्साह-वर्द्धन किया। श्री अगरचंद नाहटा ने इसके प्रकाशन में अपनी सम्मति से मुझे अनुग्रहित किया है। आचार्य जिनविजय का तो मुझ पर काफी ऋण है। एक शिष्य अपने गुरु को क्या धन्यवाद दे और क्या उनके प्रति आभार प्रदर्शन करे ! अपने सतीर्थ भाई डा० भोगीलाल सांडेसरा से भी इसकी प्रस्तावना प्राप्त करने का सुअवसर बड़ौदा में रहने से मुझे प्राप्त होगया। उनका मैं आभारी हूँ।

दस वर्ष पश्चात् यह विवरणी पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत की जा रही है। जिस रूप में यह विद्वानों के सन्मुख प्रकाशित हो रही है, मुझे आशा है, उनके लिये यह उपयोगी सिद्ध होगी। मुझे संतोष है कि अनेकों छिपे हुए ग्रन्थों में से कुछ की सूचना विद्वानों के सामने आ रही है। प्रस्तुत विवरणी राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक आधार भूमि बन सकती है। इसमें प्राचीनतम ग्रन्थ वि० सं० १४१२ तक के मिलेंगे जो भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

यों तो मेवाड़ में ही साहित्य की इतनी सामग्री बिखरी पड़ी है कि उसके आधार पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है; जिसके द्वारा मेवाड़ के सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास का परिचय हमें मिल सकता है। महाराणा सांगा के जीवन काल तक ( वि० सं० १५८४ ) या यों कहिये कि वि० सं० १६०० तक राजस्थान का इतिहास मेवाड़ का इतिहास ही है। पृथ्वीराज के साम्राज्य के ध्वंस के पश्चात् मेवाड़ ही प्रधानतः इतिहास में जीवित रहा है। उसके पूर्व भी मेवाड़ में साहित्य और कला का जो विकास हुआ है वह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। साहित्यिक अभिव्यक्ति

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशभाषा सभी में हुई और इनके ग्रन्थों का कहीं तो उल्लेख मिलता है और कहीं कहीं ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं।

मेवाड़ में साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और कला के विकास की सूचना हमें मेवाड़ और मेवाड़ के बाहर बिखरे हुए अनेकों शिलालेखों के द्वारा प्राप्त होती है। राजा नरवाहन के एकलिंगजी के शिलालेख ( वि० सं० १०२८ ) से हमें ज्ञात होता है कि यहाँ स्याद्वाद ( जैन ), सौगात ( बौद्ध ) और वेदाङ्ग मुनि ( आर्य ) का महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ हुआ था। यह शास्त्रार्थ मेवाड़ के बौद्धिक विकास की महानता का द्योतक है। राजा शालिवाहन के समय ( वि० सं० १०३० ) का एक अन्य शिलालेख मेवाड़ की सांस्कृतिक, साहित्यिक और कला सम्बन्धी प्रगति की सूचना देता हुआ यह व्यक्त करता है कि राजा नरवाहन स्वयं संस्कृति, साहित्य और कला का महान पोषक और संरक्षक था [१]। एकलिंगजी की प्रशस्ति ( वि० सं० १०२८ ) का रचयिता अमर स्वयं एक महान् कवि था। यह इस प्रशस्ति से ही ज्ञात होता है। इसी युग में रामानुजाचार्य ( वि० सं० १०७३ ) का प्रभाव मेवाड़ पर पड़ा, जिससे आगे चलकर अनेकों नारायण ( विष्णु ) के उपासक साधु-महात्माओं ने इस भूमि को उपासना और भक्ति से आप्लावित किया। जैन और बौद्ध प्रभाव भी इस देश पर उस समय अवश्य रहे हैं यह केवल उक्त प्रशस्ति में दिये गये शास्त्रार्थ से ही नहीं विदित होता, अन्य प्रमाणों से भी होता है। प्रसिद्ध जैन साधु जोइन्दु ( योगीन्दु ) जो एक महान् विद्वान्, वैयाकरण और कवि था, संभवतः चित्तोड़ का ही निवासी था। इसका समय विक्रम की १० वीं शती था [२]। इसी समय रामसिंह नाम जैन कवि की भी रचना भाषा में मिलती है। रावल जैत्रसिंह के समय ( वि० सं० १२७०-१३०९ ) में अहाड़ नगरी में दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना हुई। पहला 'ओघनिर्युक्ति' ( वि० सं० १२८४ में लिखित ) और दूसरा वयजल द्वारा लिखित 'पाक्षिक वृत्ति' ( वि० सं० १३०९ )। अहाड़ नगरी में लिखित एक तीसरा ग्रन्थ ( वि० सं० १३१७ तेजसिंह का समय ) 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र-चूर्णि' पाटण के भण्डार में सुरक्षित है। ये तीनों ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखित हैं। अहाड़ के समीप 'धूलकोट' में लिप्त 'तांबावती नगरी' २००० ई० पूर्व की सभ्यता की द्योतक है। रावल तेजसिंह के समय ( वि० सं० १३१७-१३२४ ) जैन-संस्कृति का मेवाड़ में प्रभाव जमने लगा। उस समय के प्रसिद्ध जैन मुनि रत्नप्रभसूरि का रावल तेजसिंह के मन्त्रियों और उसकी माता पर काफी प्रभाव था [३]। रत्नप्रभसूरि स्वयं विद्वान् और कवि था।

१ जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, जि० २२, पृ० १६६।

२ राहुल सांकृत्यायन-हिन्दी काव्यधारा पृ० २४०।

३ चित्तौड़ की गम्भीरी नदी के पुल के नीचे पाया गया शिलालेख ( वि० सं० १३२४ )

वि० सं० १३३० में उसने जिस प्रशस्ति की रचना की[१] उसे उसके शिष्य पार्श्वचन्द्र ने शिला पर लिपिबद्ध किया, केल्हिसिंह ने उसे खोदा और सूत्रधार देल्हण ने उसे स्थापित किया। इससे प्रशस्तिओं की रचना से लेकर स्थापन तक की कला का संकेत हमें मिलता है। बौद्धकालीन सभ्यता कल्याणपुर और चित्तौड़ के पास मझमिका नगरी के भूगर्भ में छिपी पड़ी है। शैव और वैष्णव संस्कृति का यह स्थान सदा से केन्द्र बना रहा। नागदा की मूर्ति और वास्तूकला इसका एक अच्छा उदाहरण है। चित्तौड़ के विजय–स्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ जैन और वैष्णव स्थापत्य के कला स्तम्भ हैं।

लाखा और कुम्भा (वि० सं० १४३९-१५२५) के युग में मेवाड़ संस्कृति, साहित्य, और कला की चरम सीमा पर था। यह युग मेवाड़ का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इसमें जिन सांस्कृतिक भावनाओं का संचार हुआ, साहित्य के विविध अङ्गों की उन्नति हुई और कलाओं-संगीत और चित्र, शिल्प, मूर्ति, स्थापत्य और युद्धकला भी का जो विकास हुआ उसने मेवाड़ को सामान्य भूमि से बहुत ऊपर उठा दिया, उसने ऐसी प्रबल और स्वतंत्र सत्ता का रूप धारण किया कि पड़ोसी यवन आक्रमण कारी कभी सुख की नींद न सो सके। गोरखनाथ की गोरखपंथी शाखा और उससे निकले हुए अघोर--पंथ का मेवाड़ अखाड़ा था। उदयपुर के पास तीतरड़ी की प्रसिद्ध गुफा गोरखपंथियों से सम्बन्धित मानी जाती है और उसके पास का गांव समीनाखेड़ा अब तक ओघड़ बाबा का अखाड़ा है। कदाचित गुरु भण्डार, चुणकरनाथ, चरपटनाथ, जालंध्रीपाव धूँधलीमल, पृथ्वीनाथ, बालनाथ, ओघड़-पंथ के प्रमुख प्रवर्तक मोतीनाथ, सती कणेरी, शंभुनाथ, सिद्ध गवरी, सिद्ध घोड़ाचोली, सिद्ध हरवाली आदि में से कुछ यहाँ से अवश्य सम्बन्धित थे और कुछ ने अपनी रचनाओं का यहीं से प्रसार किया होगा। कुंभा स्वयं एक महान भक्त, कलाकार, संगीतकार संगीतज्ञ और संगीत शास्त्री, काव्यकार तो था ही, परन्तु साथ ही योग्य शासक, नीतिज्ञ और एक कुशल सेनानी तथा वीर योद्धा भी था। वह कलाकारों, विद्वानों, पंडितों, संगीतज्ञों, कवियों, शिल्पियों, मूर्तिकारों, सैनिकों आदि का महान पोषक और नेता था। 'एकलिंग महाकाव्य' से ज्ञात होता है कि कुम्भा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद, व्याकरण, राजनीति आदि का विद्वान् था। संगीत पर उसके तीन ग्रन्थों–१ संगीत राज, २, संगीत मीमांसा ३. सूड़ प्रबन्ध का पता चलता है। उसके बनाये हुए कीर्तिस्तम्भ के एक टूटे शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह शिल्प और वास्तू शास्त्र का भी विद्वान् था और कीर्तिस्तम्भों पर उसने स्वयं एक ग्रन्थ रचा था-जिसको उसने जय और अपराजित के मतों को आधार माना है[२]। कुंभा एक नाट्यकार भी

१ चीरवा में प्राप्त।

२ ओझा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २, पृ० १११८। २६

था। उसने चार नाटक लिखे, जिनसे विविध भाषाओं–कर्णाटी, महाराष्ट्री, राजस्थानी, आदि पर उसके अधिकार का परिचय मिलता है। शासन व्यवस्था पर उसने 'सुप्रबन्ध' ग्रन्थ लिखा, 'चण्डी शतक' का अनुवाद किया और गीत गोविन्द पर 'रसिक प्रिया' टीका लिखी। अनेकों स्तुतिओं की रचना की जिन्हें वह स्वयं विभिन्न रागों और तालों में गाता था। उसके समय में मण्डन सूत्रधार ने 'देवतामूर्ति प्रकरण', 'प्रासाद मण्डन,' वास्तु मण्डन, 'वास्तु शास्त्र', 'राजवल्लभ', 'रूपमंडन', 'रूपावतार', 'वास्तुसार' की रचना की। उसके भाई नाथा ने 'वास्तुमंजरी' तथा उसके पुत्र गोविन्द ने 'उद्धार धोरणी,' 'कलानिधि', और 'द्वारदीपिका' की रचना की। अत्रि और उसका पुत्र महेश उस समय के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे। वैद्यक और ज्योतिष के ग्रन्थों की भी रचना हुई १। इस समय तक यहीं कहीं शार्ङ्गधर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शार्ङ्गधर-संहिता और 'संगीत रत्नाकर' समाप्त कर दिये थे ( वि० सं० १४२० )। 'हम्मीर रासौ' और हम्मीर काव्य' की भी इस समय तक रचना हो चुकी थी२। परन्तु,इनकी खोज करना एक बहुत बड़ा कार्य है। कुंभा के पिता मोकल स्वयं विद्यानुरागी थे। मोकल के राज्य ( १४७८–१४९० ) में कविश्वर महेश ने कवि के रूप में, प्रशस्तिकार के रूप में, दर्शन शास्त्र के विद्वान् के रूप में सम्मान प्राप्त किया। मोकल के समय के शिलालेखों से स्पष्ठ है कि कविराज वाणीविलास योगीश्वर और एकनाथ उसके प्रसिद्ध कवि, वीसल प्रसिद्ध शिल्पकार और फना और मन्ना प्रसिद्ध सूत्रधार थे। मोकल के पिता लाखा से लेकर कुंभा तक झोटिङ्ग भट्ट अपने काव्य और प्रशस्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे। रावल समरसिंह ( वि० सं०१३५८ ) का प्रसिद्ध कवि वेदशर्मा था।

विक्रमसंवत् १३०० से १५०० तक का युग सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति का युग था। धार्मिक अधिकार किसी वर्ग विशेष का नहीं, मनुष्य मात्र का है। कोई भी कर्म हेय नहीं है, वह भगवद्भक्ति के मार्ग में बाधक नहीं है। अपना कर्म करते रहकर ही भगवान् की प्राप्ति करना इस युग की प्रधान विशेषता थी। नामदेव ने छीपा-कर्म करते हुए, कबीर ने जुलाहा-कर्म करते हुए, सेना ने नाई का काम करते हुए, अपनी भक्ति और साधना का प्रभाव जनता पर डाला। इसी प्रभाव ने धन्ना जैसे एक जाट कृषक को राजस्थान का महान् भक्त बनाया ( वि०स० १४७२ ), रैदास जैसे चमार को ( वि०सं०१४८५–१५८५ ) भक्तों के ऊँचे आसन पर आरुढ़ किया, पीपा को ( वि०सं०१४८०–१५३० ) राज महल से निकालकर द्वारिका में भिक्षुक का काम कराया। और तो और, मेवाड़ के राजमहल के अन्तःपुर की मर्यादा तोड़कर राजराणी मीराँ को

---

१ ओझा–उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २ पृ० १११८–२६।

२ जैसा कि 'शार्ङ्गधर' से पता चलता है।

बाहर निकाला और साधुओं और सन्तों के बीच बैठाकर गान और नृत्य करवाया। धन्ना, पीपा, रैदास और मीराँ मेवाड़ के अमर भक्त हैं, मोतीनाथ अघोरियों का महान प्रवर्त्तक है, शार्ङ्गधर महान कवि और वैद्य है, कुंभा भक्त, कवि,कलाकार, विद्वान और योद्धा है, झोटिंग भट्ट इस युग का महान विद्वान्, कवि और प्रशस्तिकार है, सूत्रधार मण्डन शिल्पकला का सूत्रधार है। इस प्रकार धन्ना, पीपा, रैदास, मोतीनाथ, शार्ङ्गधर, कुम्भा, झोटिङ्ग भट्ट, मण्डन सूत्रधार और मीराँ, इस युग के 'मेवाड़ के नवरत्न' हैं, जिसकी संतति है सांगा और प्रताप जैसे युद्धवीर देश भक्त !

इस युग में संस्कृत का अधिक महत्व था, पर इन व्यक्तियों ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि देश भाषा का भी उतना ही महत्व है। भक्तिकाल में भावनाओं के परिवर्तन के साथ साथ भाषा का भी परिवर्तन देख पड़ता है। राजस्थानी पर ब्रजभाषा का प्रभाव आरम्भ होता है। मीराँ की भाषा में ये लक्षण स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। पर चारण भाटों की भाषा और साहित्यिक परम्परा भी इसी युग में स्वतन्त्र अस्तित्व धारण करती हुई दिखाई पड़ती है। इसी युग मे 'डिंगल् गजब डोकरो डाकी, पिंगल पूगल् नाजुक नार' की ध्वनि ( १५७५ के आसपास ) सुनाई पड़ती है और राजस्थानी की दो शैलियाँ डिंगल्–पिंगल हमारे सन्मुख आती हैं। आगे चलकर दादू-पंथ, निरंजनपंथ, रामस्नेही पंथ आदि अनेकों पंथों ने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में योग दिया। रामस्नेही का जन्म तो मेवाड़ ही में हुआ है। इसके आदि गुरु संतदास ( सं० १८०६ में मृत्यु ) मेवाड़ के दांतड़ा गांव के ही निवासी थे। साहित्य–कोटि के अनेकों कवि मेवाड़ में हो गये हैं। साँगा ( सं० १५६६ ) से महाराणा सज्जनसिंह ( सं० १९४१ ) तक मेवाड़ में अनेकों साहित्यकार, संत, साधु, भक्त, पंडित आदि हो गये हैं जिन्होंने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में अपनी ओर से कुछ दिया है। इनमें से कुछ की ही रचनाएँ अभी तक हमें उपलब्ध हुई हैं और कुछ की सूचना मात्र मिलती हैं। 'रायमल रासौ', 'हरिवंश महाकाव्य' ( संस्कृत ), सौदा बारहठ जमना ( सं० १५६६–८४ ) और केसरिया चारण हरिदास ( वि० सं० १५६६–८४ ) पीथा आशिया ( सं० १६२८–५३ ) की रचनाएँ आज अप्राप्य हैं। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने बिखरे हुए रासौ को एकत्रित कराया ( १६६० ), [१] पर अमरसिंह की काव्य-रचनाएँ अप्राप्य हैं। चारण भल्ल ( सं०-१६७६-८४ ) और बारहठ गोविन्द ( सं० १६८४-१७०६ ) के कोई नाम तक नहीं जानता। किसी दयालदास ने राणा रासो ( सं० १६८० के लगभग ) काव्य की रचना की, पर उसका कहीं पता नहीं। भींडर के जैन उपाश्रय की परम्परा से सम्बन्धित पन्यास ( पं०=पन्यास ) दौलत विजय ( दलपत ) ने प्रसिद्ध 'खुम्माण रासौ' की रचना ( वि० सं० १७२५ के लग भग ) की।

---

१ देखो विवरणी पृ० ९८, पंक्ति १६।

महाराणा राजसिंह के साथ विष द्वारा मारे जानेवाले[१] और महाराणा द्वारा 'भाई' माने जानेवाले दधिवाड़िया आशकरण की वीरगाथाएँ अब तक अप्राप्य हैं। इसी युग में कम्मा नाई भी कोई कवि हो गया है, जिसने उक्त महाराणा को अपने पूर्वजों के गौरव का स्मरण दिलाकर उन्हें दिल्ली जाकर बादशाह के सन्मुख झुकने से रोका[२]। किशोरदास चारण ने 'राजप्रकाश' ( सं० १७१६ ) और मान कवि ( जैन कवि ) ने 'राजविलास' (सं० १७३५-३७) की रचना की। इसी समय लाल भट्ट ने भी महाराणा राजसिंह पर १०१ छंदों का एक काव्य रचा। रणछोड़दास का 'राज प्रशस्ति महाकाव्य' भारत का सब से बड़ा शिलालेख माना जाता है। यह रचना भी राजसिंह के समय की है। जोगीदास चारण कृत 'हरिपिंगलप्रबन्ध' (सं० १७४४), मुरली कृत 'अश्वमेध' (सं० १७५५) और 'त्रियाविनोद' ख्याति में आचुके हैं। कविराज करणीदान ने महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (सं०१७६७-६० के राज्य में किसी काव्य की रचना की ! कवि नन्दराम कृत 'शिकार भाव' (सं०१७६०) और'जगविलास' ( सं०१८०२ ), महाराणा जगसिंह के मन्त्री देव करण कायस्थ कृत 'वाराणसी विलास' भी साहित्य की उत्तम कोटी की रचनाएँ हैं। रामकृष्ण और नाथूराम महाराणा जगतसिंह द्वितीय ( वि०सं० १७६०–१८०८ ) के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे और नेकराम प्रसिद्ध कवि, जिसने 'जगद्विलास' की रचना की। इसी समय दाँतड़ा में प्रसिद्ध सन्तदास हुए, जिनके शिष्य कृपाराम की प्रेरणा से रामचरणदास ने 'रामस्नेही पंथ' की स्थापना की। विक्रम संवत् १८१७ में सोमेश्वर कवि ने 'राज्याभिषेख काव्य' ( संस्कृत ) की रचना की और उसी परम्परा को बैकुण्ठ पल्लीवाल ने 'अमरसिंह राज्याभिषेख काव्य' ( सं १८१७ ) की रचना में निभाया। पंडित मङ्गल के 'अमर नृप काव्य' की रचना भी इसी समय हुई। महाराणा अमरसिंह ने ( सं १८१७–१८२६ ) 'रसिक चमन' लिखा इसी समय किसी अज्ञात कवि ने 'सुदामा चरित्र' की रचना की, जो नरोत्तमदास के 'सुदाम चरित' से सर्वथा भिन्न है।

महाराणा भीमसिंह के समय तक ( सं० १८३४–१८८५ ) मेवाड़ में कृष्ण भक्ति का पूर्णतः प्रचार हो चुका था। महाराणा भीमसिंह की कृष्ण भक्ति सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी प्राप्त होती हैं। इस समय तक व्रज भाषा और राजस्थानी का समन्वय हो चुका था। इसी समय फतहकरण चारण, फतेराम वैरागी, कविआ करणीदान, किशना आढ़ा, आशिआ मानसिंह, अपनी रचनाओं से प्रसिद्धि में आये। फतहकरण राजस्थानी का गद्य-पद्य लेखक था। पर उसकी केवल 'पंचाख्यान' ( टीका ) की सूचना ही मिलती है। किशना आढ़ा के तीन ग्रन्थ-भीमविलास, चण्डिशतक,

---

१ महाराणा यश प्रकाश–भूसिंह शेखावत

२ राजनगर के महल में इसका एक पद खुदा हुआ मिलता है।

रघुवर जस प्रकाश उपलब्ध हैं। आशिआ मानसिंह ने डिंगल् में किसी रूपक की रचना थी [१]। इसी समय संत परम्परा में दीन दरवेश का एकलिंगजी में प्रादुर्भाव हुआ, जिनके जीवन काल के विषय में सन्त–साहित्य के विद्वानों में भिन्न–मत हैं। दीन दरवेश की रचना राजस्थानी में है परन्तु उस पर कुछ डिंगल् का प्रभाव अवश्य है। इसी समय ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि पद्माकर का उदयपुर में आगमन हुआ, जिसका प्रभाव यहाँ के साहित्य पर अच्छा पड़ा। उन्होंने यहीं पर 'गनगौर' पर रचना की। ब्रजभाषा ने राज दरबार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इसका परिणाम महाराणा जवानसिंह हैं। इनकी रचनाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये पूर्ण अधिकार के साथ ब्रजभाषा में रचना करते थे। वि० सं० १८८७ में उत्पन्न कवि गुमानसिंह ( बाठल्ड़ा ) की रचना ब्रजभाषा में आध्यामिक विषय की रचना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

महाराणा सज्जनसिंह के समय तक मेवाड़ में ब्रजभाषा का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँचता हुआ देख पड़ता है। इसके पश्चात् साहित्य की राजकीय परम्पराएँ भी टूटने लगती है और साहित्य एक स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त कर लेता है। महाराणा सज्जनसिंह का समय प्राचीन संग्रह और वर्तमान विकास का युग था। इसका श्रेय महाराणा के गुरु जानी बिहारीलाल को है, जो संस्कृत, हिन्दी, फारसी और अँग्रेजी के विद्वान थे। इनके कारण महाराणा की प्रवृत्ति बदली और वे साहित्य, कला, इतिहास, विद्वानों के प्रेमी और प्रसंशक ही नहीं आश्रयदाता भी बने। वे स्वयं काव्य के मर्मज्ञ थे। उन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थों, प्राचीन चित्रों और विविध ऐतिहासिक सामग्रियों के सग्रहालयों की स्थापना की। कवि सम्मेलनों का आयोजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु का इन्होंने मेवाड़ में भव्य स्वागत किया। भारतेन्दु के प्रभाव से सरकारी कार्यालयों और अन्य विविध विभागों के नाम हिन्दी में दिये गये। प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास, कवि ऊजल् फतहकरण, बारहठ किशनसिंह, स्वामी गणेशपुरी उनके प्रसिद्ध कवि थे। वे स्वयं एक सद्धहस्त कवि और गायक थे। स्वामी दयानंद का प्रभाव भी मेवाड़ पर पड़ा। महाराणा ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। महाराणा ने मेवाड़ में पार्लियामेन्ट के ढंग की शासन व्यवस्था की भी घोषणा की [२], परन्तु अँग्रेजी शासन नीति के कारण वह सफल न हो सकी।

मेवाड़ के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। जिन

---

१ श्रीओझाजी के संग्रह में इसकी प्रति थी।

२ महाराणा सज्जनसिंह की एक प्राचीम प्रकाशित घोषणा के आधार पर।

ग्रन्थकारों का और ग्रन्थों की सूचना इसमें दी है वे केवल नाम मात्र हैं। हमें उन सबकी खोज तथा अध्ययन कर, उनका जीवन के साथ मूल्याङ्कन करना होगा।

हिन्दी–विभाग
विश्व विद्यालय, बड़ौदा
१५–१२–५२

उदयसिंह भटनागर

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

## लेखकानुक्रमणिका

---

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

# ग्रन्थानुक्रमणिका



* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

———

| | | |
|---|---|---|
| १ | कुल ग्रन्थ संख्या | ५०९ |
| २ | कुल ग्रन्थकार संख्या | ३२६ |
| ३ | अज्ञात लेखकों के ग्रन्थ | ७६ |
| ४ | अज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ | ९२ |
| ५ | ज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ | ३ |
| ६ | काव्यशास्त्र-ग्रन्थ | ३९ |
| ७ | महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थ | ६२ |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

———

# राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

## ( तीसरा भाग )

( १ ) अध्यात्म, धर्म, दर्शन, भक्ति, सम्प्रदाय, पंथ आदि····· ।

१ अजारी सरस्वती । रचयिता– शान्तिकुशल । आकार– ६.७″ × ४.२″ । पत्र–संख्या २ । इसमें जैन शैली का एक पँच रंगा सरस्वती का चित्र है । लिपिकार- अजबकुशल । विषय– अजारी सरस्वती की प्रार्थना । छंद–संख्या ३७ ।

हेमा चारिज ने पषि तूंठी । कालिदास ने तूंहीज तूंठी
अनुभूति सन्यासी लाधी । मुनि लावण्य समैं तूँ साधी ॥१०॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( २ ) **अध्यात्म प्रकाश** । रचयिता– सुखदेव मिश्र । आकार–८″ × १०″ । पत्र–संख्या– ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । छंद–(दोहा, सोरठा, कवित्त कुण्डलियाँ, सवैया आदि) संख्या २४१ । रचनाकाल–संवत् १७५५ आसोज शुक्ला ११ बुधवार ।

आदि भाग–

कवित्त

स्थावर जंगम जीव जिते जग भाँतिन भाँतिन वेष धरै हैं ।
नांमहि सचिदानंद स्वरूप आतम एक प्रकास करे हैं ॥
ता बिन जांनत सिंधु सो लागत जांनते गोपद तुल्य तरे हैं ।
बंदति ताहि कहै सुखदेव सों ब्रह्म सदा सब ही ते परे हैं ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

आगम तंत्र पुरान पुनि, पंच रीति मति जांन ।
षौंचि आपने पख्य को, जग में डारत आंन ॥२४१॥

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ३ ) **अनभै प्रबोध** । रचयिता– गरीबदास । इसकी दो प्रतियाँ है । पहली प्रति । आकार–६·५″ × ४″ । पत्र-संख्या १३ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २५ अक्षर हैं । छन्द–संख्या–१४१ ।

आदि भाग–

चौपाई

ॐ प्रणम ॐ गुरु के पाई । मति बुद्धि ग्यांन देहु समझाई ॥
जासौं बरनो प्यंड ब्रह्मंडा । सातो सायर अर नव खंडा ॥१॥
आदि अनादि जोति अपार । तायें प्रगट्यौ ॐ कार ॥
ॐ कार तें पाँचों तंत । राजस सातिग तामस मंत ॥२॥
धरती पाणीं अगनि मिलाऊँ । पवन अकास ए पाँचों नाऊँ ॥
राजस ब्रह्मा विष्णु कै स्वांति । तामस महादेव की भाँति ॥३॥

अन्तिम भाग–

दोहा

गरीबदास घटि ऊचरी, बांणी निर्मल सार ।
जे यहु गावै सुंणें, तिनके कटें बिकार ॥१४०॥

अनभै प्रमोध उचारतां विचारंत। पापेन लिपंते पुनिं न हरंते ब्रह्म समाधि गच्छन्ते ॥ ॐ नमो गुरु दादू पादूका प्रणाम ॥ १४१ ॥

[ चुन्नीलाल दादूपंथी, उदयपुर ]

दूसरी प्रति–यह ७२सन्तों के संग्रहवाले गुटके में है। देखो ग्रन्थ–संख्या ३०।

[ केवलराम दादूपन्थी ]

( ४ ) **अनुभव प्रकाश** । रचयिता– महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर। आकार–६″ × ५¾″ । पत्र-संख्या १५ । पद्य-संख्या २५ । लिपिकाल-सम्वत् १७३४

[ अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर ]

(५) **अपरोक्ष सिद्धान्त**। रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर, आकार-६″ × ५$\frac{3}{4}$″। पद्य-संख्या १००। लिपिकाल सं० १७२४।

[ अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर ]

(६) **अवतार चरित्र**। रचयिता-नरहरिदास। पहली प्रति। आकार-१३″ × ८$\frac{3}{4}$″। पत्र-संख्या १६४। प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २२ अक्षर हैं।

[ अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर ]

दूसरी प्रति-श्री नाथूसिंह राव, सलुम्बर

(७) **आनन्द विलास**-। महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर। आकार ६″ × ५$\frac{3}{4}$″। पत्र-संख्या ३४। पद्य-संख्या २०२। लिपिकाल सं० १७२४—

Indira Gandhi National Centre for the Arts

**दोहा**

संवत् सत्रह सै बरष, ता ऊपर चौबीस।
सुकल पख्य कातिक विदै, दसमी सुत रजनीस ॥२०२॥

[ अन्ताणि संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर ]

(८) **आणंदार्णवसार**-। रचयिता-रतनदास। आकार-११$\frac{1}{2}$″ × ६″। पत्र-संख्या ७५। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १२ अक्षर हैं।

विषय-फुटकर रचनाएँ। लिपिकाल तथा रचनाकाल सं० १६३४

आदि भाग-

**कवित्त**

विद्या गुण मंडित जे पंडित वदत ऐसैं
सुधा को निवास पाँच ठौर में प्रमानियें।
सागर में चन्द्रमा में अधर में तियानिके में
व्याल के बदन मांहि देवलोक मांनिये ॥

खारौ छीन पति-मरै डसत गरल चढ़ै
होत है निपात बात छिपी नांहिं जानिये ॥
कंठ हरि भक्तिनि के बसत सदैव सुधा
भनत रतनदास ठीक चित्त मांनिये ।

अन्तिम भाग–

मालिनी छन्द

अखिल मल निवासं, पाणिनात सुपासं ॥
कनिक गिरि निवासं, सूर्य कोटि प्रकासं ॥
भवतु भव निवासं, मालति तीर वासं ॥
गणपति ममि वंदे मानसे राजहंसं ॥

विशेष–इस ग्रंथ के साथ 'गोविन्दाष्टक' और 'गंगाष्टक' दो रचनाएँ और हैं।

[ व्रजलाल साधु, श्रीधरजी का मन्दिर, भींडर ]

( ६ ) इग्यारह अंग स्वाध्याय। रचयिता–जसविजय उपाध्याय। आकार–१०″ × ४३/४″ । पत्र-संख्या ६ । पद्य–संख्या ७५ । रचनाकाल सं० १७२२ । विषय-जैन धर्म वार्त्ता ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आदि भाग–

आचारांग बडुं कह्यु लो अंग इग्यार मझारि रे ।
चतुर नर अठार हजार पद जिहां रे लो दाख्यो मुनि आचार रे ॥

अन्तिम भाग–

विपाक सुत अंग नास जाय अंग इग्यारे सांमल्यारे
पोहता मन ना कोडि ।
टोडरमल जीत्यूँ रे । गई आपदा संपदा मिली रे
आवी होड़ा होड़ि ।
मात बकाई मंगल पिता रूपचंद भाई उदार ।
मांणिक आप कांइ सांभल्यारे विध सूँ अंग इग्यार ॥
युग युग मुनि विधु पछ्छरे श्री जसविजय उवजाय ।
सूरति चोमांसू रही रे कीधो ए सुख साय ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, कसारागली, उदयपुर ]

(१०) **ईश्वर विवाह** । रचयिता–देवीदास । आकार ७″ × ५.५″ । पत्र-संख्या ६ ।

**आदि भाग–**

संकर सारदा ने सीस नांमु ।
गरवा गणपति जो'जो मुंज सामुं ॥
सारदाये ते समरथ जाणी ।
आइ आपो अनुपम वांणी ॥
परमोही ने पूछी बात ।
काम करी परण्या ते संभुनाथ ॥
वीवा वगते करी बषाणौं ।
ये बो देवीदासे नव जाणौ ॥
प्रभुजी ना नांम पुछावो ।
वीवा वगते करीन गावो ॥

इसके साथ 'पद्मावती की वार्त्ता' भी संग्रहीत है ।

[ कविराव मोहनसिंहजी, भटियाणी चौहटा, उदयपुर ]

(११) **उपदेश चिन्तामणि**– रचयिता-सुन्दरदास । यह रचना १३६ संतों के संग्रहवाले गुटके में है । पत्र-संख्या– ५ । पद्य-संख्या ७६ ।

**आदि भाग–**

दोहा

काल चिंतामणि ए कही, अब भाषूँ उपदेस ।
लोक चतुर दस बरण हूं, रहो विधि ज्ञान प्रदेस । १ ।

**अन्तिम भाग–**

काया छूटसी करलाय । पंछी बोलता उड़ जाय ॥
मरणा मोत के आगै । मूरख कांई नही जागै ॥ ७७ ॥
राम ही साजनो कर चेत । उभी बांहां हेला देत ॥
भजरे कांईमां करतार । मुगती मालका भंडार ॥ ७८ ॥
भजीयां उधरेगा प्रान । एह उपदेस मेरा मान ॥
भूला क्यूँन हरी कूँ ध्याय । तेरा बापका क्या जाय ॥ ७९ ॥

[ रामद्वारा धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( १२ ) **उपदेस छत्तीसी** । रचयिता–जिनहर्ष । आकार–२″×४॰५″ पत्र–संख्या ४ । पद्य–संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३५ अक्षर हैं ।

आदि भाग–

सकल सरुप यांमें, प्रभुता अनूप भूप
धूप छाया छाया मांहैं, नए न जगदीस ज्यूं ।
पुण्य हें न पाप हैं न,सीत हें न ताप हें न
जाप के प्रताप कटे, करम अनीस ज्यूँ ॥
ज्ञानको अगंज पुञ्ज, सुख वृष्य को निकुंज
अती से चोतीस फुनि, बचन पेंतीस ज्यूँ ।
एसो जिन राज जिन हरष प्रणमि उपदेस की
छत्तीसी कहुं सवैये, छत्तीस ज्यूं ॥

अन्तिम भाग–

अधम न करी मांन, मांन किये होवे हांण
मांन मेरी सीख मांन, सुख ग्राही मांन रे ।
मांनते रावण राज, लंका सो गयो त्रिभाज
कियों है अकाज गई सब जांन रे ॥
दुर्जोधन मांन करी, हारी सब धराहरी
मांनते गयो है मुंज चातुरी की खान रे ।
कहे जिनहर्ष मान, मन में न आण मान
आणे तो विसाणभद्र जिसो मान आण रे ॥

[ माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर ]

( १३ ) **उपदेस बावनी** । रचयिता–किशन कवि । ( यह १३७ संतों की रचनाओं के गुटके में संग्रहीत है ) पत्र–संख्या केवल १८ है । ग्रन्थ अपूर्ण है । इस में ६२ पद्य थे परन्तु प्रथम तीस पद्य अप्राप्य हैं । ऐसा मालूम होता है कि ये तीस पद्यवाले पत्र, कागज बहुत पुराना होने से तड़क कर निकल गये हैं । इसी गुटके में इन गायब पत्रों के दूसरी ओर के कुछ पत्र वर्तमान हैं । और कुछ, जिन पर मीरां के भजन थे, गुम गए हैं । प्रत्येक पृष्ट पर सात–आठ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १५-१८, अक्षर हैं । अक्षर बारीक और नागरी लिपि में अङ्कित हैं । ग्रंथ का विषय

धार्मिक है, जिसमें संसार के माया-मोह से दूर रहने का उपदेश दिया गया हैं। ग्रंथ के अन्तिम भाग से ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी बहन रतनबाई की मृत्यु पर सं० १७०८ विजया दशमी को उसकी पुण्य स्मृति में इस ग्रंथ की रचना की।

अन्तिम भाग–

श्री पे संग राज लोग जस रस ताज गुरु
तिनकी क्रिया जू की बिताई पाई पावनी ।
संमत् सतरै से अरु आठैं बिजै दसमीं कूं
ग्रंथ की समापति भई है मन भावनीं ॥
साधवी ग्यांन मां की जाई श्री रतन बाई
तज्यौ देह तातैं एह रची पद चावनी ।
मत की ममत लीन्हीं तत्व ही पैं रुचि दीन्हीं
बाचिक किसन कीन्हीं उपदेस बावनी ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( १४ ) **एकादस की ध्याई** । रचयिता–चतुरदास। आकार–३″ × २·४″ पत्र-संख्या १७। प्रत्येक पृष्ठ पर ११, १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २२, २५ अक्षर हैं। इसमें ७, ८, ६, और १० अध्याय हैं। सातवें अध्याय में ७७ चौपाइयाँ और २ दोहे हैं। आठवें अध्याय में ५५ चौपाइयाँ, ६ वें अध्याय में ३६ चौपाइयाँ और १ दोहा और १० वें अध्याय में ५० चौपाइयाँ और १ दोहा है।

आदि भाग–

अथ एकादस की ध्याई लिख्यते। श्रीभगवानउवाचः–
उधव में कही देऊँ ग्यांना । सत्त कहत हूं नाही आंना ॥
या जग साध भए है जेते । आप ही आप उधरे तेते ॥ १ ॥
आप ही भलो बुरो पहिचानै । छांडे बुरो भले कूँ ठांनै ॥
गरु आपनूँ आपही होई । पसु पंखी भावे ज्यौं कोई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

मो दसि जनपद एक ही, ध्यावे जग तर बंस ।
तो (ता) सन मुख जगनाथ जन, मैं ध्याऊँ पैंडस हंस ॥ १ ॥
मोसूं पग पाछो परे, सनमुख जग तर बंस ।

तासू मैं जगनाथ जन, पाओ पैंडस हंस ॥५०॥

यह रचना २० सन्तों की रचनाओं के गुटके में है।

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( १५ ) **ओधवजीना संदेसा** । रचयिता-रघुनाथ । आकार-७" × ५.५" छन्द-संख्या २० । लिपिकाल-संवत् १६१८ ।

अन्तिम भाग-

अवगुणी आनल धरसो अवला री कना ।
वाक घणो पण वीने वीसारो रांय जो ॥
आकांते तेडी ने के जो अेटलु रघुनाथ प्रभु पधारे घेरजो ।
ओधवजी अमे साथे रसीयो रूसणे ॥ पद २० ॥
ओधवजी अलबेली कोरे आवसे
............. ..........................................

( अपूर्ण )

[ कविराव मोहनसिंहजी के संग्रह में ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( १६ ) **करुणा बत्तीसी** । रचयिता-माधौंराम । आकार-६" × ४.८" । पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ट पर ६ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १५ अक्षर हैं । छंद-संख्या ३५ । लिपिकाल सं० १६०० अश्विन शुक्ला ५ गुरुवार । लिपिकार-भट चयनराम । विषय-कृष्ण-भक्ति, इसी के साथ 'नसीतनामा' ( १ ) 'अनेकार्थ-मंजरी' ( २ ) 'पाण्डव-यशेन्दु-चन्द्रिका' ( ३ ) संग्रहीत हैं । अनेकार्थ मंजरी और पाण्डव-यशेन्दु-चन्द्रिका अपूर्ण हैं ।

आदि भाग-

कवित्त

गिरि कौं उठाए व्रज गोप कौं बचाय लये
अबल तैं उबारे पुन बालक मंजारी कौं ।
गजकी गरज सुनि ग्राहतैं छुडाय दयो
राख्यो व्रत नेम धर्म पंडव की नारी कौं ॥
राखे गज घंटा तल बालक विहंगम कौं
राख्यो पन भारत में भीषम ब्रह्मचारि कौं ।

त्रिविधि ताप हारी निज संतन सुखकारी
मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारी कौं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

करौं अपराध घोर सांझ भोर भोर नित
अति ही कठोर मति बोर को निकाम हूँ ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नाहीं
ऊंच नीच बोली ठोली बकौं आठौं जामहूँ ॥
अरचा न जानुं कछु चरचाहू न बूझत हौं
कभू हेत प्रीत सौं न लेत हरि नाम हूं ।
सबै तकसीर बलबीर मेरी छिमा करौं
कहे माधौराम प्रभु तिहारौ गुलाम हूं ॥ ३४ ॥
या करुना बत्तीस कौं, पढे सुने नर नारि
ताके सब दुख दुंदु कौं काटे कृष्ण मुरारि ॥ ३५ ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( १७ ) **कबीर की साखी** । रचयिता-कबीर । आकार-६″ × ६″ । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ३४ । प्रति अपूर्ण है । कबीर की अन्य कई रचनाएं मिली हैं जिनका यथा स्थान उल्लेख किया गया है । इस प्रति के केवल दो ही पत्र हैं । प्रथम दो पत्र जिन पर २१ साखियां थीं, अप्राप्य हैं । इन दो पत्रों पर २२ से लेकर ५६ तक साखियां हैं ।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीण्डर ]

( १८ ) **कबीर की रमैणी** । रचयिता-कबीर । आकार-६.७″ × ५.८″ । यह प्रति एक दो-सौ ग्रन्थों के चोपड़े में संग्रहीत है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है । पत्र-संख्या ४ । छन्द-संख्या ३७ ।

ग्रंथ का आदि भाग–

राम रमे रम रांम ही जीऊं । इंम्रत राम सुधारस पीऊं ।
समरथ राम सजीवण मेरी । दरीया छांडपडूं कित सेरी ॥ १ ॥
सेरी सेरा मेरी मेरा । करम उपाय रांम नहीं नेरा ।
बिधा बेद पडे जग फूला । कथनी कथि सुमरण तैं भूला ॥ २ ॥

आंप ज भूला जग भरमाया । निरफ लगाया फल हाथि न आया ।
बिथा बेद जगतकी करीया । हरि बिनि भरम करम अनुसरीया ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

धन संत सोई राम उपासी । हरि सूं प्रीत जग सूं उदासी ।
दुबध्या छरे स रांम न पावै । दिन दिन यूं ही जनम गुमावै ॥ ३६ ॥
भगति निरंतर या विधि कीजै । अठ सिधि नौं निधि चित्त न दीजै ।
जि परमातम ब्रह्म बिचारी । कहे कबीर मैं ताकी बलिहारी ॥ ३७ ॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भंडार, भींडर ]

( १६ ) **कानड़दास की वाणी** । रचयिता–कानड़दास । आकार-८·२" × ७·२" पत्र-संख्या ४३ । पद्य-संख्या-साखी ७३५, सोरठा २, चन्द्रायणा ५४, सवैया १११, कवित्त १२६, कुण्डलियाँ ८५, रेखता ३१, पद ३० । लिपिकाल-१८४२ विषय–निर्गुण उपासना । लिपिकार–भूधरदास ।

आदि भाग–

नमो अरंगी राम अभंगी, आप अनामी ।
नमो परम गुरुदेव परम पद, दाइक स्वामी ॥
नमो सिरोमणि संत, अंत मन को करि बैठै ।
दई जगत कूं पूठि ऊठि हरि सुख मै पैठे ॥
राम गुरु जन एक तन, मन बिचि मेरे ईस ।
जन कान्हड़ बंदन करे,तुम चरणन मम सीस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

धनि धनि मुलक मेवाड़ जू, धनि भीलैडो ग्राम ।
जांहां प्रगस्या संत जन, रामचरणजी राम ॥ १ ॥
जाका सिख ऐसा भया, मम गुरु कान्हड़दास ।
भूदर कहै बनाइ कौं, सरणै लह्यौ निवास ॥ २ ॥
भीलैड़ा मे भावसूं, लिखी ज भूदरदास ।
कान्हड़ की क्रिपा भई, अंग जोड़ि परकास ॥ ३ ॥
लिखी ज बाणी होइ कुछि, घटती बधती बात ।
सिसु जबानी तोतली, नीकां समभत मात ॥ ४ ॥

अट्ठारासे बियालीस का, द्रुति सुदि होई (?) ।
तिथि दोजी अर सोम दिन, बाणी भई संपूरण सोई ॥ ५ ॥

[ बड़ा रामद्वारा, हनुमान घाट, उदयपुर ]

(२०) **कृष्ण जीवन नी बारामासि** । रचयिता–अज्ञात । आकार–७″×५.५″ । पत्र–संख्या ५ । पद्य–संख्या १८ । लिपिकाल–सं० १६१८ । लिपिकार–त्रिभोवन । भाषा–बागड़ी ।

आदि भाग–

प्रथम पुजुं गणपति रे, समरू सारदा माय ।
बुधि अनोपम आपजो रे, जोवुं मारा वाला नीं वाट ॥
वेले रा वलजो वीठला, सूनों जमना नो घाट ।
सूनी मथुरानी वाट कृष्ण.........॥ १ ॥
असाड़ आवो से सखी रे, मेऊला करे घम घोर ।
पपैया पेउप करे गरवा, बोले छे मोर ॥ कृष्ण......॥ २ ॥
लीला ते चरण पेरीया, मनसूं आणी रे धार ।
वेवाधो मुने अती घणो, ना' या हलधर वीर । कृष्ण......॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

जेठ मैंने जादव वीन्या रे भुरे गोकल नी नार ।
जल वीन्या जल माछली, दाए जलती बार । कृष्ण......॥
जोर नथी मारा नाथ जी रे लीधो दुखड़ा नो अंत ।
कुणेग्रस्ते कुणे आथमो मथुरा मारे जो नचीत कंत ॥कृष्ण......
बनथी प्रभुजी पदारीयारे पुरां राधा रा कोड़ ।
गाय सीखे ने सांभले रंगमा रणछोड़ ॥कृष्ण......॥ १२ ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

(२१) **ग्रह कूप वरणन** । रचयिता–अज्ञात । यह रचना १३७ संतों के संग्रहीत गुटके में है । पत्र–संख्या २ । पद्य–संख्या ३१ । इस ग्रंथ में महाभारत के शान्ति पर्व में भीष्म पितामह द्वारा पाण्डवों को दिए गए उपदेश का सार है ।

आदि भाग–

करत प्रीति हरि भक्त सूं, करुणा सिन्धु कृपाल ।
धर्म सिरोमणि देव मुनि, ताहि धरै उर लाल ॥ १ ॥

भीष्मोवाच

सावधान होय सुनियो बातां । अब हूं तन छांडत हूं प्राता ॥
अति रहस भारथ उपगारा । सान्ति पर्व मध्य जो सारा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

बिन हरि कथा सुने नी काना । भ्रग विद्या जहाँ बुद्धि न ग्याना ॥
भ्रग सो ग्यान जहाँ नही विरागा । अजहूँ मूड़ जगाये जागा ॥ २० ॥
अैसी सब साधन की रीति । रांम नांम सूं कीजे प्रीति ॥
स्थिर मति हरि सों हित करे । सो संसार समुद्र ही तरे ॥ ३० ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( २२ ) **गावा को ग्रंथ गोपीचन्द** । रचयिता-कान्ह कवि । यह भी १३७ संतों के संग्रहीत गुटके में है । पत्र-संख्या ६१ । पद्य-संख्या १६८ ।

आदि भाग–

राजेश्वर अलख निरंजन रे ॥ अलख......... ।
भजले नाथ नैं गोपीचन्द राजा
भजन किया सूँ मेरा लाल अमर होइ जाई ॥ २ ॥
गोपीचन्द तन धन जोबन रे ॥ तन...... ।
थिरता है वहीं गोपी० ॥
थिरता नही मेरा लाल भरतरी भाई ॥ ३ ॥
मैंणावती मेहलां बैठी है । मेहलां०
सीस तपे गुर पीर दरस नित जाई ॥ ४ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( २३ ) **गीत संग्रह** । रचयिता-जसविजय । आकार-१०″ × ४५″ । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या २६४ । रचनाकाल--१७७१, श्रावण सुद २ ।

आदि भाग– राग-राम कलि

रिषभदेव हित कारी । जगत गुरु०..............
प्रथम तिर्थंकर प्रथम नरेसर प्रथम यती ब्रह्मचारी ॥
वरसी दान देई तुम जगमी, ईलति ईति निवारी ।
तपसी काहि करतु नही करना, साहिब बेर हमारी ॥
मांगत नहीं हम हाथी घोरे, धन कंचन नहीं नारी ।

दिउ मोहि चरन कमल की सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥
भव लीला वासित मुरडोर, तूं परि सब ही उभारी ।
मिं मेरे मन निश्चल कीनौं, तूं श्राना सिरधारी ॥
श्रयसो साहिब नहिं को जनमी, यासू होइ दिलयारी ।
दिल ही दलाल प्रेम के बीचि, तिहां हव खांचै गमारी ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

धन रा ढोला.................... ए ढाल
साचो देव सुपास जी रे, साहिब तूं मुलतान । गुणना गेहा ।
तूझ सूं प्रीत भक्ती बनी रे, चन्दन गंध समान ॥
ए तो कदिइं न कारमी रे, कदीइं न श्रलगी थाइ ।
दिन दिन अधिकी विस्तर' ई रे, महिमां इमांह काइ ॥
सरस कथा जे एहनी रे, तेह पवन मइ संग ।
वासित भवि जन तस हूंइ रे, चन्दन रूप सुरंग ॥
चार मांसनो तेहरीं रे, एह तो जनमना रोग ।
तेणीं अधिक तुम्ह प्रीतडी रे, न लहई पामर लोग ॥
करम भुजग बन्धन इसां रे, विरुश्रां दीसैं जेह ।
विरति मयूरी मोकली रे, जिम सवी छूटे तेह ॥
मुझ पासें एक मंत्र छे रे, गारुड प्रवचन सार ।
कहो तौ तेने बन्धन हरूँ रे, देव करो जो सार ॥
प्रीति ते चंदन वासना रे, वासित मोरूं मंच ।
तुम्ह तो मलयाचल समा रे, वाचक जस कहे धन ॥ ८ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( २४ ) **गोपीचन्दजी को बेराग** । रचयिता–दास ( ? ) । आकार–३·६" × ३" पत्र-संख्या २८ । पद्य-संख्या १५३ ।

आदि भाग–

नमो नमो निरंजण देवा । अंजन रहति निरंजन सेवा ॥
काल करम न लागे कोई । ताहि सुमरि जीव सदगति होई ॥ १ ॥
सुमरे जाको सेस महेसा । ब्रह्मा बिसन रु जपै गणेस ॥
सारद नारद सब सिर नावे । सिध्य रिधि मुकति ग्यांन पद पावैं ॥ २ ॥

करे बन्दगि धरणी अकास । पांणीं पवन सिव के दास ॥
चन्द सूर न आपा अनुसरैं । सुर नर चरन पखालन करैं ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

गोपीचन्द कूँ मिलि गया, जोगी जलींधरनाथ ।
'दास' कहें धन्य गुरु सिवां, प्रख्या अलिलि ही साथ ॥ १५१ ॥
कोऊ सुणौं बैराग बोध, सोधै अपणौं जीव ।
राम भगति सरधा सकति, ज्यों गति मिले इन पीव ॥ १५२ ॥
'दास' कह्यो बैराग बोध, करि आरोधन नाथ ।
खम्या करौ परि बधिअंकू, मैं लूध न समरूँ बात ॥ १५३ ॥

[ स्वरूपलालजी जगदीश चौक, उदयपुर ]

( २५ ) गुटका । आकार ६·२" × ४" । पत्र-संख्या ६८० । लिपिकार--करुणारांम । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

( १ ) श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी
( २ ) राजू कृत भक्तां का नाम
( ३ ) सत पुरुषां का सबद
( ४ ) ग्रंथ राम सतक । रचयिता चत्रभुज
( ५ ) धू चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
( ६ ) फुटकर पद-सूर, मीरां, तुलसी, रामचरन, नन्ददास आदि के
( ७ ) मोहमरद राजा की कथा । रचयिता-जगन्नाथ । ( रचनाकाल--सं० १७७६ )
( ८ ) प्रहलाद चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
( ९ ) हरिचन्द ग्रंथ । रचयिता- ध्यानदास
( १० ) कान्ह कृत गाथा को गोपीचन्द । पद्य-संख्या १२४१
( ११ ) राम रसायन बोध
( १२ ) दत्तात्रेय उपाख्यान
( १३ ) ग्रंथ वेराग बोध
( १४ ) विविध संतों की कृतियों के फूटकर अंग
( १५ ) श्रृबंगसार
( १६ ) विविध संतों के अंग
( १७ ) गुरु महिमा ग्रंथ । रचयिता-रामचरण

Indira Gandhi National

( १८ ) ग्रंथ नांव प्रताप । रचयिता–रामचरण

( १६ ) ग्रंथ शब्द प्रकाश

( २० ) ग्रंथ चिन्तामणि

( २१ ) ग्रंथ मन खण्डन

( २२ ) गुरु देव को अंग । रचयिता–रामचरण

( २३ ) चोरासी बोल

( २४ ) फूटकर पद

( २५ ) राजा मोरध्वज की लावणी

( २६ ) नासकेत की कथा

( २७ ) ग्रह कूप बर्णन

( २८ ) प्रसादी महात्मै भगवते प्रथम स्कन्दे

( २९ ) भरतहरि की लावणी

( ३० ) चिन्तामणि को अंग

( ३१ ) भक्त वत्सल राग कौतूहल नरसिंह महता को माम्हैरो–शिवकरण कृत

( ३२ ) सुन्दरदास कृत विवेक चिन्तामणि

( ३३ ) तर्क चिन्तामणि

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

( ३४ ) प्रसण सिणगार

( ३५ ) उपदेस चिन्तामणि

( ३६ ) ब्रह्म समाधि लीन जोग

( ३७ ) पूरब चिन्तामणि

( ३८ ) जम्बूसर को प्रसंग

( ३९ ) सुख समाध

( ४० ) भरतहरि चरित्र

( ४१ ) टेक को अंग– मुरलीराम

( ४२ ) कक्का बत्तीसी

[ रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर ]

## ( २६ ) गुटका विविध संग्रहः—

( १ ) रामचरण महाराज की वाणी । पद्य-संख्या १६१६

( २ ) रामजन महाराज की वाणी । पद्य-संख्या ६११ ।

( ३ ) मुरलीरामजी की साखी । पद्य-संख्या ११५

( ४ ) राम सतक–चत्रदास

( ५ ) दुल्हारामजी की बाणी । पद्य-संख्या ३१

( ६ ) जगन्नाथजी ,, ,, । पद्य-संख्या २८३

( ७ ) बाजींदजी , ,, । ,, ,, १४६

( ८ ) साधुरामजी ,, ,, । ,, ,, १७

( ९ ) धू चरित्र–जनगोपाल । पद्य संख्या १७८

( १० ) प्रहलाद चरित्र । ,, ,, २८५

( ११ ) मोहमरद । ,, ,, २७२

( १२ ) रामसतक । ,, ,, १००

( १३ ) हरिचन्द चरित । ,, ,, ३४०

( १४ ) दत्तत्रै उपाख्यान । ,, ,, २१०

( १५ ) भक्ति द्रढावन । ,, ,, ३१

( १६ ) ग्रह कूप वर्णन । ,, ,, ३०

( १७ ) पंचम स्कंदे प्रसादी महात्म्य । पद्य संख्या ३६

( १८ ) करूणाराम के भजन

( १९ ) भरतहरि की लावणी

( २० ) तर्क चिंतामणि

( २१ ) विवेक चिंतामणि

( २२ ) उपदेश चिंतामणि

( २३ ) प्रसन श्रृँगार । १०२ पद

( २४ ) जम्बूसर । ३८ पद

( २५ ) गजेन्द मोक्ष । ४५ चौपाई

( २६ ) धन्नाजी की प्रची । ६०–चौ० दो० ७

( २७ ) सेख उसमान की प्रची

( २८ ) बालन चरित्र । ४०० पद्य

( २९ ) प्रहलाद को छन्द

( ३० ) सुख समाधि । २११ पद्य

( ३१ ) भरतहरि चरित्र । १४२ दो० ४३४ चौ०

( ३२ ) नासकेत । १०८ दो० १६५६ चौ०

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ३३ ) श्रृंग सार। पद्य ३२४
( ३४ ) अमृतधारा का कवित्त। पद्य २६
( ३५ ) गात्रा को गोपीचन्द। पद्य १२३८ दो० २
( ३६ ) गात्रा को नरसी मेता को मायरो। पद्य ४०५
( ३७ ) रामचरण का पद ३
( ३८ ) रामप्रताप ,, ,, १
( ३९ ) मुरलीराम ,, ,, ५
( ४० ) दुल्हाराम ,, ,, ३
( ४१ ) देवीदास ,, ,, २
( ४२ ) कान्हड़दास का पद १
( ४३ ) पोहकरदास ,, ,, ६
( ४४ ) सूरतराम ,, ,, ६
( ४५ ) चत्रदास ,, ,, १
( ४६ ) जेतराम ,, ,, ४
( ४७ ) माधूराम ,, ,, ५
( ४८ ) करुणाराम ,, ,, ६
( ४९ ) लवलीनराम ,, ,, ४
( ५० ) उदासीराम ,, ,, १
( ५१ ) रतनदास ,, ,, १
( ५२ ) बाजींद ,, ,, १
( ५३ ) रामवल्लभ ,, ,, १
( ५४ ) कबीर ,, ,, ६२
( ५५ ) बिषना ,, ,, ७
( ५६ ) कमाली ,, , १
( ५७ ) दादू , ,, १४
( ५८ ) सूरदास ,, ,, ६०
( ५९ ) मीराँ ,, ,, १०४
( ६० ) नरसी ,, ,, ६
( ६१ ) नामदेव ,, ,, २
( ६२ ) रैदास ,, ,, २

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ९३ ) छीतमदास के पद १
( ९४ ) चाचर " " १
( ९५ ) सुखमणदास " " १
( ९६ ) मोतीनाथ " " ४
( ९७ ) नारायणदास " " १
( ९८ ) जोगीराम " " १
( ९९ ) गंगादास " " ३
( १०० ) सदानंद " " १
( १०१ ) मदनमोहन " " १
( १०२ ) विद्यादास " " १
( १०३ ) मोतीदास " " १
( १०४ ) कासीराम " " २
( १०५ ) मुरलीधर " " १
( १०६ ) नानकदास • " " १
( १०७ ) मीठु " " १
( १०८ ) बालकदास " " १
( १०९ ) रामसजन " " १
( ११० ) अधार " " १
( १११ ) सेख मावदी " " १
( ११२ ) कृष्णानंद " " १
( ११३ ) मोरध्वज " " १
( ११४ ) जगन्नाथ " " १
( ११५ ) भवानीदास " " १
( ११६ ) गंगाधर " " १
( ११७ ) राधाकृष्ण " " ३
( ११८ ) नेम " " १
( ११९ ) धना " " १
( १२० ) पुरुशोत्तम " " १
( १२१ ) रूपरसिक " " १
( १२२ ) रसिक छेल " " १

Indira Gandhi National Centre for the Arts

(१२३) ब्रजनंद के पद ४
(१२४) ब्रजराज " " ३
(१२५) चंद्रसखी " " ५
(१२६) बालसखी " " १
(१२७) रामसखी " " १
(१२८) बख्तावर " " १३
(१२९) किसोर " " २
(१३०) उम्मेदा " " २
(१३१) जमना " " २
(१३२) दयासखी " " १
(१३३) हुक्मेश " " १
(१३४) अमरपुरी " " १
(१३५) सवाईसिंघ " " १
(१३६) विजयसिंघ " " १
(१३७) देवीसिंघ " " १
(१३८) बांकीदास " " १
(१३९) बीठुदान " " १
(१४०) बारहठ कान्हाजी " " २

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( २७ ) **गुटका संतवाणी संग्रह** । आकार-५'८" × ३'३" । पत्र-संख्या-५८० । लिपिकाल-सं० १८७६ । लिपिकार-प्रीतमदास ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

( १ ) स्वामी सन्तदास की वाणी
( २ ) रामचरण की वाणी
( ३ ) परमहंस सूरतराम की वाणी
( ४ ) दुल्हराम की वाणी
( ५ ) रतनदास का प्रसंगी दुहा
( ६ ) अबंगसार का फुटकर सबद
( ७ ) कबीर की साखी

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

**( २८ ) गुटका विविध संग्रह** । आकार–७″ × ३·६″ । पत्र-संख्या ४२० ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

( १ ) प्रहलाद चरित्र

( २ ) ध्रू चरित्र

( ३ ) मोहमरद की कथा ( अपूर्ण )

( ४ ) रामचरणजी की अणभै वाणी, ग्रंथ नाव प्रताप, सबद प्रकाश, चिन्तामणि, मन खंडन और गुरुदेव को अंग

( ५ ) नंददास की अनेक नाममाला और अनेकार्थमाला

( ६ ) जयतराम कृत मीराँ सम्बन्धी भजन– ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हे आगे दिया जायगा।

प्रहलाद चरित्र का अन्तिम भाग–

अमृत रस प्रहलाद जस, कहै सुनै जै कोइ ।
अभै अमर पद पाइये, भगति मुकति फल होइ ॥ २४१ ॥
सुनै सुनावै प्रीत जुत, हरिजन हरि जस एह ।
कहै गोपाल उर धारिकै, रांम भगति सूँ तेह ॥ २४२ ॥
मैं मुति सारू आपनी, कही जु घटि बधि बात ।
जन गोपाल सुत हेत को, नीकां समझै मात ॥ २४३ ॥

ध्रू चरित्र का अन्तिम भाग–

गुरु गोविन्द प्रताप तैं , कथ्यो भगति रस सार ।
जन गोपाल हरिजन कह्यो, बाणी करि बिसतार ॥ २४२ ॥
ध्रू चरत जे कोई सुनै, मन बच क्रम चितलाइ ।
हरि पूरव सब कांमनां, भक्ति मुक्ति फल पाइ ॥ २४३ ॥
अब सूँधा सब कागद करूँ, सारद लखै बनाइ ।
उदध घोर मस कीजिए, ध्रू म्हमां न समाय ॥ २४४ ॥
मैं अग्यान मति आपनी, कलपि कही कछु बात ।
बकसत सुत अप्राध कू, जन गोपाल पित मात ॥ २४५ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

**( २९ ) गुटका विविध संग्रह**–आकार–६″ × ३·४″ । पत्र-संख्या ५८० ।

लिपिकाल–संवत् १८७६ । लिपिकार–पीतमदास

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:--

( १ ) संतदास की अणभै वाणी
( २ ) रामचरण की अणभै वाणी
( ३ ) सूरतराम की अणभै वाणी
( ४ ) दुल्हराम का सबद
( ५ ) रतनदास का प्रसंगी दोहा
( ६ ) अबंगसार संत विचार का फुटकर सबद
( ७ ) एकादस की ध्याई ( दो अध्याय )
( ८ ) कबीर की साखी ।
( ९ ) मुख नावों
( १० ) फुटकर पद

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ३० ) **गुटका** । आकार–६.७″ × ५.८″ । पत्र-संख्या लगभग ६०० । इसमें लगभग २५० रचनाएँ संग्रहित है, परन्तु इन सब का यहाँ देना असम्भव होने के कारण केवल निम्नलिखित रचनाओं के नाम ही दिए जाते हैं:—

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( १ ) नाममाला
( २ ) नासकेत
( ३ ) सुखसंवाद
( ४ ) जोगवासिष्ठ
( ५ ) भागवत गीता
( ६ ) निर्वाण गीता
( ७ ) सार गीता
( ८ ) वैष्णव गीता
( ९ ) कर्म विपाक गीता
( १० ) पाण्डवी गीता
( ११ ) भ्रुणाचारज
( १२ ) उमा महेश्वर संवाद
( १३ ) श्रुगा रोहिणी
( १४ ) हरिहर संवाद

( १५ ) वैष्णव महात्मै
( १६ ) हस्तांबल
( १७ ) अर्जुन गीता
( १८ ) चन्द्रोदय ग्रन्थ
( १९ ) मोह विवेक
( २० ) धू चरित्र
( २१ ) प्रहलाद चरित्र
( २२ ) जड़ भरत चरित्र
( २३ ) चोबीस घरां की लीला
( २४ ) दादू की जन्म लीला
( २५ ) दादू की साखी
( २६ ) कबीर की साखी
( २७ ) कबीर की रमैणी
( २८ ) नामदेव को कृत
( २९ ) रैदास को कृत
( ३० ) हरिदास को कृत
( ३१ ) सोजाजी को कृत
( ३२ ) सोजाजी की बलि
( ३३ ) पीपाजी को कृत
( ३४ ) परसाजी को पद
( ३५ ) बैलियानंद का पद
( ३६ ) धन्नाजी का पद
( ३७ ) कीता थोरी का पद
( ३८ ) चतरभुज का पद
( ३९ ) बीसाजी का पद
( ४० ) त्रिलोचनजी का पद
( ४१ ) नरसियाजी का पद
( ४२ ) कानइयाजी का पद
( ४३ ) विजियाजी के पद
( ४४ ) भीमजी का पद

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ४५ ) सोमजी का पद

( ४६ ) अधारुजी का पद

( ४७ ) सांवलियाजी का पद

( ४८ ) भुवनजी की भाषणी

( ४९ ) ग्यान त्रिलोकजी की बावनी

( ५० ) कृष्णानन्दजी को कृत

( ५१ ) रामानन्दजी की रचना

( ५२ ) अंगदजी का पद

( ५३ ) सुखानंदजी का पद

( ५४ ) नानकजी का पद, सब्दी और साखी।

( ५५ ) काजी मोहम्मद का पद

( ५६ ) सूरदास का पद

( ५७ ) परमानन्द का पद

( ५८ ) कान्हाजी का पद

( ५९ ) गोरखनाथ का ग्रन्थ

( ६० ) बखनाजी का ग्रन्थ

( ६१ ) गुरु भगडार की प्राण संकुलि (गुरु भगडार मत्स्येंद्र के शिष्य)

( ६२ ) चोरंगीनाथ की प्राण संकुलि

( ६३ ) संभुनाथ की प्राण संकुलि

( ६४ ) ग्रभ गीता

( ६५ ) शुक्ल ग्रन्थ—गोरख चरित्र।

( ६६ ) श्रीनाथजी को पंथ अभिग्रन्थ

( ६७ ) रामबोध ग्रंथ

( ६८ ) निरंजन पुराण ( दादू )

( ६९ ) सिधिनाम श्रीपति बोध नाम टीको ग्रन्थ

( ७० ) भोगल पुराण

( ७१ ) काजी कांदन की साखी।

[ माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर ]

( ३१ ) **गुटका**—आकार-३½″ × २·४″। पत्र-संख्या ८६६।

**इनमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-**

( १ ) रामचरणजी की अणभै वाणी

( २ ) एकादस की ध्याई

( ३ ) संतदासजी की छांटमा वाणी

( ४ ) किशन कवि कृत उपदेश बावनी– रचना-काल सं० १७०८ के लगभग

( ५ ) कबीर की रमैणी

( ६ ) ग्रंथ रामसागर–कबीर

( ७ ) ग्रंथ रामसतक–चत्रभुज

( ८ ) रामचरणजी के फुटकर सबद

( ९ ) हरिचन्द चरित–ध्यानदास, सं०१८०० के लगभग

( १० ) मोहमरद की कथा–सं०१७७६ काति विद १२ सोमवार

( ११ ) संतदास की अणभै वाणी

( १२ ) ग्रंथ बेराग बोध

( १३ ) रामचरणजी की अणभै वाणी में का छाँटवा सबद–साखी, ग्रंथ रामप्रताप, मन-खण्डन, ग्रंथ पिंडत समाध, गरभ चिन्तामणि, बिध-चिन्तावणी ।

( १४ ) रामजन की आणभै वाणी

( १५ ) प्रहलाद चरित्र-जनगोपाल

( १६ ) भरतरी चरित्र

( १७ ) धू चरित–जनगोपाल

( १८ ) ब्रह्म समाध–जगन्नाथ, सं०१८८५ बैसाख सुदी ४, रविवार

( १९ ) रामजनजी की अणभै वाणी छाँटवां

( २० ) मुरलीरामजी की अणभै वाणी–ग्रन्थ ख्याल बोध, ज्ञान प्रमोद, तरपत बोध, प्रतीत बोध ।

( २१ ) संतों के फुटकर शब्द

इस ग्रंथ में कोई लिपिकाल नहीं है। पत्र भी इसमें कई तरह के जोड़े हुए हैं और लिपि भी ग्रंथों के साथ बदलती गई है जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि अलग अलग लोगों द्वारा ये ग्रंथ लिपिकृत हुए हैं। आरम्भ में कुछ छन्द दिए गए हैं, जिनकी लिपि अन्य ग्रंथों की लिपियों से भिन्न है। ये छन्द कृष्ण की मुरली और रास से सम्बन्ध रखते हैं। सबसे प्राचीन लिपि में एक छप्पय दिया हुआ है जो इस प्रकार है:--

अथ घड़ी प्रमाण छप्पय

ग्रहै अंगुष्टौ पुरस ब्रह्म इंद्री तिथि कहीऐ
तरजन्या रस[६] रुद्र[११]उमय[२] विचार मन लहीऐ

IGNCA LIB.
S-8563
Deptt. of Arts
GOVT OF INDIA
H 091 BHA

मधिमा रवि रुषि७ रांम बुधि बोध ना उर जानूं
अनामिका त्रयोदस१३ बेद४ बसु८ सुर जुगति निदानूं
करै कनेष्टा सप्तम जो ग्रह९ रतन तत पेषिये
करिये बिचार यह रेन दिन घटिका पंडित लेषिये ॥ ७ ॥

नोटः– यह कबीर कृत 'राम सागर' के नीचे दिया गया है, रामसागर कबीर की नई रचना है।

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

**( ३२ ) गुरु बीनती जोग** । रचयिता-साधूराम । आकार-१६″ × ११·५″ । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या २४६ । रचना काल सं० १८६८, चैत्र शुक्ला ८ सोमवार ।

आदि भाग–

प्रथम बंद गुर देव को, दुतिए संत रु राम ।
तन मन इन पद अरपि कै, प्रणवत साधूरांम ॥ १ ॥
गुरु संत हरि जो क्रिपा, मो परि करो जु पूरि ।
तो गुरु बिनती जोगकी, उपजै मो रस ऊरि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

नग्र उदैपुर ताल पिछोला । ता तटि राम हिं द्वारा अमोला ॥
जांहां जु ग्रंथ भयो हे त्यारी । न्रप सरदारसिंघ की बारी ॥ २४३ ॥
राणा भीम पिछे नृप ज्वांना । भए उजागर अति बलवांना ॥
भक्ति भीम सुं करी सवाई । देस देस सन्तन जस गाई ॥ २४४ ॥
चहूँ खूंट में जस बिस्तरिया । दस बर साल गिराज जु करिया ॥
देह त्यागि के स्वरग सिधारा । अमर रह्यो जस धरा मंझारा ॥ २४५ ॥
ता गादी सरदार ही सिंघा । राजत भली जु भाँति नरिन्दा ॥
ग्रंथ भयो है ताकी बिरियां । संमत अठार अछ्याणुं र' वरिया ॥ २४६ ॥
चेत सुक्ल अष्टम ससिवारा । पूरण ग्रंथ भयो हरिद्वारा ॥
किंचित जस गायौ हरिजन कौ । रसिकां सब गुण भनैं जु उनको ॥ २४७ ॥
गुरु सतुति बरनन करी, मेरी बुधि उनमांनि ।
पार लहै कोटिगनि कौ, मसक अहंक्रत मांनि ॥ २४८ ॥
सब ही जन मो ऊपरै, रखियो महर अपार ।
अरजी साधूरांम की, यहै जु बारंबार ॥ २४९ ॥

[ बड़ा रामद्वारा, उदयपुर ]

( ३३ ) **गुसाईंजी की बधाई** । रचयिता-माणिकचंद। आकार-७½" × ६½" ।

आदि भाग-

बोहोंरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटै श्री विठ्ठलनाथ हमारे ।
द्वापर वसुधा भार हरयो हरि कलयुग जीव उधारे ॥

अन्तिम भाग-

ऐसो कवि को है जुग महिमां वरनै गुण जु तिहारे ।
माणिकचंद प्रभु कों सिव खोजत गावत बेद पुकारैं ॥

( ३४ ) **चोबीस एकादसी रो महात्तम** । रचयिता-नथमल। आकार-६" × ५.१" । पत्र-संख्या २० । विषय-चोबीस एकादशियों के महात्म्य की गद्य में टीका। भाषा-राजस्थानी

आदि भाग-

नारदजी ब्रह्मा ने पूछे- तु ं पिता सब जाणैं । श्रावण वदी एकादसी । उपवास कीयां कुण पुन्य । ब्रह्माजी बोल्या-श्रावण वदी एकादसी का नाम । व्रत कीयां सकल काम की सिध हूइ । गोविन्दजी की सेवा कीजै । सर्व तीर्थ स्नान कीयां पुन्य हूइ ।

अन्तिम भाग-

किसनजी कह्यो । चार मास उपोध्ये । ती वारे दान पुण्य तीरथ घणा कीजे । जीहरे नारायण पोढे छे । बालक रूप छे । साँप को रूप छे । वीछ है । मोर छे । डर ही रूप छे । संसार ने रूप छे । ताथे चोमासो महिदान पुन्य घणा कीजै । आसाढ सुदि एकादसी । श्री नारायण पोढे । इण व्रत थी वैकुंठ पावै ।

[ श्री स्वरूपलालजी शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर ]

( ३५ ) **चोरासी बोध** ( चोरासी बोल ) रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियाँ मिली हैं। जिनमें से एक का उल्लेख ऊपर गुटका संख्या २४ ( २३ ) में किया गया है। दूसरी प्रतिः- पद्य-संख्या ६१ ।

आदि भाग-

नकारो नर सो बचन, नटत ही उपजे दुख ।
यूँ चोरासी जायगा, नटै ते बरते सुख ॥ १ ॥

मनख जनम पायकै, टाले इतनां दोष ।
तो जगन्नाथ नरनारी को, सुधरे लोक परलोक ॥ २ ॥
राम सूमरतां थकीऐ नैं ॥ १ ॥
गुर सेवा मैं लुकीऐ नै ॥ २ ॥
करणी कर गरबाजे नैं ॥ ३ ॥
नित को नेम घटाजे नैं ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

ऐ चोरासी सुभ असुभ, कया मांन का ठांम ॥
जगन्नाथ करीऐ सवै, जब लग ग्रह बिसरांम ॥ ३ ॥
ईच लगत चालै सुघड़, तो भलां कहै सब लोय ॥
नहचै आवा लोक मैं, पलो न पकड़ै कोय ॥ ४ ॥
या चोरासी चित धरैं, तो वा चोरासी बार ॥
अपनी अपने हाथ हैं, मन मांनै सो साध ॥ ५ ॥
बार बार नर-तन नहीं, कहै सासतर संत ॥
तातै सुकत कीजिये, के भजिऐ भगवंत ॥ ६ ॥
जैन जवन सिव धरम कहैं, करणी सुधरे कांम ।
दया धरम इकतार सूँ, जगनाथ कोहो राम ॥ ७ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर ]

( ३६ ) **जम्बूसर को प्रसंग** । रचयिता– अज्ञात । यह ग्रंथ १३६ संतों के संग्रहीत गुटकों २५ ( ३८ ) और २६ ( २४ ) में मिला है । इसके अतिरिक्त भी इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । पत्र-संख्या ३ । इसमें उपदेश की दृष्टि से एक कहानी दी है । एक धनपति साहुकार के पुत्र जम्बूसर का उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह होने के कारण उसमें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । इसमें १० दोहे, ४ कवित्त, १४ सोरठे और १० चौपाइयाँ हैं ।

आदि भाग–

दोहा

मेवल है सो यूँ कहै, जंबूसार ज्यूं जान ।
सिषता को प्रसंग अब, कहूँ सो निश्चे मान ॥ १ ॥

क्विंवत

ऐक साह धनवंत तास के पुत्र बजोई ।
जंत्रूसर तस नाम सीध 'र. जनमत होई ॥
पिता कियो हठ बहोत, परणबो आरें कीनों ।
परण तजूं कर नारि, आप उत्तर यूं दीनों ॥
ऐक बनिया के छी आठ, तिनैं सुन मतो बिचारै ।
करे पितासूं अरज, पुरष जंत्रूसर मारै ॥

अन्तिम भाग–

जंत्रूसर बड़ भाग, धन तेरी माता पिता ।
जनम नहीं जग राग, छांड रतो परब्रह्म सूँ ॥ १२ ॥
द्रव्ब लेन कूँ चोर, बाधी पोट ज प्रीत कर ।
ज्ञान भयो तिंह ठोर, जंत्रूसर को ज्ञान सुन ॥ १३ ॥
अष्ट नारि एह ज्ञान, सुनत ही सो सब गयो ।
चोर भये लगतान, सीलवान का बचन सुन ॥ १४ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ३६ ) **ग्यांन प्रबोध** । रचयिता–रामजन । पत्र-संख्या ३२ । पद्य-संख्या ३६७ ।

आदि भाग–

सत गुर रांम दयाल जन, धन आंनंद सुखकार ।
तिन कूं बंदत रांमजन, करिहु नित निरधार ॥ १ ॥
गरू सबद श्रवणा करूँ, धरूँ रांम का ध्यांन ।
राम गरू जन प्रस्नता, जातैं नास अग्यांन ॥ २ ॥

सिख उवाच–

कूंन ग्यांन कांहां तैं आयौ, नांस भऐ तब कांहां समायौ ।
अर अग्यांन जातै कहीं साधन, सिख पूछे गुर करि आराधन ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

महा भयानक काल एह, कलिजुग क्रंम्म अथाग ।
ता मति सत गुर प्रगटें, सो धन मेरो भाग ॥ ४ ॥

हलाबोला कलजुग ऐह, जांहां न धरम बबेक ।
तिन मधि प्रगटे आइ गुर, रांमचरणजी एक ॥ ३६५ ॥
रांमचरणजी मेव वत, जिनकी बांणी छोल ।
मत करार सर भगति ज्यूँ, भरीए ग्यांन भकोल ॥ ३६६ ॥
ग्यांन उदधि गलतां नमत, उतम भजन रत आप ।
भीलौड़े प्रगटे भले, प्रगट हरे संताप ॥ ३६७ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ३८ ) **ज्ञान समुद्र** । रचयिता–सुन्दरदास । यह एक ४'५" × ३'१" आकार-वाले संग्रह में है। जिसमें तीन रचनाएं और हैं। ( १ ) मोहमरद, ( २ ) रहत भजन, ( ३ ) राजा चोर बकचूरजी की वात । पत्र-संख्या ८६ । पद्य-संख्या-३०६ रचना काल-१७१० ।

पुष्पिका

संमत् सतरेसे गये, बरष दसोत्तर ओर ।
भाद्रव सुद एकादसी, गुर वासर सिर मोर ॥
ता दिन संपूरन भयो ज्ञान समुन्दर ग्रंथ ।

[ वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर ]

( ३९ ) **टेक को अंग** । रचयिता-मुरलीराम । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ३८ । रचना राम सनेही पन्थ से सम्बन्धित है ।

आदि भाग–

टेक रह्यां काइस भलो, हेतम को सिर देख ।
मुरलीरांम निवाजिया, देख जनां की टेक ॥ १ ॥
टेक समाई सूरवां, रांम नाम की अैन ।
जन मुरली छांडे नहीं, देख रमाया चैंन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

टेक न छांडे लोवड़ी, होय जाय तारोतार ।
द्रढता लीयां रंग की, यू जन नांम करार ॥ ३६ ॥
ऐकै रंग एक तार में, रहती रंजन धीर ।
रंग लगावै आपणों, रचै आन सरीर ॥ ३७ ॥
स्थांम काज अर्पण करे, तन धन मान मुलक्क ।

टेक रखे निज नाम की, कोप्यां मुरली खलक्क ॥ ३८ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ४० ) **तर्क चिन्तामणि** । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या २। पद्य-संख्या ५३ । यह ग्रथ प्रकाशित हो चुका है। देखो सुन्दर ग्रंथावली भाग १ । प्रकाशित ग्रंथ से इसकी भाषा में काफी अन्तर है ।

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ४१ ) **दुल्हरामजी महाराज का सबद** । पत्र-संख्या ६ । पद्य--संख्या १३ ।

आदि भाग–

राग झंझोटी–

बलिहारी गुर देव तुम्हारी–भो सागर सैं त्यारी ॥ टेक ॥
रांमनांम की नांव ज सारी, बैठाया नरनारी ॥
पंथ को बिड़दवान इक भारी–धीरज जार ज डारी ।
जत सत समता रतन अपारी, किरपा पवन चलारी ॥
सत गुरु आप करण के धारी, औघट घाटी टारी ।
दुल्हैराम चरण उपगारा, सरखैं रह्यां उबारी ॥

अन्तिम भाग–

दरसाया दिल मांही रे, तूं सांइंया–दरसाया दिल मांहि ॥ टेक ॥
दरस कीयां दिल हरी निवारी, मारी ममता साहि ॥
नारी वारी बित पर हारी, जै हैरहीं जातिन जाहि ।
उनमन चित नचलताई, सरबंगी रांम दिखांहि ॥
सरबक गुर कृपा सूं जांनै, मरम दूंदता दरसांहि ।
दुल्हैरांम की अन्तरजांमीं, तुम सूं छानी नांहि ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ४२ ) **देवदास की वाणी** । आकार–८.५"×७.२" । पत्र-संख्या ६५ । रचना काल सं० १८४४ (?) लिपिकार ( या संग्रह कर्ता )–जगन्नाथ

आदि भाग–

नमो अखंडत रांम नमो सत गुरु सुखदाता ॥

नमो अनंत ही कोटि, रांम रस पाई पिलाता ॥
जिनकी गही ज वो रहो सिरी सदा हमारूँ (?) ॥
अठ पहरयौ मन मोलि सुरति धरि निरति न टारूँ ॥

दोहा

देवदास बन्दन करै, बारू बारज जोइ ।
रांम गुरु अर संत जन, हिरदै राखू पोइ ॥

अन्तिम भाग–

कवित्त

राम चरण गुर देवता, सकैं सीख बौहो भारी ।
देवदास इक नांम, जासकी बिरती करारी ॥
भजन करैं भरपूरि, आन 'चा न सुहावै ।
गुर पद में गलतांन, और कछ दाइ न आवैं ॥
सकल बासना नास, आसन की फुनि नाहीं ।
बिचरें जग के मांहीं, केवल ज्यूं जल के माहीं ॥
ऐसे सन्त दयाल, नगर इक स्यावै आए ।
रहै दिवस दस बैठि, तांहां तन कूं छिटकाए ॥
साध तीन ता लारि, समै ता दिन की ऐसी ।
अन्त समैं लगी रांम, और चर्चा नहीं कैसी ॥
परम धाम किए बास, तासमैं संसै नाहीं ।
हम देख्या निरताइ, सबद अगमै का माहीं ॥
अष्टादस सो जांनि, बरष चमाली गिणिए ।
पोस मास के मांहिं, तीन दिन बाकी भणिए ॥
प्रात समैं आदीत दिन, गए देह छिटकाइ ।
जगन्नाथ देखी जिसी, साची कही बनाइ ॥

[ बड़ा रामद्वारा, उदयपुर ]

( ४३ ) **नव तत्व नी चौपई** । रचयिता–ऋषिवरसंघ । आकार–६$\frac{1}{2}$″ × ४$\frac{1}{4}$″ । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १३६ । लिपिकाल–सं० १८२४ । लिपिकार–ऋषि मलूकचन्द्र । रचनाकाल सं० १७६६ ।

आदि भाग-

पास जिणेशर प्रणमि पाय । सह गुरु दांम तर्णे सुवसाय ॥
नव तत्व नो कहूँ विचार । सामलजो चित दे नर नारि ॥ १ ॥
जीव अजीव पुन्य पाप ज जोय । आश्रव संवर निरज्जरा होय ॥
बन्ध मोक्ष नवत्व ए सार । हवे कहूँ एनो विस्तार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दश नपुसंक सिधज जांण । वीस ते स्त्री मोक्ष वेखान ॥
एकसौ आठ पुरष ज कह्या । जिन बचने आगम थी लह्या ॥
छिसै छहोत्तर बोलज सार । आगम थी कीधो बिस्तार ।
नव तत्व नी चौपइ एह । भर्णे गुणैं सुख पामे तेह ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४४ ) **नव वाडिनी स्वाध्याय** । रचयिता–जिनहर्ष । आकार-१०'२" × ४'८" । पत्र-संख्या ३ । रचना काल सं० १६१६ । इसका विवरण जैन गुर्जर कवियों में आ चुका है ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ४५ ) **पंच कल्याणी स्तोत्र** । रचयिता-पुन्यसागर । आकार–१०" × ४'३" पत्र-संख्या ५ । इसमें निम्नलिखित रचनाएं हैं:—

( १ ) श्री मेघकुमार चउढालिया ( सं० १७२८ ) पद्य-संख्या ४७ ।
( २ ) श्री महावीर पारणउ । पद्य-संख्या ३१ ।
( ३ ) श्री आदिनाथ सेत्रुं । पद्य-संख्या ३२ ।
( ४ ) श्री जीरावल्लि पार्श्वनाथ स्तवन । पद्य-संख्या १५ ।
( ५ ) श्री पंच कल्याण स्तोत्र । पद्य-संख्या २१ ।

[ वर्द्धमान ज्ञान, मन्दिर उदयपुर ]

( ४६ ) **परसण सिंगार** । रचयिता-सेवादास । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या १०१ । इसकी दो प्रतियाँ हैं । दूसरी प्रति में पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या १०२ ।

आदि भाग-

उनमनि नेजा फरहरे, अनहद धूर निसांण ।
सहीत भोम्यां ऊपरै, चढीयो सबद दिवाण ॥ १ ॥

नाँव् नृप की फोज का, केहा करूँ बखाण ।
एक एक सूँ आगला, बहु जोधा बलव्ान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

बात हामरा जंग की, कोई सुणें सांचला सूर ।
सेव्ादास अलबत चढै, सुणत सुव्ा मुख नूर ॥ ९८ ॥
लख कोटयां मध सूरवां, सूणें हमारा जंग ।
सब्द बिचारै सेव्ला, सो सुंण सुंण देव्ै रंग ॥ ९९ ॥
मौ बपड़ा की क्या घणी, ए सत गुरु हन्दी रीझ ।
खोटे पहरे सेव्ला, पाई मोटी चीज ॥ १०० ॥
सत गुरु मेरे सिर तपौ, श्री गाजी गिरधरदास ।
जिनके बल जंग जीत कर, किय्ा पिसण सब नाश ॥ १०१ ॥
तहां काल तणां सारा नहीं, फरी रांम की आंण ।
सेव्ादास जंग जीत कर, परस्या पद निर्व्ाण ॥ १०२ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उद्‌यपुर ]

( ४७ ) **पूरब चिन्तामणि ।** रचयिता–रामजन । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या २३ । यह् तीयालीस ग्रंथों के गुटके में संकलित है ।

आदि् भाग–

जनम अनेक विधि पाय्ो है जगत में,
सिधी इन काज भयो गय्ो ज्यु ही आय्ो है ।
जैसे नलि नाल साथ कछू हीन चल्यो हाथ,
मृग की सी नाईं (मृग) बारबार भरमायो है ॥
ताते अब चेत भजो आगम के साथ सजो,
रांमजन रांम गाय् गुरुजन चिताय्ो है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

चोरासी के सीरे तन पाय्ो है रतन एह,
जतन जतन कर नीठ ठांम आयो है ।
भ्रम में न भूल भाई बड़ाई जू जान लीजै,
कीजै कृत सांच काच कूर कूं हनाय्ों है ॥
तीय्ालीस लाख बीस सहस 'हूँ बरस बीते,

मानव जनम एह नीठ नीठ पायो है ।
ताते अब चैत सावधान होय रांमजन,
रांम रांम कहो गरुदेवजी चितायो है ॥ २३ ॥

[ रामद्वारा, धोळी बावड़ी, उदयपुर ]

( ४८ ) **ब्रह्मसमाधिलीन जोग** । रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियां मिलती हैं । इसका उल्लेख ऊपर के गुटकों में भी आचुका है । पद्य-संख्या २७६ । रचना काल-सं०१८५५, वैसाख सुदी १४ रविवार ।

आदि भाग-

बिनऊं रांम दयाल गुर, तीय गे संत अतोल ।
तुम कृपा जापर करो, तब उपजे उर बोल ॥ १ ॥
मन हुलस्यों तुम महरस सूं, ग्रंथ करन अभ्यास ।
जथा अरथ नीकां कहूँ, जगन्नाथ है दास ॥ २ ॥
रांम चरण जन प्रगट्या, अवनि लियो अवतार ।
आदि अंत लग जो भई, जांको कहुं बिचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

याहां सदा आनन्द में मंगल मूरति रांम ।
मंगल कर बोहतेन कूं पधारे परमधाम ॥ २२ ॥
परमधाम सबके परैं, राम सबद अद्‌भूत ।
लीन भए जन तासमें, अनभि जन अनभूत ॥ २३ ॥
अणभी अणभौ पद मिले, रांम ही रांम उचारि ।
ता बरीयां की जगन्नाथ, कछुयक कही बिचारि ॥ २४ ॥
जनगति की मोही गम नहीं, ये तो अगम अपार ।
जगन्नाथ मोकुं झूर्‌यो, सो मै कह्यो बिचार ॥ २५ ॥
रामचरण महाराज को, जस प्रगट्यो जग मांहि ।
ज्यूं फूल के अंतर ज्यूं, आप सरुप सराहि ॥ २६ ॥
बाणीं सबद बिचारीये, खित मेली सबकार ।
राम सबदमई जगन्नाथ, रामचरण माहाराज ॥ २७ ॥
मै हूँ अनुचर रावरो, जगन्नाथ मो नांव ।
रांम चरण महाराज कूं, बार बार परनाम ॥ २८ ॥

मेरी बुधि सारू कह्यो, एहं समै को ग्यान ।
जगन्नाथ मो उर रहो, राम चरण को ध्यान ॥ २६ ॥
अठारासे पचपन बरष, रवि चोदस बैसाख ।
ग्रंथ सपूरण जगन्नाथ, पुन जानो सुधि पाक ॥ ३० ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ४६ ) **बावनी**—रचयिता-मुनि क्षमाहंस । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या ५४ । विषय-नीति, उपदेश आदि ।

**आदि भाग-**

छप्पय

ॐकार अपार पार बहु किण ही पायो ।
ब्रह्मा विष्णु शिव सगति ध्यान ग्यांन ही धुरि ध्यायो ॥
मंत्र तंत्र जड जंत्र जोग जुगति महिमागर ।
ऋद्धि वृद्धि नव निद्धि सिद्धि साधक सुख सागर ॥
जम्पन्ति जिहि नितु प्रति जके लहेत सुख लीला लहर ।
कवि कहे खेम सेवो सयन ॐकार आठों पहर ॥ १ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

**अन्तिम भाग-**

खिमा खंग करि ग्रह्यां पिसुण दहवट पुलाई ।
झगड़ा झगड़ सन्ताप जाई ज्यूँ बादल वाई ॥
खिमा खड़ग करि गह्या गण धरि उछव मंगल ।
संप कुटुम्बा साथ आंथि उपजइ अनंगल ॥
कवि हंस खेत इहि खरि बावनी कवते करी ।
सब सयण सुणन्ता सीखन्ता वसुधा मंगल विस्तरी ॥ ५४ ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( ५० ) **भक्तमाल टीका** । टीकाकार-प्रियादास । आकार-६.६" × ६.५" । पत्र-संख्या ५५ । पद्य-संख्या ८२४ (मूल तथा टीका को मिलाकर) लिपिकाल सं० १७८६ । कार्तिक शुक्ल ७ शनीवार । लिपिकार-नारायणदास ।

पुष्पिका

"श्री उदयपुर मध्ये राणां श्री संग्रामसिंहजी विजय राज्ये । स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य

प्रियादासजी लिखावतम् आत्मार्थे वाचनार्थं ।"

नोट— भाग १ में उल्लखित भक्तमाल की टीका इसीकी प्रतिलिपि मालूम होती है।

[ प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर ]

( ५१ ) **भक्तामर भाषा** । रचयिता-केसरकीर्ति । आकार-१०" × ४.४"। पत्र-संख्या ३। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति-पंक्ति में ४६ अक्षर हैं। पद्य-सख्या ४४ सवैया । रचना सरस और सानुप्रास है। यह मांनतुंगाचार्य कृत संस्कृत 'भक्तामर' का भाषानुवाद है। कहा जाता है कि मांनतुंगाचार्य को एक बार ४० तालों में बंद कर दिया गया था। उस पर उसने जिन भगवान की प्रार्थना में ४० पदों की रचना की। एक-एक छंद पर एक-एक ताला टूटता गया।

आदि भाग–

श्री जिन नायक वंछित दायक पाइकै पाय प्रणाम करै है ।
भाव धरी सुर आइन मैं प्रभु माणिक मौलि के मध्य जरै है ॥
तास प्रभा कु प्रकास करै कम पाप कलाप कुं दूरि हरै है ।
जुगादि भवोदधि मध्य परे नर तो पद पूज थी सोड धरै है ॥ १ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अन्तिम भाग–

स्तोत्र रूप फूलमाल गुंथी गुणै विसाल
अरीथाइ आलमाल जे सुणै सुभावतै ।
भावतै विरची येह विविध वरण जेह
विचित्र कुसुम तेह सोह सुघडावतै ॥
ऐसी माल कंठ धारै मानुभव आज आरै
निरंतर जै उचारै चित कै सुहावतै ।
मानतै उत्तंग सोई घरे लच्छी पूर होइ
केसर कीरति पोछै प्रभू कें प्रभाव तै ॥ ४४ ॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( ५२ ) **भगवद् गीता-टीका** । टीकाकार–महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-६.६" × ६.५"। इसके साथ प्रियादास कृत 'भक्तमाल की टीका' नन्ददास कृत 'भागवत दशम स्कन्ध भाषा' आदि कई अन्य ग्रन्थ भी हैं। भगवद्-गीता-टीका २८ पत्रों में समाप्त हुई है। इस प्रति को सम्वत् १७६८ में महाराणा

संग्रामसिंह के राज्यकाल में प्रियादास ने आत्म पठनार्थ लिपिबद्ध किया। टीका गद्य में है।

आदि भाग–

धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, आदि ....।

टीका–संजय उवाच-दुरजोधन पांडवौ की सैन्य देखि द्रोणचार्य पासि जाय अरु बोल्यो–'हे-आचार्य ! पांडु पुत्रों की बडीइ सेना विषै समवेत एकत्र भये। असे ये मेर अरु पांडु पुत्र कैसे है। जुध की इच्छा धरतु है। हे संजय ! ते कहा करत भये।'

अन्तिम भाग–

सजंयउवाच–हे राजा या भाँति श्री कृष्ण कों अर्जुन कों महाअद्भुत संवाद मैं सुन्यो। सो यह वेद की क्रीया तैं। साक्षात श्रीकृष्ण के मुख तैं। जोग परम गुह्य सुन्यौ। सो यह फिरि समरन कंरि करि बहुत हर्ष पावत हौं। ओरु यह अद्भुत श्रीकृष्ण को रूप समरन करि करि म्हौंकों विस्मय होतु है। औरु महा हर्ष होतु है। हे राजन् यह म्हौंकों निश्चै है। जहां जोगीश्वर श्रीकृष्ण है अरु जहां धनुर्धर अर्जुन है तहाँ सर्वथा लक्ष्मीजी है। विजय है। विभूति है। अरु नीति है। मेरी मति यूं कहे है ॥ ७१ ॥

[ प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ५३ ) **भ्रमरगीत** । रचयिता-नन्ददास। आकार–११″ × ५″। पत्र-संख्या २१। पद्य-संख्या ७५। लिपिकाल-संवत् १९३१।

[ ब्रजलालजी साधु, भींडर ]

( ५४ ) **भागवत दशमस्कन्ध भाषा** । रचयिता-नन्ददास।

प्रति १:– यह एक ८·८″ × ६″ आकार वाले चोपड़े में है, जिसका लिपिकाल संवत् १७३५ से १७६१ है। इस चोपड़े में चार ग्रन्थ हैं:–

१. भागवत दशमस्कन्ध भाषा ( संवत् १७३५ ) – नन्ददास
२. रास पंचाध्यायी ( संवत् १७६१ ) – नन्ददास
३. विरहमंजरी ( ,, ,, ) ,,
४. एकादश भागवत की कथा ( संवत् १७६१ ) – संतदास

इनका वर्णन यथा स्थान किया गया है।

आदि भाग–

दोहा

नव लछि न करि लछिजी, दश मैं आश्रय रूप।

नंद बंदि लै प्रथम तिहि, श्रीकृष्णाखि अनूप ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

सुनै जु कोउ मन क्रम बचन, ऐह उनतीसवो अध्याय ।
धंस न कलिमल बंस कहु, नंद न अवर उपाय ॥

इसमें कुल २६ अध्याय है जो ७२ पत्रों में समाप्त हुए है ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

प्रति २:– आकार-६·६″ × ६·५″ । लिपिकाल– संवत् १७६२ ।

[ प्रयागदासजी का स्थंल, उदयपुर ]

( ५५ ) **भागवत एकादस स्कन्ध** । टीकाकार–चतुरदास । आकार–११·३″ × ६″ । पत्र-संख्या १८८ । पद्य-संख्या २४०६ । रचनाकाल-संवत् १६५२ । चतुरदास संतदास का शिष्य था ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ५६ ) **भागवत एकादश स्कन्ध** । टीकाकार–चतभुजदास आकार–१०″ × ४·६″ । पत्र-संख्या २०३ में से केवल १७५ शेष हैं ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ५७ ) **मंगल कलश** । रचयिता–मेघविजय । आकार–१०″ × ४·२″ । पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल–संवत १८१६ ।

आदि भाग–

विनिता नय निवोधणी, वृषभ लंबन जसु पाय ।
प्रणमुं आदि जिणेसरू, नांमे नव निध थाय ॥ १ ॥
शांति जिणेसर सोलना, अचिरा मात मलार ।
हुं प्रणमुं पय तेहना, अभय दान दातार ॥ २ ॥
सीलवंत सिर सेहरो, भोजकुं अरि भरतार ।
स्याम वर्ण सोहे सदा, उजल गिर सणगार ॥ ३ ॥
संखेस्वर सामि सधर, पुरिसा दाणी पास ।
वामा नंदन सेवता, पहोचे मन नी आस ॥ ४ ॥

सम सासन सोधणी, महावीर जिन राय ।
पय प्रणमता जेहना, अलिय विघन सविजाय ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग–

चिंतामणी पास पसाउ ले ए मालंतडी, ए रास रच्यो सुविचार ।
संघ सकल आग्रह किए मालंतडी, मेघ कहे सुखकार ॥
ध्रु ताहरा जिंदां लगें ए मालंतडी, मेरू अचल गिरनार ।
राम रहो ए तिहां लगें ए मालंतडी, बलि जिहां रवि ससि सार ॥
ए रास भावे करी ए मालंतडी, जेह भणे मंन सुद्ध ।
अंने थलि आदरे सांभले ए मालंतडी, ते लहे, निर्मल बुद्धि ॥
मंगल कलस मणि वरे ए मालंतडी, जे करे पूण्य अपार ।
मेघविजय कहे नेड नें ए मालंतडी, नित नित जय जयकार ॥

( ५८ ) **मदन विवेक प्रकाश** । रचयिता—मदनेश । आकार-७" × ६" पत्र-संख्या ३५३ । पद्य-संख्या १६५० से अधिक । इसका रचना काल–संवत् १६४१ है । पूरा ग्रंथ १८ विश्रामों में विभाजित है । प्रथम विश्राम में कवि ने अपना वंश वर्णन किया है । जिसमें शक्तिसिंह से लेकर अपने तक का पूर्ण वर्णन है । ग्रंथ का विषय आध्यात्मिक ज्ञान है । प्रथम विश्राम में वंश–वर्णन होने के कारण यहाँ द्वितीय विश्राम का आदि भाग दिया जाता है ।

आदि भाग–

दोहा

भेद सजाति विजाति अो, स्वगत कहे जो नाहिं ।
कृष्ण * शब्द को लक्ष्य यों, मदन धस्यो उर माहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

मंगल कुल मंगल प्रजा, मंगल देस महान ।
मदन सु मंगल रूप है, मंगल रूप सुजांन ॥
चंद निधि अरू वेद शसि, संवत् चेत सुदि मास ।
संपूरण ता दिन भयो, मदन विवेक प्रकाश ॥
जब लगि गिरि कैलाश में, गौरि गिरीश निवास ।
अटल रहो जब तक जगत, मदन विवेक प्रकाश ॥

* ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास ( पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक ) के शिष्य थे।

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

( ५६ ) **रतनदास दोहावली** । रचयिता–रतनदास । आकार–५'८" × ३'३"। पत्र-संख्या १७। पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल–संवत् १८७६ ।

आदि भाग–

करै गुरां की बंदगी, सिख उरि अधिक हुलास ।
हरि बरि ऐहि मांगियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

कपट भेष सिर साध कै, कौडी मिलैं न ऐक ।
साहा भजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ बंबेक ॥ १६७ ॥
बिप्र सौहीं यौ आतमां, बेटी बुधि जौ जानि ।
संगति सगाई रांम बर, वर गुर पूरा मांनि ॥ १६८ ॥
सूरायण रटि रांम कूं, काइर कंमी दूरि ।
लज्या सोंही कुंसगति, बेल ज भगती पूरि ॥ १६९ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ६० ) **रामचरण बाणी संग्रह** । रचयिता–रामचरण । रामस्नेही पंथी रामचरणजी की रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं। निम्नलिखित ग्रन्थों का विवरण यहाँ दिया जाता है:—

१. अणभै वाणी । इसमें निम्नलिखित अंग–साखी हैं:—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १. गुरदेव | कौ | अंग– | साखी | ७८ |
| २. सुमरण | ,, | ,, | ,, | १२२ |
| ३. बीनती | ,, | ,, | ,, | १८ |
| ४. साधसंगति | ,, | ,, | ,, | ३६ |
| ५. काल | ,, | ,, | ,, | ५० |
| ६. चिंतावणी | ,, | ,, | ,, | ६६ |
| ७. सूरातण | ,, | ,, | ,, | ३६ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ८. टेक | ,, | ,, | | ,, | २७ |
| ९. कसतूरियां म्रग | ,, | ,, | | ,, | १२ |
| १०. मन | ,, | ,, | | ,, | २८ |
| ११. हेतप्रीत | ,, | ,, | | ,, | १४ |

२. चंद्राइणा:—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | गुरदेव | कौ | अंग | पद्य | ४ |
| २. | सुमरण | ,, | ,, | ,, | ३ |
| ३. | बीनती | ,, | ,, | ,, | १६ |
| ४. | ब्रह | ,, | ,, | ,, | २४ |
| ५. | साध भमी | ,, | ,, | ,, | १ |
| ६. | साध | ,, | ,, | ,, | ३६ |
| ७. | साध संगति | ,, | ,, | ,, | ४६ |
| ८. | ब्रिकत | ,, | ,, | ,, | २० |

३. अनभौ बिलास को प्रथम प्रकरण।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

आदि भाग-

नमौ राम रमतीत, नमौ गुर देव स्वामी।
नमौ नमौ सब संत, नांव रटि भए जू ं नांमी॥
जिनके चरणू ं हेठि, रहौ नित सीस हमारा।
तन मन धन अर प्रान, करूं नवछावर सारा॥
रांम संत गुर देव बिनि, नहीं और अधारा।
रांम चरण कर जौड़ि कै बंदैं बारू बारा॥ १॥

अन्तिम भाग-

और मिलाये मिलै न तिही न ति दुर्लभ मेल हरीजन कौ।
त्रिए ताप मिटै जन के दरस्यां मल धौइ के दूरि करै मन कौ॥
जीव नरमल होइ के रांम रटै कोइ क्रमा कौ नाहि रहै कंनकौ।
कहै रामचरण देख्या हम जौइ कैं संत सथान म्हाधन कौ॥ १॥

४. राम रसायन।

आदि भाग-

रम तीत राम गुरदेव जी, पुनि तिहूं काल के संत ।
जिनकूं रामचरण की, बंदन बार अनंत ॥ १ ॥
सत गुर परम निधान पद, हद सूं बेहद जोय ।
रामचरण बंदन करै, ब्रह्म रूप नित सोंय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

( ये ) राम रसायण महारस, गुर सिख पारख कीन ।
सरणां की सोभा कहूँ, सो सुणयो परबीन ॥ ६२ ॥

५. शब्द प्रकाश ।

आदि भाग-

रांम नांम तारंग मंत्र, सुमरे संकर सेस ।
रांम-चरण सांचा गरु, देवे यूं उपदेस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजन बिन खाली करणी ।
ज्यूँ बिन बीज सुधारी धरणी ॥
राम बीज साधन हल हाकैं ।
तो राम-चरण खेती फल पाकैं ॥ २४ ॥

दोहा

बरण कयो संखेप सो, दरीया कैसो पार ।
जिन परसीया धांम कूं, सो लीज्यौ संत बिचार ॥ १ ॥
'रामचरण' रट रांम नांम, पाया ब्रह्म बिलास ।
ईं साधन कोई लागसी, जाकैं होसी सबद प्रकास ॥ २ ॥

६. चिंतावणी-

आदि भाग-

प्रथम बंदन गुरदेव कूं, पुनि अनंत कोटि निज साध ।
कहूं एक चिंतावणी, यौ वाणी बिमल अगाध ॥ १ ॥
बधे स्वाद रस भोग सैं, इंद्रयां तणै अरंथ ।
उन जीवन के चेतबै, करूँ चिंतावणि गरंथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

धरीयां दिक कलि जाइ, सर्व ब्रह्म नांही कलै ।
रामचरण रति ताहि, चौरासी का मैट ल ॥ १ ॥
चौरासी का भार, भजन बिना छुटै नही ।
तांतै होइ हूंसीयार, एह सीख सत गुर कही ॥ २ ॥

७. मन खंडण–

आदि भाग–

अलख निरंजण बीनऊँ, लागूँ सत गुर पाय ।
मन खंडण की जुगति होय, सो मोय दयौह बताय ॥ १ ॥
तन मन पर असवार है, गुण इंद्री सब साथ ।
फरे सवादां बस भयौ, क्यूँ कर आवै हाथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

आतम कूं नही ब्याधि, ब्याधी रोग मन मांनीऐ ।
जिन ऐ तजी उपाधि, सुध स्वरूप ते जांणीऐ ॥ २ ॥

८. सुख समाध—

आदि भाग—

दोहा

सीस नवाऊं गुर चरण, पुनि बिनऊं सिध-साध ।
निराकार की भगति दो, सो दो बुद्धि अगाध ॥ १ ॥

चौपाई

निराकार प्रणपात नित कीजै रसना । बिमल गाइ गुण जीजैं ॥
गुर रजब दादू परम देवा । नाम कबीर करै हरि सेवा ॥ २ ॥
गोरख भरथरी गोपीचंदा । धू प्रहलाद सकल कूं बंदा ॥
पीपा धना सैन रैदासा । सोभा सोम सुनो हरिदासा ॥ ३ ॥
सब कर क्रपा देह जू ग्याना । कीजे सुख की कथा बखाना ॥
मेरी सक्ति नही कछु ऐसी । कही जाय.........त्यूं तैसी ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग—

जब गुरु कृपा करी पट भागै । यहु गुण कथित चतुर दिन लागै ॥
कथा बिपुल उनमान सुं बरनी । जथा सगति खेम सो निरनी ॥ २०९ ॥
भूल चूक हू घट बध आई । सुख को हेत लिख्यो सब भाई ॥
यह अरदास सुनो सुखदेवा । तुम गुण वार पार नही छेवा ॥ २१० ॥

९. नांव प्रताप—

आदि भाग—

महमा नांव प्रताप की, सुणै श्रवण चितलाइ ।
रांम-चरण रसना ( ? ) तो क्रम सकल झड़ि जाइ ॥ १ ॥
जिंन जिंन सुमरथा नांम कूं, सो सत उतरथा पार ।
रांम-चरण जो बीसरथा, सो ही जम के लारि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

'रामचरण' भजि रांम कूं, ब्रह्म देस कूं जाइ ।
जहां जग जौराँ का भै नहीं, सुख मैं रहै समाइ ॥ २ ॥
'रामचरण' कहै रांम कौं, बड़ो प्रताप जग मांहि ।
अनँत कौटि जन ऊधरथा, भजै समर मैं नाहिं ॥ ३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

१० सुख–विलास ( चतुर्थ प्रकरण )–

आदि भाग–

बावन अखिर कौ बिसतारा । सो सिखि सुखिम थूल अपारा ॥
बेंद पुरान सासतर कहीऐ । सुम्रति साखि छंद जो लहीऐ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

टेक पतीव्रत बीनती, नांव तणूं निरधार ।
कुबधी कात्र न खेदता, कहुँ कपूत निस्सार ॥ १०८ ॥

११ रेखता ।

आदि भाग–

सदगुर सारसा और दीसें नहीं तीन ही लोक फरि देखि जोई ।
भ्रम कपाट उघाड़ि दीपग धरया मनकी मलता दूरि खोई ॥
वेद न कतेब सुणि समझि आई नहीं सुभ अर असुभ की भूलि भारी ।

मिलत गुरदेव् जगाइ चेतन कीया भूलि परिज्ञान की थाप भारी ॥
रांम की धाम हम दू रि कह्या जाणता पिंड ब्रह्मंड का भेद पाया ।
रांम ही चरण गुर देव् दयाल के चरण कूं परसंता सांच आया ॥ १ । ३ । ३ ।

अन्तिम भाग–

× × ×

कुबधि की खांनि जग सुबधि उपजै नहीं बिपति परपंच नहीं संच पाई ।
कांम अर क्रोध मद लोभ बौहो खोभता भ्रम कुं निकरम मैं अवधि जाई ॥
आंन की धार नां फिरै तन कारना बौध नासौ धनां हरि भुलाई ।
रांम ही चरण ए जगत असार हैं सार इक रांम तूं सुमरि भाई ॥ १६ ॥

१२. किवत–

आदि भाग–

पतनी पीव् पछाणिऐ क्पति कौ व्रत धारयौ ।
नांनां भ्रम उपांस हेति हरदा सूं डारयौ ॥
रही सबद अंगि लागि रांम बिनि आन भावै. ।
ज्यूं कवलां जल् मधि अरणि की करणि सुहावै. ॥
भगति रमैं यूं जगत मै तजे न सांची टेक ।
रामचरण गुर ग्यांन कौ जनकै अचल् बमेक ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

रांम नांम जपि लेह नेह जग छाडिउ परसारा ।
बिक्रम क्रम सुं भाव् विषै गुण त्यागि बिकारा ॥
सम दम सत संतौष दया उरि दिढ़ बिसवासा ।
निंदाव्रै निसप्रेह आस तजि रहो निरासा ॥
बन बसती समि जाणि संक कांइं नहीं गिणिऐ ।
असी सूंज समाइ बेगि भौसागर तरीऐ ॥
काइर हुंवा न छूटसी, हरि भजि होइ हुसियार ।
रामचरण फिरि नां मिलै, यौ मौसर या वास ॥ ६ ॥

१३. राग चरचरी–

आदि भाग–

हारौ रे कोई हारौ रे, संसार करम सूं हारौ रे ॥

गुर कौ ग्यान हिरदै परि राखौ, रसनां रांम उचारौ रे ॥ टेक ॥
मैं मेरी मैं मति कोई भूलो, याहां नही कोई थारौ रे ॥ १ ॥
काल कंठ जब आइ गहेगा, रहसी पड्यौ पसारौ रे ।
जम का दूत पकडि लेजासी, उनकौ मूं डौ कालौ रे ॥ २ ॥
पाप 'र पुनि संग दोइ चालै, और न चालै लारौ रे ।
रांमचरण भजि रांम सगेसी, निरधारां आधारौ रे ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

सार असार समझै नहीं, अैसा मुति का हींण ।
रांम नांम की निंद्या गवैं, करमां सूं लिवलीन ॥ १ ॥
ब्रंह्म सबद राकार है, माया रुप मंकार ।
रांमचरण ऐ जुग लहै, निराकार आकार ॥ २ ॥

१४. फुटकर पद–फुटकर पद कई संग्रहों में मिलते हैं। अतः यहाँ देना अनावश्यक हैं।

[ उदयपुर के रामद्वारों में संग्रहीत ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## ( ६१ ) रामजन वाणी संग्रह–

अणभै वाणी। पद्य--संख्याः– दोहा १०१, चौपाई २४४, सोरठा ३५, चंद्रायणा १, पद्धरी ४८, गीतक १६, अरेल १३, मनहर २८, सवईया ४५, किवत ४, निसाणी ४, चामर १, कुँडलिया ८, झंपाल ४, त्रौटक १, रेखता २६।

आदि भाग–

कवित्त

काम क्रोध भाव तेते सोधिये स्वरूप तेते
पक्व है......सेते चित चढ़ंटा ईये ।
जेते पक्व है हरष हिय से तिनको होजे
अपक्व कोई जोग क मिटाईये ॥
जैसें व्याल काल रूप नाजुक नोला स्वरूप
सोधिकै सजीवनी सु सत्रु सूं घटाईये ।
व्याल सम जग जाल ज्ञान मत्त मंत्र हाल
भगवान बुधि बाल अमी सो चटाईये ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

पद

आरती अचल पुरस अविनासी । घट-घट व्यापक सकल प्रकासी ॥ टेर ॥
प्रथम आरती मंदिर बूहारया । रांम रांम रट कर मनि कारया ॥
दूसरी आरती दीपग जोया । हिरदै प्रेम चांदणां होया ॥
तीसरी आरती कूंभ भराया । नाम कवल सूँ गगन चडाया ॥
चोथी आरती चोक बीराजै । जाहां अनहद का बाजा बाजै ॥
पाँचमी आरती पूरण कांमां । सुरति परसीया केवल रांमां ॥
सेवग स्वामी भया समांनां । रांम ही रांम और नही आनां ॥
राम–चरण ऐसी आरती कीजै । परस अम्बर जुग जुग जीजै ॥

२. प्रतीत बोध–पद्य-संख्या ५५ ।

आदि भाग–

दोहा

सत गुर राम दयाल जन, घन आंनंद सुखकार ।
तिनकूं बंदन रांमजंन, करिहुँ नित निरधार ॥ १ ॥

चौपाई

भज रमतीत रांम निरधारा । आंनंद घन सुखकार अपारा ॥
सब सरजे सब देह खपाई । सब सूं अलपत रहे सदाई ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

जीता सोई जगत में, फिर न जनमै आइ ।
रांमजंन प्रतीत सूं, रहै रांम ल्यौ लाइ ॥ ५५ ॥

३. तरपत बोध–पद्य संख्या १०० ।

आदि भाग–

दोहा

रांम नांम को ध्यांन धर, कर प्रहार मत आंन ।
रांमजंन मन बाचका, वै जन तरपति जांन ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

तरपत मन बच काइ, बिभौ भोग भावट नही ।

राम-चरंन चित लाइ, रांमजंन ऐसी कही ॥ १०० ॥

४. बैराग बोध । पद्य-संख्या १५६ ।

आदि भाग-

कर बंदन गुरु रामजन, मन बच काय निधान ।
जाकी करपा मात्र हूं, बैराग बोध परमान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

ज्ञान बिचारै रामजन, गुरु मुख तें सिध पाय ।
धरै सदा बैराग मन, रांम रांम लिवलाय ॥ १५८ ॥
रांम नांम सूं लिव लगी, तजी बासना आन ।
रांमजंन यो भाषीयो, बैराग बोध प्रमान ॥ १५६ ॥

[ रामद्वारा, उदयपुर ]

( ६२ ) **राम सागर** । रचियता-कबीर । आकार-३" × २·४" । लिपिकाल (या रचना काल) सं० १३४२ (?) यह उक्त आकारवाले, हरे रेशमी जिल्दवाले एक छोटे से गुटके में मिला है । कुल छोटे छोटे १० पत्रों में यह ग्रन्थ समाप्त होता है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ । २४ अक्षर हैं । ग्रंथ चौपाइयों तथा चौपइयों में हैं जिनकी कुल संख्या ८३ है । कबीर की यह एक नवीन रचना खोज में मिली है । अतः हम इसे यहाँ सारी उद्धृत कर देते हैं:-

नेमषार तीरथ ( में ) करि सनांना । रिषि ब्रिंद सोनक परधांना ॥
करि सनांन मिलि बैठे जाई । हरि पावन का करो उपाई ॥ १ ॥
रिष सब पूछे आपस मांही । उत्तर किनहू आवै नाही ॥
तही समै ताहां नारद आऐ । कर जोड़ि रिष सो मान बधाऐ ॥ २ ॥
बंदन करै बींनती ल्यावै । कहो मुनि हरि कूं कैसें पावै ॥
सकल पाप कैसी विधि जांई । ए रिषजी हम कूं समझाई ॥ ३ ॥
दान बिना तप साधां नांही । तीरथ हम कहू नही जांही ॥
जिग जोग साधन नहीं करै । अरु बिधि बिनि किऐ क्यूं उधरै ॥ ४ ॥
नान बरत हम करै न कोई । इंद्री निग्रह हम पै नही होई ॥
करां न कोई देव अराधन । ध्यांन मुनि का करा न साधन ॥ ५ ॥
सुनां न सास्त्र पढां न बेद । हरि पावन कईऐ भेद ॥
भौ सागर तैं उतरै पारा । अरु सहजै पावै मोष दुवारा ॥ ६ ॥

करि हो क्रिपा नारद मुनि देवा । रिष सब करैं तुमारी सेवा ।

नारद उवाच–

नारद कहै सुनो रिषराई । सति मांनौं मैं कहूं सुनाई ॥ ७ ॥
सिव के पास श्रैसी हम सुनी । सोही बांणी तुम पूछी मुनी ॥
परवत मोरे है कवलास । तां ऊपर ईसुर को बास ॥ ८ ॥
पूछै तांहां पारवती सती । तुम मन की बात कहो हो जती ॥
तुम हो सकल देवन का देवा । सुर नर करैं तुमारी सेवा ॥ ९ ॥
बार बार मैं लागू पाई । तुम ध्यावो सो मोहि बताई ॥
ब्रह्मादिक मुनि तुम कूं ध्यावैं । जो मांगे सोही सिधि पावैं ॥ १० ॥
परजा सकल श्राधन करैं । जाका काज सहज मैं सरैं ॥
देव बिस्व का तुम हो साषी । सो सेवग कू कहो तुम भाषी ॥ ११ ॥
तुम कूं भजै मांगैं सोइ पावैं । तीन लोक तुमरा जस गावैं ॥
तुम जनम मरण सूं रहित हो स्वामी । रूप डिगंबर श्रर न्हकामी ॥ १२ ॥
बसती तुम कूं सुहावै नांही । बास तुमारा जंगल मांही ॥
जटा रषावो भभूत चढावो । कबहूक नाना रूप दिषावो ॥ १३ ॥
कबहूक नाथ पुलंदर जोगी । कबहू बिलासी कबहू भोगी ॥
भांग धतूरा आक आहारी । माया श्रलपति बोहो बिष जारी ॥ १४ ॥
कबहु तुम बालक ब्रह्मचारी । कबहू मोहो सबकी नारी ॥
करो प्रति पालण सिष्टि सवाई । कबहूक बसन् प्रलै कराई ॥ १५ ॥
भांजत घड़त बार नही होई । तुम उपरांत श्रौर नही कोई ॥
श्रकथ कथा तेरी कही न जाई । मैं जांणूं तुम त्रिभुवन राइ ॥ १६ ॥
तुम ध्यावो सो मोहि देवा । निस दिन करो कूंण की सेवा ॥
ऐ हम कूं इजरज श्रति भारी । कहो क्रिपाल मैं बंदी तुमारी ॥ १७ ॥
दया करी मोहि भेद बतावो । मेरा मन में उपज्यौ भावौ ॥
मैं सेवा करि मांग्या दांन । मोकूं कहीऐ तुमरो ध्यांन ॥ १८ ॥

श्री महादेव उवाच–

पारवती सूं ईसुर बोल्या । श्रंतर गति का पड़दा खोल्या ॥
वो गुपत कथा है श्रनत श्रपारा । जाको कोइक जांनै सारा ॥ १९ ॥
मैं ए कथा न काहू कही । गुपत कथ मेरी मन मैं रही ॥
तुमकूं ऐ श्रब कथा सुनांऊँ । तूं निज सेवगता तैं सुच पांऊँ ॥ २० ॥

मनसा बाच्या प्यास तुमारै । तब कहबै का हेत हमारै ॥
अधिकारी बिन कहीऐ नांही । बिन पूछ्यां रहीऐ मन मांही ॥ २१ ॥
तुम मनसा बाचा सेवग मेरी । म्हमा काहा कहूं मैं तेरी ॥
अति आतुर करि मांग्या दान । धन पारवती तेरा ग्यान ॥ २२ ॥
सुण पारवती सतजुग की बात । सब कोई होता तस बिग्यात ॥
ब्रह्मा बिसन अराधन करता । हरि बिन कथा आंन नही धरता ॥ २३ ॥
सब लोकन कै हिरदे हरिनांम । और धरम हरि बिना निहकांम ॥
तीरथ बरत सहज मैं करता । हरि धरम की तपस्या (?) ॥ २४ ॥
इंद्री निग्रह हरष न सोग । जिग न करै न साधे जोग ॥
पाप न करता हरि हित दांना । तीरथ जाइ न करत सनांना ॥ २५ ॥
और देव की पूजा न होती । बरण अवरण नहीं कोई छोती ॥
भूत प्रेत नहीं सूंण असूंणा । जंत्र मंत्र नहीं कामण टूणां ॥ २६ ॥
रांम जनां की सेवा करता । गुर गोबिंद सूं निस दिन डरता ।
काम क्रोध नही लोभ' र मोहा । नां काहू सूं करता द्रोहा ॥ २७ ॥
आठूं जाम बिमल जस गाता । परम लोक मैं प्रम पद पाता ।
जुरा मरण का जांहां दुष नांही । सब कोइ जाता अब गति मांही ॥ २८ ॥
सो गति देवन पावै कोई । जो गति आप भागवती जोई ।
सो दुल्लभ निज भगति सुनाई । ताहि धरो उर मैं चितलाई ॥ २९ ॥
तातैं सतजुग का मत लीजे ॥ पारवती ऐह सती सुनीजे ॥
तूं बल्लभ मेरै अती परीया ॥ सो तोहि कहूं मोहि हरि दीया ॥ ३० ॥
तुम हरिदैं धरो भगति बिसवासा ॥ ज्यूँ पावो अमरा बासा ॥
साची बात कहूं बारंगा ॥ अति अघाध प्रछ्या परसंगा ॥ ३१ ॥
साचा अखर दोइ सुण ऐही ॥ रांम नांम तु सति करि लेही ॥
मनसा बाचा ल्यो हरि नांम ॥ आंन मता तजिऐ बेकाम ॥ ३२ ॥
ऐ उपदेस मैं साचा कह्या ॥ भरम्या जगत नांव बिन बह्या ॥
कोई कहैं तुला चढ़ि दांन दुज दीजै ॥ कोइ कहै जिग्न बंदगी कीजै ॥ ३३ ॥
कोइ कहै कासी मैं जई बसीऐ ॥ कोइ कहै गया पिंडही भरीऐ ॥
कोइ कहै प्राग बैंणी परसीऐ ॥ अपणा पित्र त्रपत सब करीऐ ॥ ३४ ॥
कोइ कहे नाना सासत्र सुनिऐ ॥ कोइ कहै बेद पुरांन ही भनीऐ ॥

कोइ कहै तप करीऐ काया ॥ कोइ कहै सब तजीऐ माया ॥ ३५ ॥
कोइ कहै कुल ब्राह्मन की पूजा ॥ ऐ बड़ देव और नहीं दूजा ॥
एक कहै न्यात ब्राह्मन की सेवा ॥ या बिन और नही कोई देवा ॥ ३६ ॥
ऐ करम करै जम लोक सिधावै ॥ मोष परम पद कोइ न पावै ॥
जे जे करै सोही पावै ॥ पाप'र पुंन जनम भुगतावै ॥ ३७ ॥
दुष पावै सो पाप करमां ॥ सुष पावै सो उत्तम धरमां ॥
ऐ धरम करम का जाण बिह्वारा ॥ पार ब्रह्म पद इन सूं न्यारा ॥ ३८ ॥
या मैं परम पद नही पावै ॥ ऐ चोरासी मांहिमां हि फिरावै ॥
जब लग हरि हिरदै नही आवै ॥ तब लग मोष कहूं नही पावै ॥ ३९ ॥
आननि होइ हरि सूं आराधै ॥ दूजै अंग सूं मन नही बांधै ॥
रांम बिना जीव् मरम न जैहै ॥ रांम बिना जीव दुःष ही पैहै ॥ ४० ॥
रांम बिना साधन सब झूठा ॥ रांम बिना मन फिरै न अफूठा ॥
रांम बिना हिरदो सुध नांही ॥ इस बिधि कहत बेद कै मांही ॥ ४१ ॥
बिध निषेद का बेद पूरांना ॥ हरि सुमरन हरि सेवन जाना ॥
ऐक नांव निज सति करि लीया ॥ सुक्रत जिन सहज सब कीया ॥ ४२ ॥
जाकै हिरदै है हरि नांम ॥ ताका सहज सरै सब कांम ॥
तां कारण पारवती तुम सुनौं ॥ हरि कौ नांव् रैणि दिन मनौं ॥ ४३ ॥
सुण देवी तत्त बवेका ॥ रांम नांम सति साचा ऐका ॥
पारवती कहै सुनौ सिव देवा ॥ सब ही क्यूं न करै हरि सेवा ॥ ४४ ॥
नांना धरम जग काहै ध्यावै ॥ सब तजि हरि सरणैं किन आवै ॥
तत्त कह्या तुम एह विचारा ॥ तौ काहै भरम्यो यौ संसारा ॥ ४५ ॥
अरु बोहो बिधि सासतर क्यूं हूवा ॥ अर क्यूं बोल्या जूवा जूवा ॥
एह जग औसैं क्यूं भमाया ॥ सब सासतर क्यूं एक न भाया ॥ ४६ ॥
ऐ सांसा मेरे उपज्या भारी ॥ या कथा सुनावौ इसुर तपधारी ॥

सिव उवाच-

सुन पारवती कथा सुनांऊं ॥ सांसा तेरा दूर गमांऊं ॥ ४७ ॥
रिषन देव हम मिलि कीया बिचारा ॥ हमहिं न मांनै ऐ संसारा ॥
करि हौं उपाव कोई औसा एक ॥ आपही पूजै लोक अनेक ॥ ४८ ॥
लोक अराध करै हरि कैरा ॥ चोरासी मैं नेकन फेरा ॥

हमकूं कोइ जग मांनै नांही । हम देव-रिष का का जग मांहिं ॥ ४९ ॥
रिष देव हम मिलि करी हरि सेवा । तब परसण भो नारांइण देवा ॥
मांगों देव धूं तुम कूं सही । यूं नाराइण बाचा कही ॥ ५० ॥
मन की बात देवता कही । जग मैं हमारी पूजा नही ॥
सो पूजा आप करावो नाथा । दया करो देवो सिर हाथा ॥ ५१ ॥
तब ही बोल्या देव मुरारी । तुम कूं पूजू ह्वै अवतारी ॥
राम किसन औतार ज होई । ताको भेद लहै जन कोई ॥ ५२ ॥
जब ले औतार जग बंदी करी । तब देव रिष कूं पूजै हरि ॥
ता पीछैं पूजे सब कोई । तातैं काहू मुकति नहीं होई ॥ ५३ ॥
देवन कूं लागा संसारा । साचा हरि सूं रटत नियारा ॥
सुन पारवती यूं भरम उपाया । तुम पूछ्या मैं कह सुनाया ॥ ५४ ॥
ऐक सूनौं दूजा परसंगा । जातैं उपजै भरम के अंगा ॥
मोपै हरिजी मांग्या दांन । सिव तुम करो अनत मत आंन ॥ ५५ ॥
मैं तब कही कहीयौ यूं रांम । मो सेवग कूं फुरमावो कांम ॥
तब हरि कहयो सुनौं सिवराया । प्रथवी ध्यै मोसूं भरमाया ॥ ५६ ॥
मोहि कोइ न जांणै ऐसी करो । तुम जग मांहि जाई तन धरो ॥
झूठा सासत्र करो अपारा । अर मोकूं भूलै सब संसारा ॥ ५७ ॥
भेद करो बोहो भरम दिखावो । नाना बिध के धरम चलावो ॥
मो ताईं कोइ सकै नही आई । ऐसी करो आप सिवराई ॥ ५८ ॥
ऐह दान माग्या हरि आप । तब मेरा मन मैं भयो संताप ॥
मैं जब सब दुनीया भरमाई । आन देव सूं दीया लगाई ॥ ५९ ॥
लोभ लाभ दुनीया सब फरी । देवत पूज जाचणा करी ॥
ऐसे सब दुनीया भरमाई । हरि पूरण पद दीऐ भूलाई ॥ ६० ॥
तब इक राजा मोसूँ कही । जाकै रांम बिराजै मही ॥
माहा भगत जगत सूँ न्यारो । रांम भजन ताकै अधिकारो ॥ ६१ ॥
तब वै राजा ऐसी कही । ब्रह्महित्या सिव तोकूं भई ॥
पग पग ऊपर जानू सही । यां मैं झूठ तणक भी नही ॥ ६२ ॥
तेरो कह्यौ कूंण नही मांनै । तैं हरि धरम कीयौ क्यूं छांनै ॥
करता मेटि अरु आंन बतावै । जम घर जाइ नरंक गति पावै ॥ ६३ ॥
तब मेरे मन ऐसी आई । अब मैं जाइ लगू हरि पाई ॥

तुम हरिजी मोकूं भरमायौ । धन राजा जिन ग्यांन बतायौ ॥ ६४ ॥
मैं जब करी हरि सूं अरदासी । मोकूं पड़ी जमां की पासी ॥
हत्या ब्रह्म संसार मोहि लागी । हरि धरम हम मेटयौ अभागी ॥ ६५ ॥
बिश्व सगली मैं भरमाई । सो ऐ क्रम क्यूँ छूटै हरिराई ॥
ऐसो जप तप धरम बतावो । इन करमां सूं मोहि छुड़ावो ॥ ६६ ॥
माया ऊपर बल तुमरी स्वांमी । मैं नहीं जांणी अंतरजामी ॥
मोहि वाचा छलीयौ देव मुरारी । मैं बूड़ो बोहो करम ऊपारी ॥ ६७ ॥
उधरब का कहो कोइ जाप । ज्यूं कटि है मेरा सब पाप ॥
अैसैं ज्वाब मैं हरिसू कहीया । तब हरि मोसूं परसण भईया ॥ ६८ ॥
मोकूं मन्त्र दीयो तत ऐक । जि काटै मेरा पाप अनेक ॥
मन में सुमरण तब रह सोई । तातैं करम लगै नही कोई ॥ ६९ ॥
सहंसर नांम दीयौ हरि नांम । याकूं भजो तुम आठूं जाम ॥
तब हम कह्यौ ऐह न्हिचै आई । कदाचि भेद होइ ता मांही ॥ ७० ॥
तबै बिसन परमातम देवा । मोकूं फेरि बतायौ भेवा ॥
सिव तुम रांम मंत्र कूं ध्यावौ । अंतर गति मैं प्रीत बधावौ ॥ ७१ ॥
तब एह भेद कह्यौ हरि आप । मरै मिटै सकल संताप ॥
जब मैं बोहोत बीनती करी । तुम बिन कूंण उधारैं हरी ॥ ७२ ॥
रांम मंत्र किरपा करि दीन्हौ । सो मैं बोहोत प्रीत करि लीन्हौ ॥
ता मंतर कूं आतुर ध्यावै । जामण माहि कभू नही आवै ॥ ७३ ॥
हम ध्यावै सो ऐह निज भेव । तूंभी कर पारवती सेव ॥
अंतर जामी अंतर ध्यावौ । सहजैं मोष परम पद पावौ ॥ ७४ ॥
सहंसर नांव मैं भेद विचारा । रांम नांम सब ऊपर सारा ॥
एक नांम तैं भऐ अनेक । रांम सुमर ऐ साचो ऐक ॥ ७५ ॥
रांम रमे रम रमी ऐ रांम । सोही सारैगा तेरा कांम ॥
सिव ऐ पारवती सूं कही । नारद मुनि मन जाणी सही ॥ ७६ ॥
साची करणी नारद करी । सहज सहज आगैं बिस्तरी ॥
नारद रिष कूं कही सुनाई । सोनक आदि दीए समझाई ॥ ७७ ॥
सत गुर रांमांनंद परताप । अंतर हरिजी प्रगटै आप ॥
कहै कबीर ऐ भेद अपारा । जो सुमरै सो उतरै पारा ॥ ७८ ॥
सत गुर रांमांनंद परसाध । अमल भया मन मिट्या बिबाद ॥

कहै कबीर ऐ भेद अघाध । इनमैं समझै बिरला साधि ॥ ७९ ॥
पूरण ज्ञान कह्यौ निज सार । हरि हरि की बांणी निरधार ॥
सुणैं 'रु समझै सीखै सोई । ताकूं अखै अमर गति होई ॥ ८० ॥
सूरज उदे ज्यूं तमर नसाई । भरम करम यूं जाई बिलाई ॥
पारवती सूं भाष्यौ ईस । मनसा बाचा बिसवा बीस ॥ ८१ ॥
सोही नारद सोनक समझाई । सबै रिषन का भरम गुमाई ॥
निरभै भया रांम ल्यौ लावै । आंणंद मंगल प्रेम बधावे ॥ ८२ ॥
ऐहि ग्रंथ सुनि भरम निवारै । अपणा मन हरि चरणां धारै ॥
हरि तत प्रेम बध्यौ मन धीर । ग्यानी का गुर कहै कबीर ॥ ८३ ॥
॥ इति श्री ग्रन्थ रामसागर संपूरण ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ७३ ) **रास पंचाध्यायी** । रचयिता-नन्ददास । इसकी कई प्रतियाँ देखने में आई, जिनमें सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७६१ की लिपिकृत है। उसी का विवरण यहाँ दिया जाता है।

आकार-८"८" × ६" पत्र-संख्या ११ । पद्य-संख्या २१४ । इन छंदों का क्रम अध्यायों के अनुसार विभाजित नहीं है पर रचना के पाँचों अध्याय पूर्ण हैं।

**प्रथम अध्याय**— में कुल १०४ छंद हैं। उदयनारायण तिवारी द्वारा सम्पादित ( तरुण भारत ग्रंथावली-सं० ३६ ) रास पंचाध्यायी ( और भँवर गीत-नंददास कृत ) के प्रथम अध्याय में १३२ छंद हैं। इस ग्रंथ में उक्त प्रकाशित रचना के निम्नांकित ३१ छंद नहीं हैं:-

१२, १४, १७, १८, २१, ३६, ३७, ४४, ४५, ५८, ५६, ७०, ७२, ७३, ७४, ८८, ८६, ६०, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०६, ११२, ११३, १२१, १२२, और १२३; । और इस ग्रंथ के निम्नलिखित ३ छंद उक्त प्रकाशित रचना में नहीं हैं:-

नगरि कौ धरम न रह्यौ पलकति तन चल्यौ ठौरते ।
खग मृग गोबछ पछ कछ ते रहे कौ रते ॥ ८४ ॥
सुनि गोपनि के प्रेम बचन आंच सी लगी तब हि जिय ।

पघर चल्यो नव् नेह भीत नव् नीत सहस हिय ॥ ८५ ॥
उजल मृदुल बालुका सरस अति सुभग सुहायौ ॥
जमना जू निज करन रंग करि अयन बनायो ॥ ६५ ॥

**द्वितीय अध्याय**– १०५ से आरंभ होकर १४१ पर समाप्त होता हैं। इस प्रकार द्वितीय अध्याय में ३७ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ५० छंद है। अतः इसमें निम्नांकित १३ छंद कम हैं:-

१३, १४, १६, २३, २४, २५, २६, २७, ३२, ४०, ४६, ४८ और ४६।

**तृतीय अध्याय**– १४२ से आरंभ होकर १५५ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल १४ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २२ छंद हैं। निम्नांकित १२ छंद इसमें ( ग्रंथ में ) नहीं हैं:-

२, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१ और २२।

इस ग्रंन्थ के निम्नलिखित छंद प्रकाशित रचना में नहीं हैं:—

बुधि जन मन हरनी बानी बिन जरत सबै तिय ।
अधर सुधा सब सहित तन कष्या बहु ज्या बहु पिय ॥ १५२ ॥
अरू पिय तुम्हरी कथा अमृत सब ताप सिरावहि ।
अमरामृत कौं तुछ करै ब्रह्मादिक गावहि ॥ १५३ ॥
अैपरि जिन कर तुम्हरौ मोहन मुख अवलो क्यौ पिय ॥
तन की ताप बुझावो रसिक संबिद कोबिद हिय ॥ १५४ ॥
जौ कैसे हुं सांज समै सुन्दर मुष देषौं ॥
तौ इह बिधना क्रूर करि नैन लौ मेषौं ॥ १५५ ॥

**चतुर्थ अध्याय**– १५६ से प्रारंभ होकर १७३ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में १८ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २७ छंद हैं, अतः निम्नाङ्कित ६ छंद अधिक हैं:—

६, ६, १०, ११, १२, १३, १७, १८ और २७।

**पंचम अध्याय**– १७४ से आरंभ होकर २१४ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल ४१ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ८२ छंद हैं। इसमें निम्नाङ्कित ४१ छंद नहीं हैं:-

४, ६, ७, ८, ६, १७, २६, २८, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ७४, ७६ और ७६ ।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण प्रति में:-

१ अध्याय में १०४ छंद हैं, प्रकाशित रचना में १३२ छंद है-इसलिये ३१ छंद कम है और ३अधिक
२ ,, ३७ ,, ,, ,, ,, ५० ,, ,, ,, १३ ,, ,, ×
३ ,, १४ ,, ,, ,, ,, २२ ,, ,, ,, १२ ,, ,, ४ ,,
४ ,, १८ ,, ,, ,, ,, २७ ,, ,, ,, ६ ,, ,, ×
५ ,, ४१ ,, ,, ,, ,, ८२ ,, ,, ,, ४१ ,, ,, ×

इस प्रति में २१४ छंद है प्रकाशित रचना में ३१३। इस प्रति में १०६। कम है और ७ अधिक हैं ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ६४ ) **राहत ( रहत ) भजन निर्वाह ।** रचयिता-जगन्नाथ ।

आकार-४·५" × ३·१" । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या २६ ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

आदि भाग-

दोहा

जत राखं जगन्नाथ जन, नर-नारी को होइ ।
सो माया संसार मैं, स्वरग न संसय कोइ ॥ १ ॥
क्यूं हूं उपजै कांम बसि, जत का करै जतंन !
जगन्नाथ जगदीस जग्य, रहत अमोल रतंन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सहिजादै सांई सुमरि, चेरी भजि हरि चरण ।
जगन्नाथ ते जुगल......, मेटे जांमण मरण ॥ २८ ॥
उद्धरैं उद्धर सही सौ, सुमिरि सने ही रांम ।
जगन्नाथ जगनाथ मैं, निहचल ते निहकांम ॥ २६ ॥

[ वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर ]

( ६५ ) वाणी संग्रह । आकार-६·२" × ६" । लिपिकाल "संवत् १८२५ बृहस्पतिवार, शुक्ल पक्ष, पोष सुदी १२" । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैः—

| क्र०सं० | रचयिता- रचना | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | दादूवाणी | | १–१२६ |
| २. | कबीर-साखी, पद, रमैणी | | १२६–१८१ |
| ३. | नामदेव | ,, | १८१–१६४ |
| ४. | रैदास | ,, | १६४–२०४ |
| ५. | हरदास | ,, | २०४–२२० |
| ६. | गरीबदास, अनभै प्रबोध | | २२०–२३५ |
| ७. | रामानंद | पद | २३५ |
| ८. | सुखानंद | ,, | २३५ |
| ९. | आसानंद | ,, | २३६ |
| १०. | कृष्णानंद | ,, | २३६ |
| ११. | धना | ,, | २३७ |
| १२. | सेना | ,, | २३७ |
| १३. | पीपा | ,, साखी | २३७–२४० |
| १४. | सोभा | ,, | २४०–२४२ |
| १५. | परसा | ,, साखी | २४२–२४३ |
| १६. | सधनां | ,, | २४३–२४४ |
| १७. | कमाल | ,, | २४४ |
| १८. | रांणां | पद | २४४ |
| १९. | छीतम | ,, | २४४–२४५ |
| २०. | बहबल | ,, | २४५–२४६ |
| २१. | काजी महमूंद | ,, | २४६–२४८ |
| २२. | सेख बहावदी | ,, | २४८–२४६ |
| २३. | तिलोचन | ,, | २४६ |
| २४. | भवन | ,, | २४६–२५० |
| २५. | अंगद | ,, | २५० |
| २६. | मुकुंद भारथी | ,, | २५० |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | |
|---|---|---|
| ५७. धूंधलीमल | ,, | ३६६–३६७ |
| ५८. चौरंगनाथ | ,, | ३६७ |
| ५९. सिध घोड़ाचोली | ,, | ३६७–३६८ |
| ६०. सिध हरताली | ,, | ३६८ |
| ६१. मीडकी पाव | ,, | ३६८ |
| ६२. चुणकरनाथ | ,, | ३६८ |
| ६३. अजैपाल | ,, | ३६८ |
| ६४. पारबती | ,, | ३६८ |
| ६५. महादेव | ,, | ३६९ |
| ६६. हणवत | ,, | ३६९–३७० |
| ६७. सती कणेरी | ,, | ३७० |
| ६८. पृथ्वीनाथ | ,, | ३७० |
| ६९. ग्रन्थ साध | प्रख्या | ३७०–३७३ |
| ७०. मोहनदास | पद | ३७३–३८० |
| ७१. जैमल | साखी | ३८०–३८७ |
| ७२. दूजणदास | पद | ३८७–३८८ |
| ७३. चैन | साखी | ३८८–३९१ |
| ७४. साधू | पद | ३९१ |
| ७५. जगा | ,, | ३९१ |
| ७६. केवलदास | कड़षा | ३९१–३९२ |
| ७७. हरिस्यंघ | शब्द | ३९२ |
| ७८. अबंगी | शब्द | ३९२–४३७ |
| ७९. सुन्दरदास-ज्ञानसमुद्र | | ४३७–४५० |
| ८०. छीतरदास-सवैया | | ४५०–४५३ |

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

**( ६६ ) विचारमाला** । रचयिता– नरोत्तमपुरी । आकार–८″ × १०″ । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ४२ । रचनाकाल-संवत् १७२६ ।

आदि भाग–

दोहा

नमो नमो श्री रामजू , सतचित आनंद रूप ।
जिन जान्यो जग स्वप्नवत, नासे भ्रम तम कूप ॥

राम भया सत गुरु दया, साधु संग जब होइ ।
तब प्रांनी जाँनै कछु, रह्यो विषे रस मोइ ॥

ग्रंथकार परिचय–

पुरी नरोतम मित्र वर, रखो अतीत भगवान ।
बरनी मालविचार मैं, ताकै कहै प्रमान ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

स्वप्न राग भयो रंक, प्रांन तजे तहां तु धाव से ।
जागे बह पर जंक, कहां विस्मय कहां हर्ष पुनि ॥

दोहा

आस्तिक नास्तिक ना कुछ, नहि जहां एक रु होय ।
लघु दीरघ नहि गुन अगुन, न चेत्स्वरूप मय सोय ॥

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ६७ ) **विवेक चिन्तामणि** । गुटका विविध संग्रह ( २६ । २१ ) में संग्रहीत । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या ३१ । पद्य-संख्या– ३६ ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

आदि भाग–

आप निरंजण है अविनासी । जिन या बहु बिध सिष्ट प्रकासी ॥
अब तूं पकड़ उसीका सरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

जूदा कोई रहण न पावै । होय अमर ज्यूं ब्रह्म समावै ॥
सुंदर और कहूं न उपरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ ३६ ॥

( ६८ ) **वीस हरमाण जिनस्तवन** । रचयिता-नयविजय । आकार– ६.'२" × ४" । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या १२१ । इसमें निम्नलिखित जिन-स्तवन हैं:–

| क्र० स० | स्तवन | पद्य |
|---|---|---|
| १. | श्री मंधर जिन स्तवन | ७ |
| २. | भुग मंधर ,, ,, | ६ |
| ३. | बाहु ,, ,, | ५ |

| | | |
|---|---|---|
| ४. | सुबाहु जिन स्तवन | ५ |
| ५. | जात स्वामी जिन भास | ६ |
| ६. | सुबाहु ,, ,, | ७ |
| ७. | रिष भासन ,, ,, | ७ |
| ८. | अनंतवीर्य स्तवन | ६ |
| ९. | सुरप्रत जिन स्तवन | ५ |
| १०. | विशाल स्वामी जिन भास | ५ |
| ११. | अनंतवीर्य जिन स्तवन | ६ |
| १२. | चंद्रानन ,, ,, | ७ |
| १३. | चंद्रबाहु ,, ,, | ७ |
| १४. | भुजंग ,, ,, | ६ |
| १५. | ईश्वर ,, ,, | ५ |
| १६. | नेमिप्रत ,, ,, | ५ |
| १७. | महाजैन ,, ,, | ६ |
| १८. | देव जस स्वमी ,, ,, | ७ |
| १९. | ,, ,, , ,, ,, | ७ |
| २०. | अजितवीर्य ,, भास | ६ |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६९ ) **वैराग्य शतक** । रचयिता--मुनि गुणचंद । आकार-९.४″×४.८″। पत्र-संख्या ४। पद्य-संख्या १३३। रचना काल–संवत् १८७०, आषाढ़ सुदि २ बुधवार। इसमें वैराग्य शतक की भाषा में टीका की गई है। भाषा-राजस्थानी। इसमें कुल ५ अध्याय हैं। एक अध्याय में २६, २ अध्याय में २५, ३ अध्याय में २१, ४ अध्याय में २२ और ५ अध्याय में १९ पद्य हैं।

आदि भाग–

श्री आदीश्वर नित नमुं, वांछित सुख दातार।
मंगल कारक इण युगें, धरम तणा करतार ॥ १ ॥
श्री सद गुरु प्रणमीं करी, धर्म तणो करि राग।
भाषा करि पंच ढालियौ, कहूं शतक वैराग ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

इहां भाषी वैराग्य नी, पंचमी ढाल उदार ।
वैराग्य शतक अनुसार थी, कहियो ए अधिकार ॥ १६ ॥
गुणचंद मुनि कहै प्राणियां, धारो धर्म सनेह ।
प्रभूचंद ने आग्रहे, रचनो कीधी एह ॥ १७ ॥
संवत नभ मुनी वसु मही ( १८७० ), सुदि आसाढ उदार ।
द्वितिया तिथि बुध वासरें, वाणारसी मभार ॥ १८ ॥
भणसी गुणसी एहने, जैन धर्म सूं राग ।
दिन दिन अधिको तेहने, ऊपजसी वैराग ॥ १९ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ७० ) **संग्रह** । आकार–८"८" × ६" । लिपिकाल–'संवत १७६२ वर्षे शाके १६५७ मिति भाद्रवा विद ७ बुधवारेण लिखितं ब्राह्मण पोहकरणा बिसालधा लालचंद का आत्म पठनार्थम् ।' यह प्रति संवत् १७३५ की प्रतिलिपि है । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:–

१. भागवत दशम स्कन्ध भाषा । रचयिता–नन्ददास ।

२. रास पंचाध्यायी । रचयिता–नन्ददास ।

३. विरह मंजरी । रचयिता–नन्ददास । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १६० :–

आदि भाग–

दोहरा

परम प्रेम उछलनइ कुं, बढ्यौ जु तन मन मैंन ।
ब्रजबाला बिरहन भई, कहति चंद सौं बैंन ॥ १ ॥
अहो चंदां रस-कंद तुम, जातु आहि उहिं देस ।
द्वारामति नंद-नंद सौं, कहियो बलि संदेस ॥ २ ॥

चौपई

चले चले तुम जइयो जहाँ । बैठै हौहिं सांवरे तहाँ ॥
निधरक कहियो जिय जिनि डरौं । हो हरि ! अब ब्रज-अवनि फरौं ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

दोहरा

अव्र भाँति ब्रज कौं बिरह, बनैं न काहू नंद ॥
जिनकौ मित्र बिचित्र हरि, पूरन परमानंद ॥ १६० ॥

४. एकांदश भागवत की कथा। रचयिता-संतदास ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ७१ ) **सभाय** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६.५" × ४.३" । पत्र-संख्या ५ । विषय–जैन–धर्म सम्बन्धी ८ स्वाध्याय ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ७२ ) **सत पुरुषां का गावा का सबद** । रचयिता ( सग्रंह कर्ता )–तुरसीदास । पत्र–संख्या ४ । पद्य–संख्या ५४ ।

आदि भाग–

। राग गौरी

मन रे ये तेरा उनमानां—
हरि रस छांड बिषैं रस मातौ, तो भी माया उलकानां ॥ टेर ॥
श्रवण दवारैं राग आहारी, नैनां रूप लुभानां ॥
सम रस इंद्री बिषै बिचारै, क्यूं प्रगट्या क्यूं छानां ॥ २ ॥
नाना गंध नासा कर भावै, षटरस रस ना खानां ॥
राजस के छक छक्यौ डोलै, जैसे फरत दिवानां ॥ ३ ॥
श्रवण तुचा नै नासक रसना, पंच बिषै लपटानां ॥
मिनषां जनम पायके भूंदू, हरि की भगति भुलानां ॥ ४ ॥
चिंत कपटी कुबधी अर लोभी, अपणां गणै न आनां ॥
चंचल चपल चुगल बौहो रंगी, आप मांहि बंधानां ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग–

आज स्यांम देखे दधि पीवत है, सरररर । आज स्यांम...टेर
कर सूं कर पकरी मोहन नै, अरी चुरी मोरी गई कररररर ॥ १ ॥
नंद महर के भूक भेलन मैं, मोती बिखरे खररररर कदेह ।
जो सिख मनसा बाचा मिलै, तन मन अर पर लेह ॥ २ ॥

× × ×

बिष मन दीना व् जरजरी, बहै उंडी अति धार ।
ऐक मना तर नीसरथा, दूजा डूबण हार ॥ ३ ॥
अगम देस अमरापुरी, जहाँ हरिजन का बास ।
तहाँ कबीर (?) घर कीया, मटी मरण की आस ॥ ४ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ७३ ) **सतसार** । रचयिता–मुरलीदास । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या–७४ ।

**आदि भाग–**

**स्तुति**

प्रथम स्तूति गुर रांम कूं, जासू सब परकास ।
भूत भव् कि व्रतमांन सब, तन को मूरलीदास ॥ १ ॥

**दुहा**

कहूं ग्रन्थ इक सार जूं, सुबज्यौ हौइ असत्त ।
मुरली भजीए रांम कूं, परिहरि सब दुरमत्त ॥ २ ॥

**चौपाई**

प्रथम सत सोही रांम उचारै । दूजौ सत सांच उरि धारै ॥
तीजौ सत सौ ब्राटिर खाई । सौ असती प्रम पद पाई ॥ २ ॥

**अन्तिम भाग–**

**सोरठा**

असत अर ग्रह चार, तीजौ ग्रिहचाड़ी सही ।
एक असत... सार, पाखंड प्रभु मांनै नहीं ॥ ३६ ॥
ग्रिहसत हौइ भव् पार, ग्रिहचाड़ी अधबिचि रहै ।
ग्रिहचारी भौ पार, पैली सुख प्रापति नही ॥ ३७ ॥

[ रामद्वारा, धोलीबावड़ी, उदयपुर ]

( ७४ ) **सनेह लीला** । रचयिता-मोहनदास । इसकी एक प्रति का विवरण भाग एक १ (१५३) में दिया गया है जिसमें रचयिता का नाम 'रसिकराय' निम्नलिखित दोहे के आधार पर दिया गया है:–

जो गावै सीखै सुणे, मन क्रम वचन सहेत ।
रसिकराय पूरण कृपा, मन वांछित फल देत ॥ १२० ॥

उक्त दोहे में कवि ने 'रसिकराय' से श्रीकृष्ण से अर्थ लिखा है, जो अर्थ करने से स्पष्ट हो जाता है। परन्तु, श्रीमेनारिया ने रचयिता से ही उसका अर्थ ले लिया है जो अशुद्ध है। मन वांछित फल देने वाला 'रसिकराय' है। अत: 'रसिकराय' ग्रंथ कर्त्ता नहीं हो सकता। हमें इसकी ये दो प्रतियां मिली है :—

१. आकार-७½″ × ६½″। पत्र-संख्या १०। पद्य-संख्या १३०। इसमें भी उपर्युक्त दोहा है। परन्तु उसकी क्रम संख्या १२० न होकर १२७ है। प्रति बहुत जीर्ण है।

[ अन्ताणी संग्रह ]

२. आकार-११″ × ५½″। पत्र १३। पद्य-संख्या १२५। लिपिकाल संवत्-१६३१ जेष्ठ कृष्ण १५ भृगुवार। लिपिकार-रतनदास। इसमें रचयिता का नाम मोहनदास दिया हुआ है। इसमें भी प्रथम भागवाला दोहा है। इन दोनों प्रतियों का अन्तिम भाग इस प्रकार है:-

नासत सकल कलेस पुनि ( कों १ ), सुनत बदत ( अरु उपजत १ ) मन मोद।
युगल ( जुगल १ ) चरन मकरंद मन, पावत परम विनोद। ( १ ) १२६। ( २ ) १२४॥

प्रति ( १ ) भमर गीत कोंसो पढ़ें, सुनै सकल चितलाय।
इछया मनि की पूरवै, श्री राम कृष्ण सहाय॥ १३०॥

प्रति ( २ ) श्री मुकंद मन मधुप जहँ, सकल संत अनुराग।
जसुधा प्रेम प्रवाह में, परे रहत वडभाग॥ १२५॥

[ व्रजलाल वैरागी, भींडर ]

( ७५ ) **सन्तदास वाणी संग्रह**। इनकी रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार है:—

प्रति- १. आकार-५·८″ × ३·३″। लिपिकाल-संवत् १८७६। इसमें सन्त-दास की अणभै वाणी के १० अंग, ५६५ साखी; ४ रेखता और २ पद हैं। इसके अतिरिक्त इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

१. रामचरणजी की अणभै वाणी, अनभौ-विलास, सुखविलास, ग्रन्थ नांव प्रताप, शब्द प्रकाश, चिंतावणी, प्रथम रेखता, किवत और राग चरचरी।
२. परमहंस सूरतरामजी की वाणी ( साखी ), कुण्डलियाँ, रेखता, सवैया. झूलणा, किवत ( विभिन्न अंगों में ), कका बत्तीसी, चिंतावण बोध, पदराग चरचरी, चंद्रइणा ( विभिन्न अंगों में ), सुबोध प्रकाश और नांव बत्तीसी।

३. साधां दूल्हरामजी का सबद ।

४. साधां रतनदासजी का प्रसंगी दोहा १६६

५. सरबंगसार का फुटकर सबद ७३६, इसीमें नवधा भक्ति, प्रेम लक्षण निरुपण, साखीदास की चौपाई, समय सार नाटिकां का कित्त, अठारा नांतां कौ ब्यौरौ, मुरलीदास कृत ग्रंथ सतसार, सूर, मीरां और कबीर के महत्त्वपूर्ण पद हैं ।

६. प्रहलाद चरित्र–जनगोपाल्

७. मोहमरद की कथा–जगन्नाथ, तुलसीदास का शिष्य । संवत् १७७६ कार्तिक विद १२ सोमवार ।

८. हरिचंद सत– ध्यानदास । इसका लेखन काल इस प्रकार है:–

उदध दौत करि लीजिये, लेखन भार अठार ।
ध्यांनदास वसुधा लिखे, भगवंत भगति अपार ॥
॥ संवत् १८२७ ॥

९. प्रसणसिणगार– सेवादास कृत, गाजी गिरधरदास के शिष्य ।

१०. एकादस की ध्याई

११. कबीर की साखी ।

प्रति–२. आकार–६·५″ × ४·५″ । पत्र-संख्या-२१८ । इसमें भी निम्नलिखित रचनाएँ संग्रहीत हैं:—

१. संतदास की अणभै वाणी । पत्र-संख्या १४ । पद्य-संख्या १२ ।

२. रामचरण की अणभै वाणी, गुर म्हमा ग्रन्थ, नांव्प्रताप, सबद प्रकास, चिंतावणी, मनखंडण आदि ।

३. मुरलीरांम की वाणी

४. संग्रामदास की वाणी

प्रति– ३ । पत्र-संख्या ४४ ।

( १ ) अणभैवाणी के अंगों की विस्तृत सूचि इस प्रकार है:–

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ( १ ) | १. | गुरुदेव कौ | अंग पद्य १ से | | ६६ |
| | २. | गुरु सम्रथाइ कौ | ,, ,, ७० | ,, | ७१ |
| | ३. | सुमरण | ,, ,, ,, ७२ | ,, | १३६ |
| | ४. | नांव् निरणां | ,, ,, ,, १४० | ,, | १६० |
| | ५. | जीव् | ,, ,, ,, ,, १६१ | ,, | १६५ |

६. नांव् महमां ,, ,, १६६ ,, १९२
७. जीव् ,, ,, ,, ,, १९३ ,, २०१
( २ ) ८. साध- ,, ,, १ ,, ५२
९. ,, महमां ,, ,, ,, ५३ ,, ५५
१०. ,, पारख ,, ,, ,, ५६ ,, ६०
११. ,, परमाथी ,, ,, ,, ६१ ,, ६७
( ३ ) १२. उपदेस- ,, ,, ,, १ , ५४
( ४ ) १३. चिंतावणी ,, ,, , १ ,, १२०
( ५ ) १४. टेक- ,, ,, १ ,, १८
( ६ ) १५. साध संगति ,, ,, १ ,, १६
( ७ ) १६. भगति द्रोही ,, ,, १ ,, ८
( ८ ) १७. जिग्यासी ,, ,, १ ,, ९
( ९ ) १८. ? ,, ,, १ ,, १०

( २ ) रेखता-४

( ३ ) स्तुति के पद २

Indira Gandhi National Centre for the Arts

**आदि भाग-**

अरणभै पद परकासिके, दाइक सत गुर रांम ।
अनंत कौटि जन साहि की, ताहि करूं परंनाम ॥ १ ॥
अंग ॥ सइ गुर का ऐकौ सब्द, मन कोई लेवैं मानि ।
तो सहज होत है संतदास, मुसकलि सूं आसानि ॥ १ ॥

**अन्तिम भाग-**

सीस दीयां सब को कहै, भलां भलां जग मांहि ।
रांम भजन बिनि संतदास, सदगति पहूँचै नाहि ॥ ७ ॥
रांम नाम का मौरछा, सत गुर दिया बताइ ।
अब खेत न छोड़ै संतदास, जौ तगा-तगा हौइ जाइ ॥८॥ अंग १० । साखी ५६३॥

**ग्रन्थकार का विशेष परिचय—**

छंद पद्धरी

नम्र दांतडै भय् संतदास । राम नाम उर दृढ़ उपास ॥
निस दिन रहै राम तज आस । ररंकार छाप सोभंत जास ॥

तज भरम क्रम आन उपास । रह जल कँवल ज्यूँ राग उदास ।
अणभै मुख उचारत बानी । सुनत नर लहे सुख खानी ॥ १ ॥

## छंद शिखरण

सिष्य तास कृपाराम है, सो भये मुक्ति–धाम है ।
रटै रैन–दिन राम है, न और कोई काम है ॥ २ ॥

× × ×

## छंद नराज

उन सिष्य भान ज्यूँ उदोत जग मानिये ।
द्वितीय ब्रह्म रूप रामचरण जानिये ॥
प्रसिद्ध जन महु अनंत जीव त्यार हैं ।
महिमां अनूप जाकी कैसे पावै पार है ॥
अद्वैत मत उधार के द्वैत कूं उखारयो है ।
अहं मम राग द्वेष देहि माना ( ? ) डारयौ है ॥
तीन गुण जीत के ज मेटी सब भीत है ।
काटी मोह जाल सब बिचरे नचींत है ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

× × ×

## छंद निसाणी

उन सिष्य जी राम सेवराजी राम नाम एक गायंदा ॥
काटी जग–जाला दीन–दयाला निद्वंद विचारायंदा ॥
सद्गु सुचरणा जामण-मरणा मेट 'र ध्यांन धरायंदा ॥
राम उपासी द्रढ़ विस्वासी तेजवान बड भायंदा ॥
इती करारी जगत न यारी कनक बाम हटायंदा ॥
भये प्रसिद्ध सब सिष्य मध्य अणभै मुख गायंदा ॥
सुन अणभैं बानी नशै अघ खानी जग मन हुलमायंदा ॥
ज्ञान की छोलं मुक्त अमोलं दे भव दुःख (तुरत) मिटायंदा ॥
सिष्य अनंता मत के मंता राम को ध्यान धरायंदा ॥ १ ॥

## चौपाई

तास सिष्य भए पूरणदासा । राम नाम के द्रढ ऊपासा ।

ज्यूं जल-कवल रहे जगमाही । बैर भाव जग राग न जाही ॥ ११ ॥

× × ×

## मनहर छंद

तास सिष्य जानू ऐक सांची उन गही टेक ।

बड़े तेज बुद्धिवान, नाम श्री त्रस राय है ।

सील संतोष जलीयां राम-रस मुख पीयां

द्वंद उपाधि मेट सारी भजै नित्य रांम है ॥

काछ द्रढ मत द्रढ उर माही ज्ञान द्रढ

कोऊ आवै सरण ताही देत मुक्ति धाम है ।

सो है दीन के दयाल मोकूं कीयो है निहाल

ऐसा गुरुदेवजी कूं वंदै करुणारांम है ॥ १३ ॥

## दोहा

ता सिष करुणारांम है, रचे जीन यह छंद ।

गुरु संत कृपा करो, काटो मम भव बंध ॥ १४ ॥

× × ×

Indira Gandhi National

चरण सरंण मोय दीजिये, काट जगत की पास ।

त्रसरांम म्हाराज के, चरण कवल की आस ॥ १७ ॥

× × ×

बरष उकीसा में भयो, भये स्वेत सब केश ।

सो देख चिंता चित भई, जरा दियो संदेश ॥ २ ॥

× × ×

## मनहर

शशि[१] ग्रह[९] बेद[४] शशि[१] संवत शशि[१] बेद[४] षट[६]

आसाढ शुक्ला सप्तमी[७] अम्रत बेला जानिये ।

संसार असार लख तज्यो जान स्वान भख

रविवार सत गुरु सरणो लीयो मानिये ॥

उदीयापुर सुनाम रामद्वारा म धाम

तपे श्री त्रसराम ऐसी ओपमा को मानिये ।

ओपमा स्वरुप आप मेट्यो मोर भवताप
करुणाराम नाम दीयो सत गुरु जानिये ॥ १ ॥

चौपई

बरष शशि[१] ऋषि[७] उमर माही। जगत जस रणु'लीयो आई ॥
श्री त्रषराम कृपा कीनी। दियो राम भव भय हर लीनी ॥

मनहर

संवत् शशि[१] ग्रह[९] जानू साल नैत्र[२] बेद[४] मानू
माघ मास ऋतु बसंत सुभ लग्न जानीये ।
जनम उत्सव भयो सावा पान (!) दिन गयो
हर्षित सब नारी नर परवार जानीये ॥
जनम नाम कढ़ायो कृष्णलाल सुभ पायो
देश हाडोती नग्र कोटो रामपुरो मानिये ॥ ६ ॥

× × ×

संबत् अंक उलटीये, बेद[४] बेद[४] शशि[१] ग्रह[९] ।
माघ ज शुक्ला पंचमी, रवी पूर्ण भयो यह ॥ ८ ॥
सहर उदेपुर जानिये सर पीछोला तीर ।
जहाँ राम को धाम है, संतन की अति भीर ॥ ९ ॥
नागा नगरी निकट है, श्रीबड़ रांमद्वार ।
तहाँ लिख्यो यो गोटको, करूणाराम विचार ॥ १० ॥

[ बड़ा रामद्वारा, उदयपुर ]

( ७५ ) **सरबंग सार** । रचयिता–नवलराम । आकार–७'६" × ५'६" । पत्र–संख्या ४२६ । रचना काल सं० १८३४ । लिपिकाल-सं० १९०७, फागण सुद-३, बुधवार । लिपिकार-रामदास । इसमें विविध संतों के मत सिद्धान्त, विचार, भावना आदि को लेकर संत साधना सम्बन्धी ४० विषयों का प्रतिपादन किया गया है । यह विविध संतों की वाणियों का सार ग्रंन्थ है । लेखक का उद्देश्य आदि भाग में इस प्रकार दिया गया हैः–

कुण्डलिया

सत गुर मुझि पे मेहरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ।
अबंगसार ए ग्रंथ जो, ताको करूं उचार ॥

ताको करूं उचार, साखी संता की ल्याऊं ।
उकति जुकति परमांण, और अतिहास सुनाऊं ॥
नवलराम सरणै सदा, तुम पत्त हिरदै धरि ।
सत गुर मुझि महरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ॥

किवत

बगसौ बुद्धि विचार, सुरति थरि रहै जु मेरी ।
करूं ग्रंथ सरबंग एक थरि साखि घनेरी ॥
सत पुरषां का सबद सोधिकैं देस मिलाऊं ।
सत गुर के परताप उकति सौ अंग बखाऊं ॥
जुगति जुगत निरणै करूं भव तिरणै की रीति ।
नवल जगत कूं ना रुचै करै ममोषी प्रीति ॥ २ ॥

दुहा

अनंत कोटि जन सिर तपै, रांम चरण उर मांहि ।
आंन भरोसो आंन बल, नवलरांम के मांहि ॥ ३ ॥
रांम निरंजन संत जन, सत गुर दया सुसंग ।
जिनकै बाल बुधि सूं करूं, सुधा समंद अबंग ॥ ४ ॥
प्रथम स्तुति बरनन करूं, आगे और विधांन ।
अधि-मोचन ए ग्रंथ जू, ज्यों 'तिम-मोचन भांन ॥ ५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

**अन्तिम भाग-**

भरमी करमी लछि बिनां, बाचिक बिषी असाध ।
ताकूं ए भावै नहीं, सुणि कै करै विवाद ॥ ११५ ॥
वाद विवाद निवारिऐ, साधू सब्द विचार ।
नवल दोस हम कूं नही, संता भाषैं सार ॥ ११६ ॥
सार रूप ए ग्रंथ है, अरथ जुगति ता मांहि ।
संसक्रत का श्लोक है, बांणी भाषा मांहि ॥ ११७ ॥
साध सब्द गति अगम है, मैं काहा जांनूं भेव ।
नवल हिरदै जन प्रगटे, ग्रंथ भयौ तब एव ॥ ११८ ॥
मेरी कुछि सरधा नहीं, सतगुर क्रपा कीन ।
सांधू रांमदयाल सिरि, नवल भऐ प्रवीन ॥ ११९ ॥
सत संगति सुभ स्वांति सुख, दुख मिटावन जोइ ।

नवल सरणि गुरदेव की, सब ही कारज होइ ॥ १२० ॥
बीतराग निति ब्रह्म जू, रांमचरण कूं जोइ ।
नवल सरणि निज दास की, ग्रंथ बनायो जोइ ॥ १२१ ॥
घटि बधि कोई संकला, अर्थ भेद जो होइ !
सब जन छिम्यां कीजियौ, मैं सरनागति तोहि ॥ १२२ ॥
मेरी बुधि अति तुच्छि है, तुम्हारे सबद अपार ।
नवल कहै तुम महरि सूं, उपज्यौ एह बिचार ॥ १२३ ॥
साहिपुरा निज नग्र मधि, सतगत अति सुभ धाम ।
नवल क्रिया गुरदेव की, अबंगसार ग्रंथ नांम ॥ १२४ ॥

## सोरठा

संबत सौ एहजांनि, अठारासै चौतीस जू ।
पौस बुद्धि परमांन, चतुर्दसी रविवार कूं ॥ १२५ ॥

ग्रन्थ की विषय सूचि:—



Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १७. सन्यास ज्योग सुध बैराग निरूपण | ,, | १४५८ | ८३ | ,, |
| १८. लछि बैराग भेष निरूपण | ,, | १५३५ | ८७ | ,, |
| १९. अडग बैराग खिम्य निरूपण | ,, | १६५५ | ८० | ,, |
| २०. संत महिमा निरूपण | ,, | १६२८ | ८३ | ,, |
| २१. साध लछिण ,, | ,, | १७८६ | ९१ | ,, |
| २२. सीत प्रसाद महमा निरूपण | ,, | १८९८ | १०९ | ,, |
| २३. जीव दया निरूपण | ,, | १९६३ | ६५ | ,, |
| २४. अधम खय कारण दास लषिण निरूपण | ,, | २१३० | ६७ | ,, |
| २५. राम विमुख कथन निरूपण | ,, | २२१७ | ८१ | ,, |
| २६. कुसंग लषिण निरूपण | ,, | २२९३ | ८३ | ,, |
| २७. परधन पर त्याग जोग करम धरम ,, | ,, | २३६८ | ८३ | ,, |
| २८. कीम खंडण निरूपण | ,, | २४९३ | १२५ | ,, |
| २९. सील सुभ्रम ,, | ,, | २६५६ | १६३ | ,, |
| ३०. माया खंड आसालोभ निरूपण | ,, | २७४३ | ८३ | ,, |
| ३१. माया खंड तत्त असत | ,, | २८५२ | १०९ | ,, |
| ३२. काल चिंतामणि निरूपण | ,, | २९८० | १२२ | ,, |
| ३३. मन चिरत निरूपण | ,, | ३०६१ | ८१ | ,, |
| ३४. भ्रम भेद निरूपण | ,, | ३१३५ | ७४ | ,, |
| ३५. भ्रम भेद खंडण मनसा तीरथ निरूपण | ,, | ३२६४ | १२९ | ,, |
| ३६. साध महिमा निरूपण | ,, | ३३८१ | ८९ | ,, |
| ३७. साध पारख निरूपण | ,, | ३४३६ | ८८ | ,, |
| ३८. लछि अलछि पिंडत पारिख निरूपण | ,, | ३५९२ | १३६ | ,, |
| ३९. दर्शन लछि अलछि निरूपण | ,, | ३७१५ | १२३ | ,, |
| ४०. आंन भ्रम खंडन भक्ति मंडण निरूपण | ,, | ३७९४ | ७९ | ,, |

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ७६ ) **सिद्धान्त बोध** । रचयिता-महाराजा जसवंतसिंह । आकार-९″ × ५¾″ । पत्र-संख्या ४५ । पद्य-संख्या १२ ।

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ७७ ) **सिद्धान्त बोल** । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ९ । पद्य-संख्या ६६ दोहे और ३६३ ढाल ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ७८ ) **सिद्धान्त सार** । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-९"×५¾" । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १७६ ।

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ७९ ) **सुन्दरदासजी सवैया** । रचयिता-सुन्दरदास । प्रति १:- आकार-४'३"×३'६" । पत्र-संख्या ५६ । पद्य-संख्या ११४ ।

[ वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर ]

प्रति२-आकार६'५"×४" । पत्र-संख्या १८० । पद्य-संख्या ७६५ । इसीके साथ दादूदयाल की वाणी है जिसकी पत्र-संख्या ३४६, पद्य-संख्या २५०० और लिपिकाल सं० १८४६ है:-

नवसे नवसे कहते हैं, बीस बीस लै और ।
नव ऊपरि फागुन सही, एकादशी गुर भौर ॥

[ चुन्नीलालजी दादूपंथी, बड़ी ब्रह्मपुरी, उदयपुर ]

( ८० ) **सूरतरांम वाणी संग्रह** । रचयिता-जन सूरतरांम । इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । सूरतरांम की रचनाएँ रामद्वारों के कई ग्रन्थों में बिखरी पड़ी हैं । कहीं-कहीं सब एक साथ संग्रहीत भी मिलती है । रामस्नेही पंथ की रचनाओं की एक विशेषता यह है कि उनकी रचनाओं के शीर्षक बहुधा छंदों के नाम पर मिलते हैं । अतः उन्हें एक ही रचना के अन्तर्गत नहीं मानना चाहिये । यह परम्परा कबीर की रचनाओं साखी, अलिफ़ नामा, राग फगुआ, विचार माला, शब्द, हिंडोरा, रेखता आदि के समान विकसित हुई है । जैसे-साखी, ककाबत्तीसी, रागमाला, शब्द, रेखता, कुण्डलियाँ, कवित्त आदि । सूरतरांम की रचनाओं के एक संग्रह का विवरण यहाँ दिता जाता है, जिसका आकार ६'५"×४" है ।

१. बांणी ( साखी ) । पत्र-संख्या २७ । अंग ३५, साखी २६ ।

आदि भाग-

स्तुति का छंद

नमो अमांपं नमौ अथापं नमौ नमस्ते परमदेवं ।
नमौ अजन्मा नमौ सबनमां नमौ नमस्ते नां छेवं ॥
नमौ अलेख्यं नमौ अभेख्यं नमौ नमस्ते भव पारं ।
उंति पति पर लऐ सथ तियाल नमौ नमस्ते निराकारं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

रांम भजै सोही संत है, मत सूं बंधै नाहि ।
जन सूरतरांम हरि भजन बिनि, धकाधकी बोहो खांहि ॥ ६ ॥
धखा खाइ दरबारि मैं, रांम बिना सब कोइ ।
जन सूरतरांम सांची कहै, भ्रिही भेष किन होइ ॥ ७ ॥

॥ इति भेष को अंग संपूरण ॥

२. कूंडल्या । पत्र-संख्या २६ । अंग २५, कूंडल्या ६६ ।

अन्तिम भाग-

संम्रथ ग्यांन बिचारिऐ, सम्रथ सरणूं जौय ।
आन भ्रम बिन्न चारणीं, निति हि परलै हौय ॥
निति हि परलै हौय, भजन बिनि जनम गुमायौ ।
रांम नांम सुख छाडि, भरम संगि पाप कुमायौ ॥
जन सूरतरांम सांची कहै, च्यारि जुगा दुख हौइ ।
संम्रथ ज्ञान बिचारीऐ, संम्रथ सरणूं जौइ ॥ ७ ॥

३. रेखता । पत्र-संख्या ८ । अंग ६, रेखता २१ ।

अन्तिम भाग-

खेत कूं हाकि कै बोहौती दई खात भी नांखी पलाव कीन्हा ।
मैंजड़ा फेरि कै खूब भी करि रख्यां घास अर फूसि कूं डारि कीन्हा ॥
बीज औरै नहीं कालजा कटि है खेत कूं देखिकै खुसी होई ।
वसि ही व्रत करि कूंण सुख पाईया बींद बनि जान बेकांम जावै ॥
जन सूरत ही रांम अब समझ करि देखीऐ सीस बनि धड़ कसि कांम आव ॥ ८ ॥

४. सवईया। पत्र-संख्या १०। अंग १६, सवईया ४०।

अन्तिम भाग–

ऐसे बेईमांन गुलांम हलांम है जासकी बुद्धि में सुधि नहीं कोई।
रांम तजै अर दांम भजै सुनि सांग काछयौं जैसे रावल मोई॥
सेवग जाट 'र माली कीया सट खेत खलै दुख ही दुख रोई॥
सूरतरांम ऐ रांम सूं वै मुख आग लीया छली दोन्यूं ही खोई॥ २॥

५. भूलणा। पत्र-संख्या २। ५, भूलणा ७।

अन्तिम भाग–

अरे नर मूरिख चेति बेगी पल मांहि सौ कोल उड़ावता है।
तीन हीं लौक की कुण चलौ ब्रंह्मा बिसन कूं खावता है॥
तू दिन रैनि भजै नहीं रांम कूं रांम बिना दुख पावता है।
जन सूरतराम अकाल भया निति ब्रंह्म सूं ध्यान लगावता है॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

६. किवत। पत्र-संख्या ४। अङ्ग ६, किवत १४।

अन्तिम भाग–

दुनियां बड़ी कुरंग, जासके एक न रंगा।
नांनां इसट उपाइ, तास कौ मन वौ भंगा॥
रांम नांव कूं छांडि, आन कूं सीस नवावै।
अपण फिरतब पूजि, रांम कूं पूठि दिखावै॥
म्हान्निसट संसार है, जामैं लच्छिन नांहि।
जन सूरतरांम सांची कहै, भग्या काल मुखि जांहि॥ ३॥

७. नांव बत्तीसी। पत्र-संख्या ७। छंद भंपाल, ३२।

आदि भाग–

सूरतरांम करै प्रमहंज जू, रांम गरू सूं बंदनं।
नांव महातम करू बतीसी, जाति सबद की छंदनं॥
सुनत ही भ्रंम क्रंम सब भागै, उपजै नांव जिग्यासा।
नांव म्हातम परमपरा सूं, धरि चित ल्यौ पदबासा॥ १॥

८. कका बत्तीसी । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ३२ दुहा ।

**आदि भाग–**

सतगुर कूं निति बंदनां, निमसकार निति रांम ।
सब संत की म्हरि ग्रंथ करूं, ककाबतीसी नांम ॥ १ ॥
कका क्रिपा करि गुर देवजां, लयौ सरण गति मोहि ।
दीयौ भजन निज ब्रह्म कौ, सारथा कारिज सोइ ॥ २ ॥

**अन्तिम भाग–**

ससा सतगुर की दया, कीयौ जीव कूं पार ।
अैसे गुर कूं कीजीऐ, बंदन बारु बार ॥ ३१ ॥
हहा हरि गुर महरिकरि, दई बुद्धि ऐह मोहि ।
एह ग्रन्थ सुणि हरि भजै, ताकौ कारिज सहजै होई ॥ ३२ ॥
कका बतीसी ग्रन्थ मधि, भाष्यौ सुमरण सार ।
बांचि बिचारै जौ कोई, जन सूरतरांम होइ पार ॥ ३३ ॥

९. पद राग चरचरी । पत्र-संख्या २० । पद्य-संख्या पद ४६, साखी २ ।

**आदि भाग–**

देखौ रे सतगुरजी दाता, ऐसा राहा चलाया हैं ।
भरम करम सब दूरि निवारया रांम नांम पिछणाया हैं ॥ टेक ॥
जाकूं रटत मन सुद्ध 'ज हुँवा, प्रेम प्रीत उपजाया हैं ।
उनके चरण सरण सुख पावै, जनम-मरण मिटिजाया हैं ॥ १ ॥
भाग भला जब रासण होई, ऐसा सतगुर पाया हैं ।
जनकी म्हमा अगम अगोचर, ब्रह्मा वेद स गाया हैं ॥ २ ॥
सिव सनकादिक वै ही ध्यावै, सोही तत बताया हैं ।
ऐक नांव की न्हचै राखै, परमपद सुख पाया हैं ॥ ३ ॥
जन सूरतरांम का सांसा भागा, रांमचरण गुर पाया है ।
तन मन की सब आस निवारी, ध्यान अखंडत ल्याया है ॥ ४ ॥

**अन्तिम भाग–**

साखी

हरिजंन अैसा चाहिऐ, औषदि का सा रूप ।
दुख मेटे सुख ऊपजै, जन सूरतरांम अनूप ॥ १ ॥

साधू अैसा चाहिऐ, तन सू रहै उदास ।
रामभजन निसि दिन, जन सूरतराम गुर पास ॥ २ ॥

१०. चंद्रइणा । पत्र-संख्या २३ । अंग २१, चंद्राइणा ३५ ।

अन्तिम भाग-

कौई मुख ह्वे रहै है बात कौ करत हैं ।
कौ कथियौ था ग्यांन का जन ही सरत हैं ॥
कौ देवी को ध्यांन रूद्र कौ ध्यात हैं ।
परि हाँ सूरतरांम भजि रांम ब्रह्म पदपात हैं ॥ ३ ॥

११. सुख बौध कौ छटौ प्रकरण । पत्र-संख्या । इसमें किवत, अरेल, सरोठा, चौपई, कूंडल्या, झंपाल, निसांणी, साखी, त्रिभंगी, चंद्राइणा, सवइया, मनहर, चांमर, छपै, दुहा, रेखता–कुल ६५ पद्य हैं ।

आदि भाग-

किवत

बरकति बिरति बिचारी अरपि आपौ तुम गावौ ।
बरणि दस अवधूत रीति सूँ मौहि सुनायौ ॥
अबै साध कौ संग साध महमां सौ गावौ ।
पारख साध असाध जिनूँ की रैसि बतावौ ॥
सत संगति अर साध संग भयौ भलै प्रकार ।
जन सूरतरांम उरि सिख के सुन सैं प्रीति अपार ॥ १ ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ८१ ) **ह्वाल बोध** । रचयिता-रांमजन । पत्र-संख्या ११ । पद्य-संख्या दोहा १०, चौपई ६१ ।

आदि भाग–

करो फकीरी रांमजन, रे मन ह्वाल बिचार ।
सुमर राम रमतीत कूं, अपनौ आपौ तार ॥ १ ॥
आपौ तारौ रांमजन, तौ निज ह्वाल समाय ।
निरदावैं निर बासनां, सत गुर सिख्या पाय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

कर जोडै करणां करै, सुणज्यौ दीन दयाल ।
माहा कठिन कलू काल मै, आप निभावौ हाल ॥ ६९ ॥
आप निभावौ हाल ऐह, सतगुर रांम निधान ।
रांमजन मन बंच करम, ऐ मांगत करदान ॥ ७० ॥
ऐही मांगत हूं सदा, राम गरू कै पास ।
रामचरण पद रैणं कौ, रामजंन नित दास ॥ ७१ ॥

सूचना-इसीके साथ रामजन कृत 'ज्ञान-प्रमोद' । है जिसकी पद्य- संख्या ३६७ है।

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

———

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

## ( २ ) काव्य, साहित्य–शास्त्र, इतिहास आदि....

( १ ) **कवित्त रामायण** । रचयिता–तुलसीदास । आकार–११·२"×५·२" । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या २८७ । लिपिकाल–सं० १८५१ । इसी के साथ तुलसीकृत 'रामचरित मानस' की भी तीन प्रतियाँ मिली हैं । मेरे पास भी एक प्रति सं० १६०१ की लिपिकृत है ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( २ ) **खुम्माण रासो** । रचयिता–पं०दौलतविजय । आकार–१०"×४·४" । प्रति अपूर्ण है । इसके केवल चार पत्र हैं । प्रति पत्र पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५५ अक्षर हैं । ६५ छंदों में अजेसी, 'लषमसी अरसी अधिकार समय' समाप्त हुआ है । अंत में रचयिता का नाम पं० दौलतविजय गणि दिया गया है । अतः यह प्रसिद्ध 'खुमाण रासो' का कोई भाग है । इसमें अजेसी, लषमसी, अरसी, हम्मीर आदि का चित्तौड़ के लिये अलाउद्दीन के साथ युद्ध का वर्णन है । इसमें यद्यपि कोई रचनाकाल या लिपिकाल नहीं दिया है परन्तु इसके अंत में दिया हुवा यह दोहा बहुत महत्व पूर्ण है:—

'संब्रत्सर संवत्त में, तेरे से तेताल ।
आथडिया हिन्दू असुर, धरा करे धकमाल ॥'

आदि भाग–

गाहा

गौरी गुणे गहिरम् । गिरिं तनया माय देहि वर वित्तं ।
भय हरि भगति भीरं । चामुंडा होय इक चित्तं ॥ १ ॥

दूहा

कमल वदन कमलासनी, कवि उर मुख कैलास ।
वसे सदा वागेश्वरी, विधि विधि करे विलास ॥ २ ॥
कवि दीजे कमला कला, जोडण कवित जुगत्ति ।
सुरिज वंस तणो सुजस, वरणव करू विगत्ति ॥ ३ ॥
गढां मुगट चित्तोडगढ, राजे राण हमीर ।
चित्तोडो ढलते चमर, वडो अडुवाहो वीर ॥ ४ ॥
कहु तास गुणरी कथा, सुणज्यो सवण सुचित्त ।
एवे घालक वातां विहद, विधि विधि कथ विगत्त ॥ ५ ॥
पुहवि पति पहि उप्पडे, लोह लगायो गास ।
अनड पहीमो अरसि सुज, नृप तिहाँ कियो निवास ॥ ६ ॥
गढ दिल्लीपति गंजियो, दीनो गड सर सल्ल ।
सभियो गढ़ सोनिम्गरां, अेके गढ अणहल्ल ॥ ७ ॥
सिसोदो सायर नयर, हे सु अरसी राण ।
एक दिवस आखेट के, चढिया श्री दीवाण ॥ ८ ॥

गाहा

चोसर चिरचा गिर घमसाणं। जूडा एकल्ल सुभट जुब्वाणं ।
धार अणी अवसाणं । गोली पंखाल गणणं ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग–

बावीसे बेटा हुंती, घटि घटि आये काम ।
गढ कज्जे गढ लषमसी नवखंड रख्यो नाम ॥ ५ ॥
वरस अठारे वीस दिन, रिवु अजेसी राण ।
पाट बेटि पडतालिया, पुरडिया मुगलाण ॥ ६ ॥
मुच्यो नहि मुगलाण पति, समसद्दी सुरताण ।
कटचो गढ किल्लो करे, पनरे वरस प्रमाण ॥ ७ ॥
दिसि दिल्ली दिठ्ठी नहीं, विढियो वारण वेर ।
पितु वेरे आपही पडे, सुज्ज गहेस मरोर ॥ ८ ॥
संवतसर संवत्त में, तेरे से तेताल ।
आथडिया हिंदु असुर, धरा करे धकपाल ॥ ६ ॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भंडार, भींडर ]

**( ३ ) गोराबादल पदमिणी चउपइ ।** रचयिता–हेमरतन ।

इस ग्रन्थ के कई संस्करण और प्रत्येक संस्करण की कई प्रतियाँ मिलती हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यह रचना किसी समय बहुत प्रचलित थी । राजस्थान के बाहर भी इसकी प्रतियाँ पहुंच चुकी हैं जिनमें से नागरी प्रचारिणी सभा काशी, गुजरात विद्या-सभा, अहमदाबाद, ऑरिएण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा और भण्डार इन्स्टीच्यूट पूना के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । इनके अतिरिक्त कई जैन भण्डारों में भी इसकी प्रतियाँ मिलती हैं । मैंने इस कृति का सम्पादन किया है जो अब 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर' द्वारा प्रकाशित हो रही है । अतः इसके विषय में यहाँ अधिक न लिख कर कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ही लिखी जाती हैं ।

इस कृति का मूल लेखक हेमरतन है । संवत् १६४५ में हेमरतन ने सादड़ी ( छोटी ) में महाराणा प्रताप के मंत्री भामाशाह के छोटे भाई ताराचंद के आग्रह से इसकी रचना की । इसकी सबसे प्राचीन प्रति श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है जिसकी सम्पूर्ण फोटो प्रति उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई । इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है:–

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

बादल राउत नी ए कथा । सुणतां नावइ निज घटि व्यथा ॥
रोग सोग दुख दोहग टल'इ । मन ना सयल मनोरथ फल' इ ॥ ६०८ ॥
पूनिम गछि गिरूआ गणधार । देव तिलक सूरिसार सार ॥
ग्यान तिलक सूरीसर तास । प्रतपइं पाटइ बुद्धि निवास ॥ ६०९ ॥
पदमराज वाचक परधांन । पुहवी परगट बुद्धि निधांन ॥
तास सीस सेवक इम भणइ । हेमरतन मनि हरषइ घणइ ॥ ६१० ॥
संवत् सोलइ सइं पणयाल । श्रावण सुदि पंचमि सुविशाल ॥
पुहवी पीठि घणुं परगड़ी । सबल पुरी सोहइ सादड़ी ॥ ६११ ॥
पृथवी परगट राण प्रताप । प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप ॥
तस मंत्रीसर बुद्धि निधांन । कावेड्या कुलि तिलक समांन ॥ ६१२ ॥
सांमि धरमि धुरि भामुंसाह । वयरी वंस विधुं सण राह ॥
तस लघु भाई ताराचंद । अवनि जाणि अव तरिउ इन्द्र ॥ ६१३ ॥
ध्रूय जिम अविचल पालइ धरा । शत्रु सहू कीधा पाधरा ॥
तसु आदेश लही सुभ भाइ । सभा सहित पांमी सुपसाइ ॥ ६१४ ॥
वात रची ए बादल तणी । सांमि धरमि ए सोहामणी ॥

वीरा रस सिणगार विशेष । रस बेरस अछइ सविसेष ॥ ६१५ ॥
सुणता सवि सुख समंद मिलइ । भणतां भावटि दूरइं टलइ ॥
ऊजम अंगि हुइ अति घणउ । मुहकम जाणइ करि मंत्रणउ ॥ ६१६ ॥
षट सित षोडस गाथा बंधि । सुणिउ तिसु भाष्यु संबंधि ॥
अधिकऊं न जे उच्चरिउं । मयण सुणी ते करयो खरुं ॥ ६१७ ॥
सामि धरम पालंतां सदा । सगली आवइ घरि संपदा ॥
सुर नर सहू प्रसंसा कर'इं । वरमाला ले लखमी वर'इं ॥ ६१८ ॥

इति श्री गोरा बादिल चरित्रे । बादिल जय लक्ष्मी वर्णनो नाम प्रथम खंडः । संवत् १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५ ।

इससे यह स्पष्ठ होता है कि हेमरतन ने एक से अधिक खंडों में इस काव्य की रचना की हो। परन्तु इस प्रथम खंड से आगे की कथा अब तक कहीं प्राप्त नहीं हुई। हमें अब तक जितनी प्रतियाँ प्राप्त हुई उसमें गोरा बादल की कथा ही मिलती है, जिससे हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि यदि हेमरतन ने पद्मिनी के सती होने तक की रचना की होती तो वह अवश्य ही कहीं न कहीं प्राप्त होती, क्योंकि प्रथम खण्ड का प्रचार सर्वत्र दिखाई देता है और अन्य कई लेखकों ने इसका भाषान्तर कर क्षेपकों द्वारा विविध संस्करण भी तैयार कर दिये थे। यह हमें मानना पड़ेगा कि शीर्षक 'गोरा बादल पद्मिणी चउपई' के अनुसार यह कथा बिलकुल पर्याप्त है। अतः लिपिकार ने भूल से ही 'प्रथम खंड' लिखा है; अथवा इस कथा को आगे बढ़ाने की लेखक की इच्छा रही हो—यह सम्भव है।

इस विषय का अध्ययन करने पर हमें यह विदित हुआ कि संवत् १६४५ में हेमरतन ने सम्भवतः जायसी के पद्मावत से प्रेरित होकर इस काव्य की रचना की। रचना साहित्यक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसमें काव्यगत डिंगल के प्रभाव से रहित राजस्थानी है और उस पर ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट देख पड़ता है। इसी में क्षेपक जोड़ कर संवत १७६० में भागविजय ने ( अथवा संग्रामसूरि ने ) एक नया संस्करण तैयार किया। परन्तु भागविजय की कोई कृति अब तक हमें नहीं मिली। संग्रामसूरि की कई प्रतियाँ मिलती है उसमें भागविजय शब्द अवश्य आया है परन्तु उसका अर्थ किसी व्यक्ति के अर्थ में लेना संदेहास्पद है, क्योंकि संग्रामसूरि ने स्वयं अपनी प्रशस्ति में हेमरतन का उल्लेख कर उसमें क्षेपक रखना स्वीकार किया है। संवत् १६८०-८५ के लगभग जटमल ने 'गोराबादल री कथा'

की रचना की जो हेमरतन का एक संक्षिप्त संस्करण मात्र है। जटमल ने भी हेमरतन की भाषा और छंदों में थोड़ा-सा हेर-फेर किया। इस पर हम अलग लेख लिख कर बतावेंगे कि कहाँ किस लेखक ने कितना अंश हेमरतन से लिया है। संवत् १६०७ ( या १७१७ ) में लब्धोदय अथवा ( लब्धोदय के लिये ज्ञानराज ने ) इसी रचना को गीतों की ढाल में ढाल दिया। इन संस्करणों की कई प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जाता है:—

१. हेमरतन-कृत गोरा-बादल पद्मिणी चउपई। रचनाकाल संवत् १६४५। सबसे प्राचीन लिपिकृत प्रति संवत् १६४६ की है, जो श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है। इसमें पद्य-संख्या प्रशस्ति के अनुसार ( ६१६ + २ ) ६१८ है।

आदि भाग–

सुख संपति-दायक सकल । सिधि बुधि सहित गणेस ।
विघन विडारण विनय सुं । पहिली तुझ प्रणमेस ॥ १ ॥
ब्रह्म विष्णु शिव सइं मुखइं । नितु समरइं जसु नांम ।
ते देवी सरसति तणइ । पद युगि करुं, प्रणांम ॥ २ ॥
पदमराज वाचक प्रभृति । प्रणमी निज गुरु पाइ ।
केलवस्युं सांची कथा । कांणि न आव' इ काइ ॥ ३ ॥
नव रस दाखइं नवनवा । सयण सभा सिणगार ।
कवियण मुझ करियो कृपा । वदतां वचन विचार ॥ ४ ॥
वीरा रस सिणगार रस । हासा रस हित हेज ।
सामि--धरम--रस संभलु । जिम हुइ तन अति तेज ॥ ५ ॥
सामि-धरम जिणि साचविउ । वीरा रस सविसेष ।
सुभटां महि सीमा लही । राखी चित्रवट रेख ॥ ६ ॥
गोरा रावत अति गुणि । बादिल अति बलवंत ।
बोलिसु वात बिहुं तणी । सुणयो सगला संत ॥ ७ ॥
रतनसेन राजा तणइ । छलि हूआ अति छेक ।
गोरा बादिल बे गुणी । सत्तवंत सविवेक ॥ ८ ॥
युद्ध करी जिम जसलीउ । वसुहा हूआ विख्यात ।
चित्रकोट चावउ कीउ । ते निसणउ सहूवात ॥ ९ ॥

इसमें राजस्थानी का वयणसगाई अलंकार ध्यान देने योग्य है। अन्तिम भाग ऊपर दिया जा चुका है।

दूसरी प्रति। लिपिकाल-संवत १६६१। इसमें पद्य-संख्या ७०३ हैं। आकार-१०″×४½″। पत्र-संख्या २०।

[ मुनि जिनविजयजी से प्राप्त ]

तीसरी प्रति। लिपिकाल-संवत १७२६ आकार--३¾″×४½″। पत्र-संख्या २६। पद्य-संख्या ७१२।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

चौथी प्रति। लिपिकाल--संवत् १७८५। आकार--६″×५″। पत्र-संख्या १०२। पद्य-संख्या ७६५।

[ भण्डारकर इन्स्टीच्यूट, पूना ]

२. भागविजय [ या संग्रामसूरि कृत ] पद्मणी चौपई। रचनाकाल-संवत् १७६०। इसकी निम्नलिखित प्रतियां प्राप्त हुई।

पहली प्रति। आकार--१०″×४″। पत्र-संख्या ३१। पद्य-संख्या ६१७। इसमें कोई लिपिकाल नहीं है। संभवतः मूल प्रति हो।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

दूसरी प्रति-वही है जिसका उल्लेख रिपोर्ट के प्रथम भाग के पृष्ठ ५३ पर विवरण ( ६६ ) में श्री मेनारिया ने हेमरतन समझ कर किया है। इसकी पूरी प्रतिलिपि मेरे पास है, उसकी प्रशस्ति का वह भाग यहाँ उद्धृत करते हैं जो प्रथम भाग में उद्धृत अन्तिम भाग के पद्य-संख्या ६११ से ऊपर का है, और जिसे श्री मेनारिया ने उद्धृत नहीं किया। सभी प्रतियों में यह अंश मिलता है। इसीसे यह स्पष्ट हो जायगा कि हेमरतन का ही यह परिवर्द्धित संस्करण है:-

पदमराज वाचक परधांन। पुहवी प्रगट सकल गुणवांन ॥
तास सीस मन रंगै घणै। हेमरतन वाचक इम भणै ॥ ६०६ ॥
वात रची ए वादल तणी। सांम धरम अति सोहामणी ॥
वीरा रस सिणगार वसेष। सील धरम पदमिण सुविवेक ॥ ६०७ ॥
सुणतां सुख चतुराई वधै। नीत रीत सूरातन सधै ॥

ऊजम तेज हुइ अति घणो । विविध करी जांणै मंत्रणो ॥ १०८ ॥
सांम धरम पालंतां सदा । पामै घरि नव निधि संपदा ॥
सुर नर सहु प्रसंसा करै । वरमाला ले लिखमी वरै ॥ १०९ ॥

कलश कवित्त

हेमरतन की बुद्धि, छंद चोपई प्रथम कीय ।
अब कछु वयण विसेष, सुकविराज सगुण थपीय ॥
सुदिढ़ बंध 'संग्रामसूरि', चित बेधक वाइक ।
कवित दुहा चोपइ, धरै नौतन जहां लाइक ॥
महिलात ग्रंथ उज्जल कली, त्रीय सरूप भूषण सभै ।
रंग रेख भरे चित्रांम, सिर गुल क्यारी उपवन मभै ॥ १० ॥

तीसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७८३ ।

[ आरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा ]

३. लब्धोदय ( या ज्ञानराज ) कृत पद्मिणी चरित्र (प्रबंध) । रचना काल-संवत् १७०६-७ । इसमें हेमरतन की उसी कथा को गीत की ढालों में ढाल दिया गया है ।

पहली प्रति । लिपिकाल सं० १७५२

[ सरस्वती भवन, उदयपुर ]

पहले भाग में श्री मेनारिया ने पृ० ५२ पर विवरण (६८) पर संवत् १८२३ की जिस प्रति का वर्णन किया है वह भी सरस्वती भवन [ पूर्वनाम सरस्वती भण्डार ] की है वह बहुत अशुद्ध है । इन दोनों की प्रतिलिपि मेरे पास है । इन दोनों प्रतियों में भी काफी अन्तर है, फिर भी इस प्रति का विवरण श्री मेनारिया ने नहीं दिया ।

दूसरी प्रति । आकार-१३½" × ८½" । पत्र-३३ । इसमें ५६ चित्र है । कुछ बहुरंगी हैं तथा कुछ केवल मसि से चित्रित है । कला की दृष्टि से चित्र बहुत साधारण हैं । लिपि घसीट और बहुत अशुद्ध है । इसके आदि भाग के दोहे हेमरतन की रचना से मिलते हैं । अन्तिम भाग प्रथम भाग में उल्लिखित पद्य-संख्या ८०० तक बहुत पाठान्तर लिये हुए हैं जिसकी संख्या ८२६ है । लिपिकाल सं० १८६५ ।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

तीसरी प्रति। आकार-९"×६·२" । पत्र-संख्या ६१ । लिपि शुद्ध और सुन्दर है। अक्षर मोटे हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्तिमें १७-१८ अक्षर हैं। प्रबन्ध तीन खण्डों में विभाजित है:—

प्रथम खंड—१४४ छंद

द्वितीय खंड—१५६ छंद

तृतीय छंड—५११ छंद

योग ८११ छंद

अन्तिम भाग-

श्री सुधरमी स्वामी पाट परंपरा रे, सुविदित गछ सिणगार।
श्री खरतर गछ श्रीजिनराज सूरीसरू रे, आगम आरथ भंडार ॥ ४ ॥
तास पाट उदयाचल दीपें करूँ रे, श्री जिन रंग वखांण।
रिझियां जिण साहिजिहांन दिल्लिसरू रे, करि दीधी फरमाण ॥ ५ ॥
तास हुकम संवत सतर श्रीडो तरे रे, श्री उदेपुर सुवखांण।
हिंदूपति श्री जगतसिंह रांणो जिहां रे, राज करें जगभाण ॥ ६ ॥
तास तणी माता श्री जंबूवती कही रे, निरमल गंगा नीर।
पुण्यवंत षटदरसण सेवा करें सदा रे, धरम मूरति मन धीर ॥ ७ ॥
तेहतणां परधान जगत में जाणीइं रे, अभिनव अभय कुंमार।
केसर मंत्री सर सुत अरि करि केसरी रे, हंसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिण वा पूजा हेतें ··पुरंधरु रे, कामदेव अवतार।
श्रेणिक राय तणी वरि गुरु भगवा पहिरे, मंहमुगर सिणगार ॥ ६ ॥
पाट सात पछे जिणदेव मेवाड में रे, थाप्यो गछ सिर थोभ।
कटारिया कुलदीपक जसि जेहने रे, श्री खरतर गछ सोभ ॥ १० ॥
तस बंधव डुगरासी तेवाणे दीयतो रे, भागचंद कुल भांण।
विनयवंत गुणवंत सोभागी सेहरो रे, वडदाता गुण सुजांण ॥ ११ ॥
तस आग्रह करि संवत सतर सतोतरें, चेत्र पूनिम शनिवार।
नवरस सहित सरस सबंध वीरच्यउ रे, निज बुद्धि नें अनुहार ॥ १२ ॥
श्री जिन माणिकसूरि प्रथम शिष्य परगडो रे, वाचक नयसमुद्र।
तास सीस वड वषती जगमें जाणीये रे, श्री हर्ष विशाल अक्षुद्र ॥ १३ ॥

"संवत् १७६१ वर्षे मासोत्तम माघ कृष्ण दश्म्यां कुज्रौ लिखिता ॥ सकल पंडित श्री ५ श्री मतिविजयगणि तत शिष्य पं०जसवंतविजयेन लिपिकृता ॥

इसीके साथ संग्रह में निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

१. भगवती छंद ( सं०१७६१ )–जसवंतविजय कृत

२. शलिभद्रमुनि चरित्र ( सं०१७६२ )

३. कपड़ कतोहल

४. क्षेत्रपाल छंद

५. पनरेति रा दूहा

६. बारेंमासा रा दूहा

७. कृष्ण बारामास्यो

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

चौथी प्रति। ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा।

( ४ ) **जगद्विनोद** । रचयिता–पद्माकर। इसकी तीन प्रतियाँ हैं।

१. आकार-११" × ७" । पत्र-संख्या--१३६। लिपिकाल संवत् १६०७। इसके साथ 'प्रवीणसागर' भी जिल्द्बंध है।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

[ सरस्वती भंडार, भींडर ]

२. ठीक उपरोक्त ढंग की 'प्रवीण सागर' सहित है।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

३. आकार–८" × ६" । पत्र-संख्या– १०६। पद्य-संख्या–७२७। लिपिकाल संवत् १६२७।

आदि भाग–

दोहा

सिद्ध सदन सुन्दर वदन, नँद नंदन मृदु मूल ।
रसिक सिरोमनि सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥ १ ॥

पुष्पिका–

"इतिश्री कूर्मवंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंघाज्ञस मधरा स्थानो मोहनलाल भटालज कवि पद्माकर विरचितं जगत विनोद नाम काव्य सम्पूर्णम् ॥"

[ माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर ]

( ५ ) **दीपंगकुल प्रकाश** । रचयिता-दधिवाडिया कमजी । आकार-१६″ × १०″ । पत्र-संख्या ४२ । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ । १६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या- ४६० । अन्त में एक अपूर्ण छप्पय है। इसमें डोड़िया राजपूतों का इतिहास है।

आदि भाग-

दुहा

रस कपोल सुरभित (र) नरष, माचे सोर मलिंद ।
ईस पुत्र मोदक असन, गण नायक जग बंद ॥ १ ॥

छप्पै

सुरसति गुणपति सकत, उकत दीजिये अपारां ॥
दाखु ं जस डोडीयां, मनोहरसीह मयारां ॥
गढ लाहो अग जीत, कीत दस देस कहाई ॥
तण जोरावर तटै, दिये नाहर विरदाई ॥
पीढियाँ सु ं जल चाटण पथां, नेक बिरद थाटण नवां ॥
दरगाह राण मड डोडिया, एक एक बधता हुवा ॥ २ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अन्तिम भाग-

सोरठा

जैसो आगर जोय, बले जोय बंधव बलू ।
कू ंतां पूत ज होय, सूर सहो बड सारखा ॥ ४६ ॥

छप्पै

पुन्यात्तमा पुरस्स, हुवो नवलेस सिंघ हर ।
पंडित कवि पोपया, सदा पूजन परमेश्वर ॥
( ग्रन्थ आगे अपूर्ण है )

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ६ ) **पृथ्वीराज रासौ** । रचयिता-चंदबरदाई ।

इसकी ६ प्रतियों का विवरण प्रथम भाग के ५५ से ७० पृष्ठों तक दिया गया है। अतः उसके पश्चात् रासो की जो प्रतियां खोज में प्राप्त हुई हैं उनका विवरण हम नीचे देते हैं—

प्रति–१।

आकार–११" × ६३/४"। इसके कुछ पत्र ही प्राप्त हुए हैं, जो 'माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर' में सुरक्षित हैं। पत्र बहुत प्राचीन हैं, और दो स्थानों पर मुड़े हुए होने के कारण तीन भागों में बँट गये हैं। बीच में दो सल हो गये हैं जहाँ के कुछ अक्षर भी घिस गये हैं। अक्षर जमे हुए और मोटे हैं पर इतने प्राचीन हैं कि सामान्य व्यक्ति से नहीं पढ़े जा सकते। इनमें मात्राएँ पीछे लगी हुई है और हिं, नि, ज्जि, जि, जो, च, छ, य, थ, रे, ले आदि अक्षरों में बहुत प्राचीनता देख पड़ती है। इस प्रति में कागज, लिपि और भाषा तीनों में प्राचीनता देख पड़ती है, जिससे अनुमान होता है कि यह प्रति कम से कम सं० १४०० के लगभग की होनी चाहिये। परन्तु दुख की बात है कि इस प्रति के केवल थोड़े से पत्र ही प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५३ अक्षर हैं। पत्र १३ के नीचे का १/३ भाग इसके साथ मिला है जिसमें दोनों ओर सात-सात (१४) पंक्तियाँ है। शेष २/३ भाग अप्राप्य है। इसी प्रकार आगे पत्र १४ का ऊपर का १/३ भाग नहीं है, जो ७ पंक्तियों का टुकड़ा है। आठवीं पंक्ति के कुछ अक्षर भी उसी के साथ गये हैं। पत्र १३ के १/३ भाग के एक ओर छंद ३६१ का अन्तिम भाग है और दूसरी ओर ऊपर छंद ३८७ समाप्त होता है। और नीचे छंद ३६१ आरंभ होता है। पत्र १४ के प्राप्त २/३ भाग के आरंभ में छंद ३६५ समाप्त होता है। इस छंद का आदि भाग अप्राप्य टुकड़े में रह गया है। यह २/३ भाग वाला पत्र दूसरी ओर छंद४०२ पर समाप्त होता है। आगे ७०७ छंदों तक एक ही विषय चलता है, जहां अंत में 'राश केसु चरित्र' समाप्त लिखा है। आगे 'राजा विलासन शुक चरित्र' आरम्भ होता है, जो ६८ छंदों में समाप्त होता है। इसके आगे आरम्भ होने वाले समय का नाम नहीं है। परन्तु, २८ पत्रों तक के हांशिये पर 'कनवज्ज' लिखा है। शेष पत्रों के हाँशिये फट गये हैं। इसके प्राप्त पत्र १४ से ३१ तक हैं।

पत्र १३ के १/३ का प्रथम पृष्ठ

.............................................................राजह ।

एकति सूढ़ि आषारि एकति मांडि गय गयारह ॥
पुरतानेर उरह कटार करि परिग षेत तुरत न जिय ।
जिहिं जूध मूध चहुवांन सूं प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥ ३६१ ॥

परथु गूंज गहिलोत नाम गोयंद राजवर ।
दाहिमु नरसिंघ परथु नगवर जाशधर ॥
परथौ चंद पुंडीर वदन पिष्यौ मारंतु ।
सोरंग सारंग परथु असिवर भारंतु ॥
कूरमोराय पालंनदे बंधव तीन निहट्टिया ।
कनवज्जराय पहिलि दिवस सुभिसत्त निघट्टिया ॥ ३६२ ॥

पजूनह उपरहि राज प्रथीराजरा पुंतु ।
गरूओ राउ गोविंद धाय अधायस संतु ॥
चाय चित्त चहुवांन कींन कींतु कर उभु ।
रा रंडा ढिल्लरी आज लडि मन दुभु ॥
धाराधिनाथ धारंग धर.........कीनु रुदन ।
चामंडराज मुक्यु सुग्रह रषन छित्ति छत्रीअ दहन ॥ ३६३ ॥
अरध रयन चंदनी अरध अंगि अंगिया ।
भो..................................................

[ आगे सब फट गया है ]

**पत्र १३ के ? का द्वितीय पृष्ठ**

...........................................गुन सुधारस ।
तुमहि क............ति राज प्रथम कारण काम कस ॥
हम काज आज शिर उप्परि बाग धार रा......... ।
...ज चू राय ढिल्लीय सुधी दु......भर सजि दल ॥ ८७ ॥
मिं जान्यो पहिलूत एह कारण कत राजन ।
मरण पछिक कयमास मत जानि नही आजन ।
म............पकरिय सब लोकह सो जांनिय ।
एह कथ पहलूणि शनशन मई बांनिय ॥
मृत्यु शु एह कारण प्रथम............प्रथीराज किय ।
षंड सु अब अरी हरउ कशि लोक सुजीतु काजि जिय ॥ ८८ ॥

**दोहा**

संजोगिनि तनि निरषि, सुफल जम्म नृप मांनि ।
काम कसाए लोअने, हन्यो मदन सरतानि ॥ ८९ ॥

सुधि भूली संग्राम की, भूली अपनी देह ।
जो न भया वसि पंगुदल , सुभयो वाम वसि नेह ॥ ६० ॥
तेम चरन कर मुष उर, विकसत कमल अका- ।
........................................................ ॥ ६१ ॥

पत्र १४ का १-आठवीं पंक्ति से–

.......................लान...................... ॥
हराय जामाते .................. ष पमारतथ ॥
शासतु पूर दिशि पुच्च पंच । रष नह राज सजि सुसंच ॥
नार नाह कत पामार जित्त । उदित उद्दोत्त रवि सुमित्त ॥
हाहुलीराज हंमीर तथ । जघील राउ भीमानीय पथ ॥
धनपति दिशि रवि सुधीर । अप अप परि गह जुत्तवीर ॥
बंधव हरण तोमर पहार । बघेला सुलष नवं लषसार ॥
द्वि बंधह डंश म अल्ह सूर । महण शीपी परिहरि राहपूर ॥
पश्चिमि दिसा सजिधीर सार । मजंनह जूह गय मत्त भार ॥
पामार शलष आजोन बाह । चहुवांन अत्तताई उधाह ॥
चालुक बिभ्भ भाहा अभंग । बदरी देव खिची प्रसंग ॥
बार डह शीह अभंग भार । दष्यिणी दिसां सजि सूरसार ॥
अनि २ दिशि शामंत सूर । रषह सुरकु हय गय सपूर ॥
सहस एक २ शत एक सथ । शबभृत उच्च नीचेह उथ ॥
अप २ भृत शामंत सब । पठए काज जल गंग तब ॥
कमधज्ज भृत्त मध्ये वराहि । आनयुअपमे देवताहि ॥
मुष पाय पाणिअ दोलि वारि । अवये अप आतम अधारि ॥
करि सुनत शंति शामंतराज । चित्ति सु इष्ट भर स्वामि काज ॥
अउध बधि सजि वाजि शब । अशेंन तांन अप्पह अथव ॥
उछंग मृत के दिअ सीस । अस्तेमि षेट केषिन परीश ॥
पारश वेढि पंगुरह सेन । गज्जि निसान हय गय गुरेन ॥ ६५ ॥

दोहा

चित्त अति चिंता तपि सज्जि राय कमधज्ज ।
जिके सुभटवर अपनि फिरिता संकत रज्ज ॥ ६६ ॥

संजोगि शयन प्रथीराज भू, बजिहि लाग निसान
कायर विभूति..., सुरति वंछहि मान ॥ ६७ ॥
मोत्रि निसंक संभरि नरिंद । परष्य सुपंग संक्यो सुरिंद ।
प्रथीराज कामत संजोग .......... ॥
...... ..................त हिंसहि के कान ।
चपे चंग दिसी निरहि धुरि निसान ॥
सिंधूर मारु मलकोश संगीत (तान) ।
सूरिसूर अनंद कायर कंपान ॥
पंचास कोस रूंधिय धरनि ।
मिल्लान मधि चहुवांन धनि ॥
कचिकिय चार बुल्यौ बिसदु ।
सिंघ जिम जग्य सुनि श्रवन सदु ॥ ६८ ॥

## दोहा

विरुदावलि बल्लत जग्यौ । त्रिश्र संजोइ कौ कंत
कंदल रस रत्ति नयन । क्रोध सहित विहसंत ॥ ६६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## छंद सारस

इशी रीत प्रगाशी । मंडल सामंत मासी ॥
कबिन किलोल काशी । श्रुरस्त्र गानि वासी ॥
पारसं रजि चंद्रं । तार संते न संद्रं ॥
करतरा कति बंधि । सूर छुटि बल बंधि ॥४००॥

## छंद त्रोटक

छुटि बंद निशा प्रगटी प्रगटी । मिलिटनीमल रह सुघटी ॥
निश मान निशानहुश्रं । धूम्र धूरिन मूरिन पूरि पुश्रं ॥
नव निभ्भरथं बरयं बनयं । गजबजि तश जितयं घनयं ॥

पत्र १४/२

निजंक छरित्र छरियं तनयं । करि २ जनयं जनयं ॥
करि सारद नारदयंनदयं । शिर सजन ममयं सदयं ॥
निज निर्भय रावहु श्रान मनं । किरनी मिराजति सूर जनं ॥ ४०१ ॥

गाथा

शत भट किरणिहि सूरो । पूर रा रेणि सुग आयेस ॥
जोगिन पूर पति सूरो । पारश मिसि पंति पंग रायेश ॥ ४०२ ॥

[ यहाँ से बंद मुरिल्ल आरंभ होता है ]

पत्र २०/२

छंद भुजंग प्रयात

जिते सार साथा रिज्ञु शारि ट्ट्यु । मनु आवनं मेछ संसार उट्यु ॥
फटी फुज्ज आवाज शापंग राई । मृगि जांनि मागध भिव पधाई ॥
बजी हक्क हंकार भेरी । जुरी रोष सेना फिरी लाज वेरी ॥
धज बीर बिरषशा बंबरेशा । लगि सीस सामंत शाश्रंमरेशा ॥
उडि गिध आवध ट्टि उतंगा । किन कि श्रुता जीवि कि हस्ति चंगा ॥
भटकिं श्रुधायं श्रुरायं हवाई । मनु मारूतं मत्त छाई ॥
फिरि चक्क चहुआंन की हाक बज्जी । मनौं प्रोट मत्त निवोढा सुलज्जी ॥
इशी कंत चहुआंन करि केलि रती । फिरि जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
दहं कोह सीस्वामि आराम छुट्टी । पल्लि पंगरा शेन आव्रत उट्टी ॥ ५४१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कवित्त

पत्र २२/२

परतषिभ्भ चलुक्क गहकि रा पंग सेन सब ॥
राज राव सारंग देव आइयो तपि तब ॥
सहस तीन तीन असवार धार धारा समथं ॥
नृमलं नेह स्वामिसिंघ पावहि सुहथं ॥
नाइयौ सीस नमि पंग कह दईय सीख पहुउचकर ॥
उपारि जंग निज सेन सम भले प्रसंषह अपभरा ॥ ८४ ॥

पत्र १८/१-२

कनवाज्ज समय का अंतिम छंद

दो० कु०

जोर शर शनन अलंदिय अधर दुराय दुराय ।
एशा दुज दुज कंत निकरू सषिन सुनाय सुनाय ॥ ७०४ ॥

हीइ सुचि सुचि टालजि मनह सुघल विंथला कंपितैं ।
न नटिकीय नहंनह जियत मरत मिलि मैत कह्यौ ॥
अजब तुम मत भुरस । श्रुतिराज न हुंकिति दसन कुचित हसन ॥
न तुट ताटंक न ( त ? ) । भगत कियन बिग्रह तम वत ॥ ७०५ ॥

श्रुति राजन हुंकित हसन । कुचित हशन नयन ॥
त्रुति त्राटंकन भंग । किय नग बिग्रह तमवन ॥ ७०६ ॥
इति रश तिथि दह पंच विशि निशि । मुष अशम शरवात ।
कुल ग्रीषम श्रीषम मुषनि । पावश प्रसन प्रभात ॥ ७०७ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते रास केतु चरित्रं समाप्त॑॥छं॥श्री॥०॥श्रीरस्तु: कल्याण-मस्तु ॥;॥

इसीसे आगे-

अथ राजा विलासन श्रुक चरित्रं लिख्यते

आदि-

सुरिल्ल

उत्तर पष्य असाढ पवित्रं । आद्रा मंङ्गल मंडि नषित्रं ॥
दांन भोग फल इहलब्धि गत्तिय । विलसन राज करैं नव नित्तिय ॥ १ ॥

क०

इक जौस धन मद्द । मद्दराज मद वारुनि ॥
अरू मद देह अरूज । संग नव वनिता तारूनि ॥
अरु बंधन पतिसाह । पैज कनवज्ज संपूरिय ॥
एता मद राजान । दुखदं दह कर दूरिय ॥
आनंद कंद उमग तनह । संजोगी सर हंस सरि ॥
जानिन राज अस्तम । उदय महि जीवन मानै सुपरि ॥ २ ॥

अन्तिम-

चौपाई

पत्र ३१/१

नृप पर दुष्य अलष्य जु कीनी । ज्यौं बरि गय तर फे रहि भीनौ ॥
दुष निंद्रा निसि घटिअ आई । तिंहि नृप संज संपन्नौ पाइ ॥ ९५ ॥
अति सुष संकुल बरष तिय । रितु रितु ए आचार ॥
बिलसित त्रिन ग्रीषम अधर । सुपन सुराज विचार ॥ ९६ ॥

भावी गति आगम बिगति । की मेटन सम नृरत्त ॥
रांम जुधिष्टिर और नल । तितही परी अवत्त ॥ ६७ ॥
मान करै मति हीन वर, जोवन धन तन रूप ।
कौंन कौंन ह्वै नीबरें, बिनां ग्यान रस कूप ॥ ६८ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथीराज रास के भोग विलासे शुक चरित्र वर्णन संजोगिता चेष्टा इच्छनि आग्र अथिम प्रस्ताव समय ४१ मः संपूर्ण ।

इसीसे आगे का समय जिसका नाम नहीं दिया—

दूहा

साष लाष षटलाष दर, सजिति रजतपुर इंद ।
मतुहुँ सूर सामंत मुष, दिष्यिय चंद कविंद ॥ १ ॥

पत्र ३१/२ इसी पत्र का अंतिम-

गा०

जंदे ही तोदुषई, दुषह सुष सरीर, दुषच्छन अनं सुबतं, कीय असोक निद्धिय ॥ ८१ ॥

दो०

सत्तम बरष सज्जिव, अरष दीह अनसैं सब्बड ।
वृद्ध तीय अरू थिर अरथ, देह विधि न लषि दिब्ब ॥ ८२ ॥
राजन सुक मुच्छन बिगति माया............

प्रति-२ । आकार- १२″ × ८″ । पत्र-४० । प्रत्येक पत्र पर ३६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३१ । ३२ अक्षर हैं । इसमें केवल निम्नलिखित समय हैं:-

१. इच्छनि रुप वर्णन — चौथा समय २२ छंद
२. बालुकराय — पाँचवाँ समय १४४ „
३. . . . — छठा समय १८२ „ (अपूर्ण)

इसको भट्टारक श्री यशोदेवसूरि ने उदयपुर में संवत् १७६१ पौष वदि १४ को लिपिकृत किया ।

इसीके साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं :-

१. शाहजहाँ जीवन चरित्र
२. सुन्दर श्रृंगार

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

प्रति–३ । इसमें ६८ समय हैं आकार-- १४″ × ६½″ ।
प्रत्येक पत्र पर २८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति पर लगभग ३२ अक्षर हैं।
लिपिकाल-संवत्१८०६ साके १६७४ प्रवर्त्तमांने । आसोज शुक्ला ६ सोमवार। लिपिकार-हठीराम का पुत्र शंभुराम ।

इसके अंत में यह विज्ञप्ति दी हुई है—

मिलि पंक जगत उदधि ॥ करद काल रनी ।
कोटि कवी काज लह ॥ कम कटि कर्तें करनी ॥
हि तिथि संष्या गुनित ॥ कहे कक्कात्र वियाँनै ।
इहं श्रम लेषन हाण ॥ मेद मेद सोइ जानै ।
इम कष्ट ग्रंथ पूरन करय ॥ जन बंभत्रा दुष ना लहय ।
पालियें जतन पुस्तक पवित्र ॥ लिषि लेषक बिनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस योइ ॥ चंद्र कवियन कर दिद्धिय ॥
छद गुनीतें तुदि ॥ मंद कवि भिन भिन किद्धिय ।
दे संदेस बिष्यरिय ॥ मेलगुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेलवत ॥ आस बिन आलय आवय ॥
चित्रकोट रांन अमरेस न्रप ॥ हित श्री मुष आयस दियौ ॥
गुन बीन करुन उदधि ॥ लिषि रासौ उद्दिम कियौ ॥ २ ॥

दोहा

लघु दीरघ ओछो अधिक, जो कछु अंतर होइ ॥
सो कवियन मुष्य सुद्ध तों, कहौ आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इति विज्ञप्ति ॥ ॥ इति श्री कविचंद विरचिते राजा श्री प्रथिराज रासके राजकुंवर श्री रयनसी पट्टाभिषेक दिल्ली नगर वासं गोरी साहाब गोरि धरनं बिनैं साह पातसाह तषत करनं परस्पर जुद्ध जुरनं ॥ दिल्ली जौंहर जरनं ॥ राजा श्रीरयनसी मरनं ॥ राजा जैयचंद गंगासरनं प्रस्ताव संपूरनं समापत ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु, श्री उदैपुर नगरे महाराजाधिराज महारांणां श्री प्रतापसिंघजी विजेराज्ये लिषावितं राज श्री भाट पूरब्या गोते रावजी श्री रांमचंदजी ॥ ततपुत्र सकल कवि सिर छत्र सकल चंडि सिरोमनि ॥ रावजी श्री श्री श्री श्री श्री सुषरामजी ॥ चिरंजीवि कुंवरजी श्री षेमचंदजी ॥ चिरंजीवि कुंवर श्री मुरलीधरजी पठनारथं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु ॥ सुभंभूयात् ॥ श्री ॥ संवत् १८०६ वर्षे ॥ साके १६७४ प्रवत्तमांने ॥ आसोज मासे सुकल पष्ये ६ तीथौ सोमवासरे ॥ लिष्यतं दसपुर जाति पंडित हठीराम ततपुत्र पंडित संभूरामेण लिख्यतंमिदं पुस्तकं ॥ लेषक पाठक चिरंजीवि ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

॥ श्लोक ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा । तादृशं लिखितं मया ।
यदि श्रुद्धंममसुद्धं । मम दोषो न दीयते ॥

## समयों की सूची–

१. आदि पर्व सम्यो
२. दसम सम्यो
३. दिल्ली किल्ली सम्यो
४. लोहानो आजान बाहु सम्यो
५. आखैटक वीर वरदान सम्यो
६. नाहरराम सम्यौ
७. कंन्हाष्य पट्टी सम्यो
८. मेवाती मुगल सम्यो
९. हुसेन कथा सम्यो
१०. चित्ररेखा सम्यो
११. आखेट चूक सम्यो
१२. भोलाराय सम्यो
१३. सलष जुद्ध सम्यो
१४. इच्छिनि ब्याहसम्यो
१५. मुगल जुध सम्यो
१६. पुंडारी दाहिमी सम्यो
१७. भोमि सुपन सम्यो
१८. दिल्लीदान सम्यो
१९. माध्ये भाट सम्यो
२०. पदमावती सम्यो
२१. प्रथा ब्याह सम्यो
२२. धन कथा सम्यो
२३. होली सम्यो
२४. दीपमालिका सम्यो
२५. सिसिव्रता सम्यो
२६. करनाटी पात्र सम्यो
२७. देवाग्र सम्यो
२८. रेवातट सम्यो
२९. अनंगपाल सम्यो
३०. कैमास युद्ध सम्यो
३१. घघ्घर नदी सम्यो
३२. पीपा युद्ध सम्यो
३३. करेहआ युद्ध सम्यो
३४. इंद्रावती सम्यो
३५. जेतराव सम्यो
३६. कंगुरा जुद्ध सम्यो
३७. हंसावती सम्यो
३८. पोहडराय सम्यो
३९. बरुन कथा सम्यो
४०. सोमवध सम्यो
४१. पज्जून छोग सम्यो
४२. पजून चालुक सम्यो
४३. चंद द्वारिका सम्यो
४४. भीम बद्ध सम्यो
४५. संजोगता पूरब जन्म
४६. विनय मंगल सम्यो
४७. सुक वरन सम्यो
४८. बालुकाराय सम्यो
४९. पंग जग्य विद्धंसन सम्यौ
५०. संजोगिता नेम सम्यो
५१. हासी जुद्ध सम्यो
५२. दुती हांसी जुद्ध सम्यो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

५३. पज्जून महोबा सम्यो
५४. पज्जून विजय सम्यो
५५. सामंत पंग सम्यो
५६. समर पंग सम्यो
५७. कैमास वद्द सम्यो
५८. दुर्गा-केदार सम्यो
५९. दिल्ली वरनन सम्यो
६०. जंगम कथा सम्यो
६१. षट ऋतु वर्णन सम्यो
६२. कनवज्भ सम्यो
६३. सुक चरित्र सम्यो
६४. धीर पुंडीर सम्यो
६५. श्राषेटक चभ्भ सम्यो
६६. वडो जुद्ध सम्यो
६७. बान बेध सम्यो
६८. राजा रेनसी सम्यो

**प्रति–४ । अन्तिम भाग–** [ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

**पुष्पिका**

चिरजीवो श्रोतांन । हाम मन वंछित पूरय ॥
चिरजीवो श्रोतांन । दुष श्राप दल चूरय ॥
चिरजीवो श्रोतांन । पुत्र परवार सहेतो ॥
चिरजीवो श्रोतांन । दान कवियन जन देतो ॥
हय पाट ठाट भंडार भरि । श्रास भास सफल फलय ॥
धरि ध्यान जोग साधन जुगति । जराम्रत्फलन नां कलय ॥

इसके नीचे वही विज्ञप्ति दी हुई है जो ऊपर तीसरी प्रति में श्रा चुकी है। परन्तु इसमें केवल ३३ समय दिये गए हैं। जिनकी सूची इस विज्ञप्ति के नीचे ही उसमें दे दी गई है। सूची इस प्रकार है:–

| क० सं० | समय (प्रस्ताव) | छंद सं० | क० सं० | समय (प्रस्ताव) | छंद सं० |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | तोंश्रर पाहा रूपक | ८१ | २. | करूण कथा रूपक | ३३ |
| ३. | सोम वध रूपक | ८६ | ४. | पंजून मोहव रूपक | १९ |
| ५. | पूंजून विजै रूपक | २८ | ६. | चंद द्वारिका रूपक | ८९ |
| ७. | कैमास युद्ध रूपक | ७१ | ८. | भीम वध रूपक | १४२ |
| ९. | संजोगिता पूर्व जन्म रूपक | १४२ | १०. | सुक वर्णन रूपक | १८ |
| १२. | बालुकाराय रूपक | १९ | १३. | जग्य विध्वंसन रूपक | १७ |
| १४. | संयोगिता नेम रूपक | ५५ | १५. | हांसी प्रथम जुद्ध रूपक | ८९ |
| १६. | हांसी २ जुद्ध रूपक | ११३ | १७. | पंजून महुवा रूपक | २६ |
| १८. | पंजून छोगा रूपक | ३५ | १९. | सामंत पंग रूपक | १२५ / १३५ ? |
| २०. | समर पंग रूपक | ६० | २१. | कैमास वध रूपक | १८७ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २२. | द्रुगा केवार रूपक | १६८ | २३. | दिल्ली वर्णन रूपक | ५७ |
| २४. | जंगम कथा रूपक | ५४ | २५. | षटरितु वर्णन रूपक | ५७ |
| २६. | कनवज्ज रूपक | १३८४ | २७. | सुक चरित्र | १०१ |
| २८. | धीर पुंडीर | ३१२ | २९. | आषेटक..............? | १६ |
| ३०. | समरसी दिल्ली सहाय | ४९ | ३१. | बडी लड़ाई रूपक | ८६० |
| ३२. | बांन वेध रूपक | ३४८ | ३३. | रयनसी रूपक | ११२ |

प्रति–५

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

यह उपरोक्त चौथी प्रति का आधार ज्ञात होती है। यह जीर्ण हीने से चौथी प्रति में इसकी प्रतिलिपि की गई हो ऐसा संभव है। क्योंकि दोनों में कोई अंतर नहीं दीख पड़ा। इसके आरंभ और अंत के पत्र फटे हैं।

आकार–१०½″ × ६½″। प्रति पत्र की पंक्ति संख्या–२५। प्रति पंक्ति की अक्षर संख्या–३५।

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

( ७ ) **भीम विलास**। रचयिता–किशना आढ़ा। आकार–१०″ × ८″। पत्र–२०२। पद्य–७१७। रचना काल–सं० १८७६।

[ अन्तार्णी संग्रह ]

( ८ ) **मधुमालती**। रचयिता–चतुर्भुजदास निगम।

प्रति–१: आकार–६.७″ × ४.२″। पत्र–संख्या २६। पद्य–संख्या ८८३। लिपिकाल–सं० १७६२।

[ माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर ]

प्रति–२: आकार–११″ × १०″। पत्र–संख्या ६९। इसकी लिपि बहुत सुन्दर है तथा इसमें राजस्थानी कलम के ७९ बहुरंगी चित्र हैं। लिपिकाल–सं० १८२०।

[सरस्वती भण्डार भींडर ]

प्रति–३: आकार–११″ × ९″। पत्र–संख्या ११४। पद्य–सख्या १२५। बीच बीच में गद्य वार्ता भी है। इसीसे इसका शीर्षक 'मधुमालती री वार्ता' है।

[ अन्तार्णी संग्रह ]

( ६ ) **माधवानल** । रचयिता-कुशललाभ ।

प्रति-१: आकार-१०·२″ × ४·१″ । पत्र-सख्या २२ । पद्य-संख्या ५५० गाथाएँ । लिपिकाल सं० १७१६ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं०१६५७ ।

प्रति-३: लिपिकाल-सं०१७८६ ।

**आदि भाग-**

देवि सरसतिइ सुमति दातार ।
कासमीर कमलासिनी, ब्रह्मपुत्र करि वीण सोहइ ।
मोहण तरवर मंजरी, मुख मयंक चिहुँ भवण मोहइ ॥
पय-पंकज प्रणमी करी, आणी मणि आणंद ।
सरस चरित्र श्रृंगार रस, पभणिसु परमाणंद ॥

**अन्तिम भाग-**

संवत १६ लोतरे, जैसलमेरि मझारि ।
फागुण सुदि तेरसि, विरची आदितवार ॥
गाहा गूढा चौपइ, कवित कथा संबंध ।
..............................................॥ ३६ ॥
कुसललाभ वाचक कही, सरस चरित सुप्रसिद्ध ।
जे वांचे जे संभलि, तिही मिले नव निद्धि ॥ ३७ ॥

× × ×

राउल माल सुपाट घर, कुंवर श्री हरिराज ।
विरंची एह श्रृंगार रस, तास कुतूहल काज ॥ ३८ ॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( १० ) **राम चरितमानस** । रचयिता-तुलसीदास ।

प्रति-१: आकार-११·२″ × ५·२″ । पत्र-बालकाण्ड १११, अयोध्याकाण्ड ६१, आरण्य करण्ड २३, किष्किन्धा काण्ड २०, सुन्दर काण्ड १६, लंका काण्ड ४४, उत्तर काण्ड ४४ । लिपिकाल-सं० १८५१ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं० १८५८, वैसाख सुद ८ । बालकाण्ड का लिपिकाल सं० १८०५ ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ११ ) **रामरासो** । रचयिता–माधवदास दधिवाड़िया । आकार–६.६"×६" । पत्र-संख्या ६०५ । लिपिकाल–सं० १७७५ ।

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

( १२ ) **वल्लया सटीक** । पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि' की टीका । टीकाकार–अज्ञात । यह भी ८"×५" आकारवाले ६ रचनाओं के संग्रह मैं संग्रहीत है। ३७ पत्रों में इस ग्रन्थ के १४६ पद्य सटीक लिपिबद्ध हैं। टीका मेवाड़ी में है ।

आदि भाग–( आरम्भ के पाँच पद्यों में संस्कृत में प्रार्थना है )

टीका–प्रथम ही परमेसरजी ने नमस्कार करे छे । श्री सरस्वतीजी ने नमस्कारै ने । श्री गुरु नमस्कारै ने । ए त्रिणि तत्व सार छे । इण उपरांत मंगलाचार कोन छे ।

दुवालो

आरम्भ मैं कीयो जेणि उपायो
गावण गुण निधि ऊँ निगुण ।
फिरि कंठ चीत्र पूतला निज करि
चीत्रा रो लागी चित्रण ॥ २ ॥

टीका–कवि कहे छे जिण मो ना उपायो । जे परमेस्वर सुगुण को निधि छे जिणरो गुणरो पार को न पावे । मैं निर्गुण थका तिणका गुण गाइवा को आरम्भ कीयो ।

[ स्वरुपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर ]

( १३ ) **ब्रज नी दानलीला** । रचियता–ब्रह्मानंद । आकार–७"×५.५"। (यह पद्मावती नी वार्ता के साथ है) । पत्र-संख्या ८। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १२/१३ अक्षर हैं। इसमें बागड़ी बोली में गाने के १२ पद हैं। लिपिकाल–संवत् १६१८ जेठ सुदी ४।

आदि भाग–

गोरस लई ने गोपीका चाली वेचवा काजे ।
ओडो बांधो आवी ने वचमां ब्रजराजे ॥
मट्की लीधी माथडे चाली मईवाली !

ओचीतानां आत्रीया वचमां वनमाली ॥
मारग रोको मात्रजी आडा ऊभा छे आवी ।
आत्र ओरी मैं आरडी ईम कैने बोलावी ॥
मेडु तारू अमे लूट सु उभी रे रे मैं आरी ।
सांचु जांठो तु सुन्दरी लेसु रीत हमारी ॥
जावा दोने जादवा वाटे रोको मा वेतां ।
अमे मला जो राखीये तंम सामु रे केतां ॥
समभो वीना नव भालये पर नारी ने षेडो ।
ब्रह्मानंद केरो नवे गली में लीनौ केडो ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( १४ ) **महाराज रतनसिंहजी री वचनिका (रतन रासो)** । रचयिता-षिडियो जगो । आकार-१०″×४.२″ । रचनाकाल-संवत् १५१५, वैशाख विद ६।

लिपिकार-मुनि गोतम रुचि ( भींडर निवासी )

लिपिकाल-"संवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुल्क पक्षे १३ तिथो सोमवासरे ॥श्री॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमल रुचि गणि शिष्य मुनि गोतम रुचि ना लेषकः ॥ डंगला नगरे ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आदि भाग-

गुणपति गुणे गहिरं गुण ग्राह दान गुण देयनं ।
सिद्धि ऋद्धि सुबुद्धि सधीरं सुडाहल देव सुप्रसन्नं ॥ १ ॥

कवित्त

समरि विसन सिव सगति सिद्धिदाता सरसत्ति ।
वषाणु कमधज्य पुहवी राजा छत्रपत्ति ॥
जेहा चक्कवें हुआ जिण वंस नरेसरु ।
त्याग त्याग निकलंक वंस छत्रीस तणा गुरु ॥
गजराज दियण भंजण गंजा उभैं विरूद उद्ध रैं ।
कुल भाण धरैं प्रगटयौ कमध रतनमल्ल रिणमल्ल रे ॥ २ ॥
दलपति उदयसिंघ माल गंगेव महाबल ।
बाघा सुजा जोध कमंध रणमाल अणंकल ॥

चुडा वीरम सलष साष तेरह अज आला ।
चाग तीडा छांत्र हुआ कमधज्ज हाथाला ॥
हिंदुआण तिलक हिंदु बिहद धुंहड आसासीह धन ।
तीण पाट हूओ महिराण तन रूप भूप एता रतन ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

## गाहा

कंत मृत वात सुणे कुलवंती करि हरि २ जम हरि कुलवंती ।
कुंदण तन होमे कुलवंती कीधा चंदन भो कुलवंती ॥ ८० ॥
इम अंग होमि विमाणें आईआ सुरती सम्ही आइं करि ।
बऊ कोड पुहप वरषा करि लिण सांमि चाला संभि सुंदरि ॥ ८१ ॥

## वचनिका

"तिण वे लागें बरी आकास वांणी कहायो माहाराजा रेणसा वधाइ वधोइ अगनि सनान करि सति पणि आइ ब्रह्म विष्णु महेसर इंद्र सुरसथि सुर विमानें कही महा सतीयां सम्ही जाउं धवल मंगल पुहप वरषा करि वधावो ॥"

Indira Gandhi National Centre for the Arts

## दूहा

सावत्री उमया श्रीया आगी सामी आई ।
सुंदर मिंदिर सोव्रन मैं इंदिर लई वधाइ ॥ ८२ ॥
धवल मंगल हरष वधीया नेह नवल ।
सूर रतन सखीयां सरिस मिलिया जणि महल ॥ ८३ ॥
कुआं सुर नर पुर उद्धरे वैकंठ की घो वास ।
राजा रायणा भर तणो जुग अविचल जग वास ॥ ८४ ॥

पुष्पिका–

"वदि वैसाषह तिथि नवमी १५ पनरोतरे वरस ।
वार शुक्र लडीआ विहद हिन्दू तुरक बहसि ॥ ८५ ॥
जोडि भणै षडीयो जगो रासो रतन रसाल ।
सूरो पूरां सामलो भ डमोटा भूपाल ॥ ८६ ॥
दिल्ली रावा का उजेणी रासा च्यारिजुग
कथा रहसी कविपात्र कहसी ॥ ८७ ॥

इति श्री महाराजा रतनजी री वचनिका संपूर्णम् ॥ संवत् १७६३ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ सोमवासरे ॥ श्री ॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमलरुचि-गणि शिष्य मुनि गोतमरुचि रा लेषक ॥ डुंगला नगरे ॥

इसमें राणा रत्नसिंह का वीरता पूर्वक युद्ध में काम आना और पद्मिनी का अन्य स्त्रियों के साथ सती होने का वर्णन गद्य तथा पद्य दोनों में है। यह वीररस का सुन्दर काव्य है।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( १५ ) वृन्द सतसई। रचियता–वृन्द कवि। प्रति १–आकार ७"×८"। इसमें ७१४ पद्य हैं। इसका रचनाकाल इसमें 'ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार' दिया है, जिसके अनुसार संवत् १७६१ या १७६१ ठहरता है। परन्तु वृन्द कवि का देहावसान संवत् १७८० भादों वदि ३ निश्चित है। अतः इसका रचनाकाल संवत् १७६१ ही मानना होगा।

आदि भाग–

श्री गुरु नाथ प्रभाव तें, होत मनोरथसिद्धि।
घन तैं ज्यु तरु वेल दल, फूल फलन की व्रद्धि ॥ १ ॥
किये वृन्द प्रस्ताव कें, दोहा सुगम बनाय।
उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि, दृढ़ करि दिये बताय ॥ २ ॥
भाव सरल सम हुत सवें, भले लगे इह माय।
जैसे औसर की कही, वांणी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥

अंतिम भाग–

जिय संतोष विचारियै, होइ जु लिष्यो नसीब।
षल गुल काच कथीर सौं, मांनत रली गरीब ॥ ७११ ॥
जथा जोग सब मिलत है, जो विध लिष्यो अंकूर।
षल गुल मागे गवारनी, रांणी पांन कपूर ॥ ७१२ ॥
सभै सारदो दीन को, सुनत होत मन मोद।
प्रगट भयो यह सतसया, भाषा वृंद विनोद ॥ ७१३ ॥
संवत ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार।
सातै ढाका सहर में, वुपज्यो पुहमि प्रचार ॥ ७१४ ॥

[ स्वरुपलाल शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर ]

प्रति २. आकार ५'५" × ४'२" । इसमें ५४ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं। इसमें पद्यों की कुल संख्या ७१५ है। इसका लिपिकाल संवत् १७६८ भाद्रवा वदि ८ शनि है

[ रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर ]

प्रति ३. आकार- ११'५" × ८.७"। पत्र-संख्या ३७। पद्य-संख्या-७०६। लिपिकाल सं० १६०४।

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( १६ ) **सगत रासो** । रचियता-गिरिधर आस्या। आकार-११"×१०"। इसमें कुल ४३ पत्र हैं। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं। अक्षर बहुत अधिक जमे हुए न होने पर भी पढ़े जा सकते हैं। इसमें कुल ६४३ पद्य हैं। इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह तथा उसके वंशजों की वीरता का वर्णन है। इसमें रचनाकाल न होने पर भी ऐसा ज्ञात होता है कि यह रचना १७७५ के बाद की है क्योंकि भींडर में इसका रचनाकाल शक्तिसिंह के दसवें वंशधर मोहकमसिंह ( दूसरे ) के समय में माना जाता है। रचना वीर रस प्रधान है। ग्रन्थ डिंगल भाषा में है।

आदि भाग-

प्रथम प्रणमि सुरराइ प्रसन ? प्रणमि वले गणपति ॥
सत गुर पुण में सेव गुर। मोद दिये सुभ मति ॥ १ ॥
तूरिज वंश सराहियै, भुजा धरजै षित्र भार।
गुर धर गहिलोतां तणौ, सहिये लौ संसार ॥ २ ॥

उदाहरण-

ढोल सव्बम ठूकडौ, भींडर हूँ कुल भांण।
अमरो सुष राषै असंष, षित्र जोस षुम्माण ॥ ४१ ॥
धर धुंसै घन धुप्पटै, सोनिगरो छल कार।
सारा देस दसोर रा, प्रजा आपिश्रा पुकार ॥ ४२ ॥
बुंब सुणै भी आंबले, मांजण खलां भटक्क।
सन्नातह हि साजत करे, किलंबे बेखटक्क ॥ ४३ ॥

अमरौ रौदा उप्परै, चाले कलि चुउवांण ।
दल आविया दसोर रा, भींडर ऊगे भांण ॥ ४४ ॥
भोरे भींडर भालजै, धर धपट्ट दे धक्क ।
आथवलै अमरा तर्जा, किलंबे बे कटक्क ॥ ४५ ॥

अन्तिम भाग–

परि पलि अपछरा, नरो बैकुंठ पधरावै ।
सांम्हे ले सुर मेलि, बड़ौ नर पाल बधावै ॥
सति सकल सहि सूरां, अवर कांइ सुमति न आवै ।
जिता साथि नरपाल, सहिसा जोति समप्पे ॥
तर वहि धरु तोर की, तैं हुआ वागम टलै ।
संसार सिरै करि सगत हर, महा जोति नरहर मिलै ॥ ८ ॥

[ सरस्वती भंडार, भींडर ]

( १७ ) **समयसार नाटक** । रचयिता–बनारसीदास । आकार–१०″×४.४″। पत्र–६१ । पद्य–७२७ । लिपिकाल–सं० १७६८ । रचनाकाल–सं० १६६३ आसोज शुक्ल १३ रविवार ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( १८ ) **सोनी गरां री वंशावली** । यह ८″×५″आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में दी हुई १०१ नामों की एक वंशावली है ।

नाम इस क्रम से है:—

( १ ) आसापुरी । ( २ ) काशिव । ( ३ ) चाहमान । ( ४ ) मरू । ( ५ ) श्रीवछ । ( ६ ) हंसदेव । ( ७ ) मलयदेव । ( ८ ) राजपाल । ( ९ ) मस्तकराव । ( १० ) पुत्रमासार । ( ११ ) माल । ( १२ ) सत्रेसाल । ( १३ ) भार्गनाथ । ( १४ ) भवानीदास । ( १५ ) भागीरथ । ( १६ ) सामदत्त । ( १७ ) जिनदत्त । ( १८ ) रामदत्त । ( १९ ) मानदेव । ( २० ) सूरजदेव । ( २१ ) कामदेव । ( २२ ) मुगधनाथ । ( २३ ) विश्वनाथ । ( २४ ) हरिदत्त । ( २५ ) भरवदत्त । ( २६ ) महीपकर । ( २७ ) नारायनदास । ( २८ ) सोमदास । ( २९ ) नरवद । ( ३० ) विश्वेश्वर । ( ३१ ) पुरूषदेव । ( ३२ ) विजयचंद । ( ३३ ) अजित्तसेन । ( ३४ ) वेरसेन । ( ३५ ) रूद्रसेन । (३६) नरसिंघदास । (३७) ईसरदास । ( ३८ ) गुणनाथ । (३९) अरवदपति (४०) सोमेश्वर ( ४१ ) जांगलू । ( ४२ ) महीपाल । ( ४३ ) समरसींघ । ( ४४ ) रातुल । ( ४५ ) अनयसिंघ । ( ४६ ) उदयसिंघ । ( ४७ ) विजयसिंह । ( ४८ ) गुल्ल । ( ४९ ) बसिलदेव ।

( ५० ) अमर गंगेय । ( ५१ ) अनयसिंघ । ( ५२ ) वाहमदे । ( ५३ ) चाहमदे । ( ५४ ) सोमेश्वर प्रीथीराज । ( ५५ ) वासुदेव । ( ५६ ) सामंतराज । ( ५८ ) नरदेव । ( ५९ ) विक्रम । ( ६० ) अजैराज । ( ६१ ) आंनों । ( ६२ ) वल्लभराज । ( ६३ ) दुर्लभराज । ( ६४ ) चंदनराव । ( ६५ ) गोवलराव । ( ६६ ) विधराज राव । ( ६७ ) सिंधराव । ( ६८ ) लाषण । ( ६९ ) चीतो । ( ७० ) वालण । ( ७१ ) सोही । ( ७२ ) मरेदराउ । ( ७३ ) अन्हल्ल राव ( ७४ ) जींदराज । ( ७५ ) आसराज । ( ७६ ) मणिराव ! ( ७७ ) आल्हण राव । ( ७८ ) कान्नू । ( ७९ ) समरसी । ( ८० ) जागदेव । ( ८१ ) अरसी । ( ८२ ) उदैसींघ । ( ८३ ) जसोवीर । ( ८४ ) कर्मसी । ( ८५ ) चाविगेद । ( ८६ सांमंतसी । ( ८७ ) कांनूमदे । ( ८८ ) मालदे । ( ८९ ) रिणविर । ( ९० ) वणवीर । ( ९१ ) लोलो । ( ९२ ) सतो । ( ९३ ) षीमो । ( ९४ ) रणधीर । ( ९५ ) अखयराज । ( ९६ ) भाणजी । ( ९७ ) नारायण दासजी । ( ९८ ) महाराज श्री चतुर्भुजजी । ( ९९ ) महाराज श्री गरीबदासजी । ( १०० ) महाराज कुमार श्री जगतसिंहजी । ( १०१ ) कुमार श्री कीर्तिसिंघजी ।

[ श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर ]

( १९ ) **अलंकार आशय** । रचयिता-रामकरण कविराय। रचना काल-सं० १८५७ विजय दशमी रविवार। आकार-१०$\frac{3}{4}$"×७"। पत्र-संख्या १९। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति प्रक्ति में २३ अक्षर हैं। छंद-संख्या ६७।

आदि भाग-

दुहा

वरन वसन वाहन विमल, विध विध विमल विचार।
बंदौ वर बानी वने, विमल वरन विस्तार ॥

अन्तिम भाग-

अतिसयोक्ति रुपक जहाँ, केवल ही उपमान ।
कनक लता पर चन्द्रमा, धरे धनुष छे बान ॥
संवत् अठार सतावनो विजय दशम रविवार ।
अलंकार आसय जु यह भयो गन्थ अवतार ॥

[ अन्ताणी संग्रह ]

( २० ) **अलंकार रत्नाकर ।** रचयिता–दलपतराय और वंशीधर। लिपिकाल–सं० १६२८। आकार–११.५″ · ८.७″। पत्र-संख्या ६६। प्रथम ६ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है और शेष पर ग्रन्थ का विस्तार है। प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५/२६ अक्षर हैं। छंद–संख्या २१६। इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह संवत् १६२८ में दशोरा पुरुषोत्तम द्वारा महाराणा शम्भूसिंह के लिये लिपिबद्ध की गई। लिपिकार ने जिस ग्रन्थ से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है उसकी सूचना ग्रन्थ के अन्त में लाल अक्षरों से इस प्रकार दी है–"या पुस्तक लिखाणी पारसोली रावजी श्री लछमणसिंहजी की पुस्तक सों। सौधाँणी मोगडै हरदानजी संडायचरी पुस्तक सों। "

ग्रन्थ के आदि भाग से ज्ञात होता है कि उक्त दोनों लेखकों ने इस ग्रन्थ का निर्माण महाराणा जगतसिंह के लिये किया था। ग्रंथ अलंकारों को समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। क्योंकि प्रत्येक छंद की उसके साथ ही गद्य में विशद व्याख्या की है इसके अतिरिक्त इसकी एक और विशेषता यह है कि व्याख्या में अन्य कवियों के उदाहरण भी उद्धृत किये गये हैं।

आदि भाग–

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दोहा

नवत सुरा सुर मुकुट महि, प्रतिबिंबत अलि माल।
किये रत्न सब नील मनि, सो गनेस रछपाल ॥ १ ॥

अथ देशाधिप वर्णन

उदयापुर सुर पुर मनौं, सुर वर श्री जगतेस।
जिनकी छाया छत्र बसि, कीनौ ग्रन्थ असेस ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सवैया

कवि खेलत फाग सुनारिन संग, अनंग तरंग महा सरसैं।
तिहे टूटति मोतिय माल विसाल, उरोजन तें करकें परसैं ॥
गिरि भूमि गुलाल तें लाल भये, सु तो दारिम जानि सुवा करसैं।
लखि सों यह साहजहाँ जगनाह के, दान ही की महिमा दरसैं ॥ २१६ ॥

"एहां कवि की समृद्धि कहि याते उदात अलंकार" उदात के आश्रयसों मोती गुलाल करी लाल भये येह तद्गुण अलंकार । और इहो लाल इहू याके भ्रम को समर्थकता यातें काव्यलिंग अलंकार । सो इहां एक ही लाल शब्द करिकें तद्गुण अरु काव्य लिंगन को सूचन हे । याते दुहुन कों एक वाचकानुप्रवेस संकर अरु भ्रांति अलंकार । एक वाचकानुप्रवेस संकर अरु भ्रांतिमान अलंकार । इन दुहुन मिलिके उदातालंकार की सुन्दरता कीनी । याते अंगांगी भाव संकर ॥ एसी कवि की संपत्त सोई कार्य अरु साहजहाँ को दान महिमा सों कारन ए दोइ धरे है याते हेतु अलंकार । अथवा प्रश्नोत्तर छते कवि की संपति करि साहजहां की संपति प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा ॥ अथवा दुहुनी संपति प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर । ऐसे तीन हुं अलंकारन को संदेह संकर ॥ कवि की संपति वर्नन तहां देत अजोग ही जोग या लछन ते सम्बन्धातिसयोक्ति के अरू उदात्तालंकार के एक वाचकानु प्रवेश संकर अरू कवि संपति ओर राजा को दान ताको वरनन सोइ अत्युक्ति अलंकार सो एक वाचकानु प्रवेस संकर वाके आश्रय सों कवि की संपति रूप कार्य की द्वारा राज संपति रूप कारन प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा कवि संपति ओर राज संपति दोऊ प्रस्तुत होई तो प्रस्तुतांकुर सों इहाँ अप्रस्तुत प्रसंसा अरू प्रस्तुतांकुर से संदेह संकर सों राजा की संपति वर्णन उदात्तालंकर व्यंग है ताको एक वाचकानु प्रवेस संकर ॥ ऐसे इन तीनहु एक वाचकानु प्रवेस संकरनु को सम प्राधान्य संकर है ॥ जो पे इन तीनहु संकर मांझते कोऊ काहुको अंग नाहीं या प्रकार इन च्यारहु संकरन को संकर है ॥ उदात ( १ ) अतिशयोक्ति ( २ ) तग्दुण ( ३ ) काव्यलिंग ( ४ ) भ्रान्ति ( ५ ) हेतु ( ६ ) अप्रस्तुत प्रसंसा ( ७ ) प्रस्तुतांकुर ( ८ ) अत्युक्ति ( ९ ) ऐसे नौ हुँ अलंकार या सवैया में धरे हैं ऐसे ओर हू उदाहरन विचार लीज्यो ॥

[ कविराव मोहनसिंह, भटियानी चोहट्टा, उदयपुर ]

## ( २१ ) अलंकार चन्द्रिका– रचयिता–हरिचरणदास ।

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ एक स्थान पर प्राप्त हुईं । यह जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के 'भाषा-भूषण' के अलंकार खंड की टीका है। प्रथम प्रति का आकार १२" × ७.६" है । लिखित पत्रों की संख्या ८३ है । इसमें प्रथम तीन पत्रों पर 'भाषा-भूषण' का 'नायका-भेद' प्रकरण समाप्त हुआ है । चौथे पत्र से 'अलंकार चन्द्रिका' आरम्भ होती है । ग्रन्थ ४९८ छंदों में समाप्त होता है । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । शैली की दृष्टि से कवि ने पहले पद्य में लक्षण प्रस्तुत किया है, फिर गद्य में उसकी टीका की है और अन्त में बिहारी और मतिराम के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं । ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर 'भाषा-भूषण' में दी गई गणपति की प्रार्थना को व्यक्त करने वाला एक सप्तरंगी चित्र भी है, जिसका चित्रणकाल संवत् १९१० दिया गया है। चित्र शुद्ध राजपूत शैली का है ।

इस ग्रन्थ की रचना संवत् १८३४ में हुई और संवत् १६१० में राव बख्तावर-सिंह ने अमरचन्द ब्राह्मण द्वारा लिपिबद्ध कराया।

द्वितीय प्रति का आकार ६″ × ६″ है। इसमें ३६ पत्र हैं। अन्त के अन्य ५ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है। इसमें गद्य में टीका नहीं है। केवल दोहों में लक्षण और उदाहरण है। इसके पश्चात् कुछ महत्त्वपूर्ण अलंकारों, ध्वनियों, रीति आदि पर ६४ पद्यों से प्रकाश डाला गया है। विभिन्न भेदों सहित ११८ अलंकारों के लक्षण सोदाहरण २१४ पद्यों में दे दिये गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं। परन्तु यह प्रति प्रथम प्रति की भाँति न तो लिखावट में सुन्दर है और पूर्ण ही। पाठ भी कहीं कहीं अशुद्ध है।

ग्रन्थ के आदि भाग में टीकाकार ने इस प्रकार अपनी भिन्नता प्रकट की है :—

भाषा भूषन ग्रन्थ कों, किय जसवन्त नरेस।
टीका हरि कवि करत है, उदाहरन देवेस॥
जहाँ सु चन्द्रालोक में, भाषा भूषन विरुद्ध।
उदाहरण सूत्र— लच्छ सुलच्छन केरि तहि, करत सुहरि कवि सुद्ध॥

Centre for the Arts

( २२ ) **कवि दर्पन**—रचयिता—ग्वाल कवि। रचनाकाल—१८६१। आकार—१०″ × ४″। पत्र-संख्या ८० प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं। अक्षरों का लेखन सुन्दर, मोटा, जमा हुआ और नागरी है। रीतिकाल की शैली पर लिखित यह एक आलोचनात्मक ग्रन्थ है जिसमें काव्य-दोष का बड़े सुन्दर ढंग से विवेचन हुआ है। कवि ने यहाँ गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग किया है। सारे ग्रन्थ को सात 'क्रान्तियों' में विभाजित किया है। ग्रन्थ के विभाग और छन्द इस प्रकार हैं:—

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम क्रान्ति | पद पदां दोष निर्णय | १० छन्द |
| द्वितीय ” | वाक्य दोष निर्णय | ८४ छंद |
| तृतीय ” | अर्थ दोष निर्णय | ६३ छंद |
| चतुर्थ ” | रस दोष निर्णय | २६ छंद |
| पंचम ” | दोषैकता करन | ३३ छंद |
| षष्ठ ” | दूषोद्धारक वर्णन | ५७ छंद |

सप्तम " प्रश्नात्तलीगुण वर्णन १०३ छंद

ग्रन्थ के आदि भाग के पहले कवित्त में शंकर की प्रार्थना है और दूसरे दोहे में सरस्वती की। तीसरे दोहे में कवि ने अपना और ग्रन्थ का परिचय दिया है—

वंदी विप्र सुग्वाल कवि, श्री मथुरा सुष धाम।
प्रगट कियो या ग्रंथ को, कवि दरपन यह नाम ॥ ३ ॥

चौथे दोहे में कवि ने रचनाकाल दिया है–

"संब्रत ससि[१] निधि[९] सिधि[८] ससि[१], आस्विन उत्तम मास।
बिजै दसमि रवि प्रगट हुअ, कवि दरपन परकास ॥ ४ ॥

पाँचवे दोहे में कवि ने खलों के मुँह पर 'कुलफ़' ( ताला ) लगाकर सज्जनों की प्रार्थना करते हुए सातवें दोहे में अपनी शैली प्रकट की है–

"उदाहरन दुषनन पै, इक इक अपनो राषि।
फिर पुराने कविन कै, रखिहौ कवित सुसाषि ॥ ७ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

इस ग्रंथ से यह सिद्ध होता है कि कवि ने यहां एक आलोचक के रूप में रीति काल की शैली में एक क्रांति उपस्थित की है। आलोचना के इतिहास में यह ग्रंथ एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जो इसकी शैली से स्पष्ठ प्रकट होता है। अपने समय तक प्रचलित लगभग ४० रीति ग्रथों, नाटकों तथा अन्य ग्रंथों का अध्ययन कर कवि ने यह ग्रन्थ तैयार किया है, जिनकी सूचि हम नीचे देंगे। एक ओर तो कवि ने प्राचीन लक्षण ग्रंथों की शैली को स्थान दिया है और दूसरी ओर अपनी नवीन शैली को। सबसे पहले पद्य में लक्षण की स्थापना की गई है, फिर उसकी गद्य ( वार्ता ) में व्याख्या की है। इसके बाद कवि ने स्वरचित उदाहरणों से पुष्ठि करते हुवे उनको भी गद्य में व्याख्या करदी है। इसके पश्चात अन्य ग्रन्थों से उदाहरण देकर उनकी भी व्याख्या कर, अनेक प्रश्नोंत्तरों द्वारा शंका समाधान की है। अन्य ग्रन्थों से दोष पूर्ण उदाहरण लेकर उनकी भी विशद व्याख्या करदी है। कहीं कहीं कवि ने गद्य में भी वाक्य बनाकर अपने मत की पुष्टि की है! इससे हमें कवि के व्यापक अध्ययत के साथ ही साथ विषय को समझने की क्षमता और उसे व्यक्त करने की योग्यता का परिचय मिलता है। एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है।

## अथ पद्-दोष

### कवित्त

श्रुति-कट्ट-गत-संस्कृत अप्रयुक्त और
असमर्थ फर निहतारथ न आनियै ।
अनुचितार्थ लीजै ना निरर्थक अवाचक ॥
तीनों असलील को बचावहु'र मानियै ॥
राषौ ना संदिग्ध अप्रतीत ग्राम्य ने पारथ
दोष कहे त्रीदस ये पद के प्रमानियै ।
गत संसकृत असमर्थ औ निरर्थक
त्रै सागि दस दोष वाक्य हूँ मैं पहिचानियै ॥ १ ॥ २७

### वार्ता

"गत संस्कृत आदि ये तीन दोष छोडिकैं और श्रुति कट्ट इत्यादि जे कवित्त मैं हैं ते दस दोष वाक्य हू मैं होत हैं । अथ नाम जुत लछन-लछ लिखियत है—

### कवित्त

कर्न कुट अट दुत वर्न तिय कीनो कुष
गत संस्कृत सब्दा सुद्ध तीनि हारा है ।
होय सब्द सुद्ध पै अवन्यौं अप्रयुक्त कहैं
जिश्नु पति नीको तो यै बारि डारा है ॥
द्रर्थ रूयाती थोरो बहु थोरो है असमर्थ
घूमि घन परसत अम्रत की धारा है ।
राषै अप्रसिद्ध द्रर्थ मैं तो सोई निहतार्थ
पीवै मकरंद अलि चन्द को अपारा है ॥ १ ॥ २८

### वार्ता

कर्न कट्ट इति 'अट' कहियै नहीं, है टवर्ग जामै और जे वरन है तेहुत होंय कान कों कडये लगैं । प्रमानः—काव्य प्रकास की टीका—काव्य प्रकाशादर्श ना नंदी पुरूषास्ती.................।

### याको अर्थ

"कठोर और व्रज तन करि कैं जो उच्चार करियै ओज गुण व्यजकम् संजोगी वर्ण औ दुषद होय कानन कों जो पद श्रुति कट्ट कहियै ।"

इहाँ प्रश्न

"स्याम कन्हाई जुन्हाई प्यारे इत्यादि पद संजोगी है ये भी कर्न कट्ट भये चांहियो।"

"औसेई पदन के जुदे करिये को कहा है। संजोगी भी होंय औ तीव्र प्रयत्न करि उच्चारन करियै होय ताको उदाहरन 'तिय कीनो कुष' कुष को कोप, कुष की ठौर रिस कहै तो दोष नहीं। अन्यत्रः–काव्य रसाइन।

आगे 'काव्य रसायन', 'बिहारी', 'रसिक–प्रिया' कृष्ण को समर' आदि कई ग्रन्थों से उद्धरण लेकर गद्य में सब की विशद व्याख्या करके स्पष्ठ किया गया है।

ग्रन्थ में कवि ने इसी प्रकार निम्न कवियों और ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं:–

१. काव्य रसायन
२. बिहारी सतसई
३. कवि प्रिया
४. रसिक प्रिया
५. श्री कृष्ण को समर
६. लेख काव्य प्रकाश ( भाषानुनाद )
७. काव्य–प्रकाश ( मूल संस्कृत )
८. कांव्य प्रकाश ( टीका संस्कृत )
९. सभा प्रकाश
१०. ठाकुर कवि
११. प्रेम तरंग
१२. कविवल्लभ
१३. फुटकर
१४. रस चन्द्रोदय
१५. रस राज
१६. लेख रसरहस्य ( भाषानुवाद )
१७. लेख कवि वल्लभ ( भाषा–टीका )
१८. नषसिष
१९. आलम कवि
२०. मोहन लीला
२१. गीत गोविन्द ( संस्कृत )
२१. दयानिधि
२३. श्री पति सुकवि
२४. रस सिरोमनि ग्रंथ (नरवर पति राम सिंघ कृत )
२५. दास कवि
२६. राम चंद्रिका
२७. रसिकानंद
२८. कुमार सम्भव ( संस्कृत )
२९. दुलह कवि
३०. वीर चरित्र नाटक ( संस्कृत )
३१. रत्नावली ( संस्कृत )
३२. कर्पूरमंजरी ( संस्कृत )
३३. रस मंजरी ( संस्कृत )
३४. लालकवि
३५. प्रवीनराय
३६. काव्य–प्रदीप ( संस्कृत )
३७. भ्रांति भंजनी
३८. भास नाटयकार ( संस्कृत )
३९. भाषा भूषण

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( २३ ) **कविता कल्पतरू** । रचयिता–नान्हूराम 'कवि सागर' । आकार– ८″×६.५″ । पत्र–संख्या ८२ । प्रत्येक पत्र ११–१२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २२ से २७ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ में ५७३ छंद हैं । यह ग्रन्थ संवत् १९४० में रावल नवलसिंह के पुत्र राव मोड़सिंह ने सादरपुर में लिपि बद्ध किया । इसकी पुष्पिका इस प्रकार है "इति श्री सहृदय रूप जोरावरसिंघ आग्या प्रमांन ग्रन्थ कविता कल्पतरू कृत अर्थालंकार संकर संसृष्टि वर्णनम् नाम पंचमी साषा ॥ संपूर्ण ॥ संमत् १९४० वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे २ द्वितिया से संपूर्ण लिषितम् ॥

सादरपुर में शुभ लषित, कवित कलपतर जांन ।
न्हान्हूं पुत्र नवल के, आम्र पुस्प सम नांम ॥ १ ॥

ग्रंथ के अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि जोरावरसिंह ने नान्हूँरांम को 'कविसागर' की उपाधि दी थी और उसने उनके आदेश से संवत् १७८८ में इस ग्रन्थ का निर्माण किया था । आदि भाग में ३८ छंद तक कवि ने जोरावर-सिंह का और अपना वंश परिचय दिया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है । सम्पूर्ण ग्रंथ पाँच शाखाओं में विभाजित किया गया है–

१–राजवंश वर्णन तथा शब्द अर्थ निरुपण
२–विभाव, अनुभाव, संचारीभाव आदि निरुपण
४–शब्दालंकार निरूपण
५–अर्थालंकार निरुपण

कवि ने मम्मट के मत का प्रतिपादन करते हुए लक्षणों को सोदाहरण समझाने का सफल प्रयत्न किया है । विषय के अनुसार छंद और भाषा के प्रयोग हुए हैं । वीर रस के छप्पयों में रासो की शैली का प्रयोग पाया जाता है ।

आदि भाग–

छप्पय

मंगल मंगल करन रुप मंगल छबि छाजत ।
बुधि विसाल गुन जाल वाल ससि भाल विराजत ॥
फरस पांनि वरदांनि दुषद दानव दल षंडन ।
एक दंत निति मंत मत्त दंति मुष मंडन ॥

जिह जोग काज जगपत ही लहत-सिद्धि सिव सिद्धि तुव ।
बीर रस भूषन करन देहु उकति गन ईस तुव ॥ १ ॥
( ५ छंद तक ब्रह्मा, शिव, कृष्ण, सरस्वती आदि की प्रार्थना है )

कवित्त

कुल पति मिश्र सब कविन के चक्रवर्ति,
चक्रवर्ति गावैं गाथ सुनैं गुन भारे की ।
नागदेव लोक तें निपुन कीनौ लौक,
नांन्हूंरांम जैसी मति गज मुषवारे की ॥
सुर गुर भूलि कैं असुर–गुर भूलि गयें,
उदै निसिराज कै गनति कौंन तारे की ।
एक मुष वारेन की कविता समान कैसें,
समता न कविता हजार मुषवारे की ॥ ६ ॥

दोहा

जोति रूप प्रगटैं सुबुधि, मिटत तिम ( र ) अग्यांन ।
दिनकर जिम कवि षेम को, धरैं जबैं कवि- ध्यान ॥ ७ ॥

## अथ राजवंस वरनन

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दोहा

देव अंस राजा भए, रघुकुल कै अवतंस ।
लषि मत पूरव कवि- ने, वरनत हौं तिन वंस ॥ ८ ॥

छंद पद्धरि

नृप ईस धर्म ग्वालेर दीन । तिन पुत्र सोढ भए अति प्रवीन ॥
सुत दुलहराय जमबाइ भाइ । दिय वड गूजर मींनां उडाइ ॥ ६ ॥
कुल तास कलस का किल नरेस । सुत हनूंराय हनमंत भेस ॥
जग जांन उदे तिनकैं सपूत । जिन मारि लई धरनीं अभूत ॥ १० ॥
जिनकैं पजौंन सावंत भेस । जीते कमद्ध कनवज्ज देस ॥
ता पुत्र मलैसी वड ववेक । गिरनारि आदि जीते अनेक ॥ ११ ॥
वीजल नरेस तिनकैं गुरूर । नृप राजदेव तिन वंस सूर ॥
कहि कीलृणदे भय तास नंद । सुत कुंतिल लीने अति अनन्द ॥ १२ ॥
सुनि जौंनसीह ता पुत्र मांनि । वर उदैकरण ता पुत्र जांनि ॥
तिनकैं नरेस नरसिंघ गात्र । भुज बंधु दुतिय स्वौवृंभराव ॥ १३ ॥

स्यौ वृंभ प्रगट स्यौवृंभ भूप, तिन जुद्ध जोरि जीते अनूप ॥
जिन वंस भोज षग दांन संग, रणमल्ल तास कैं रण अभंग ॥ १४ ॥

### दोहा

रणमल्ल के नाथू भयो, दुतिय पंचाइण वीर ।
आसल जी सुत तीसरो, जुटै जंग तव वीर ॥ १५ ॥
पुत्र पंचाइण कै भयौ, दिन मनि देईदास ।
सुत गुपाल तिनकैं भयौ, जिम गुपाल वृजवास ॥ १६ ॥

### कवित्त

वारह वरस कैं संवारी वड़ गूजरांनि,
तीन बेर खेत परयौ चावले लराई कौ ।
पूरव में मारयौ वलषटा कौ फवजदार,
दक्खि डारयौ दल जौं वरार पति साई कौ ॥
ठौर २ खगावल जीति के गुपालदास,
पायौ मांन भूपतैं किताव रवताई कौ ॥ १७ ॥

### दोहा

सुत गुपाल के द्वै भये, इक गनि भोपतिराव ।
कदौंखतसी दूसरौ, रिण से तिनको चाव ॥ १८ ॥
भीम रूप भोपति तनय, रावत रावोदास ।
फतेसिंघ डूंगर प्रवल, अरि कुल करनै त्रास ॥ १९ ॥

### कवित्त

भिच्छुक के कर दांन कौ देखत लच्छि छिपावत लोग भए हैं ।
जैंवत एते रसोई में आयकैं वात में टाक कैं पात गए हैं ॥
षग्ग गहैं कहि कौंन वचै जस के सुत तैं सब आइ नए हैं ।
रावत राघवदास के त्रास तैं दुज्जन वास घरान रए हैं ॥ २० ॥

### दोहा

बड़ गूजर बल षंडि कैं, भूडों लयो छिनाइ ।
मींना मारयौ वारि कौं, फते फतेसिंघ पाइ ॥ २१ ॥
फतेसिंघ के केसरी, सिंघ सिंघ के भाइ ।

चतुरसिंघ बल करि प्रबल, पुनि सुजानसिंघ गाइ. ॥ २२ ॥
अचलसिंघ अरू देवसिंघ, फूलसिंघ मन मांनि ।
महुकमसिंघ पुनि अजबसिंघ, हिन्दू सिंघ जग जांनि ॥ २३ ॥

छप्पय

फतेसिंघ के राव देवसिंघ देव प्रगट्टिव ।
बीदरपति बल भीम खगावल दुज्जन बल घट्टिव ॥
रांम कांम आसांम धाइ धौंकल धर किन्नव ।
कवर किसन कै वैर बेगि दुज्जन सिर छिन्नव ॥
बहु वर जट्ट मारे अवट, सोधि वृज सव सुद्ध किय ।
आ वैरी नाथ विसनेस कौं, जीति जंग तिन जोति दिय ॥ २५ ॥

दोहा

देवसिंघ कैं कँवर प्रिय, वषतसिंघ जुझ्झार ।
जोरावरसिंघ जौरवर, अरि मारे गहि सार ॥ २६ ॥
कवर उदै बषतौ कवर, कोकि लियो करतार ।
मेव मारि रेवागढी, झूक्यौ राव झुझ्झार ॥ २७ ॥
जुद्ध काव्य विद्या सकल, इत्यादिक पढ़ि धीर ।
इमि प्रवीन पुहुमि भयौ, जोरावरसिंघ वीर ॥ २८ ॥
विदर बड़ाई ग्रन्थ रचि, कहैं कबीसर गाइ ।
सो प्रसाद जयसिंघ कौं, लीज्यौ सव जग पाइ ॥ २९ ॥

छप्पय

दए धवल पुरधाव वीर जोरावर रूढ्ढिव ।
सांभरि सैद संघारि षेत परि घाइल उढ्ढिव ॥
जट्ट पट्ट दहपट्ट जट्टमंडल वसि किन्नव ।
आंवै गढ़ गंजाइ धाइ हाडा हठ छिन्नव ॥
अरि आड तोडि आडावला-मेर घेर सव जेर किय ।
वन गिरहि भेदि जयसाहि वलिए कहा कहिं गु लाज लिय ॥ ३० ॥

कवित्त

लीनै तीन लोक भार करतार राज लहैं
कहैं वेद गाथा मैं प्रमान मत वाहि कौ ।

दीनों करतार नरलोक भुज भार सब
दिली पातसाह कौ जनम धनि ताहि कौ ॥
दिली पातिसाह पातिसाही थंम जांनि करि
सौंप्यौ जयसिंघ भुजभार पातिसाहि कौ ।
दीनों जयसिंघ महाराजि राज-भार सब
जोरावरसिंघ मौर जांनि कै सिपाही कौ ॥ ३१ ॥

दोहा

जोरावरसिंघ जोरवर, लखि जयसिंघ नरेस ।
राज-भार सौंप्यौ सरस, थप्यौ मालवा देस ॥ ३२ ॥
किला रांमगढ़ निकल इक, गांव भानपुर चार ।
तहां कविन की करि सभा, कीनौं कवित विचार ॥ ३३ ॥
तहां वाघोरा भाट इक, चंद नंद सुषधाम ।
वासी गढ़ आमीर कौ निज कवि न्हांन्हूंरांम ॥ ३४ ॥
तिन कवि कौं कीनौं हुकम, सब सुष दै सुष पाइ ।
रस कविता भूषन वलिन, वरनौ ग्रन्थ बनाइ ॥ ३५ ॥
हुकम सकति सम पाइ कैं, मंमट मत को पाइ ।
वरनौ कविता कलप तर, ग्रंथ वाम ठहराइ ॥ ३६ ॥
मन चिंतत फल कलपतरु, सेवत देत बताइ ।
जिन रस भूषन बहुलहैं, कवित कलपतर गाइ ॥ ३७ ॥
संवत सतरह सत सुनौं, वरष अठयासी जांन ।
नवमी आदि अषाढ़ पख, रचना ग्रन्थ प्रमांन ॥ ३८ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

हुकम समांन कीनौं कविता कलपतर
पाइ इत तामैं भेद कवि रस भीनौं हैं ।
चौप करि चाह सौं सुनत भए भिंन भिंन
ताही वे रचित कौं उमंग और कीनौं हैं ॥
जोई जोई चाह्यौ सोई दीनौं मनचिंत फल
बहुरि जगत सांभ ऐसी जस लीनौं ह ।

नान्हूंरांम कवि कौ किताब कवि कौ
जोरावरसिंघ धीर रीझि करि दीनौं हैं ॥ २८६ ॥

दोहा

पुषि अष्टमी भूमि सुद्व, कातिक आदिक पाष ।
सबै ग्रन्थ पूरन भयौ, पूरन कवि अभिलाष ॥ १६० ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( २४ ) **कविप्रिया**–रचयिता–केशवदास। प्रति १। देखो भाग १, (२२)

प्रति २ । आकार–७" × १४" । पत्र-संख्या–२१ । पद्य-संख्या–६८ । दशा-जीर्ण ।

[ अन्तागी संग्रह ]

प्रति ३ । आकार–११½" × ८" । प्रति अपूर्ण है। अतः पत्र-संख्या १ से ८ तक अप्राप्य है; और फिर ६ से १४ तक वर्तमान है; १५ से १६ तक अप्राप्य है; और फिर २० से ३५ तक वर्त्तमान है। रचना ३५ पृष्ठ पर समाप्त होती है जहाँ उसका लिपिकाल "संवत् १७४० वर्षे शाके १६०५ प्रवर्तमाने महा मांग्यल्य प्रद पोष मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां तिथौ भौमवारे श्रीमेडता गदये लिखावतं पंचौली श्री अचलदासजी अत्मार्थे चीरंजीव शुभं भवतु ॥ लिखतंम शेन सांवलः ॥"

[ उदयसिंह भटनागर, उदयपुर ]

( २५ ) **कविप्रिया टीका** । टीकाकार–हरिचरणदास । रचनाकाल–संवत् १८३५ मघ शुक्ल ५ । आकार–१२" × ६" । पत्र-संख्या ११२ । श्लोक-संख्या–७१२५ ।

अथ कवि की स्थिति

राजत सुबे विहार में, हैसारनि सरकार ।
सालग्रामी सुर सरित, सरजू सोम अपार ॥ १ ॥
सालग्रामी सरजु तहँ, मिली गंग सो जाय ।
अंतराल में देस है, हरि कवि को सरसाय ॥ २ ॥
परगना 'गोआ' तहाँ, गाँव चैनपुर नाम ।

गंगा सों उत्तर तरफ, तहाँ हरि कवि को धाम ॥ ३ ॥
सरजूपारी द्विज सरस, वासुदेव श्रीमान ।
ताकों सुत श्रीरामधन, ताको सुत हरि जान ॥ ४ ॥
नवा पार में गाम है, बब्या अभीजन तास ।
विस्व सेन कुल भूपकर, करत राज कवि भास ॥ ५ ॥
मारवाड़ में कृष्णगढ़, तंहं नित सुकवि निवास ।
भूप बहादूर राज है, विरदसिह जुवराज ॥ ६ ॥
राधा तुलसी हरि चरन, हरि कवि चित्त लगाय ।
तहाँ कवि प्रियाभरन यह, टीका करी वनाय ॥ ७ ॥
सत्रसो छयासठि महीं, कवि जो जन्म विचारि ।
कठिन ग्रंथ सूधौ कियो, लै है सुकवि निहारि ॥ ८ ॥
संवत् अठारह सौ विते, पैतिस अधिके लेषि ।
साक अठारह सौ जपै, कियो ग्रंथ हरि देषि ॥ १४ ॥
माघ मास तिथि पंचमी, शुक्रा कवि को वार ।
हरि कवि कृति सौं प्रीत हो, राधा नन्द कुमार ॥ १५ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( २६ )**कविवल्लभ** । रचयिता--हरिचरणदास । आकार--१२″ × ६·२″ । पत्र-संख्या ६१ । पद्य-संख्या ४३० । विशेष देखो भाग १ ( २४ ) ! इसमें कवि ने गद्य में व्याख्या भी दी है । कवि ने बिहारी-सतसई, कविप्रिया, श्रुति भूषण साहित्य दर्पण आदि के उदाहरणों के साथ जो उदाहरण दिये हैं उसमें अपने एक स्वरचित ग्रन्थ "मोहन-लीला" से भी उदाहरण दिये हैं जो अब तक अप्राप्य है।

सूचना–इसीके साथ 'काव्य चंद्रिका' भी है ।

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( २७ ) **काव्य कुतुहल** । रचयिता–चित्रसाल। लिपिकाल संवत् १६२५ पोष कृष्णा ११ गुरुवार। आकार–६″ × ६·५″ पत्र–संख्या २७ । प्रत्येक पत्र पर ६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ अक्षर हैं। अक्षर जमे हुए हैं और लिपि नागरी है। छंद–संख्या २१४। यह पिंगल तथा रस का एक लक्षण ग्रंथ है। ग्रन्थ व्रज भाषा में है।

आदि भाग–

दोहा

जय बांनी दांनी सुमति, कविता कर वर पंथ ॥
चतुर रसन रचना रचै, काव्य कुतूहल ग्रंथ ॥ १ ॥
गोकुल सुतैलंग कुल, गुर मुरलीधर पाय ॥
बंदन कै चातुर रचत, भाषा सहज सुभाय ॥ २ ॥
कवि कविता लछन सहित, बहुरि प्रयोजन जान ॥
काव्य अंग पुनि भेद कौं, बरनौ प्रथम प्रमान ॥ ३ ॥

उदाहरण–

( अथ–वियोग )

अब वियोग के भेद बखांनौं । पूर्वानुराग रूचिर हम प्रमांनो ।
ईरषा स्राप विदेस विभागे । उदाहरो पूर्वानुरागे ॥६५॥

( पूर्वानुराग–यथा बरवै )

गगरी लग लग बगरी चित ही चाही
सगरी पग गुन अगरी हित ही हाही ॥ ६६ ॥

( हास्य )

हास्यालंबन जांनि विदूषक तिह अंगत उद्दीपौ ।
दग संकोच अनुभाव सुनी मुदत अलस संचारि समीपौ ॥ ६७ ॥
हासी इनके व्यंग ह्वै नृप कवित्त ।
हास्य सुरगनि चातुरनि के चित्त ॥ ६८ ॥

उदाहरण

जल थल भ्रम पर उचक रत, लषि रहै सबै मुसकाय ।
जांनि फटक थल परत ( जु ) जल, मैंह सबै नृपराय ॥ ६९ ॥

( ओज )

कटि सुर्वन सुख सरेफ संग । गुन ओज चोज जिहि रूधिर अंग ।
पुनि और बीर रस को भुवन्न, लखिव गाम गोड सगो सुवन्न ॥ ३ ॥

प्रसाद

आभा सै सुनत हि अर्थ तास । कहिये प्रसाद गुनको प्रकास ॥
चित चहै भलो जन गूढ़ जांनि । साँचो सु एक हरि ध्यान ग्यांनि ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( २८ ) **काव्य सिद्धान्त** । रचयिता -सूरति मिश्र । रचना काल-संवत १७६८ काति सुद ७ बुधवार । आकार-६" × ७·५" । पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५ अक्षर हैं। अक्षर नागरी हैं। छन्द-संख्या १५० । यह प्रति जोधपुर राव बागजी के भतीजे जीवराजजी की प्रति से संवत् १६३२ वैसाख बुद ५ गुरूवार को महत्तापसिंह द्वारा सलूम्बर में लिपिबद्ध की गई।

आदि भाग-

दोहा

श्री वृन्दावन मधि लसै, नित वय नवल किसौर ।
गौर स्याम अभिराम तन, दंपत संपत मौर ॥ १ ॥
कवि ताहि को कहत है, समझै कविता अंग ॥
बृज सविता गुण जो चहैं, तो छवि ता प्रत अंग ॥ २ ॥

काव्य लक्षण

बरनन मन रंजन जहाँ, रीत अलौकिक होय ॥
निपुन कर्म कवि को जुतह, काव्य कहत कवि कोय ॥ ३ ॥

उदाहरण-माधुर्य-

दोहा

रौद्र रस-

आलंबन मधि रौद्र अरि, चिरत उदीपन धार ॥
भ्रू भंगादि अनुभाव हैं, उग्रतादि संचारि ॥ ११३ ॥
जग के विषई नरन कौ, सदगत वरनी नाह्य ॥
बृज बालन कैं गुन रटैं, तेऊ सदगत माह्य ॥ ११४ ॥

अन्तिम भाग-

'शब्द अर्थ तितु धात मय, जीव सुरस आनन्द
अलंकार सौं कान्त है, अंग अंग मत छन्द ॥ १४७ ॥
गुन जु सुरतां आदि गुन, रीति भलन सुनुधीर ॥
दौष अंध पंगादि विन, जानो काव्य सरीर ॥ १४८ ॥

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( २६ ) **छंद पगो निधि** । रचयिता-महाराज कुमार मदनसिंह 'मदनेश', भींडर । रचनाकाल- १६२६ । आकार-फुल्सकेप । पत्र संख्या ४५ ..। छंद संख्या १३६ ..। यह ग्रंथ रचयिता के जीवन काल में समाप्त न हो सकने के कारण अपूर्ण ही रह गया है । इसमें एक जै मंगल अश्व का चित्र तथा अन्य पताका तालिकादि के चित्र और कोष्ठक भी अंकित है ।

आदि भाग-

दोहा

विघन हरन मंगल करन, लंबोधर उर ध्याय ॥
तवै काज कछु कीजिये, तुरत सिद्ध दरसाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

धारा वर्ण जु च्यारिकौ, रगन चंद गुरु जानि ॥
छंद निर्गला जगत गुरु, पिंगल सीखि प्रमानि ॥ ५ ॥

धारा छंद उदाहरण

दूत आयो । पत्र लायो ॥
भोग डारौ । जोग धारौ ॥ ६ ॥

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

( ३० ) **छंद प्रकास** । रचयिता- दानदास दयाल । आकार-६″ × ६″ । पत्र-संख्या ५६, जिनमें प्रथम १६ पत्र अप्राप्य हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । ३२ से ५६ पत्र में कमल बंध, वृत्त बंध, चश्मा बन्ध, जहाज बन्ध आदि ३७ चित्र हैं । इसमें रचयिता ने एक ही छंद में लक्षण और उदाहरण दे दिये है और साथ ही दादू पंथ की भावनाओं को भी व्यक्त किया है ।

उदाहरण

छप्पय

करियै यक दस प्रथम, त्रयोदस फेरि लगावत ।
इहि विधि कल चोबीस, च्यार पद काव्य बनावत ॥
रचि द्वै पद अवसान, पंच दस तेरह आनय ।

उल्लाले की रीतिमत, बसु बीस बखानय ॥
यह कह्यौ नाग खग नाह सौं, छप्पय छंद अनंद सो ।
जब ह्वै अनन्य भगवत भजै तब छूट हिं भव फंदसों ॥ ५३ ॥

इन्होंने कुल ७८ छंदों का उल्लेख किया है। शेष ३७ बाह्य अलंकारों के विभिन्न छंद हैं

[ कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( ३१ ) **छंद प्रबन्ध पिंगल भाषा** । रचयिता– भंडारी उदेचंद। रचना-काल संवत् १९३६ आषाढ़ विद ३ । आकार–१०¾″ × ७″ । पत्र–संख्या १७, प्रत्येक पृष्ट पर २२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २६ अक्षर है। पद्य-संख्या १५०।

आदि भाग–

दुहा

विघन हरन वांछित करन, श्री मदिष्ट गुन गाय ।
रचना छंद प्रबन्ध की, रची सबन सुषदाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दुहा

सब देसन में लसत है, मरधर देस विसाल ।
तहां तखतगढ़ जोधपुर, तपे मान महिपाल ॥ २८ ॥
ग्रन्थ बन्यो ता देस में, नगर नागपुर मांहि ।
बुधजन समुभि सराय है, यामे संसय नाहि ॥ २६ ॥
कंठ कर लहि ग्रन्थ यह, अर्थ मर्म निरधार ।
सो सब छंदन ग्रंथ को, ह्वै है वारा पार ॥ ३० ॥
परम देव नरवान में, ओरन ओसो बोध ।
चाहे सो विधि सकल ह्यो, तैसे फिर कछु सोध ॥ ३१ ॥

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ३२ ) **छंद रत्नावली**–रचयिता हरिराम दास निरंजनी। रचना काल-संवत् १७६७ में डीड़वाना में लिपि संवत् १६३० में रामरतनदास द्वारा भांडर में। आकार १२″ × ७½″। पत्र संख्या–२६। प्रत्येक पृष्ट पर १७ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १६ अक्षर है। छंद–संख्या ११०।

आदि भाग–

दोहा

गुरु जन पति गोविन्द को, नाय सीस हरि रांम ॥
पिंगल मत भाषा विषे, रचत रुचिर परकाम ॥ १ ॥
मात्रा बरन बिभेद करि, द्वै विधि लौकिक छंद ॥
पिंगल आदि आचार जन, कहे बांधि पर बंद ॥ २ ॥

अंतिम भाग–

दोहा

जिहि अर्थ करि कवित कौ, चिमतकार मन होय ॥
अलंकार तिहि नाम को, कवि धारो सब कोय ॥ १०७ ॥
छंद नाम कृत भेद लसि, कविजन माँनहु वेद ॥
कै देशान्तर रीति है, कै आचारज भेदि ॥ १०८ ॥
ग्रंथ छंद रत्नावली, सारथ याको नाम ॥
भूषन भारती तै भर्यौं, कहे दास हरीराम ॥ १०९ ॥
संवत सर ७ नव ९ मुनि ७ शशी, १ नव नवमी गुरु भांति ॥
डीडवान दृढ़ कूप तट, ग्रंथ जन्म थल जानि ॥ ११० ॥

[ सरस्वती भंडार, भींडर ]

नोट:—इसी ग्रंथ के साथ जयपुर महाराज प्रतापसिंह 'ब्रज निधि' कृत भर्तृहरि शतक की टीका भी दी गई है ।

( ३३ ) छंद विवेक—रचयिता—कवि जयनारायण। रचना काल–संवत् १८६२ वैसाख शुक्ल ३ गुरुवार और संवत् १६३४ फाल्गुण शुक्ल ६ बुधवार को गोरजी मोतीराम द्वारा बाँसवाड़ा में। आकार १२″ × ७.६″ पत्र संख्या–२२। प्रत्येक पृष्ट पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं। छंद–संख्या १२१।

ग्रन्थ की वर्तमान दशा उत्तम है। ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि लिपिकार ने महाराजा रावत मोतीसिंह राजगढ़ वाले की आज्ञा से इस ग्रन्थ की प्रति लिपि की और प्राप्त प्रति इसकी प्रतिलिपि है। बीच बीच में कवि ने अपने आश्रयदाता उमर नरेश का नाम दिया है।

आदि भाग–

दोहो

याहि पढै तें जानि है, छंदनु रचन विवेक ॥
नाम धर्यो या ग्रन्थ को, याते छन्द विवेक ॥ १ ॥
लगु–गुरु–जुत गन आठ हैं, सब बानी में लीन ॥
याते इनको प्रथम ही, करत विचार प्रवीन ॥ २ ॥

'अथ लगु विचार'

जा अछिर के बिन्दु नहीं, परै न होहि संजोग ॥
एके मत सों लगु लिषे, सरल रेष कवि लोग ॥ ३ ॥

उदाहरण–

निसानी छंद

तेरह पुनि दस पांच हैं, गुर अंत बनावै ।
छंद निसानी में कला, तेईस गनावै ॥
चिंतामनि कल वृच्छ कौं, काहे मन लावै ।
श्री ऊमर नर नाह को, जस जो कवि गावै ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग–

द्वात्रिंसाच्छर रूपक–घनाच्छरी छंद

चारवौ बेर आठ आनै, मध्य बिसराम ठाने,
बरन बत्तीस मांने, अन्त लघु कौ हे धाम ।
नारायण कहैं ऐसे, लछन बतायें जैसे,
च्यारी तुक रचे तैसे, सोहत गुनन ग्राम ॥
ऊमर नरेस जहाँ, रावरो भनत इमि,
सु कवि लहत मोज, पूरन सकल काम ।
जाति गुन आगरी है, अति सुख मागरी है ।
रूपक घनाच्छरी है, सेस मन याको नाम ॥ १६ ॥

दोहा

पिंगल मत बहु छंद हैं, कहे कोम पे जात ॥
बरने कछुक जथा सुमति, जे मैं सुन्यो विष्यात ॥ १ ॥

पच्छि २ अंक[९] वसु[८] ससि[१]यहै, संवत् माधव मास ॥
भयो पच्छ स्वत तीज गुरु, छंद विवेक प्रकास ॥ २ ॥
प्रगट लच्छ लच्छन सहित, कहे दुहूं बिधि छंद ॥
नाम भेद कैते कहे, लेहु विचार कविंद ॥ ३ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३४ ) **छंदो निधि पिंगल**—रचयिता—मनराषन श्रीवास्तव । रचना काल—संवत् १८६१ माघ शुक्ला १३ । आकार—१२.६″ × ७.६″ पत्र-संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ट पर ३३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति पर २८, ३० अक्षर हैं।

इस ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि अधो नगर निवासी कवि शिवदत्त कान्य कुब्ज ने संवत् १९३६ असाढ़ सुद २ शुक्र को बांसवाड़ा में कविराव बख्तावरसिंह के पठनार्थ लिपि बद्ध किया। ग्रंथ ब्रज भाषा में है।

आदि भाग—

दोहा

सीता राम सरोज पद, तीनि लोक को ईस ॥
मन राषन को दास करि, देहु भक्ति बकसीस ॥ १ ॥

सोरठ

सुमिरत ही सिधि होइ, श्री गनेस कुंजर बदन ॥
करहु क्रिपा मम सोइ, देहु बुद्धि संपति सदन ॥ २ ॥

दोह

सम्वत दस[१०]बसु[८]बर बसत, इकसठि[६१]के अनुसार ॥
भयो माघ सुदि त्रयोदसी, छंदोनिधि औतार ॥ ३ ॥
सीतल पावन सुभग है, सोमवार है बार ॥
करत काज सो सिद्ध है, सकल मनोरथ चार ॥ ४ ॥
कायस्थ हैं भांडेर को, श्रीवास्तव कुल जान ॥
हरिनारायणदास सुत, मनसुक राम प्रमान ॥ ५ ॥
ता सुत मनराषन प्रथम, अमरसिंघ लघु भाइ ॥
करत सदा तिन पर क्रिपा, पंडित 'कवि नर' राइ ॥ ६ ॥
बांदा है अस्थान सुभ, कैन नदी जहँ वास ॥

ता में नित प्रति देखिये, पंडित सुकवि प्रकास ॥ ७ ॥
बंदन गुरु के चरन हूँ, सीस नाई सुष पाइ ॥
तिन्ह यह छंदो ग्रंथ को, दीनो ग्यान बताइ ॥ ८ ॥
पिंगल भाम अगस्त मत, गहि कवीस की राहि ॥
कीन्हों छंदो वृति यह, मनराषन चित चाहि ॥ ९ ॥
चतुर वेद को अंग है, छंद सफल सुसमान ॥
याते पढ़ियत प्रात नित, भाषत नाग सुजान ॥ १० ॥
बेद पढ़े बिन बिप्र ज्यों, अंत्यज त्यों अति दीन ॥
तैसे पिंगल बिन पढ़ै, कवि है कहत गुनी न ॥ ११ ॥
श्रीमुनिलाल कृपा करी, आग्या दई सु बेस ॥
छंदन की रचना करहुँ, जिहि विधि माषहु सेस ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग–

दीपमाल छंद–दोहा

बारह दस दस बस बिरति, चरन चरन में जान ॥
दस चोकल इक चरन करि, दीपमाल सुष बान ॥ ६७३ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३५ ) **तखत विलास** । रचयिता–विप्र शिवराम दधीचि । आकार–६"×७½"। विषय–नायिका भेद लक्षण ग्रन्थ। रचना काल सं० १८६६। राव महतापसिंह ने संवत् १९३२ अषाढ़ बुध ३ शनि को ( सलूम्बर मेवाड़ ) सेलाना राव हमीर से प्राप्त प्रति से इस प्रति को लिपि बद्ध किया। ग्रन्थ ब्रजभाषा में हैं। पद्य–संख्या १६९।

आदि भाग–

कवित्त

गुरु देव स्तुति

माया सी निसा की जहाँ नाहिन उदोत होत,
कलिकृत तारू की न जोत लव लेस है ।
तिमिर अहंमद सोउ डिगो न जानू किते,
काम से उलूक नाहिं पावत प्रवेस है ॥

सिष्य अरविंद सिवराम से प्रफुल्ल भये,
चित चंचरीक गुन गावत विसेस हैं ।
हेरे मैं गनेरे दूर नेरे ना सुनेरे ऐसे,
मेरे गुरुदेव भुप अपर दिनेस हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

बालबधू के पठन हित, लच्छन किये विचार ।
उदाहरन नाहीं कहें, ग्रन्थ बदन हिय धार ॥ १६४ ॥
मम कविता सब गुन रहित, बाल बचन सौ जोय ।
श्री गुरु भूप प्रतापते, कान मानि हे कोय ॥ २६५ ॥
संमत निधि९ ग्रह९ वसु८ महि१, दसइ चैत्र सुकलान ।
तखत विलास भो……, रसिकन को सुखदान ॥ १६६ ॥
तखतसिंह नृप हुकमते, लहि सिवराम हुलास ।
श्रीगुरु भूप प्रतापते, कीनो ग्रन्थ प्रकास ॥ १६७ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३६ ) **नखसिख** । रचयिता–बलभद्र ।

प्रति १: आकार–११″×७.२″ । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ६५ ।
लिपिकाल–सं० १६४२ ।

आदि भाग–

मरकत को सूत, कीधौं पन्नग को पूत,
कीधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं ।
मखतूल गुन ग्राँम सोभित सर स्यांम,
काम मृग कानन कि कुहू कें कुमार हैं ॥
कोप की किरनि जाल नील कंजरी के तंतु,
उपमा अनंत चारू चामर सिंगार हैं ।
कारे सटकारे भीजैं सौंधे तैं सुगन्ध बास,
ऐसे बलिभद्र नव बाला तेरे बार हैं ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

प्रति २: आकार-१०¾"×७"। पत्र-संख्या ६७। लिपिकाल-सं० १६३७। रचना काल सं० १७६६ पौष सुदी १३, मंगलवार ।

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ३७ ) **नैत्र वर्णन** । रचयिता-आलम । आकार-११"×७·२" । पत्र-संख्या ४। पद्य संख्या २७।

आदि भाग-

जोत भरे जेति भरे जोबन जेब भरे,
मीर भरे होत जैसे वारज विहान के ।
दया भरे मया भरे हांसी भरे हसा भरे,
सोभा के सुभाय भरे जीवन जिहान के ॥
रस भरे रूप भरे रंग भरे ससि के-से,
सील भरे तेज भरे 'आलम' सुमान के ।
विस भरे सुधा भरे लाज भरे नेह भरे,
मैंने भरे मान तेरे नैन रहिमान के ॥ १ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अन्तिम भाग-

सेत संषामणी जोति अंजन धनुष साज विक्र बिष अरून सुमन संग लाये हैं ।
प्रेम नेम सुधा धेनु सुन्दरता रमा-रंभा 'आलम' चपल बाजी काम के सधाये हैं ।
प्रीतम मद पुथरी कल्पतर पूरनता धनंत्री सुद्रष्टी गज-गतिन सुहाये हैं ।
काहि को समंद मथ देवता समर कीनो चवुदे रतन त्रिय-नैनन में पाये हैं ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३८ ) **नेहतरंग** । रचयिता-रावराजा बुद्धिसिंह । आकार-८"×६·५" । पत्र-८५ । पद्य-४६१ । रचनाकाल-सं० १७८४, भाद्रपद शुक्ल ६, चन्द्रवार। लिपिकाल-सं० १६२३ चेत्र वदि ६, मंगलवार ।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३६ ) **पान्डव यशेन्दु चन्द्रिका** । रचयिता-स्वरुपदास आकार-८·५"×१०·६" । इसमें १६३ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २१ अक्षर हैं। अक्षर मोटे और जमे हुए हैं। अंत के ११ पत्रों पर एक शुद्धि पत्र दिया गया है जिसमें काव्य में प्रयुक्त लगभग १००० तद्भव शब्दों के

तत्सम रूप दिये गये हैं। ग्रन्थ में कवि ने डिंगल, पिंगल और संस्कृत तीनों भाषाओं का प्रयोग किया है। कविता अलंकृत और रसपूर्ण है। ग्रन्थ १६ मयूखों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में ११६७ छंद है। कवि ने श्लोक, दोहा, सोरठा, चौपाई के अतिरिक्त पद्धरी, छप्पय, त्रिभंगी, कवित्त आदि छंदों का भी प्रयोग किया है। ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है। अतः हम कवि के उन दोहों को उद्धृत करते हैं जिसमें उसके तीनों भाषाओं का अलग अलग प्रयोग करना स्वीकार किया है।

दूहा

पिंगल डिंगल संसकृत, सब समझन के काज ।
मिश्रित सी भाषा धरि, छिमा करिहुँ कविराज ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४० ) **पिंगल** । रचियता–चिंतामनि । प्रति १–आकार–१२.६″ × ७.६″ इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्ति में और प्रति पंक्ति २० । २१ अक्षर हैं। प्रति अपूर्ण है। केवल आदि भाग दिया जाता है—

॥ अथ प्रस्थान विपरीत प्रकारांतर को प्रस्तार ॥

अंतकला सिर गुरु कौं आंन । पाछैं रेख समांन प्रमांन ।
लगु आवैं आगैं यह जांन । अस्थानिक दूजो पहिचांन ॥ १ ॥

संष्या विपरीत भामह मत प्रस्तार

आदि कला संधि गुरु देसही, अगैं पांति बरोबर रही ॥
पाछैं सौं लगुसौं भर देहू, यह संष्या विपरीत करेहू ॥ २ ॥

उभै विपरीत दोहा

अंत कला गुरु दीजिये, आगैं करिये तूल ।
पाछैं लवु सौं ले भरो, उभै नाम अनुकूल ॥ ३ ॥

[ कविराव मोहनसिंह ]

प्रति २–आकार–१२.६″ × ७.६″ । पत्र–संख्या ३३ । पद्य–संख्या १५६ । लिपिकाल सं० १६२७

[ सरस्वती भण्डार, भींडर ]

**( ४१ ) पिताका लच्छन तथा षोड़सक्रम** । रचयिता-राव बख्तावरसिंह ।आकार-१२.६″×७.६″। यह चिंतामनि पिंगल के साथ ही लिखा है। संवत् १६३७ इसका लिपिकाल है। इसमें १० पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २२। २३ पंक्तियाँ हैं, परन्तु स्थान स्थान पर मेरु, पताका ( पिताका ) गण आदि के कोष्ठक आ जाने से पंक्तियों और अक्षरों की संख्या कम भी हो गई है। प्रत्येक पंक्ति में २०। २१ अक्षर हैं। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग-

चौपाई

आड़े दंड पिताका करिये, सूची एक मत्त लौं भरिये ।
अंत एक तैं निकट जु अंका, घटाउ बरे लौं निरसंका ॥ १ ॥
लैके यक गुरु के रखथाना, निकट अंक लुपि कै तर लान्हा ।
यो एक लौं घट उबरे लीजै, यक गुरु की यक पंकति कीजै ॥ २ ॥

[ राव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

**( ४२ ) बिहारी सतसई ।** रचियता-बिहारीलाल

इसकी कई प्रतियाँ देखने में आई हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है। अब तक की प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७४३ चैत्र शुक्ला पंचमी की लिपिकृत है ( देखो भाग १, ७३ । (७७)। किन्तु यहाँ जिन प्रतियों का उल्लेख किया जा रहा है उनमें सबसे प्रथम प्रति किसी नथ्थमल नामक व्यक्ति द्वारा संवत् १७३८, फागुण कृष्णा प्रथम एकादशी, सोमवार की लिपिकृत है।

आकार-८″×५.१″। पत्र-संख्या २६। पद्य-संख्या ७१३।

आदि भाग-

दोहा

मेरी भव बाधा हरा, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झांई परै, स्यांम हरित दुति होइ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सामा सेन समान को, सबैं सही के साथ ।
बाहु बलि जयसिंह जु, फतू तिहारैं हाथ ॥ ७११ ॥

यो दल काढे बलकतें, ते जयसींघ भुवाल ।
उदर अवासुर के परै, ज्यौं हरि गाय गोपाल ॥ ७१२ ॥
घर घर हिंदुनि तुरुकिनी, कहें असीस सराहि ।
पतनि राषि चादरि चुरी, तें राषी जय साहि ॥ ७१३ ॥

बिहारी रत्नाकर में संवत् १७३६ की एक प्रति का वर्णन अवश्य है, परन्तु उसकी प्राप्त प्रतिलिपि सं० १८०० की है अतः अब तक प्राप्त प्रतियों में वह सब से प्राचीन प्रति है ।

[ श्री स्वरूपलालजी, जगदीश का चौक, उदयपुर ]

प्रति २ । आकार–१३″ × ५·६″ । पत्र संख्या–१० । पद्य-संख्या–७२० । लिपिकाल–सं० १८६५ आषाढ़ सुद ५ भौमे ।

[ स्वामी केवलराम दादू पंथी, उदयपुर ]

प्रति ३ । आकार–६·५″ × ५·८,″ सजिल्द । पत्र-संख्या ६६ । अक्षर बहुत सुन्दर और प्रति सचित्र है । चित्र दोहों की भावनाओं को प्रकट करने वाले हैं और राजपूत शैली में चित्रित हैं । ये बहुरंगी चित्र छोटे और बड़े सब मिलाकर ४३ हैं । इसकी लिपि तथा चित्रों का लेखक रामपुरा निवासी कडुजी दशोरा था । यह प्रति संवत १८१६ अगण वदि ६ मंगलवार को लिपिबद्ध की गई ।

[ जगन्नाथ वैरागी, भींडर ]

प्रति ४ । आकार–६″ × ६·५″ । पत्र-संख्या ३३ । छंद-संख्या ६७२ । लिपिकाल–सं० १८४४ ।

विशेष–इसमें सभी दोहों को विषयवार छांट कर अलग–अलग शीर्षक के नीचे रीतिकाल की शैली में लिपिबद्ध किया गया है ।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४३ ) **बिहारी सतसई की टीका** । (हरिप्रकाश) । टीकाकार हरिचरणदास ।

आकार–१२″ × ८·५″ । इसमें ११२ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २७ अक्षर हैं । अक्षर साफ और सुन्दर हैं । पत्रों को दीमक काट लेने पर भ. अक्षर बच गये हैं । इसका रचना काल संवत् १८३४ है और

लिपिकाल सं० १८६५ भाद्रपद कृष्णा ११ भोमवार। रचना काल सं०१८५०।

आदि भाग–

सवैया

तुलसीदल माल तमाल सो स्याम अनंग तैं सुन्दर रूप मोहाही
श्रुति कुंडल के मनि की झलकैं मुष मंडल पै वरनी नहि जाहीं ॥
सषि दोषि पियूष मयूष हुतें सुषमा अति आनन की सरसाही
बिहरै हरि गोप सुता संग कान्ह निसीपिनि मैं बनवीथिनि मांही ॥ १ ॥

उदाहरण–

दोहा

देष्यौ अन देष्यौ कियो, अँग अँग सवें दिषाय।
पैठत सी तन में सकुचि, पैठी चित हिल जाय ॥ १६ ॥

टीका–देष्यौ इति। सषी सों सषो वचन हे सवय हे सषि नायक कों अंग अंग दिषाय कें। नायक कों देष्यौ सो कियो। मानो नाही देष्यौ हैं। चित ही लजाय आपने चित में लजाय कें ऐसे वेठी आपना नन में सकुचिके पेठे हे पैठत सी। पैठत क्रिया हें ताके आगे सी वाचक हैं यातें अनुक्तास्पदा वस्तुत्प्रेच्छा।

अन्तिम भाग–

दोहा

सालग्रामी सरजू जहाँ, मिली गंग सों आय।
अंतराल में देस सों, हरि कवि को सरसाय ॥ १ ॥
सेवी जुगल किसोर के, प्राननाथजी नांव।
सस सती तिनसो पढ़ी, वसि सिंगार वट ठांव ॥ २ ॥
जमुनांत्तर श्रंगार वट, तुलसी विपन सुदेस।
सेवत संत महंत जहि, देवत हरत कलेस ॥ ३ ॥
पूरोहित श्रीनंद के, मुनि सांडिल्य महान।
हम हें ताकें गोत में, मोहन मो जजमान ॥ ४ ॥
मोहन महा उदार तजि, और जाचिए काहि।
संपति सुदामा को दई, इंद्र लही नहि जाहि ॥ ५ ॥
गही अकस मनु तातें, विधि को बंस लषाय।
राधा नाम कहें सुने, आननं कान बढाय ॥ ६ ॥

संवत अठारह सौं विते, तापर तीस रू चार ।
जन्माठे पूरो कियौं, कृष्ण चरन मन धार ॥ ७ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४३ ) **रघुनाथ रूपक** । रचयिता-कवि मंछ । रचना काल-संवत् १८६२ भादवा सुद ५ शुक्रवार । आकार-८" × ६.५" । पत्र-संख्या ७३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३, २४ अक्षर हैं । छन्द-संख्या १५०० । पिंगल के रीति ग्रंथ के समान यह भी डिंगल का एक रीति ग्रंथ है । इसमें राम कथा को उदाहरण स्वरूप लेकर डिंगल के रीति-शास्त्र का प्रतिपादन किया गया है । इसकी भाषा भी डिंगल है ।

आदि भाग-

गाहा

श्री निध आगम सारँ । बास्पनयनं च ज्यान की
अखिल जगत आधारं । सारंग धरण जयो अवधेस्वर ॥ १ ॥

दूहो

चरस करत लिखमण चमर, सरस अगर सामीर ।
ईस सिय जुत जन मंछ उर, वसो सदा रघुवीर ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दूहो

जम करो आज सरवरी, सरवरी सब सिर चंद ।
काम अधमरे अधमरे, मातर मतिर मति वृंद ॥
मंछ सुकवि कीधौ मुदै, निरमल भाषा नेत ।
मन रूप जति लिखियो महा, हरष मनां कर हेत ॥

पुष्पिका

राज श्री १०८ श्री अर्जुनसिंहजी का राज में लषित ब्राह्मण डुगारामेण ॥ पठनार्थ मोडजी पोथी सुखजी की छै ।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४४ ) **रसचन्द्रोय** । रचयिता-कवीन्द्र उदयनाथ । रचना काल-संवत् १८०४ । यह प्रति अपूर्ण है । इसके ४ पत्र लिखित है, शेष सब पत्र खाली है ।

प्रथम २॥ पत्रों पर ४५ छंदों में 'काव्य कुलवधु' वर्णन समाप्त हुआ है। दूसरे प्रकाश के केवल ३१ छंद ही लिखे गये हैं।

एक उदाहरण-

मध्याऽधीरा-सवैया

कुंज निकुंजनि कोतुक हेतु, फिरौ तुम श्रीफल लेत-सुठारे।
बानन बेधत कांम हमैं भरि, कोप कसीस कि कानि-किनारे॥
पीवत हो तुमतो मदिरा, हम पै मद मोहन जात सम्हारे।
लाल जगे कितहूँ तुम रैनि, भये दग आलस लाल हमारे॥

सूचना विशेष-देखो आचार्य शुक्लजी कृत हि० सा० इ० पृ० ३२६ तथा ना० प्र० स० द्वारा प्रकाशित आचार्य श्यामसुन्दरदासजी द्वारा संपादित हस्त-लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण पृ० १५ और १३०।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४५ ) रस पीयूष। रचयिता-सोमनाथ। आकार-६"×७"। पत्र संख्या १ से १२ तक; आगे के पन्ने अप्राप्य हैं।

आदि भाग-

छप्पै

सिंधुर वदन अमंद चंद सिंदु भाल धर।
एक दंत दुति वंत बुद्धि निध अष्ट सिद्धिवर॥
मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीगन।
चंचल श्रवन अनूप थोदि थिर करत मोहित मन॥
सुर नर मुनिवर नटजोरि कर गुन अनंत इमध्याय चित्त।
ससि नाथ नंद आनन्द करि जय जय श्री गणनाथ नित॥

[ उदयसिंह भटनागर, उदयपुर ]

( ४६ ) रस मंजरी। रचयिता-भानु कवि। आकार-६·३"×५·२"। पत्र-संख्या ६। प्रति अपूर्ण है-

अतः इस विषय में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता है। पाठ भी बहुत अशुद्ध है। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

दोहा

गुरु गणेस पद वंदि के, सारद चरन नमाय ।
बरनत हौं रस मंजरी, रसकन के सुखदाय ॥ १ ॥

सवैया

गोन विषैनत कन्नेत भूमै तिही पहीलै डग्र श्राप भरी है ।
फूलन भ्रम के डरते द्रम हूँ को भुजा सिव की प्रचरी है ॥
सैन समै भ्रग छालि कि वुपरै श्रापुन श्रंग करीट करी है ।
प्रेम के भारते श्रा रस वंत प्रिया हरने श्ररधंग धरी है ॥

[ राव मोहनसिंहजी, उदयपुर ]

( ४७ ) **रस रंग** । रचयिता–ग्वाल कवि । आकार–१४″ × १३″ । पत्र–संख्या ४० । रचना अपूर्ण है । प्रथम ५ पत्र अप्राप्य हैं । इन ५ पत्रों में ७६ पद्य थे । प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर हैं । विषय का विभाजन इस प्रकार है—

प्रथम उमंग—विभाव, स्थायी भाव; अनुभव संचारी भाव, सात्विक भाव-वर्णन-१६२ छंद ।

द्वितीय उमंग—पद्मिन्यादि, उत्तमादि, द्विव्यादि स्वकीया भेद मांन वर्णन-११२ छंद ।

तृतीय उमंग—परकीया, गणिकादि वर्णन-७४ छंद ।

चतुर्थ उमंग—अवस्था भेद ते पंच-दस नामका वर्णन-१०७ छंद ।

पंचम उमंग—सखी लक्षण ( अपूर्ण )-६ छंद । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

गच्छत पतिका मुग्धा को लक्षण

कवित्त

आयो काहू देस तैं नरेस कौ बुलावौ बेगि,
सुनत सिधायौं सीत्रा भोज के मिलन कौं ।
नाथ के चलत बटवाल नै नवायौ माथ,

हाथ मैं रह्योन हीय हूक नही लल की ॥
ग्वाल कवि कहै चांमी करसी चमक हीसो,
रेखह रही न कहूँ तन में चिलक की ।
सीत जर सोरी खैंचि मुख पे सुके सवारी,
सासु के पीछारी खरी थारी ले तिलक की ॥ २५ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४८ ) **रस रत्न टीका** । रचयिता–सुरति मिश्र । रचनाकाल संवत् सातअष्टादसै ( १८०० या १८०७ ) सावन छवि भृगुवार । लिपिकाल सं० १९२७ । आकार–८·६″ × ७·२″ । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या ७५ ।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४९ ) **रस रहस्य** । रचयिता–कुलपति मिश्र । आकार–फुल्सकेप । पत्र संख्या–४४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । ग्रन्थ का विषय ८ भागों में बंटा हुआ है, जिनका क्रम तथा छंद–संख्या इस प्रकार है—

१ अध्याय — अप्राप्य है
२ ,, — शब्दार्थ निर्णय ३७ छंद
३ ,, — ध्वनि निरुपण ६० छंद
४ ,, —गुणीभूत व्यंग निरुपण २२ छंद
५ ,, — काव्य दोष १३७ छंद
६ ,, — गुण निरुपण २४ छंद
७ ,, — शब्दालंकार ४३ छंद
८ ,,—अवसर ते प्राप्त अर्थालंकार १८३ छंद

एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

न्यून पद लक्षण–

दोहा

जा बिनु अर्थ बने नहीं, सो पद जहाँ न होइ ।
पदम समूह व्यापार युत, कहे न्यून पद सोइ ॥ ४३ ॥

कवित्त

साजयत मोर बंदी मोरन को झोर जसु,
गावैं ठोर ठोर हरषित जीव जन्तु है ।
फूलत सुमन बरैं अधिक अनल आगैं,
कोकिल मधुर सुर पढ़ैं वेद मंत्र है ॥
बन घर अम्बर बने है बहु भांतिन सो,
नर नारी पर सुत लगन को तंतु है ।
पयो राज नयो सब जग बस भयो सोई,
मेन अरु पहुमी को ब्याह को बसंत है ॥ ४५ ॥

इहाँ विरही अनल कह्यौ चाहिये ॥ अरू द्विज कोकिल कहिये तो वेद मंत्र पढिबो संभवै जाके कहे कछु बिगरै नांही सो अधिक पद कहावै ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५० ) रसराज । रचयिता–मतिराम । रचनाकाल–संवत् १८८० । आकार–५'७" × ४" । पत्र-संख्या ६० । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २० अक्षर हैं । छंद-संख्या-४२४ ।

आदि भाग–

सोरठा

श्री सुष गुरु पद कंज, वानिप जुग पद उर धरो ।
जाते मन आनन्द विविध केलि रसराज सुष ॥ १ ॥

दोहा

होत नायका नायकहि, आलंबित सिंगार ।
तातें बरनों नायका, नायक मति अनुसार ॥ २ ॥
उपजत जाहि विलोकि के, चित्त बीच रस भाव ।
ताहि बषानत नायका, जो प्रवीन कवि राव ॥ ३ ॥

सवैया

कुंदन रंग फीको लगैं, झलकें अंगन चारु गुराई ।
आंषिन में अलसानि चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ॥
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लषें मुसक्यान मिठाई ।
ज्यौं ज्यौं निहारिये नेरे व्हे जानति त्यौं त्यौं षरी निषरेंसि निकाई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

अनयिष लोचन लाल के याते नंद कुमार ।
मचि गई जु रषि चहि, बिरहानल की जार ॥ ४२३ ॥
समुभि समुभि सब रीभि है, वचन सुकवि समाज ।
रसिकन के रस को कियो, इहें ग्रन्थ रसराज ॥ ४२४ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

नोटः— नाथूलाल हजूरी द्वारा चित्तरोड़ में यह ग्रन्थ लिपि बद्ध हुआ ।

( ५१ ) **रस रूप** । रचयिता–ग्वाल कवि । रचना काल– ? आकार– ११" × ७·३" । पत्र-संख्या १ । पद्य-संख्या ८ ।

आदि भाग–

च्यार भुज धारी थोद थूल की थरकत भारी
बिघन प्रहारी देत दासन सुमति हैं ।
भाल चंद चंदन हैं सब जग बदन हैं
पारवती--नंदन, हैं ईस-पद रति हैं ॥
ग्वाल कवि कहैं भक्ति भाव की भरन घन
असरन सरन करन सीख अति है ।
सिद्ध निद्ध ऋद्धि के करैया परसिद्ध पूर,
सकल समृद्धि दैन सिद्ध गनपति है ॥

अन्तिम भाग–

वीरता लखैंगे रघुबीर जू तिहारी अब
भारी परी वहस समारी परी फंद हौं ।
तोर डारी मैंने तो मृजादा जादा बादा बिन
तुम तो मृजादा पुरसोत्तम सुछंद हो ॥
ग्वाल कवि परम प्रतीत पन पारों में तो
पावत प्रतीत तुव नांव सुख कंद हो ।
मैं तो दीनराज तुम दीनानाथ रघुनाथ
मैं तो दुति-मंद तुम रामचंद चंद हो ॥ ८ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५२ ) **रस विलास** । रचयिता-माधवसिंह । आकार-१४" × १२" ।
इस ग्रंथ की यह प्रति अपूर्ण है । आरंभ के तीन पत्र गायब हैं । आगे २६ से ३४ तक के पत्र गायब हैं; अंत में ४२ से पत्र नहीं हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ से २२ तक पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में १८ से २८ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ के विषय को रीति काल की शैली के ही अनुसार कई उल्लासों में विभक्त किया गया है; यहाँ केवल ये उल्लास इसमें मिले हैं ।

प्रथम उल्लास-श्रृंगार रसालंबन रूप नायक-नायिका वर्णन-२४८ छंद ( आरंभ के ५२ छंद गायब हैं )

द्वितीय उल्लास-सखि दूति जात्यादि वर्णन-१ से ४४ तक और फिर १८ छंद हैं-पृष्ठ २६ से ३४ गायब हैं ।

तृतीय उल्लास-रस प्रसंग-१ से ३० तक छंद हैं । ३० से ६० तक गायब हैं । ६० से ६२ छंद वर्तमान हैं । उसके बाद लगभग ३० छंद और हैं, पर उनके ऊपर कोई संख्या नहीं है और लिखावट साफ न होने से गिना नहीं जा सका । यह ग्रन्थ कवि ने रीति काल की शैली पर ही रचा है । पहले एक छंद में लक्षण देकर फिर उसके स्वरचित तथा अन्य कवियों के उदाहरण दिये गये है । आवश्यकतानुसार गद्य में व्याख्या भी की गई है । एक उदाहरण उचित होगा:—

अथ प्रोषित पति का निरूपण

दोहा

गयो जु पति परदेस कों, होत विरहते छीन ।
प्रोषितपतिका जानिये, कविता मांझ प्रवीन ॥ १८ ॥

उदाहरण

कवित्त

फूल फूल पुंज लोंनी लतिका लारज गई
कमले कमल मोंर सोर विर रायो है ।
चलि चलि सुन्दर समीर तजि सीतलता
ललित रसाल फल नालन तें छायो है ॥
होन लगे सघन जवासन के भार मधु,
दश विदिशान तेज तरुन दिखायो है ।
लेख लेख पंथ चित्त होत न निचिंत तइ,
कंतहु न आयो पे बसंत अन्त आयो है ॥ १९ ॥

चर्चा

इहां चिंतमनि प्रोषित शब्द को त्रिकाल वाचि लिखे है। प्रोषितपतिका प्रवत्स्यतपतिका प्रवसित पतिका। तिनके ये लछन कीने सो जाको पति परदेस सो तो प्रोषित पतिका। अर प्रवत्स्यत पतिका को लछन ये-प्रिय विदेस के गोन को उद्यम लखि दुख पाये। अर प्रवसित पतिकाये लछन कीनों सो–'कदत पिऊ परदेस को अपने अंगवन देख। या प्रकार तो लछ लिखे अर उत्तमादि भेद हूवि ऐसे लिखे सो प्रवास के कथन मात्र व्याकुल होय सो उत्तमा। पति को परदेस चलवो देखि दुखित होय सो मध्यमा। पति को परदेस गये पीछे दुःखित होय सो अधमा। तब इहां प्रवसित पतिका उनमें तीसरो भेद भिन्न कैसे लियो। मध्यमा प्रोषित पतिका को लछन अरू प्रवसित पतिका को लछन एक है। ताते हम दोनों ही भेद लिखे हैं—एक प्रोषित पतिका, दूसरी प्रवत्स्यत्पतिका।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५३ ) **रसिक प्रिया** । रचयिता-केशवदास । रचनाकाल-१८८३ । आकार-६″×६″ पत्र-संख्या ६६ ।

[ सरस्वती भंडार, भींडर ]

प्रति २:-रचनाकाल-१८४४ द्वितीय श्रावण सुदि ५ शनिवार । आकार-६″×६'५″। पत्र-संख्या ५८। छंद-संख्या ५४०।

[ राव मोहनसिंह. उदयपुर ]

( ५४ ) **रसिक प्रिया की टीका–जोरावर प्रकाश** । रचयिता–सुरति कवि । लिपिकाल–सं० १६२६ । रचनाकाल–सं०१८१० आकार–१२″×१०″। पत्र-संख्या १३२। छंद-संख्या ५६२ ।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५५ ) **रसिकानंद** । रचयिता–ग्वाल कवि । रचनाकाल–सं० १८७६ आकार–११″×७'२″। पत्र-संख्या ४८। प्रत्येक पृष्ठ पर १४। १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२। ३६ अक्षर हैं। छंद-संख्या ३०६। यह ११″×७'२″ आकारवाले चोंपड़े का तीसरा ग्रंथ है। इन पत्रों में इस ग्रंथ के तीन प्रकरण समाप्त हुए हैं। शेष ६ प्रकरण भी एक दूसरे चोपड़े में स्वतन्त्र रूप से लिखे हुऐ हैं। लिपिकाल सं० १६२७। इस ग्रंथ की रचना ( काव्य के आदि भाग के कुछ दोहों से ज्ञात होता है ) कवि ने नाभा महाराजा जसवन्तसिंह के आदेश से उन्हीं के लिये की।

संवत निधि९ रिषि७ सिद्धि ससि१, स्याम पक्ष मधुमास ।
अदितवार सु द्वादसी, रसिका नंद प्रकास ॥ ३७ ॥

कवि ने दो छंदों में मंगलाचरण किया है फिर गुरू की प्रार्थना की है—

श्री गुरू श्री जगदीश सुरी, श्री पति जू महाराज ।
तिन पद उज्वल विमल कों, करत प्रनाम समाज ॥ ३ ॥

चौथे कवित्त में नाभा नगर का वर्णन किया गया है। पद्य ४ से २५ तक राजवंश, तुरंग और सभा का वर्णन है।

राजवंश का संक्षिप्त वर्णन—

लियो विक्रमाजीत तें, जिन साको जग माहि ।
वीर सालबाहन प्रगट, तिन ( सम ) दूजो नाहि ॥

उनके वंश में बली प्रचण्ड फूलसिंह–उनके तिलोकसिंह जो गुरू गोविन्दसिंह का भक्त हुआ–जिसको उन्होंने सिरोपाव, वस्त्र, जयपत्र प्रदान किया, जिसके सिर पर छत्र तना–उसके राजा गुरुदत्तसिंह हुआ, जो वीर था। उसके सूरतसिंह, जो दानी और तेजस्वी था–उसके हमीरसिंह, उसके महाराजा यशवंतसिंह हुऐ, जिनका यश काश्मीर से दक्खिन, बंबई से मुलतान, काशी, कलकत्ता आदि देश-देश में व्याप्त हुआ और–

माँगै जो मँगैय्या येक वार आय जाके पास,
ताको सुख संपति सौं सदन छयो करैं ।
वादी वनि पंडित सुनावै वाद सौं हि बैठि
तोपै दोऊ वादिन को मानन टयो करैं ॥
ग्वाल कवि प्रेमी प्रेम पूछिबौ करै तो ताहि,
प्रेम के पयोध में पकरि डूबियो करैं ।
नाभा के नरिंद आगे कवित्त कह्यो करैं तो
कवि ताकी कविता की सिकल भयो करै ॥

अमृत धुनि—

कर कर पिट्ठ कमट्ठ की ट्ठक्क ट्ठक्क भये जब्ब ।
पन्नगेस फन फुट्टि हैं अविखसत्त दधि तब्ब ।
अविरखसत्त दधि तब्ब वलब्बल सधर थिरच्चर ।
भग्ग गय अरि नग्ग गय टरि अगगयथ्थिर ॥

जग्गगमग्ग जलमय भये सज्ज छंद कवि ग्वाल बर।
जबहि कुप्पि जसवंत हरि जतउ मग्ग गहि खग्ग कर ॥ १८ ॥

ग्रंथ की वर्णन शैली कवि दर्पन के ढंग की है। एक पद्य में लक्षण देकर उसकी साथ ही साथ गद्य में टीका तथा व्याख्या भी करदी गई है।

एक उदाहरण–पुनरुक्त लच्छन

दोहा

मुख्य अर्थ द्विबार जहँ, बिना कार्ज बीजुक्त।
ताहि बचावहु बुद्ध जन दूषन है पुनरुक्त ॥ ३५ ॥

पुनरुक्त उदाहरन

चलि चितवो चेटक मरयो, बदन चंद सुखदान।
विधि विधितें विरच्यो विसद, चंद् लखन गुनखान ॥ ३६ ॥

कवित्त

आनंद को कंद वृषभानुजा को मुख चंद,
लीला ही ते मोहन के मानस को चौरे है।
दूजो तेसो रचिवे को चाहत विरंच नित,
ससि को बनावे अजों मन को न मौरे हैं ॥
फैरत है सान आसमान पें चढाय फेर,
पानप चढायबै को वारिध में बौरे हैं।
राधिका के आनन की जोटन विलोके विधि,
टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जौरें हैं ॥

टीका

इहाँ वृषभानजा याही पद के कहिवे ते श्रीराधाजू को बोध भयो। फेर राधिका पद न कह्यो चाहिये अर्थ पुनरुक्त होत है। फेर मुख चन्द कहिके फेर आनन कह्यो इहाँ अर्थ में पुनरुक्त भयो। फेर एक बार विधि कहि के फेर विरंचि कह्यो अह अर्थ पुनरुक्त भयो।

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५६ ) **रसोत्पति–रचयिता–कविराव बख्तावरसिंह।** आकार१२″×७.६″ पत्र संख्या–६। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर है। इसमें

कुल-पद्य ही है और जिनमें रसों का ही विवेचन है। रचना काल-

संवत् अयन' रु हर-नयन, खंड रदन गननाह ।
करी रसोत्पति बखत कवि, चैत्र शुक्ल त्रतियाह ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

अयन ( भुवन ) = ३, हरनयन = ३, खंड = ६ और रदन गननाह = १। इस क्रम से इसका रचनाकाल वि०सं० १६३३ होता है।

ब्रज-वन कुंजन बिहारी, प्यारी राधा आलंबन भूता ।
श्रृंगारा रसचारी, प्रागटय हारी त्वं बंदेहं ॥ १ ॥
मिलि विभाव अनुभावा, सात्विक 'स्थाई' रु संचारिय जू ।
अंगहि रस उपजावा, सो वर्नत लच्छन संयुक्ता ॥ २ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५७ ) **व्यंग्यार्थ कौमुदी।** रचयिता--प्रतापसाहि । आकार-६'३" × ५'२"। पत्र संख्या ८३। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं। कुल १०६ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है। इसका रचनाकाल संवत् १८८२ है ग्रन्थ सटीक है। कवि ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना विषय और शैली इस प्रकार प्रकट की है—

दोहा

गनपति गिरा मनाय कै, सुमरि गुरन के पाइ ।
कवित रीत कछु करत हों, व्यंग अर्थ चित लाइ ॥ १ ॥
वाचक लक्षक व्यंग को, सब्द तीन विधिमान ।
वाचक लक्ष्य रु व्यंग है, अर्थ त्रिविधि पहिचानि ॥ २ ॥
इनके लच्छन लक्ष बहु, रस ग्रन्थन ठहराइ ।
तातै ह्यावरने नही, बढ़े ग्रन्थ समुदाइ ॥ ३ ॥
जहाँ सब्द में अर्थ की, होइ जु अधिक प्रवृत्ति ।

चमत्कार इति से जहाँ, जानि विंजना वृति ॥ ४ ॥
व्यंग जीव है कवित्त मैं, शब्द अर्थ गति अंग ।
सोही उत्तम काव्य है, वरनै व्यंग प्रसंग ॥ ५ ॥
करि कवि जन सो वीनती, सुकवि प्रताप सहेत ।
कथि व्यंगारथ कौमुदी, व्यंग जानि पे हेत ॥ ६ ॥

सुचनिका
कही व्यंग तैं नाइका, पुनि लछना विचारि ।
ता पीछे वरनन करौं, अलंकार निरधारि ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

व्यंग अर्थ सब तैं कठिन, को कवि पावे पार ।
मंमट मत कछु समझि चित, कीजो मति अनुसार ॥ १०७ ॥
यह व्यंगारथ कौमुदी, पढ़े गुने चितलाइ ।
ताको मत साहित्य को, कछुक पंथ दरसाइ ॥ १०८ ॥
संवत कर[२] वसु[८] वसु[८] मही[१], गति असाढ़ को मास ।
किय विंग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १०९ ॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५८ ) षट्ऋतु वर्णन : रचयिता-ग्वाल कवि । यह एक ११″ × ७.५″ आकार की चोपड़ी में मिला है। यह कवि के यमुनालहरी ग्रन्थ का एक अंग मालूम होता है। इस चोपड़े में 'अलंकार रत्नाकर' 'रसिका-नन्द', वलभद्र कृत 'नख सिख', 'नैत्रवर्णन', ग्रन्थ हैं जिनका यथा स्थान वर्णन किया गया है। इनके अतिरिक्त इसमें आलम, दयानिधि, ग्वाल, पजनेस, पद्माकर, राव अमानजी आदि कई कवियों की फुटकर रचनाएँ हैं।

इस ग्रन्थ में कुल २७ कवित्त हैं। एक कवित्त यहाँ दिया जाता है।

चम चम चाँदनी की चमकि चमक रही,
राखी हैं उतार मांनो चन्द्रमा चरखतें ।
अंबर अवनि अंबु वाले सु बिटप गिर,
एक ही तैं पेखे परें परेन बरखतें ॥

ग्वाल कवि दिसों दिसा ह्वै गई सपेद चारू,
खेद को रह्यो न भेद फुला हें हरखतें ।
लीपी अबरखतें कि टीपी पुंज परदेंत,
कैधों दुति दीपी हें के चांदी के बरखतें ॥ २६ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ५६ ) **सभा प्रकाश ।** रचयिता– हरिचरणदास । आकार-१०'५" × ७'४" । पत्र-संख्या ७६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं। ग्रन्थ के आदिभाग से ज्ञात होता है कि ग्रंथकार ने भरत और वामन का आधार लेकर खंडन-मंडन की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की । रचना काल-सं० १८१४ श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, शुक्रवार । ग्रन्थ १० उल्लासों में समाप्त है । लिपिकाल– संवत् १९१७, वैशाख सुद १२, भौम ।

आदि–

गौर स्याम जो वपु धरै, वस्तु विचारे एक ।
ज्यों विसर्ग सो राखि है, निज जन मन की टेक ॥ १ ॥
मोहि ग्यांन गौरव न को, कहै जोरि 'हरि' ग्यांन ।
तुम ही ग्रंथ बनाय हो, राधा राधा जांन ॥ २ ॥
प्यारी पिय नारी ललन, आदि नाम निरधार ।
उचित ठौर में लक्ष्य है, राधा नंद कुमार ॥ ३ ॥
जो जै चाहत कविन सौं, खंडन मंडन आस ।
सो चित दै नित देखि है, 'हरि' कृत सभा प्रकास ॥ ४ ॥
लिख्यौ निरख मत भरत कौ, वामन हू को सुत्र ।
दोष बुद्धि करि हैं नहीं, जो कवि मांहिं सुपुत्र ॥ ५ ॥

अन्तिम–

दोहा

वह निरखनि मुसुक्यानि वह, वैसो कृपानिधांन ।
राधा अचल विहारि के, वसौ हिये वह ध्यांनि ॥२४॥
दूर करत जुवि कर्म गति, मनु दयाल सुभ गीत ।
राधा-हरि यह ग्रन्थ सौं, होउ सदा शुभ प्रीत ॥२५॥

बेद ४ इंदु १ गज ८ भू १ गनित, संवत्सर रविवार ।
सावन शुक्ल त्रयोदसी, रच्यौ ग्रंथ सविचार ॥२६॥

[ राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

**( ६० ) सुन्दर शृंगार ।** रचयिता–सुन्दर कवि ।

प्रति–१: आकार–११" × ८" । पत्र-संख्या १६ । पद्य–३६७ । लिपिकाल सं० १७६१ ।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

प्रति–२: आकार–६" × ६.५" । पत्र ३७ । पद्य–३६७ । लिपिकाल–सं० १८४४ । रचनाकाल–सं० १६८० ।

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

**( ६१ ) अनेक नाम माला ।** रचयिता–नन्ददास । विषय–शब्द–कोष ।

प्रति–१: आकार–६.३" × ५.२" । पत्र-संख्या ११ । छंद-संख्या ६६ ।

[ कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर ]

प्रति–२: आकार–७" × ३.६" । पत्र-संख्या ३७ । छंद-संख्या २६१ ।

उदाहरण–

**चन्द्रमा के नाम**

इंदु सुधानिधि कलानिधि, अब्ज जीव हिम रोम ।
ससिधर हिमकर निसाकर, औषधीस ससि सोम ॥ १०३ ॥
कुंमुद बंधु श्री बंधु हरि, रोहिणेय सुर–पेय ।
उडिराजा द्विजराज पुनि, लो मृगांक आत्रेय ॥ १०४ ॥

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

**अनेकारथी ।** रचयिता–नन्ददास ।

प्रति–१:आकार–७" × ३.६" । यह अनेक माला के साथ ही है । पत्र-संख्या १५ । पद्य-संख्या ११६ ।

प्रति–२:–आकार–५" × ५.३" । पद्य-संख्या ११६ । लिपिकाल सं० १८६१ ।

[ केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

# (३) ख्यात-वात, कथा-काव्य, जैन-रास, जीवन–चरित्र, आदि

(१) अजना सुन्दरी रास। रचयिता- अज्ञात। रचनाकाल–सं० १६११ आश्विन कृष्णा ६। आकार–६.५" × ५"। पत्र–संख्या ३६। पद्य-संख्या ८१ दोहे और १६१ ढाल। विषय–जैन–रास-रचना; सती शिरोमणि अंजना के शीलव्रत की कथा।

आदि भाग–

दोहा

मुनि सुव्रत सांमजी, त्रिभवन तारण देव।
तिर्थंकर प्रभु वीसमौ, सुर नर सारे सेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

तौ जी आप स्वारथ सहू सजौ, ए मलीया माया की जाल।
हणुमंत संजम लेई तप करे, पाँच माहाव्रत खांडीनी धार ॥
तौ वावीस परीसीस है सहौ, सील संतोष जे छै गुणवंत।
तौ षट आवशक नीम, साच बौ हणमंत ॥
वीर गयो निरवांण तौ ॥ १६ ॥

तौ अैधकौ ओछौ मैं कह्यौ ते मी छामीद्द कंड होज्यौ
जिन मुझ तौ सील तणा गुण वरणव्यां सती ने सीरोमणी
अंजणां माय तो एतले संबंध पूरौ हूवौ आगल चालसी

सीता नी वात तौ विरहणी बली रे वेरागणी माय जिगतनी
माय तौ १६१ सती सीरोमणी अंजंणा ॥ १ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( २ ) **अचलदासजी री वार्त्ता** । रचयिता-अज्ञात । आकार-१०″×४·३″ पत्र-संख्या ७। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर है।

[ वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर ]

( ३ ) **अमरदत्त मित्राणंद रास** । रचयिता-तत्व विजय। रचना-काल सं० १७२४। लिपिकाल-संवत्-१७३३, प्रथम श्रावण सुदी ६। भरोंचबन्दर-मध्ये आकार-१०″×४·३″। पत्र-संख्या २८। प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियां। प्रति में पंक्ति ५२ अक्षर। लिपि जैन पाटी की। विषय-जैन जीवन-चरित्र। रचना काल-सं० १७२४।

आदि-

( आरम्भ में ११ दोहों तक प्रार्थना है )

दान तणा पर भावथी, अमरदत्त मित्राणंद
सुख विलसी संसारना पाम्या परमानंद ॥ १२ ॥
अमरदत्त मित्राणंद नो, सरस एह संबंध
शांतिनाथ चरित्र थी, करस्यु एह प्रबंध ॥ १३ ॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( ४ ) **आनन्दमंदिर नास्ति रास**—रचयिता—ज्ञानविमल सूरि। रचना-काल-संवत् १७७० महासुदि १३। आकार १०·४″×५″। पत्र-संख्या २००। छंद-संख्या-४५८५ दोहा और ढाल। इसमें श्री चंद केवली का वर्णन है। एक स्थान ( प्रशस्ति में ) पर अकबर और सलीम का भी वर्णन है—

'साहि अकबर निं० निज वयणें, निज मत स्यूं मति जोरी जी ॥
साहिब सलेम आगलिं जय वरीओ, श्री विजय सेन सूरी गुण दरिओ जी।
विरूद सवाई जगत गुरु धरीओ, मति सुर गुरु अधी करी ओ जी ॥

आदि भाग-

सुखकर साहिब सेविये, श्री संषेसर पास।

जास सुजस जग विस्तर्यौ, महिमा निधि आवास ॥ १ ॥
इन्द्र वासव पूजित चरण कज, रज पावित भू पीठ ।
परता पूरण परगडो, एहवो अपर-न दीठ ॥ २ ॥
संपति काले तिरथ छे, जे महिमा भंडार ।
पिण ए अतीत चोवीसीइं, कहि उत्पति विस्तार ॥ ३ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञानमंदिर, उदयपुर ]

( ५ ) **उषा भागवत** । –रचयिता– रामदास । आकार– ११″ × ६″ । पत्र-संख्या २१८ । इसका लिपिकाल संवत १६०१ है । कथा का १८ अध्यायों में भागवत से दोहा चौपाइयों में भाषानुवाद किया गया है ।

आदि भाग–

दोहा

संग विना समरये विना, राजद्वार विदेस ।
फल दायक मेने सुने, गवरी पुत्र गनेस ॥ १ ॥

चौपाई

सुमिरि सरसुती सुमिरौं तोही ।
बेठि कंठ अक्किल दै मोही ॥
दास दयाल चरन चित ल्याऊ ।
कीन कृपा हरि के गुन गाऊ ॥

[ उदयसिंह भटनागर, उदयपुर ]

( ६ ) **कल्याण मन्दिर-भाषा** । रचयिता–बनारसीदास । आकार– ६·३″ × ४·१″ । पत्र-संख्या ३ । छन्द-संख्या ४५ । विषय–भक्ति । विशेष–रचना गद्य और पद्य में है ।

अन्तिम भाग–

चौपाई

मइ तुम चरण कमल गुन गाई । बहु विध भगति करी मन लाई ॥
जन्म २ प्रभु पाऊँ तोही । यह सेवा फल दीजे मोही ॥ ४३ ॥
इह विध श्री भगवंत सुं जस जे भवि जन मासे ते निज पुन भण्डार

संचि चिर पाव पणा सहि रोम रोम उदन्न सित अंग प्रभु
के गुण गावै सुरग संपदा भजे वे–पंचम..........गति पावे ॥ ४४ ॥

दोहा

एह कल्याण मन्दिर कियौ, कुमुद चन्द की बुद्धि ।

भाषा कहत बनारसी, कारन समकित सुद्ध ॥ ४५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ७ ) **कवाटसरवेहीयारी वात।** रचयिता–हरि ? आकार–११″ × १५″ पत्र-संख्या १०० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १४ अत्तर हैं। रचना गद्य-पद्य में है, जिसमें पद्यों की संख्या २३३ है। यह प्रति संवत् १६०८ जेठ विद् १४ गुरुवार को खाराड़ी रा खड़िया नरसींगदास भेरूदासोत द्वारा लिपिबद्ध हुई। इसके आरम्भ में एक संवत् '१८५४' कात्तीक मास कृष्ण पत्तं भी दिया गया है। यह इसका रचना काल है। इसका विषय तो वही है जो प्रथम भाग के पृष्ठ २ पर अंनंतराय सांखलारी वात का है। परन्तु रचना शैली और भाषा में अन्तर है। प्रथम भाग वाली रचना में रचियता का नाम अज्ञात है। परन्तु इसमें २३२ वें दोहे में लेखक ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

दुहा

दानवा अरी हरी नाम दष, जात रखी बर जांण ।

हर जेठी के सुत कही, वात क्वाट वषांण ॥ २३२ ॥

आदि भाग–

दुहा

सुरसत मात सुमत हो, गवरी पुत्र गुणेस ।

करणानिध कर जोड़ कर, मांगू बुद्धि महेस ॥ १ ॥

वारता

कोयलापुर पाटण नगर जठे अनंतराय सांषलो राज करै जी को पुरसाण हिंदवाण दोनु ही राह रैसी है। जीको कोयलापुर कीसोयेक दरसावे। जीण ने देषीया थंका दुजो सहर दायनी आवे।

अन्तिम भाग-

दूहा

केइ घोड़ा गाँव की, केइ गयंद कहाय ।
करां चढ़े क्वाट रे, लंका दीये लुटाय ॥ २२८ ।
ना राज्या सारी जगत, पल के जोत प्रकास ।
सुरज ज्यांही कवाट सी, ईधक जोत उजास ॥ २२९ ॥
पांषहे माऊ क्वाट त्रप, साँचो श्रेह सभाव ।
ज्या सामो देषै जरु, राका करे जराव ॥ २३० ॥
तेरासे सेताली समो, सुकल पष माहा मास ।
नीज गरु की बात तद, प्रतमो राज प्रकास ॥ २३१ ॥

[ स्व० पं० रतीलाल अन्ताणी के संग्रह से ]

( ८ ) **कोकशास्त्र वार्ता प्रबन्ध प्रथम भाग** । रचयिता-अज्ञात । यह ग्रन्थ ८″ × ५″ आकार वाले ९ रचनाओं के संग्रह में संग्रहीत है। ६ पत्रों में इसके ९९ छन्द समाप्त हुए हैं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आदि भाग-

कवित्त

अति कोमल सब अंग, रूप राजिति अति निर्मल ।
.................................... ॥
जाहि सदा है प्रसंन्, ताहि आणंद अभारी ।
राग रंग रति रूप, सबै लागत अति भारी ॥
विस्तार कोक भूषण करन,इह इच्छा कविज न धरतु ।
शृंगार आदि रतिराज को, जोरि सुकर अस्तुति करतु ॥ १ ॥

दोहा

जहाँ रंनथंभर ( गढ़ ) सुगढ़, तहाँ भैरव राजांन् ॥
त्यागी लोभी मानधर, गारन दुसह गुमांन ॥ २ ॥
षटभाषा विद्या चवद, कला बहुत्तर चार ।
गुण प्रमाण श्रैसू भयो, ज्यूँ भोजराज मतिधार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

कोक सु ंव्याही पंषिनी, जोरी बनी अपार ।
मांनो अवा ततार फिरि मकरध्वज रति नारि ॥ ८५ ॥

कोक महल क्रीसत सदा, पंषिनी कुं लिये संग ।
हास विनोद विलास सुष, सदा रहिति रति रंग ॥ ८६ ॥
तब सु कोक अरु पंषिनी, कीन्हों एक विचार ।
केलि ग्रन्थ इक कीजिये, होइ सुजस संसारि ॥ ८७ ॥
ओषद अरू रति भेद सब, तिय वर्णन सिंगार ।
कियो दुऊँ मिली बुद्धि सौं, कोक नाम विस्तार ॥ ८८ ॥
ता पाछे कवि अति भयै, रचै सु भाषा रूप ।
कोक ग्रन्थ अति सरस है, सुनि सुनि रीझत भूप ॥ ८९ ॥

[ स्वरूपलाल जगदीश चौक, उदयपुर ]

( ९ ) **चंदन मलयागिरि की चोपइ–दूहा** । रचयिता–भद्रसेन ।
आकार–९.६″ × ५″ । पत्र-संख्या ९ । छन्द-संख्या २०३ चउपइ, दूहा, गाहा ।
लिपिकाल–सं० १८२४, माह विद १४ सोमवार । लिपिकार–ऋषि हेमराज ।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( १० ) **चंदराज चरित्र** । रचयिता–मोहनविजय ।

प्रति–१: आकार–९.७″ × ४.२″ । पद्य–ढाल १८०० । रचनाकाल–सं० १७८३ । लिपिकाल–१८७८ ।

आदि भाग–

दोहा

प्रथम धरा धवनी म, प्रथम तीर्थंकर आदेय ।
प्रथम जिणंद दिणंद सम, नमो नमो ना भेय ॥ १ ॥
अमित कांत अद्भुत सिषा, सिर भूषित सो छाह ।
प्रगट्यो पद्म ऊह थकी, सिंधू सलिल प्रवाह ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

तमगछ नायक गुण गण लायक विजय सेन सुरिंदरजी ।
प्रति बोध्यो जिणें दिल्ली नो पति अकबर साह मुमिंदरजी ॥१६॥
तास चरण शतपत्र सु मधुकर कीर्तिविजय उवझांवाजी ।

तास सीस कवि मुख मंडन मान विजय कवि राया जी ॥ १७ ॥
तास पद सेवक मति सुत सागर लब्ध प्रतिष्ट कहायाजी ।
पंडित रूप विजय गुण गिरूत्रा, दिन दिन सुजस सवायाजी ॥ १८ ॥
तेहने बालक मोहन विजये अठोतर सौ दालें जी ।
गायो चंद चरित्र सुरंगो चरित्र बचन परिनालें जी ॥ १६ ॥
कीधो चोथो उल्लास संपूरण, गुण बसु संजय बर्षेजी ।
पोस मास सित पंचमी दिवसें, तरणिज वारें हर्षेजी ॥ २० ॥

× × ×

विजय क्षेम सुरिंद राज्ये करि परम गुरु वंदना ।
कवि रूप सेवक मोहन विजयें वर्ण व्यांगुण चंदना ॥ २ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

प्रति:-२ लिपिकाल-१८४६

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ११ ) **चंदराजाचोपी** । रचयिता-विद्यारुचि-आकार-१०.४″ × ४.४″। पत्र-संख्या १३५ । छंद-संख्या-२६८४ लिपिकाल-संवत-१७६१, फाल्गुनमास ।

आदि भाग-

दोहा

श्री जिननायक समरिइं, ऋषभदेव अरिहंत ।
वंछित पूरण सुरतरु, भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
शिव सुष दायक सविइ, शांति नाथ जिनचन्द ।
यादव वसन लोमणी, नमइनेमि जिणंद ॥ २ ॥
पुरुसा दांणी परगडो, श्री वर काणो पास ।
नाम जपता जेहनो, सफल फले सवि आस ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप गछ पंडित वड वयरागी, संवेगी गुण भरिउरे ।
श्री गुरु सहज कुसल सुषदायक, उप समरसनो दरियो रे ॥ ८ ॥
ताम सीस सुध समयम धारी, श्री लक्ष्मी रुचि बुध ईस रे ।

क्रिया वंत पंडित कुलदीपक, श्री विजय कुसल तस सीस रे ॥ ६ ॥
तस पद पंकज भ्रमर विराजें, श्री उदयरुचि कविराय रे ।
कुमत मतंगज कुंभ विदारण कंठी रव कहवाय रे ॥ १० ॥
तास सीस सेवग महोदधि, श्री हर्ष रुचि बुध कहीइ रे ।
उपकारी मुझ श्री गुरु मिलिया, दरसण ती सुष लहीई रे ॥ ११ ॥
विज्ञ सरोमणि मुगट नगिनो, विद्या रुचि तस सीस रे ।
गुण भणिते पुरो पंडितरे सुषदायक सुजगीस रे १२ ॥ १२ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर, ]

( १२ ) **चन्द्रलेहा चतुष्पदी** । रचयिता–मतिकुशल । प्रति-१ । आकार-६-३″ × ४″ । पत्र-संख्या-२० । पद्य-संख्या ६२४ गाथा और २६ ढाल । रचनाकाल-सं० १७२८ । लिपिकाल-सं० १७४६ । विषय-जैन जीवन चरित्र ।

[ माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर ]

प्रति २ । आकार–६-८″ × ४-८″ । पत्र-संख्या २३ । पद्यः संख्या–१०८५ । लिपिकाल–सं० १८८१ ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

आदि भाग–

दूहा

सरसतिं भगति नमी करीं, प्रणमूं सदगुरु पाय ।
विघन विडारण सुषकरण, परसिध एह उपाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दूहा

संवत सिद्धि कर मुनि जिसै, ( वदि ) आसु दशमि रविवार ।
श्री पवीय षमै प्रेमस्युं, एह रच्यौ अधिकार ॥ १२ ॥

× × ×

सुगुण श्री सुगुण कीरति गणि, वाचक पदवी धरंत ।
अंतेय वासीय चिरंजयौ, मति वल्लभहं महंत ॥ १४ ॥
प्रथम सुशिष्यं अति प्रेमस्यं, मति कुशल कहे एम ।
सामायक मन सुध कहौ, जय वरौ चंद्र लेहा जेम ॥ १५ ॥

× × ×

गुणय गुण जे सुणै भावै स्युं, गुरूँया तणा गुण जेह ।
मन सुध जिन श्रम जे करै, त्रिभुवन पति हुवै जेह ॥ १७ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( १३ ) **चन्द्रशेषर छरित्र** । रचयिता-वीरविजय गणि । आकार-८"×४'४" । इस ग्रन्थ में २३७ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं। अक्षरों की लिखावट जैनपाटी की है। कुल २६६१ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है। संवत १६३६ में माणिकचंद विजय गछ द्वारा लिपि-बद्ध हुआ।

यह प्राकृत प्रबंध 'चन्द्रशेषर' का भाषानुवाद है जिसको उक्त रचयिता ने राजनगर ( मेवाड़ ) में चतुर्मास में भाषान्तर किया। इसमें जम्बूद्वीप के चन्द्रशेषर नृप की कथा का वर्णन है, जो इस प्रकार विभाजित किया गया है। नरति-सुन्दरी प्रीति सुन्दरी का पाणि ग्रहण, क्षेत्रपाल वशी-करण, श्रंगदत्त कथा श्रवण, द्विज पत्नि कुलटा प्रबन्ध कथन, सुदर्शन कुमरोपनय प्रकाशन, तापस पुंत्रि कनकावती, विमला पाणिग्रहण शत्रु जययात्राकरण, चतुषष्टिखेट सुताकर ग्रहण, त्रिलोचना के वचनामृत, पितृ-मिलन, स्वर्गगमन। रचना तथा इसकी भाषा जैन शैलो की है और जैन उद्देश्यों को लिये हुए है। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग-

दूहा

श्री संषे सुरपालजी, तामथि विघन पलाय ।
प्रिय मेलक परमेश्वरूँ, नमि पद्मावति माय ॥ ५ ॥
इष्ट देव समरण करी, व्रत फलनो अधिकार ।
जिम श्रुति सागर वरणव्यो, तिम कहुँ पर उपगार ॥ ६ ॥
तास सिस विजयबुध तास, सिस गुण वंताजी ।
श्री शुभ विजय जस नामेंजे, महिमा हिमहंताजी ।
पंडित वीर विजय तास सिसे चितनी वृति उल्लासेंजी ।
चन्द्रशेषर नृप गुंण मणिमाला गुण थी छे आरासेंजी ॥ ७ ॥

संवत उगणीसयदोयवरसे विजया दशमी प्रसिद्धिजी ।
राजनगर मां रहि चत्रमांसु रासनी रचना कीधीजी ॥
विजय देवेन्द्र सूरी साम्राज्यें भाष्यो व्रतआचारोजी ।
दत्त परीक्षक नर जो सुणस्यें तो श्रम सफल ऊभारोजी ॥ ८ ॥
जिम सोहम पति इन्द्र ने नन्दन नामें राय जयन्ताजी ।
तिम राजेशरी सेठ हेमाभाई तस नंदन गुणवन्ता जी ॥
छे युवराज पदें पद लायक प्रेमाभाई विराजेजी ।
रासतणी में रचना कीधी ते सहु ने सुखना काजेजी ॥ ६ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( १४ ) **चन्द्र कंवर की वार्ता**– रचयिता–हंसकुमार आकार–११-५″ × ८-७″ । यह ग्रन्थ चमड़े की जिल्ददार पुस्तक में है, जिसमें इसके अतिरिक्त 'पनरह तथियां रा दोहा', 'ढोला मारवणीरी वात', 'ब्रंद सतसई', 'फुटकर दोहा', 'अमरकोश' ( संस्कृत ), और 'अलंकार रत्नाकर' है । १८ पत्रों पर यह ग्रंथ समाप्त हुआ है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ अक्षर हैं । अक्षर बहुत बड़े २ हैं । यह वार्ता है, इससे अधिकतर कथा गद्य में है । कहीं कहीं दोहा, चौपाई सोरठा, चन्द्रायणा आदि आ जाते हैं, जिनकी संख्या ८६ है ।

विवरणी के प्रथम भाग में इस ग्रंथ के विषय में कुछ अशुद्धियां रह गई, उन्हें यहाँ सुधार देना चाहते हैं—

प्रथम भाग के पृष्ठ २८ पर इसी ग्रन्थ 'चन्द कुवर री वात' का उल्लेख किया गया है । उसमें रचयिता प्रतापसिंह दिया गया है वह अशुद्ध है । ग्रन्थ का रचयिता है "हंस कवि" है । प्रतापसिंह तो पुमाण को हुकुम देता है कि 'हंस कवि' को कुछ अपूर्व बात सुनाने को कहो ( यह उसी विवरणी में दिये गये पाठ का अर्थ किया गया हैं ) । इसी प्रकार अमरावती नगर के सेठ की पुत्री चन्दकुँवरि लिखा गया है, यह भी अशुद्ध है । यह नाम 'चंद कुवरि' नहीं है 'चन्द कँवर' है जो पुल्लिग है । यह 'चंद कंवर' अमरावती के राजा अमरसेन का पुत्र है । इसी प्रकार राजकुमार के स्थान पर 'राज कुँवर' पाठ लिखा होने से यह राजा के पुत्र का नाम समझ लिया गया है । इस राजकुमार का प्रेम सेठ की पुत्री से न होकर उस सेठ की स्त्री से ही था । 'सेठ तणी जे असतरी, तिण सूं घणों सनेह' का अर्थ

भी यही होता है। अतः इस भूल सुधार के लिये हम संक्षेप में सारी कहानी यहाँ देते हैं—

अमरावती (सौरठ) का राजा अमरसेन। उसका पुत्र चन्द्रकुँवर शिकार को जाता है। सूअर के पीछे दौड़ता हुआ साथियों से छूट जाता है। ३३ कोस पर सूअर मारता है। सूर्यास्त। किसी ऋषि के आश्रम में जल पीकर मार्ग पूछता है। ऋषि कहते हैं आगे कुछ दूर तक वस्ती नहीं है फिर कंधार शहर है, उससे ५ कोस की दूरी पर तांबापुरी है। कुमार का प्रस्थान। मार्ग में नदी ) बरसात से बाढ़-नदी के उस पार ताँबापुरी ! काजली तीज का त्यौहार कुछ सुन्दरियाँ वहाँ खेल रही है। वह वहाँ जाता है। एक कामिनी उसे पूछती है- तुमने ऐसे समय स्त्री को क्यों छाँडा ? कहाँ से आ रहे हो ? राजकुमार का उत्तर-"सोरठ हंदा राजवी, राजकरैं अमरेस पंथ सीकारां नीसरयां, भुला आया इण देस।" इसके बाद उसके साथ नगर में जाना- फिर अन्य स्थान पर डेरा डालना। नगर के सेठ सामजी बारह वर्ष से परदेस में- स्त्री विरह में कामान्ध-उसकी एक दूती का 'भमर' की खोज में फिरते हुए चंदकुवर के पास आना-उसको विवश करना-वह पहले पर-स्त्री के पास जाने से इन्कार-फिर दूती की पटुता से वशीभूत होकर सेठानी को संतुष्ट करता है और प्रेमान्ध हो वहीं रहने लगता है। इधर राजकुमार की माता दुःखी होती है। अमरसेन अपने गुप्तचरों द्वारा पता लगाकर मन्त्री को लेने भेजता है। मंत्री बजाज का वेश धारण कर इसके पास जाता है और उसकी माता को दुःख वर्णन करता है। चन्द्रकुंवर सेठानी से विवाह कर उसे घर ले आता है।'

इसमें कुछ पाठान्तर भी है:—

प्रथम भाग में ग्रन्थ की प्रथम चौपाई इस प्रकार है।

समकं सरसत मात मनाय। गणपति गरु के लागुं पाय॥
प्रतापसींघ रस कीनो काज। क्यूं न कथ्यो रसिक कविराज॥

इससे भी यह सिद्ध नहीं होता कि इसका रचयिता प्रतापसिंह है। मुझे जो ग्रन्थ प्राप्त हुआ है उसमें यह पाठ है

दोहा

समरु सरसत माय कुं, गणपति लागु पाय।
परतापसिंघ नृप अरज़ कीय, यथा सिक कविराय॥ १॥

-आगे जो पाठान्तर है वह इससे मिला लिया जावे-

हंस कवीसर सूं कह्यो, कछु इक बात सुणाय ॥ २ ॥
सबकुं लगैं सहामणा, रस संजोग सिणगार ।
पुरष हु को मन हरे, सब रसीयन को सार ॥ ३ ॥
सतरे से चालीस मैं, तेरस पोसज मास ।
गुण कियो कर चाव के, होगौ पूरण आस ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

घर घर हुवा वधामणा, तोरण बांध्या द्वार ।
परणे आयो पदमणी, आयो चंद कवार ॥ ८२ ॥

चन्द्राइणा

बाप तणे पग लाग मील्यो है माय कुं ।
वेण उतारे लूण भयो सुख धाय कुं ॥
दुलहण को मुख देख, ठमक ठमक पाय परत है ।
मोहरां भर–भर मूठ, निछावर करत है ॥ ८३ ॥

दोहा

मो मन प्यारी सुं बसे, प्यारी के मन पीव ।
मे प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥ ८४ ॥
परतापसिंघ सेवक कहै, वाचत सदा सहाय ।
चंदवात पूरी भई, यह करि रस कविराय ॥ ८५ ॥
जोध वंश युग युग जियो, वणो होत हरवार ।
नाम धारचौ परताप नृप, गुण ही को गुणसार ॥ ८६ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( १५ ) **चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध** । रचयिता–समयसुन्दर । आकार–१०″×४.५″ । पत्र-संख्या–३६ । लिपिकाल–सं० १८४२, पोष सुदि १४, शुक्र । रचनाकाल–१६६५ ज्येष्ट शुक्ल १५ । पत्र संख्या–प्रथमखंड ढाल १०, गाथा १८७, ग्रं० श्लोक २२५; द्वितीय खंड ढाल १०,गाथा २५०, ग्रं० श्लोक ३६४,तृतीय खंड ढाल १७, गाथा ३६६, ग्रं०; चतुर्थ खंड ढाल १०, गाथा २५०, ग्रं० ३६४ ।

विषयः–इसमें कलिंग देश में चंपावती नगरी के राजा दधिवाहनराय के युद्ध तथा चार प्रत्येक बुद्धराजाओं का वर्णन है ।

आदि भाग–

श्री सिद्धारथ कुल तिलो, महावीर भगवंत ।
वर्तमान तीरथ धणी, प्रणमु श्री अरिहंत ॥ १ ॥
तसु गणधर गोतम नमुं, लबधि तणो भंडार ।
काम धेनु सुरतरुमणी, वारूँ नाम विचार ॥ २ ॥
वीणा पुस्तक धारिणी, समरूं सुरसति मात ।
मूरिख नें पंडित करें, कालीदास कहिवाय ॥ ३ ॥

× × × ×

कर कंडू राजा दुमुख, नमिनइ विग्गइ सुद्ध ।
इणि नामें उत्तम हूआ, च्यारे प्रत्येक बुद्ध ॥ ८ ॥
चार तिया च्यारे चतुर, मोटा साधु महंत ।
चिहुं खंडे कहुं चरितहुं, जिम पामूं भव अंत ॥ ९ ॥
चार खंड ए चउपई, चिउं खंडे परसिद्ध ।
प्रथम खंड कर कंडुनो, सामलि ज्यो मन सुद्ध ॥ १० ॥

पुष्पिका–"इति श्री आगरा वास्तव्य नागड गोत्रिये श्री संघ भार धुरंधर नाना विध शास्त्र बिनोद महा रसिक सा० भारू ( ? ) समभ्यर्थ नया वाचक श्री समय सुन्दर गणि विरचिते श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्धे......सम्पूर्ण .......... इति श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध चतुष्पदी समाप्ता। सकल पंडित शिरोमणि पंडितजी श्री १०८ श्री रत्न रुचिगणि तत् शिष्य पं० श्री अनोपरुचि गणि शिष्य पं० अभय रुचिगणि लिपि कृते भींडर नगरे........ संवत् १८४२ वर्षे पोष सुदि १४- शुक्रे । "

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर, ]

( १९ ) चमत्कार चिन्तामणि । रचयिता–अज्ञात । आकार-८" × ५'१" पत्र-संख्या ३ पद्य-संख्या ११३ । विषय ज्योतिष ।

आदि भाग–

युं विचार ज्योतिष को, कहत न आवै पार ।
अब फल बारह भवन को, वर्णन है कविसार ॥ १ ॥
तन भवनै सूर्य करै, नरक रूप बहु केस ।
विनय रहित क्रोधी समझ, सार चित लवलेश ॥ २ ॥

वित्त हरे रवि धन रह्यो, गुह्ये सदा सरोग ।
सजन अधिक दुर्जन अधिक, भाग विसर्ग लोक ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

राह करै अमल वन, वरष तीन को आप ।
जो कदाचि जीवै अधिक तो अति दुखित माप ॥ ८ ॥
धर्म सार तम कर करै. करै बिन्द से वास ।
कामी लोभी कठिन मन, धरै सकल की आस ॥ ६ ॥
राह कर्म कर बुद्धि बल, मरै पिता तव रोग ।
सूरवीर पर नारि सूं ( रता ), सार सुमति को जोग ॥ १० ॥
राह लाभ को सुभस सुख, आय बहुत धनवन्त ।
महा बलि सिर बन्त बहु, सारद सदा मति वन्द ॥ ११ ॥
राह बार में आपदा, होत द्रव्य को नास ।
अल्प बुद्धि मानें तिके, माया वन्त उदास ॥ १२ ॥

इति राह फलं

ऐसे बारह भवन परि, जोतिष शास्त्र विचार ।
फल नव ग्रह को वर्ण व्यो, सार बुद्धि अनुसार ॥

[ सरूपलाल शर्मा जगदीश चौक, उदयपुर ]

( १७ ) **चंपकमाला** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६'४" × ४'२" । पत्र-संख्या८ । पद्य-संख्या ६५ । विषय-चम्पकमाला के सतीत्व और जैनधर्म पालन की कथा ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( १८ ) **चित्रसेन पद्मावती रास** । रचयिता–अज्ञात । आकार–१०'४" × ४" । पत्र-संख्या–३३ । छंद-संख्या ४६५ । रचना-काल- । १८१४ विषय–इसमें किसी पूर्व देश के राजा चित्रसेन और उसकी रानी पद्मावती की कथा है ।

अन्तिम भाग–

भवियण साचो इक भ्रम भाई ।
भवक ममता जीवनं एहिज होय सहार ॥ १ ॥

धरम पदारथ जगत में जिहाँ तिहाँ ग्यानी ए गायौ ।
तिण उप चित्रसेन नरिंद ने ए दृष्टान्त सुणायो ॥ २ ॥
दान सील तप फल सुभदायक जो होया तावस मेला ।
श्रुत परणांम विनासइ निरफल तीने ही एह अकेला ॥ ३ ॥
करम तणौ बंध करम नि जरा एम रु आतम सारे ।
ए चित सेणे चरित्र श्रवणे शुणीए परमारथ धारे ॥ ४ ॥
अठारह ऊपर वरसै चवदो तरे बहेते ।
पोस मास शुदि दसम तणै, दिन रास रच्यौ मनखंते ॥ ५ ॥
श्री जिन लाभ सूरि सिर राजै षरतरगछ वड़भागी ।
षेम साष श्री शांति हरष शिष्य, श्री निज हरष वैरागी ॥ ६ ॥
तासु चरण रज कण सुप साठौ, सरमतिशु निज रणाई ।
राम छिजै उठ जाय ए चौपई बीकानेर वणाई ॥ ७ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर ]

( १६ ) **जाम राउल रो बारामास्यो** । रचयिता-अज्ञात । यह एक प्राचीन गीत है । जो एक प्राचीन चोपड़े में प्राप्त हुआ । इस चोपड़े पर संवत ११४२ लिखा है, परन्तु रचना इतनी प्राचीन नहीं है । जाम राउल जामनगर का संस्थापक था और उस समय में जामनगर गुजरात में ब्रजभाषा साहित्य का केन्द्र था ।

साल ले बारह मेघ सायण अंब धारा ऊबले ।
बाबीहा दादुर मोर बोलै साल दह दिशी षल हलै ।
झड़मचै सिहरे बीज झबकै मिले अन्नल फर हरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ १ ॥
भाद्रवै नीर निवाण भरिया, गिर पहाड़ पखालियै ।
मिलि छपन कोडि मेघ माला नदी नीर मालियै ।
घेघूब लूंबा सांमली छटा कांठली जल हर करै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ २ ॥
ऊनमै अति घण मासव पाशु नदीं नीर निरमला ।
बन अधिक छाइ यै लूंब बेलि चंद्र है चढ़ी कला ।

नैवेद्य करि बापि-तट विहसै वेक वदन विस्सरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ३ ॥
कातिग्ग मास आकास निरमल मेघ चालै घर सुणै ।
सर कमल विकसै सरद रेणि नीर छाया पोमणै ।
अनल ठंमै गरज उतर अरक दषिक मनि धरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ४ ॥
मगसिरे मारग माग मंडै मेघ मंडै दामिणी ।
करि कोट बाला रत्न चमकै उष्ण अस्तन कामिणी ।
बड छाय कूप पयाल अस्तर जीवह दिसै ऊमरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ५ ॥
मिति हिमोतर पौष मासे पान तर वर हाखै ।
साक पै प्रेम कमल विकयल भंवर पंख न साखै ।
धूजंत वानर गो निरधन नाग रायण निस्सरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ६ ॥
उतरा दल हरि लंक नाषै प्रलैवन षंड परजलै ।
अंब होय विषमा अगनि अम्रत सीत बादल साललै ।
दीरघ रयणि तोछ दिनकर माह मास समाचरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ७ ॥
निसि सित फागुण दिन ग्रीसम अनल पंष समारै ।
फिर चलै उतर चाहि रवि रथ दषिण पंथ निवारै ।
बिति लोक रामति फाग षेलै होलिका प्रष विस्तरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ८ ॥
माजरि अद्‌भुत चैत्र मासै पागुरै पत कोमला ।
सीजाई घर दिसि धूम पलटै हुए अंबर निरमला ।
बनराई भार अढ़रि फूटै दहण माथा उत्तरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ९ ॥
बैसाख मासै मोरिया बन बसत अमृत आण ए ।
केतकी जाइक हसै कुसमैं भंवर लीला माण ए ।
महकंत चंपो बेलीदमणो अधिक प्रेमल उधरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ १० ॥

वरतिये जैठक लूऊ वाजै हुवै दिसी हला हलै ।
दिन वधै घटै निसी दिवाधर जणि हुवै ।
प्रितिम जलं फल जाइ दाडिम दाख पाचै मालिणी कायाभरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ११ ॥
आषाड ऊबां करै डंबर गहली निद्रा अति घणं ।
सू जाई निसरी गरमिये जल, कुंअरि टीला कंकणं ।
बिजली चमकै वले बादल उन्हंगालै प्रसेवो उतरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणी रीति संभरै ॥ १२ ॥

[ माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर ]

( २० ) **जिनपाल जिनरक्षक रो चउढालियो ।** रचयिता–शान्तिकुशल । आकार–१०″ × ४.५″ । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ६१ । विषय–जैन-जीवन चरित्र । भाषा-बोल चाल की राजस्थानी ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( २१ ) **ढोला मारवणी री वात ।** रचयिता- अज्ञात ।

आकार-५″ × ४.६″ । पत्र-संख्या–७० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २० अक्षर हैं । अक्षर सुन्दर और छोटे हैं । प्रति कुछ जीर्ण हो गई है । इसमें कुल २१८ पद्य हैं और बीच बीच में वारता दी गई है । रचना काल इसका इस प्रकार दिया गया है—

पनरेसे तीसे वरस, कथा कही गुण जांण ।
वदि वेसाषै वार गुरु, जन्ति जाण दस आण ॥

इसका आदि भाग विवरणी के प्रथम भाग में पृष्ठ ३७ पर दी हुई कुशल लाभ रचित ढोला मारू री चोपई प्रति १ के आदि भाग से कुछ पाठान्तर लिये हुए हैं ।

सकल सुरासुर स्वांमिनी, सुणि माता सरस्वति ।
विनोद करौ ने विनवूं, मुजने दो अविरल मति ॥ १ ॥
जोतानवरस यण दुगे, सबहि करी सणगार ।
रागें सुरनर रीजिये, अबला तस आधार ॥ २ ॥

उदाहरण–

दुहा

नदियां नाला नी झरण, पांणी चढ़ियो पूर ।
करहो कादम किम चले, पंथी पूंगल दूर ॥

वारता

सूणो महाराज आबु परबत अठारे गिरां रो राजा
छेः तिण कने शोवन गीर परबत नेड़ो छेः
तबै जालोरगढ़ थापीयो छैः सो गढ़ विषम जायगा छेः

दूहा

अन्तिम भाग–

अति आणंद उछव हुवा, नरवर वरज्यो ढ़ोल ।
ससने ही सयणा तणा, कल में रहिस्यै बोल ॥ २१७ ॥
दुहा गाहा सोरठा, मन विकषणा वषांण ।
अब जाण्या मूरख हसै, संझै चतुर सुजाण ॥ २१८ ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( २२ ) ढ़ोला मारवण री वार्ता । लेखक–अज्ञात

यह भी उसी जिल्ददार संग्रह में जिसमें है जिसमें चंन्द्र कँवरी री वार्ता, वृंद सतसई और अमर कोष ( संस्कृत ) हैं ।

इसमें कुल ४७ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ से १६ तक अक्षर हैं। यह संवत् १६०४ शाकै १७६६ आसोज कृष्णा ५ बुधवार को उदयपुर में लक्ष्मी विजय द्वारा लिपि बद्ध हुआ। यह विवरणी के प्रथम भाग के पृ० ३८–३६ पर दिये हुए ग्रन्थ ४६ से भाषा और शैली में बहुत भिन्न है। कथा वही ढ़ोला मारवणी की है, परन्तु इसका रचयिता कोई है। भाषा यद्यपि राजस्थानी ही है पर लेखक की भिन्नता स्पष्ट प्रकट होती है। वर्णन पद्धति भी वही गद्य तथा दोहा सोरठा वाली है; परन्तु दोहे का विषय तथा क्रम एक दूसरे से भिन्न है। एक ही कहानी की विभिन्न रचनाएं उसकी लोक प्रियता का प्रमाण है।

आदि भाग–

पुंगल राजा जातरा चवांण ( भाटी ? ) । पुंगल राज करै छे। सो देस में काल पड़ीयो। सो लोग परदेस जावा लागा। तरे पुंगल राजा रो प्रधान। पंचायण नाम हुतो। तिण ने हजूर

बुलायो। पंचायण आपणै खजांणो कोठार छै। सो खरचो। लोका ने डुलवा थो मती। तरैं प्रधान हाथ जोड़ अरज करै छै। माहराज खजानों थोड़ो। ई तरे काल निसरैं नही। देशउं चालो करो तो रूडो हुवैं। वैसू थानैं दीरावां। तरै अटकल नैं प्रधांनैं। आदि तीरथ पोहकर व धारा रे आगलार वास मांडीयो। नै प्रधान सीख मांगी। तरैं राजा पीगलैं परवानों घणी मनवार देनैं लिख्यो।

## दुहा

राज अत आदर कीयो, जिम राज वदजो गेह।
देस वसारयो रावलो, श्रै घोड़ा अल गेह॥

**वारता–** परवांनों लेनैं राजा पुंगल रो प्रधान पुंगल आयो राजा पींगल नैं जाय जुहार कीनो। समाचार साभलनैं। राजा पुगल रलीयायत हुवो।

## दुहा

पुंगल देस दुकाल थयो, किही कंवर सब सेष।
पुंगलनैंउ चालो कियो, नीर्छै नलवर (दीसै) देस॥

## मारवणी का विरह वर्णन

## ( डाढ़ी के द्वारा मारवणी ढोला को संदेश भेजती है )

Centre for the Arts

"कागद में तो घणाई मोकलीया। पीण पाछो जबाब कोई आयो नहीं। हमे तो कागद मेंह कोई देवां नहीं॥ नै थे मां कनेसेती दुहा सीखो॥ तिके कवरजी नु संभलावजो॥ वि जो थांकने परमेसरजी कहावै जी को कही जो॥ नरे मंगण कहीयो ज राज प्रमांण दुहा—

मारवणि सीखावीया, मारू राग उपाय।
दूहा संदेसां तणा, डाटी जाय सुणाय॥
डाटी जो टोलो मिले, ( तो ) कह अमारी वात।
धण कणीयर री कांबज्, सुंकी तोही जुंरात॥
डाटी एक संदेसडो, ढ़ोला ने कहिवीव।
पींजर नाही प्राणिया, थां दीस्या छे जीव॥
डाटी एक संदेसडो, टोला केह सुणाय।
जीवन आंबो मोरीयो, साष लुटोनी आय॥
डाटी एक संदेसडो, टोला केह सुणाय।
जोबन छांत उपाड़ीयों, राजंद वसो आय॥
डाटी एक संदेसडो, टोला केह सुणाय।

जोवन हसती मद हुवो, आंकुस धोनी आय ॥
डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
डेर पड़ी छे आंगणे, सीलो करो नी आय ॥
डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
जोवन काला नाग ज्यू, झुक झुक झोला खाय ॥
चीतारली चुगतीयां, कुरझां रोवहियांह ।
रूर थको दा हीयला, मिले नही मन्नाह ॥
ढोला मीलसी नवीसरसी, नहीं आवसी लेस ।
मारू तणा...... कर कडे, बायस उडा हेस ॥
ढोला जो तुं न आवियो, सावण पैहली तीज ।
झंख करेसी मारवणी, देष षीवंती बीज ॥
ढोला जो तुं न आवीयो, सांवण पेहला मेह ।
आडा वसीया वालहा, झुर झुर हुइ हम देह ॥
निरमोही घर आव पिव, कासू घणो कहेर ।
संपत (तो) दिन दिन आवसी, (पीष) जोवण कद्दलहेस ॥
पांष हुवे तो किम हुवो, दई अरुठा त्यांह ।
रात बिछोहो दिन मिलण, पंखछती चकवांह ॥
आथमण ऊपरां दीठ, पूरब सांमी बांह ।
एक संदेसड़ो कुर झड़ी, ढोला ने कहियांह ॥
अे दुहा केह ने कुरझा, सो मारू जोवनलागी
ताल चुगंती कुरझड़ी, सर संधियो गी मार ।
हुं ऊडी आकास ने, हाली जोवनहार ॥

## वारता

इतरी वातां करतां मारवणी घरे आई : ढोलाजी आगम चिंता करे छे काग बैठी उडावे छैः और काग सुं कहे छे—

कागा पीव न आवीयो, कियो न डेरो चीत ।
लकड़ी हुवे तो दध वलु, रहुंर अकेली नीत ॥
कागा देऊ वधाइयां, पीव मिलावो मुझ्झ ।

काड माह थी जीवड़ो, भोजन देस्यु तुझ्झ ॥
कागा जठे पीव वसे, उड जो त्यांह चल जाय ।
ढोला वेहलो आवने, (फेर) घणा ही हुत्ता भाय ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( २३ ) **दत्तात्रेय उपाख्यान** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६'२" × ४" । पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४० या ४२ अक्षर है । पद्य-संख्या २२० । इसमें भागवत पुराण के अन्तर्गत एकादस स्कन्ध के ७, ८, ९ और १० अध्यायों की कथा है ।

[ रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर ]

( २४ ) **दवदंती नी कथा** । (लेखक-देववर्द्धन (?) । आकार–१०" × ४½" । यह कथा गद्य में है । पत्र-संख्या १२ । प्रति पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३६ अक्षर हैं । जैनपाटी की सुन्दर और व्यवस्थित लिपि है । रचनाकाल-संवत १५०० से पूर्व अनुमानित । भाषा–जूनी राजस्थानी ।

आदि भाग–

दवदंती नी कथा कहियइं छइं । ईणइ जंबू द्वीपि । भरत क्षेत्रि ।
अष्टापद समीपि । संगमपुरु नगरु । तिहा भंम्भण राजा ।
वीरमती भायसिहि सुखिइ राज करइं । अंन्यदा प्रिया सहिग्रतु ।
राजा आहेडा भणी नगर बाहर निकलिउ । तिसइ संघात साथि ।
महात्मा एक मल मलिन गात्र आवतउ देखी । मनमाहि अपशकुन-
मानतउ म राजायइ महात्मा ऊमउ राखिउं । संघात हूतउ ।
चूकविउं । बार घड़ी ताई संतापी पछइ दया परिणामि ऊपनइं-
राजायइ महात्मा पूछिउं । किहां हुतां आव्या । किहां जासि ।
तिवारइं मुनि कहइं । हउ रोहीतक नगर हूंतउ आविउं ।
इम वात करतां राजा राणी ए दुस्वप्न परिइं कोप मूंकिउं ।
तै वार इम महात्मायइं जीव दया मूल धर्म्म उपदेसिउं ।
अनइ राजा राणी ए भावना सहित सछहियुं । पछइ ते महात्मा तइ
भात पाणी यइ करी सम्पूर्ण भक्ति कीधी । पच्छइ महात्मायइ यज्ञ-ज्ञान
रूप धर्म्म उषध कर्म रोगनी चकिशा भणी आपिउं ।

पछइ महात्मा अष्टापदि पहूतउ । हिवतें बिन्हइ यतीना ससर्ग्य लगइं-श्रावकउ धर्म्म पालिवा लागा जिमराक । द्रव्यनइ पालइ । अन्यदा वीरमतीनइ जिन धर्मनी गाढी स्थिरता करिवा भणी शासनना देवताइं अष्टापद तीर्थ देखाडिउं । तिसइ तिहां अष्टापद ऊपरि वीरमतीयइं शाश्वती प्रतिमायइं जे देवतां पूजइ छइं । ते देखी परमानंद धरती चउवीसइ-जिननी प्रतिमा नमस्करी ।

उदाहरण–

नलदवदंती बाहरि नीकली कहइं । तिव केही दिशि जाईस्यइं । तिवारइ दवदंती कहइं । स्वामिन कुंडिनपुरि जाइयइं । जिहां माहारउ पिता छइं । तिवारइ नल कुंडनपुर भणी रथ खेडिउं । पछइं मार्ग्य उल्लंघता महा अटवी माहि रथ पडिउ । तिसइ गाम भील आव्या । एहइ नल रथ हूतउ उतरी खड्ग लेई । सामुहइ धावा लागउं । ते नलइ दवदंती कहइ । हे नाथ पाली भणी ताहरउ सिउ आक्षेप । इम कहइ दवदंती हूंकारा मूकइं । जे जे हूंकारा सुणी ते ते आवत थाइ भुइं पडइं । पछइ भीले पलायन कीधा । हिव जे रथ अलगउ मूकउ हूतउ । तिणि करि बीजे लीधउं । पछइ नल दवदंती पालो पालिवा लागा । इम चालतां मार्गि जातां थका किहांइ एक वृक्ष तलइं जई बइठा । तिहां नल केलिनइ पत्रिइ करी दवदंती नइ वाय घातिवा लागउं । दवदंती पणि नलना पग चापइं छइं । एक वई दवदंती त्रिषाक्रांत हुई । तिसइ तले कमलनइ पत्रेकरी जल आणी पायउ । सुस्ती कीधी तिंवाइ दवदंती पूछई । अजी अटवी के एक थाकइं । नल कहइ । सउ जोयण माहि । अजी पाचइ जि जोयण आव्या छां । इम वात करतां सूर आथमिउ । पछइ अशोक वृक्षना पल्लव लेइ साथरउ कीधउ । तिहां दवदंती सूती । एहनउ गाइनइ शब्द सामली । वसतउ जाणी । नलि कहिउं हउ पाहर छउं । तूं सुखि निद्रा करि । पाछइ दवदंती नइ निद्रा आवी । एहवइ नल चीतवइं ।

अन्तिम भाग–

………। ऐ असार संसार माहि चरित्र इति सार । तेह भणी हिवतूं दीक्षा लइ ।

पछइ नल राजा पुष्कल पुत्रनइं आपणपउं राज देई दवदंती सही दीक्षा लीधी। तिहाँ सतर भेदे संयमे पालतउ पृथ्वी माहि विहार करवा लागउं। पणि नल मुनि कोमलपणां लगइं चारित्रं पालतउं दीलउ हूअउं। एहवइ निषेध देवि आवी द्रढि कीधउं। तउ ही नल मुनि दवदंती नइं विषइं कामातुर हूअउं। चली पिता पइं आवी प्रति बोधउं। पछइ अणसण सहित नल मरी कुवेर थाहिइ नमिइ उत्तर दिसिकउ अधिपति हूअउं अनइ दवदंती तेहनी देवी हुई। इम दवदंती नइ परिइं ओर नर लोके सील पालिवउं ॥ ६ ॥

पुष्पिका

"इति श्री दवदंती कथा समाप्त" गच्छहडा गच्छे भट्टा० श्री ४ दयालसुंदर सूरि पटे श्री ४ भावसुंदर सूरि। पटे श्री आचार्य श्री ४ श्री कर्मसागर सूरि। वा० श्री वीरसुंदर। ग० देववर्द्धन लिखापितं। आत्मवाचनार्थं ॥"

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( २५ ) **द्रौपदी चौपई।** रचयिता –सांवतराम। आकार–६.४" × ४.२"। इस ग्रन्थ में १० पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियें और प्रति पंक्ति पर ३२ से ३७ अक्षर हैं। कुल ग्रन्थ में ५१ दोहे, १४ ढाल और १६२ पद हैं। संवत् १८६३ कार्त्तिक कृष्ण सप्तमी को सांवतराम ने सवाईजयनगर ( जयपुर ) में रचना की। इसकी भाषा राजस्थानी है। विषयः द्रौपदी के जीवन की घटनाओं को जैन दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया गया है।

आदि भाग–

दोहा

शील बड़ो संसार में, मंत्रां में नवकार ॥
दांनां मांहि बड़ो अनैं करदे षेवो पार ॥ १ ॥
ग्यान में केवल बड़ो, रिष में गौतम जेम ॥
सतीयां मांहि शिरोमणी जोंउ पंचाली जेम ॥ २ ॥
परबरा पडिया द्रोपदी, पद्मोतर के पाश ॥
शील साध तो राखीयो, सफल फली तशु आश ॥ ३ ॥

ढाल

भर्त षेत्र मांहे भलों, कंपिल्लपुर नयर रसालो ऐ ॥
राज करैं रलीयामणो, द्रुपद नांम भूपालो ऐ ॥ १ ॥

सुणज्यो चित्त सुहामणो, धरज्यो मन वैरागो ऐ ॥
करज्यो कारज जीव रो, ज्युं पामो खेवो पारो ऐ ॥ २ ॥
रूड़ी ने रलियामणी, लावण ने चतुराई ऐ ॥
कुमरी द्रौपदी तेह में, कसर न तिलभर काई ऐ ॥ ३ ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

( २६ ) **धना सालिद्रजी री चोपी** । रचयिता-अज्ञात । आकार-८३/४″ × ४″ । पत्र-संख्या ३७ । छद-संख्या ५०५ । लिपिकाल-संवत् १८७७ । विषय जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

सासण नायक समरियै, वर्धमान जिनचंद ।
अलिय विघन दूरें टलै, आपे परमाणंद ॥ १ ॥
सहु को जिनवर सारिखा, (पिण) तीरथ धणी विशेष ।
परणी जेते गाइये, लोक नीत संपेष ॥ २ ॥
दान-शील-तप-भावना, सिवपुर मारग च्यार ।
सरिषा छे तो पिण इहां, दान तणो अधिकार ॥ ३ ॥
सालभद्र सुख संपदा, पामे दान पसाय ।
तास चरित्र वखाणता, पातिक दूर पलाय ॥ ४ ॥
तास प्रसंगे जे थई, धन्ना नी पण वात ।
सावधान थइ सांभलो, मति करिज्ये व्याघात ॥ ५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( २७ ) **नयनदीप** । रचयिता-कृपाराम । आकार-८″ × ७.१″ । यह ग्रंथ उक्त आकार के एक गुटके में है। इसमें कुल ४३ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ है और प्रति पंक्ति में २१-२३ अक्षर हैं। अक्षर नागरी हैं । लिखावट आरम्भ में घसीट है दो पत्रों के पश्चात् लिपि जमी हुई है। कुल ७०० पद्यों में ग्रन्थ समाप्त हुआ है। इसका विषय वैद्यक है । इस ग्रन्थ की रचना महाराणा संग्रामसिंह ( दूसरे ) के आदेश से संवत् १७८५ में लेखक ने कई ग्रन्थों का अध्ययन कर की गई है । यह बात इसके आदि भाग तथा प्रत्येक अध्याय ( प्रकाश ) के

अंतिम पुष्पिका लेख से ज्ञात होती है। संवत् १७६४ श्रावण कृष्ण ७ भृगुवार को यह लिपिबद्ध हुआ। इस ग्रन्थ में नेत्र में उत्पन्न होनेवाले विविध रोगों का वर्णन किया गया है। लेखक ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना वंश परिचय भी दिया है। जिससे ज्ञात होता है कि उसके पूर्वज ऋषिकेश भारत के अंतिम सम्राट महाराजा पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे और रावल समरसिंह उसे अपने यहाँ लाये। इसका रचनाकाल संवत् १७८५ है।

आदि भाग–

सुमति सदन गज वदन को, करि कृपाल परनाम।
विघन हरन बुद्धि करन, कवि एक रदन निधि धाम ॥ १ ॥
अमरसिंघ सेवत चरण, एकलिंग शिव धांन।
अटल देस मेवार दे, प्रभु थापे तहा रान ॥ २ ॥
शिव की भक्ति सदा करै, प्रभु को सवै प्रसाद।
सूरय कुल मंडल भये, राषन वेद मृजाद ॥ ३ ॥
नगर उदैपुर प्रगट जग, सेवत नृपति समाज।
तहां रान संग्रामसिंह, करत इन्द्र ज्यों राज ॥ ४ ॥
प्रगट धर्म अवतार हैं, विप्र धेन प्रति पाल।
महारांन हींदुवान पति, साहन के उर साल ॥ ५ ॥

छापय

महांरांन संग्रामसिंघ, जस जगत न बींनौं।
सिव अराधि सब साधि, दान सक्रत अति कीनौं ॥
जाको प्रबल प्रताप, मानि फुरमांन लऐ हैं।
सीस नावावत आंनि, नृपति मुश्र मण्डल जै है।
सुनि सदा रहत दिल्लीस कै उर में संक अपार।
अमर रान सुत मान कुल, प्रगटै अधिक उदार ॥ ६ ॥

+ + +

कुवर नाथ श्री रांन को, हित चित सी सुषकार।
कवित राग रुचि जिव सदा, सुंदर सूर उदार ॥ ६ ॥
कवि पंडित वो होतै गुनि, औरै वैद्य समाज।
आग्या करि कृपाल कों, राजा के महाराज ॥ १० ॥

किते नैन के रोग हैं, बरनो तिन्हे बनाय ।
ज्यों निदान लछिन सहित........................॥ ११ ॥
विनती करि कृपाल तब, जब प्रभु आग्या कीन ।
आचारिज मिलि देषि कें, करियो ग्रंथ नवीन ॥ १२ ॥
प्रिथीराज चहुवान पें, रिषीकेश दुज नांम ।
लाऐ रावल समरसी, दीनो मोही गांव ॥ १३ ॥
बैद्य भले तिहि कुल भाए, उदयसिंह महारान ।
उदक गांव थो पीपरी, षेम द्विजन कूं दान ॥ १४ ॥
उही वंश प्रगटे सुमति, रूपदत्त परवीन ।
महानंद दूजे कहूं, तिनि मिली संमत कीन ॥ १५ ॥
प्रभु आयस ते ग्रन्थ जिन, विविध सुनाऐ आंनि ।
नेम तस ..कृपालां कवि, भाषा करी वषांनि ॥ १६ ॥
सुश्रुत चरक.....,.................................... ।
..................रच्यो कवि, कृपाराम निरधार ॥ १७ ॥
संब...............तसे, बरस पच्चासी जानि * ।
माह मास सित पँचमी.........च गुर मांनि ॥ १८ ॥

अंतिम भाग–

छप्पय

कवित करे अरु चित्र, वैद्य अछर लिपि जांनै ।
जाकी सूरति कहो, काट में ताकी आंनै ॥
बिना प्रान की सेन, बनायर बहे लहरावै ।
बात अपूरब कहै, सुनत भूपन मन भावै ॥
सो कृपाराम दुज नाम है, जामे केउ गुन लसै ।
संग्रामसिंघ महारान ढिग, नगर उदैपुर में बसै ॥

[ श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर ]

( २८ ) **नरसी महता को माहैरो** । रचयिता-रतनोषाती । यह ग्रन्थ भी १३७ संतो के संग्रह में है। इसमें कुल ६५ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ११

---

* १७८५, क्योंकि म०रा० संग्रामसिंह ( दूसरे ) का समय सं० १७६७–९० है।

पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३१ अक्षर हैं। इसके अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् १६१६, और शालिवाहन संवत १४८१ में इसकी रचना हुई और बाद में रामरतन-शिवकरण ने शोधकर शुद्ध किया। सारा ग्रंथ दस प्रकाशों में विभाजित किया गया है जिनमें ४० प्रकार के छंद रागादि हैं। कुल संख्या लगभग ६०० है। ग्रन्थ का पूरा नाम 'भक्त वत्सल बिरदराग कोतूहल नरसी महता को माहेरो है।

आदि भाग–

श्री श्री सद गुरु प्रणम्य, द्वितीय बंदु सब साध।
तृतीय बंदु परि ब्रह्म को, घो बांणी विमल अगाध ॥ १ ॥
भक्त गत भगवंत गत, यो पे लखी न जाय।
श्री गुरु देव दया करो, दीजे भेद बताय ॥ २ ॥

सोरठा

विघन हरण गन राज, देह सदा सारद सुमति।
कीजिये मंगल राज, कंठ कमल बांणी विमल ॥ ३ ॥

चौपाई

श्री गुरु चरण कवल चित राखूं। भक्ति प्रभाव बिडद जस भाखूं।
बंदू भक्त भक्त बुधि पाऊं। नरसी को इतिहास सुनाऊँ ॥ ४ ॥
गूजरात जूनैगढ माहीं। जक छाड कर भक्त के मांहीं।
नागर कुल बड़नगरा केंही। पूर्व जनम की भक्ति लेही ॥ ५ ॥
तृतीय जनम की कथा सुनाऊँ। थोडे में बहुती समझाऊं।
पूरब जनम हूं तो नृप भारी। सुभद्र नाम सतवंती नारी ॥ ६ ॥
सदा बरत पछिन कों दीन्हो। षग मिल घात रिषी को कीन्हौं।
पुन्य करत लागो तिन पापूं। विप्र दुषित हुय दयो सरापू ॥ ७ ॥
सो वह कथा यहाँ नहीं आनी। मीरां मिथुला बहुत बखानी।
कछु एक तात पिरजे चुन लेहू। लघु संक्षेप यहाँ लिख देहू ॥ ८ ॥
यहाँ शिवकरण कहत कछु आई। ग्रंथ बढे बांचै कोउ नाहीं।
यह सुन रीस करो मति कोई। इतनो ही पढें सुनें धन सोई ॥ ९ ॥

दोहा

नृप सुभद्र कों श्राप अति, दियो विप्र कोउ काल ।
गयो महारण के विषे, भयो सिंघ विकाल ॥ १० ॥

चौपाई

नारी सहित सिंह तन धारे । बन के जंतु सकल चुन मारे ।
रये न षग मृग सकल संघारे । धावा बड़त दूरलौं पारे ॥ ११ ॥
हनें पथिक गौ ग्वाल समेता । चलत न पंथ होत भयभेता ।
द्वारावती जात मग माँही । सुनते श्राक सब लोग परांही ॥ १२ ॥

**अन्तिम भाग–**

सौला से सोलोतर्डो, विक्रम संवत जान ।
चवदासैं इकियासियो, शाके शालीवहान ॥ ६ ॥
मक्तां के हित कारणैं, जद हरि बांध्यो मोड ।
माहेरामें रूपीया, लागा नहि करोड ॥ १० ॥
जो गावे सीखे सुणें, वैकुंठां को बास ।
हरि नामे रतनो असैं, हरी भक्तन को दास ॥ ११ ॥
लिखे पटे गावे सुणैं, कहे करावे कोय ।
खाती रतनो यूं भणे, गऊ सहस फल होय ॥ १२ ॥
माहेरो नरसी तणे, करे ज्ञान अरु मान ।
ज्ञान बटै गुण ऊपजे, गंगा तणा सनान ॥ १३ ॥
महिमां माहेरा तणी, षाती कही बणाय ।
सहज मुक्ति फल पावे सही, जन जमपुर नहिं जाय ॥ १४ ॥
भक्ति उपजै भय मिटै, श्रस स्वास ससी काज (?) ।
तुषता सकल निहजसी, सांवल सा महाराज ॥ १५ ॥
सुखसारण कृपा करी, सत गुरु दई सुबुद्ध ।
रामरतन शिवकरण यह, सोध करयो अति सुद्ध ॥ १६ ॥

[ रामद्वारा धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( २६ ) **नल दवदंती आख्यान** । रचयिता–वैरागी नारायण ।
आकार–१०·१″×४·१″ । पत्र-संख्या–७ । पद्य-संख्या–३१५ । रचनाकाल–१६८२ पोष सुदी एकादशी ।

आदि भाग–

दुहा

परम पुरुष धुरि ध्याईइ, वंछित सुखदातार ।
सिद्धारथ कुलि चंद सम, त्रिसला मात मल्हार ॥ १ ॥
प्रातु समय निति तेहनुं, धरता निर्मल ध्यान ।
दुख नावइ सुपना तरिइ, वाधइ महिमावांन ॥ २ ॥
त्रिभुवण······मंडण निलउ, चरम जिणेसर सामि ।
वेद मुनि प्रभुता हरइ, लहीइ बुधि नामि ॥ ३ ॥
तूंकुर······समरथ धणी, सेव्यु देव दयाल ।
चरित्र रचुं रलीआंमणुं, देज्यो वरन रसाल ॥ ४ ॥
नल दवदंती नुं हवईं, सुणज्यो सहु आख्यांन ।
सती तणां गुण गावतां, दूरि टलइ अज्ञान ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग–

जीवहणी जेह धर्म रूपसिइ, तेह अनारि जि जांणि ।
आश्रय छंडीनइ संजम पालीइ, ए जिन परवणी आंणि ॥३१०॥
रूप ऋषि जीव ऋषि कुंअरजी गणि, श्री मल्लजी मुनिराय ।
तारण तरण आचारजि रत्नसर, वंदीय तेहना पाय ॥३११॥
रास रचिउ रलीआंमणउ रंगसुं, आंणीय हरष अपार ।
भणइ गुणइ जे सांभलइ भाव सुं, तेहनइ जय जयकार ॥३१२॥

कलस

संवत सोल बिहासी वरषे, पोष सुदी एकादशी ।
गुरूवार कृतिका तणइं योगिइं, कीधऊ दिम उल्हर्सी ॥३१३॥
श्री रत्नसीह गणि गच्छ नायक, नेमि जिम सम स्वांमिए ।
तास प्रसादिइं रास रचीउ, खेडावारे आमिए ॥३१४॥
देव जिनवर साधु सहिगुरू, दया धरम आराधिइ ।
वैरागी नारायण जंपइ, मुगित मारग साधिइ ॥३१५॥

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( ३० ) **नसीतनामो** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६″×४ं८″ । पत्र-संख्या ७ । रचना गद्य में है । प्रति पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १४-१५ अक्षर हैं । लिपिकाल–संवत १६०१ । लिपिकार–गोपालजी ।

आदि भाग-

दुपाजी पुछे । मुला कहे । श्री दली भीतर की बांणी : नीसाणि । पुछ्यो-बसत कैसी प्रमांणीय । कह्यो–देतां कुसाली रहे । पुछ्यो–कोन बाजा सु जीत्र पोषीय । कह्यो-धरम सुं । बुध का विचार सुं । पुछ्यौ-कोन बात जाकुं लोग ढुडै । कह्यौ–तीन बात सुं । पहले तो देह नरोगी । पछे कुसली रहे तीजी मंत्र हेत कारी । कह्यो–भलाई तो करनी । बुराई सु दूर रहणा । पुछ्यो–गुण करता ओगुण होई सो कोन । कह्यो-दे' न पाछो मांगता । पुछ्यो-कोन बात सुं दल कुं बंधावै । कह्यो-धरम सुं सांच सुं ॥

अंतिम भाग–

मजमान आगे अपने घर की हकीकत ना कीजै । ओर लड़ाई अपने घर पै नां लीजै । असो-काम कीजै सुं अपने घर म्हां कुसाली रहै । जो काम करो जो पंचा प्रमाणो पूछ के कीजै । सब की ईजत राखी जै । तब अपनी ईजत रहै । राजा की महरबानी ऊपर गुमान लाईजे नहीं । पराये घर भोजन बना आदर कीजै नहीं । भूखा कुं अवस दीजै । घर को दुख का सुं कहणों नहीं । क्यूं । बदतो हुव तो लोग लागुं । घट तो हुव तो भरम जावै । मरदु का देवाला मुवा नीसरता है । यो नसीतनामो सत समजसी ज्यो सुख पावसी सही ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ३१ ) **नासकेत की कथा** । रचयिता– अर्जुन नागा । यह भी १३७ संतों के संग्रह वाले गुटके से लिया गया है । इसमें कुल १२५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । रचयिता ने इस ग्रन्थ में 'नासिकेतोपाख्यान' का २०६२ दोहा--चौपाइयों में भाषानुवाद किया है । संवत १७५१ पोष ८ गुरुवार को इसकी रचना आरम्भ की और संवत १७५१ फाल्गुन की प्रथम पंचमी शुक्रवार को यह ग्रन्थ समाप्त किया ।

आदि भाग–

दोहा

गुर गोविंद प्रणाम कर, नारद सारद सेस ।
शिव सनकादिक बंद कैं, करूं ग्रन्थ मति जेस ॥ १ ॥
जथा शक्ति बरनन करूं, धरमाधरम विचार ।
सरधा सूं सब सिख सुनैं, तरैं सिन्धुभव पार ॥ २ ॥
हरिदासन के निमित कर, कह्यो भाष भगवान ।
जो या कूं हिरदै धरैं, होय निरंजन ज्ञान ॥ ३ ॥

सत्रहसैइक्याव्ने, पोष अष्टमी जान ।
सुरगुरबार विचार कैं, आरंभ कर दिन मान ॥ ४ ॥

[ बड़ा रामद्वारा, उदयपुर ]

( ३२ ) **नासकेत पुराण** । भाषाकार–नंददास । आकार–३-२″ × २-५″। पत्र-संख्या-६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । इसको मोहनदास ने संवत् १६२० आश्विन कृष्ण ११ सोमवार को लिपिबद्ध किया ।

आदि भाग–

आदि संस्कृति महाभाषा करि विस्तारी छै । नासकेत पुराण भाषा करि वारतीक । नंददास जो आपण सिषनै के हेतु है । सो या कथा कैसी है । सहश्र पाप कटतु है और देही बहोत पवित्र होतु है । या कथा संस्कृत पुराण बैस्यंपायन रिषि । राजा पीछत को पुत्र । राज जनमैजै कों कथा कहीतु है । राजा जनमैजै या कथा सुणी । परम गति कों पाया है ।

अन्तिम भाग–

राजा जनमैजै विवाण चढ़ि करि । परम पद कों पाय वैकुंठ को प्रापति भयो है । वैस्यंपायन रिषि आपणे आश्रम आयो है । ये कथा आदि है । स्वामी नंददास । आपण मित्र ने भाषा करि सुणाई छै । सो यह कथा महा अमृत है ।

[ प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर ]

( ३३ ) **नासकेत भाषा** । रचयिता–चरनदास । आकार–१५″ × ६″ । पत्र-संख्या–७४ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । इसको मेवाड़ निवासी दाधीच ब्राह्मण सीताराम के पुत्र सुखदेव ने कार्तिक सुद २ संवत् १६३५ में कपासन मे लिपिबद्ध किया—

आदि भाग–

दुहा

जै जै श्री व्यासजी, जै जै गुरु सुख देव ।
तुहन कृपा सूं कहत हूं, नासकेत को मेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दुहा

नासकेत ओसी कथा, जैसा धरम जिहाज ।
जनमेजय तापै चढ़ा, कष्ट गये सब भाज ॥

षेवटिया जहां व्यास से, वचन बाद ही वान ।
जगत सिंधु सम जानियै, धर्म जिहाज पिछान ॥

× × ×

बाण अनिमिल अरू नंद महि, विक्रम संवत मान ।
कार्तिक सुद दुतिया रवी, ग्रंथ संपूरन जांन ।
पुस्तक प्यारा ग्रान सुं, ओर हिया का हार ।
रहो जही लग राखियो, पुस्तक ही सो प्यार ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

( ३४ ) **नासकेत भाषा** । रचियता–दयाल । इस ग्रंथ की दो प्रतियां हैं। दोनों ही सचित्र हैं। चित्र मुगल शैली के हैं। एक प्रति में पूरे पृष्ठ पर चित्र है और दूसरी और मूल पाठ है। दूसरी प्रति में दोनों पृष्ठों पर छोटे तथा बड़े चित्र हैं जो बीच बीच में चित्रित हैं। प्रत्येक पत्र चित्र पर लिखित प्रसंगानुसार खिंचे हुए हैं। ये चित्र कई रंगों के हैं। हम यहां दूसरी प्रति का ही विवरण देंगे, क्योंकि कथा में कोई अंतर नहीं है और दोनों का रचियता एक ही है।

आकार–१६"×११·५"। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर बीच बीच में चित्र आ जाने के कारण कहीं ६ कहीं २० और कहीं २३ पंक्तियां है और प्रति पंक्ति में इसी कारण ४६, ४८ और ५० अक्षर हैं। पूरे ग्रन्थ में ७७८ चौपाई ४ कवित्त ( श्लोक१००७ ? ) हैं। संवत् १७२४ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में इस ग्रन्थ की रचना समाप्त हुई।

आदि भाग–

दोहा

श्री गुरु श्री हरि संत सब, रुषिजन नाऊँ सीस ।
गिरजा जनपति सारदा, ऐ विद्या के ईस ॥ १ ॥
बाल जनन से बीनती, कवि गुरु बंदू पाय ।
संस्कृत भाषा करूँ, हे प्रभु करो सहाय ॥ २ ॥

चौपई

राजा जनमेजै बरू मागी, पुन्य संग्रही पाप को त्यागी ।
गंगा तट जगि आरंभ कीयो,द्वादस बरस नेम ब्रत लीयो ॥ ३ ॥

तहाँ जुरे हैं रिष संमाजा, पद बंदे जनमेजै राजा ।
बैसंपांइंन मुनी समाजा, व्यास सिष्य परिपूरण काजा ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

संसकृत श्लोक हैं, सुगम सुभाषा कीन ।
जगनाथ आग्या दई, दयाल सीस धर लीन ॥ १२५ ॥
धरि बिधि अक्षर मातरा, आराधऊ सुधि ( न ) होइ ।
बाल बुधि मम जांनि सब, छिमा करो मुनि सोइ ॥ १२६ ॥
सितर सात'रू सात सै, दोहा चौपई जांनि ।
च्यारि कवित्त पुन ओर भनि, नासकेत आख्यान ॥ १२७ ॥
श्लोक बीसा गन करे, संख्या एक हजार ।
पुनि सात ऊपर जानिए, नासकेत विसतार ॥ १२८ ॥
संवत सत्रा से गए, ऊपरि पुनि चौबीस ।
फागण सुद तिथि सुक्ल पक्ष, पूरण ग्रन्थ सुदीस ॥ १२९ ॥
सत गुर संतन की किपा, भाण्य ऊन उपदेस ।
जो श्रवणि नीकैं करैं, ताकै मिटै संदेस ॥ १३० ॥
बकता मन दिढ़ राखि करि, बकै ग्रन्थ के बैन ।
श्रोता सुनि निश्चै करै, तब ही तिनकूं चैन ॥ १३१ ॥

[ बड़ा रामद्वारा, उदयपुर ]

( ३५ ) **निसांणी आगम री ।** रचियता-पं० जगन्नाथ। यह रचना एक ८″×५″ आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में है। इसमें २ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५-२६ अक्षर हैं। पद्य-संख्या २६ हैं।

आदि भाग–

आषा तीज अठाणूं ऐ, आगम पांचा दीह ।
पावूरा पुरमाण श्रं, यूंही ज बीती जीह ॥ १ ॥
सुहियां में सुणिया सबद, मोहि पिउ कियो मन्न ।
जांणु धर उजड हूसी, वसती हूसी वन्न ॥ २ ॥

पुलसी कोधर पष मैं, कोइक खंडसी काल ।
उलटि चलेसी आदमी, बांधे तकिया बाल ।। ३ ।।
कहतां समो करवरो, ऽवैकारा रो बींद ।
मान नीरंदां बूटिसी, गढ मोलिसी गइंद ।। ४ ।।

अन्तिम भाग

तुरकां कंध मंडोवरो, दांग वनिक दांतौऽ ।
जेतीधर ऊअरां, तेतीं चुहाणां तौऽ ।। २३ ।।
एती आण वरतावसी, राठो वध राणैऽ ।
को भणियो को सावणी, को आगम जाणैऽ ।। २४ ।।
आंकां उछल पाछल काः, आई ठुकियां ठाणैऽ ।
एवायक उला नहीं, पेला ऊहमाणैऽ ।। २५ ।।
खेला पाछूं कहै जी, हवोली ठाणैः ।
होसी हो ठाकुरे दिल्ली हिंदू आणैऽऽ ।। २६ ।।

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

( ३६ ) **नेमिनाथ रास** । रचयिता–पुण्यरतन । आकार–९'४" × ४'२" । पत्र-संख्या ५ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ । ३४ अक्षर हैं। इसमें लिपि प्राचीन पाटी की होने से मात्राएँ पीछे की ओर लगीं हैं । पद्य-संख्या १६५ ।

आदि भाग–

सारद पाय पणमी करी, नेमि तणा गुण होइ धरेविं कि ।
रास भणू रूलीयामणउ, गुण गिरू आगा इसूं संषेवकि ।
हुं बलिहारी यादवा ।। १ ।। द्रुपद ( ध्रूपद ) ।
एक सर उरध पाछु वालिकि, मइ अपराध न को कीउ ।
कांइ ठोडइ नव योवन बालिकि, राजलि प्रीऊ प्रति इम भणाइ ।। २ ।।
सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुद्र विजय तु ठामकि ।
शिवादिवि राणी तसु तण, अणुपम रूपि रंभ समाण कि ।। ३ ।।

अन्तिम भाग–

चुपन दिवस नि अंतरि, आश्विनि तणी अमावसि जाणकि ।
रैवत सिषर वर पाषती, जिनवर पाम्यु केवल न्यांनकि ।। ६२ ।।

संपि म पाली सातसि, सहस वर सतुपुरी आउ कि ।
असाढि सुदि अष्टमी, मुगति पहुता यादव राइ कि ॥ ६३ ॥
प्रहि उठी नित प्रणमीइ, श्रीयादव मंडण गिरिनारि कि ।
मन वांछित फल ते लहि, हरएि जे गाई नर नारि कि ॥ ६४ ॥
समुद्र विजय तनु गुण निल, सेव्र करइ जसु सुर वृंदकि ।
पुन्य रतन मुनि इय भणि, श्री संघ सु प्रसंन्ता नमि जिणंद कि ॥ ६५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ३७ ) **पद्मावती नी वार्त्ता** । रचयिता-सामलदास । आकार ७″ × ५.५″ पत्र-संख्या ८६ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १२-१३ अक्षर अधिक जमे हुऐ और साफ नहीं है पर पढ़े जा सकते हैं । ६५८ पद्यों की यह वार्ता त्रिभुवन त्रिवाड़ी द्वारा संवत् १६१८ बेसाख विद ३० बुधवार को लिपिबद्ध की गई । इसकी भाषा बागड़ी है, जो दक्षिणी मेवाड़ी का एक अंग है । इसमें चंपावती नगरी के राज कुमार पुष्पसेन्य तथा कुन्तलपुर की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम और विवाह का वर्णन है । रचना सरल, सरस और सुन्दर है ।

आदि भाग–

दोहरो

परथम समरू॑ सारदा, आपो एक पसाअ ।
वरदो मुज वर दाअनी, सुभ मती आओ माय ॥ १ ॥
\+ + +
कल्प वृक्ष कवि राजवी, पूरो मननी आस ।
बहुकर जोडी वरणये, कहे कवि सांमलदास ॥ ४ ॥
\+ + +
आख्यान कहूँ पद्मावती, सती सिरोमणी जेह ।
पुष्प सेन्य राजा ने वरी, वरणव करुहुं तेह ॥ ६ ॥
\+ + +
चतुर नगर चंपावती, ( तिनो ) चंपक सेन्य राजंन ।
(तेने) पटराणी पुष्पावती,(तिनी) पुष्पसेन्य ऐक तंन ॥ ८ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरो

सोमल मरे रो वरणवुं, पुष्प सैन्य आख्यान ।
गाय सीखे ने सांभले, तीने गंगातु' स्नान ॥ १ ॥
सतवादी जेराय ने, गाय सुणे नहीं माय ।
वी जोग भोगे तेहना, यासा पूरण थाय ॥ २ ॥
राजो राणी जम मला, पोती मननी हांम ।
जो कोई सीखे सांमले, ( तितु' ) अंबा पूरे कांम ॥ ३ ॥
सेवक छे अंबा तणो, सौ कविउ केरो दास ।
श्रांमण चारण भाट ने, नसी करू पुरो अभ्यास ॥ ४ ॥
खोटमदे सोजन क्वी, सौ कोनो हु रांक ।
जांणे अंजाणे जे करू, क्षमा करो मुझ वांक ॥ ५ ॥
क्वीरी कई ई वारता, कान्य सुण जो सोय ।
श्रोतां जन मौ सांभलो, श्री हरी को सौ कोय ॥ ॥६ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

( ३८ ) **परदेसी राजा री चोपाई** । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति २६-३३ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ४५६ । लिपिकाल-संवत् १६३१ मिति आषाढ़ विद १२ ।

आदि भाग-

संघ प्रदेसीरायनी, राय प्रसेणी माहि !
तिण अणुसारै हुं कहुं, सांभल ज्यो चित नाहि ॥ १ ॥
आमल कंप्पा नगरी, ( तिहाँ ) अंब साल ना राग ।
तिहाँ श्री वीर समोसरया, भव जीरा रै भाग ॥ २ ॥
खबर हुई नगरी मझे, लोग वांदण जाय ।
सेनराय जीपी आवीयो, सेव करे चित लाय ॥ ३ ॥
च्यार जात रा देवता, आया वंदण नै काज ।
ल ल नै लटका करै, धन दीहाड़ो आज ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

परदेसी ना सीध कही रे, भगत भाव विचारी रे।
जो कोई साधु पढ़े तिणकुं, वंनणा हमारी रे ॥ १४ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ३६ ) **पांडव यशेन्दु चन्द्रिका** । रचयिता–स्वरूपदास । आकार–८'५" × १०'६" । पत्र–संख्या–१६३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २०-२१ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ११६७ ( १६ मयूख ) लिपिकाल–संवत्-१९१७ कार्तिक कृष्णा ३ गुरुवार । लिपिकार–वैष्णव नरसिंघदास ।

आदि भाग–

अथ रसालंकृत बोधिनी पांडव यशेन्दु चंद्रिका

दुहा

ध्यान कीर्तन वंदना, त्रिविध मंगलाचर्न ।
प्रथम अनुष्टप बीच सोइ, भये त्रिधा सुध कर्ण ॥ १ ॥
नमो अनन्त ब्रह्माण्ड के, सुर-भूप नकेभूप ।
पांडव–यशेन्दु–चन्द्रिका, वरनत दास सरूप ॥ २ ॥
स्वामी के पीछै रहै, आदि होय उच्चार ।
नर नारायन सब्द कुं, दास स्वरूप विचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

तति कीनी इये चन्द्रिका, मेरी मति अनुमांन ।
भक्त संग अरु भक्ति कों, देहु कृपानिधि दांन ॥ ५५ ॥
पंगुल गूंगो रोग जुत, बनि कछु धातुर जीव ।
भय जुत बालक त्रिया अत्वष (?), सुनत अनाथ सदीव ॥ ५६ ॥

कवित्त

ज्ञान श्रो विराग दोउ पांन विनाहूं पंगू,
भक्ति रस न तिहिन गूंग हूं निहारोगे ।
त्रिधा ताप रोगी कर्म वानी जब निकहू मैं,
भूखो दस धाको केउ जन्म को विचारोगे ॥
काल मित बाल बुधि आतमा है अबलाओ,

अंध तत्व अजन हूँ विनाहु नेक धारोगे ।
एक अंग के अनाथ ताकि विषे सूने हाथ,
आदि अंत में अनाथ नाथ का बिसारोगे ॥ ५७ ॥

छप्पय

पंगु कुबज्या संपाति, गूंग ज भला अर्जुन गावत ।
रोगी माधवदास, वनिक, तरि लोचन धावत ॥
छुधित सुदामा विप्र, नित ज्ञुत व्रज की भामिनि ।
बालक ध्रुव प्रहलाद, अबल द्रुपदादिक कामिनि ॥
है अंध सूरलौं हम सुने, हाथ विकें तिह्न के हरि ।
................................................... ॥ ५८ ॥

दूहा

रस'रू अंलकृत ग्रंथ में, लिखे नाहि इहभाय ।
समझहि बुधि जिन बिनु लिखे, अबध लिखें न लखाय ॥ ५९ ॥
पिंगल डिंगल संसकृत, सब समझन के काज ।
मिश्रत सी भाषा धरी, छिमा करिहु कविराज ॥ ६० ॥

सोरठो

नृप रस को बलुतीक, भूषित धुनि अधिक भये ।
दूषन खर नजदीक, भारवाह मेटहि कि भा (?) ॥ ६१ ॥

इसका पाठ बहुत अशुद्ध है ।

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ४० ) **फूलजी फूलमती री वार्ता** । रचयिता-मंछापुरी, जोधपुरी ।

आकार-११" × ९" । पत्र-संख्या २३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । संवत् १८५२ चैत्र शुक्ल ६, रविवार को इसकी रचना हुई । इसमें उदयपुर राज्यान्तर्गत भदेसरी के लक्षपति सेठ गंगाराम की बेटी फूलमती की सगाई, उदयपुर में सामजीराम के बेटे मोक्ष से होती है । पर फूलमती एक अन्य व्यक्ति फूलजी से प्रेम करने लगती है । इन्हीं दोनों की प्रेम कहानी मारवाड़ी भाषा में वार्ता के रूप में दी गई है । पद्य इसमें केवल २३ ही हैं, परन्तु सारी प्रति कई रंगों के चित्रों से सचित्र है ।

आदि भाग-

दुहा

समरू देवी सारदा, गवरी पुत्र गनेश ।
निमस्कार शिव कुं करूँ, ब्रह्मा विसणु महेस ॥ १ ॥

वारता

श्री ऊदेपुर में सीसोदीयो रांणों राजसींघजी राज करै छे । बड़ो जोरावर छै । राजसींग री वार में भदेसरी नगर सेठ गंगाराम रहे छै । बड़ो दोलतवंत लखेश्वरी धरमातमा छै । तिणरे बेटी फूलमती मोटी हुई । तिणरी सगाई सांमजीराम रा बेटा मोत्त सुं कीवी छै । सेहर उदेपुर माही ज कीधी । श्रो पण रूप रो निधान छैः।

अन्तिम भाग-

वारता

पाटवी कुंवर उदेसींघ ने परा मराया । तरे ए समाचार फुलजी सुणीया सो घणो फीकर कीनो । पछे राणांजी ने मुजरो करण गया । मुजरो कीधो । राणेजी लाष दोय रो पटो दीनो । ने धीरप देने ऊदेपुर राखीया । फुलजी फुलमती जीवीया । जठा तांई घणो सनेह राखीयो ।

दुहा

अरज हमारी मानने, वात करी विख्यात ।
आग्या सुं कीनी कथा, माता तेरे दास ॥ २२ ॥
मंछापूरी मातजी, बसे जोधपुर वास ।
जिहां शंकर के सीस पर, सदा रहत हे चांद ॥ २३ ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

( ४१ ) **बुढला री ढालाँ** । रचयिता–मोतीचंद 'चंद' । आकार–१०" × ४'६" । पत्र-संख्या ७ । सर्व ढाल २२ । रचना काल–१८३६ । विषय–एक धनलोलुप पिता अपनी पुत्री को किसी बूढ़े के साथ ब्याह देता है, उसकी करुण कहानी । भाषा–मारवाड़ी ।

आदि भाग–

दुहा

दया 'ज माता बीनवूं, गणधर लागूं पाय ।
वर्द्धमान चोबसमा, बादूं सीस नमाय ॥ १ ॥
कन्या ने जमी तणो, पइसो न लीजै कोय ।
बूढ़ा नै परणावतां, गुण बूढ़ा रा जोय ॥ २ ॥

ढाल–इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥
पर देस सुं एक सेठ 'ज आयो ॥
धन कमाय 'र बोहलो ल्यायो ॥
रुपीया नवसै आकरा लीया ॥
बटा लागिण पाछा दीया ॥
सबरे लगने साहो सुजावै ॥
घर सारू वले जान बुलावै ॥
वीन बीनरो दूज्यो भाई ॥
तीजो भोजग चोथो नाई ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अन्तिम भाग–

मा कहैं सुण हे बेटी, मम करो याँ सू बाद ।
यां रां हुकम मे रहो, करो जीव री साद ॥ १ ॥
बालक ने परणी सू तो ले गयो काल............ ।
बूढ़ा नै परणी ढालरी, यो हुलराव मावार ॥ २ ॥
कहुँ मन मैं धरस्यो राग ।
थारो क्यूँ ही नहीं बिगड्यो बेटी गज पतला भाग । ढाल ।
बेटी थारे माथे रो मोड़ो । तोनै इण वीन फिसड़ी ठोड़ो ॥
इण सुहाग सुं हुं धाई । सामायक कर स्यूं सहाई ॥
मारी नव तत्व हिरदै धरस्युं । तपस्या ने पोसो करस्युं ॥
घर सारू दान हुं देस्युं । मन मान्या कारज करस्युं ॥
संवत १८३६सै आणी । मगसर मास ए जाणी ॥
'चंद' परतिख देख बखाणी । सुणो कलजुग री नीसाणी ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४२ ) **बूढ़या रासो** । रचियता-मोतीचंद 'चंद'। आकार-१०″ × ५.५″
इसमें कुल ११ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २१ । २५ तक अक्षर हैं। लिपि जमी हुई नहीं है पर लिखावट जैन पाटी की ही है। कुल १०८ छंदों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है। रचियता का यह मूल ग्रन्थ ज्ञात होता है। इसका रचना काल तथा लिपिकाल संवत् १८४५ मिगसर मास है।

आदि भाग–

दूहा

जंबू द्वीपना भरत मा, दुषमी पंच में काल।
धनि होई तो घर नहीं, घर है तो नहि नारि ॥ १ ॥
निरधन के बेटी हुई मन में हरषित थाइ।
बाई जी मोटी हुवै, तो म्हारा घर नो दालिद जाइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

बैन कहै सुणों बाई। चिंता मन में म करो भाई।
बाप रुपीया सूं चित लाई। तो बूढ़ा ने परणाई ॥ १ ॥
तपस्या करि लाहा लेस्युं। धर सरू दान ज देस्युं
संमत अठारै पैंतालीसैं आणी। मृगसर मासैं ज जांणी ॥ ८ ॥
मोतीचंद कहै भाई। बाई थे सो धरम विना एक माई।
मोतीचंद प्रतक बषांणी। या कलियुग की नीसाणी

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४३ ) **भटियाणी की वार्ता** । रचियता-अज्ञात। आकार-१०¾″ × ६½″
पत्र संख्या-६। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं। यह रचना गीतों में लिखित है। इसमें किसी भटियाणी का विरह वर्णन है।

आदि भाग–

भाभी ने भटियाणी कागद मोकल्यारे।
मोकमसिंघ ! अेके बार उदेपुर आव।
ओगा राजीआे ! अेके बार उदेपुर आव ॥

वारी वारी कागद कही मोकलो रे ।
भामज मारेवती आयहु न जाय ॥

अन्तिम भाग–

ज्ञान री वाता नहीं करे रे मोकल सींघ,
ममता में वीया जाया । छोगा ..........
हाथे पले कही आवे नहीं रे मोकम सिंघ,
अणगणती राखार । छोगा..................
वेणी वे ज्यो होसी । मोकमसींघ,
ईश्वर धारे जो होयगा । छोगा..............

[ अन्ताणी संग्रह ]

( ४४ ) भावनावेलि । रचयिता–जससोमविबुद्ध । आकार–१०'४'' × ४'३'' । पद्य संख्या–१०७ । पत्र-संख्या ४ । लिपिकला-संवत् १७६० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ७ कर्म्मवाश्री, लिखतं पलागा मध्ये ।

आदि भाग–

दूहा

पास जिणेसर पय नमी, सह गुरु तई आधार ।
भवियण जण नै हित भणी, भणस्युं भावन बार ॥ १ ॥
प्रथम अनत्व असरण पणुं, एह संसार विचार ।
एकलपण अनत्व तिम, अशचि आसव संसार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग– ( तथा रचनाकाल )

दूहा

भोजन नम गुण वरस सुचि, सत हे सरि कुजवार ।
भगते हेज भवन भणि, जेस लमेर मभार ॥ ५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर ]

( ४५ ) भुवन भानु केवली । रचयिता–अज्ञात । लिपिकाल–संवत् १८१७ ।

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( ४६ ) **मंगल कलश** । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०″×४.२″ पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४७ ) **मदननरिन्द चरित** । रचयिता-दयासागर । आकार-६.४″×४.४″ । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या ५६५ । रचनाकाल-१६१६, आसोज सुदी १०, गुरुवार । इसीका दूसरा नाम 'मदनराज ऋषि नी चउपइ' है ।

**आदि भाग-**

आदि जिणेसर अतुल बल, शांतिनाथ सुखकार ।
नेमि पास प्रणमु सदा, वीर विनय भंडार ॥ १ ॥
जिन वंदना वुज-वासिनी, गौर वरण गुण गेह ।
ते सरसति समरूं सदा, वचन रूप जसु देह ॥ २ ॥
मुझ तनु घर मांहिं किऊ, ज्ञान दीप जिणसार ।
ते सदगुरु नइं हुं सदा, जुगतइं करूँ जुहार ॥ ३ ॥
सुकवि तणी अनुमति लही, शीलतणइ अधिकारि ।
मदन नरिंद तणुं चरित हूं, विरचि सुमति सार ॥ ४ ॥

**अन्तिम भाग-**

मदन महीपति चरित विचार । बोलिउं शील तणि अधिकारि ॥
जे नर शील सदा मनि धरइं । शिव रमणी ते निश्चइं वरइं ॥ ५६ ॥
श्री अंचल गछि उदधि समांण । संघ रयण केरउ अहि ठांण ॥
उदउ तास पधारण चंद ! श्री धरम मूर्ति सूरीश मुणिंद ॥ ६० ॥
अचारिज श्री गुरु कल्यांण । सागर सागर सम गुण नांण ॥
तास पवि महिमा भंडार । पंडित भीमरतन अणगांर ॥ ६१ ॥
तास विनेय विनय गुण गेह । उदय समुद्र सु गुरु स सनेह ॥
तास सीस आणंदइ घणइं । श्री दयासागर वाचक इम भणइ ॥ ६२ ॥
गुरु भाई लहुडउ ऋषि देव । विनयवंत सारइं मिति सेव ॥
आदरि तेह तणइ ए पईं । मदनराज ऋषिनी चउपई ॥ ६३ ॥

दूहा

मदन शतक का दूहड़ा, एकोतरसो सार ।
मदन नरिंद तणुं चरित, मइ विरच्युं विरतारि ॥ ६४ ॥

सोलहसय उठाणोतरइ, पुर जालोर मझारि ।
आसो सुदि दशमिं मइ कीऊ, कथाबंध गुरुवारि ॥ ६५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४८ ) **मयणरेहा** । रचयिता–हर सेवक । आकार–१०'२" × ४'५" । पत्र-संख्या-६ । पद्य-संख्या १५७ । लिपिकाल-संवत् १८७८ । विषय-जैन-जीवन चरित्र ।

**आदि भाग–**

जुवो मांश दारू थकी, करे वेश्या सूं जोष ।
जीव हिस्यां चोरी करै, पर नारी ने दोष ॥ १ ॥

+ + +

जंबू द्वीप नै भरत खेतर में नगर सुदर्शन भारी ।
धन सम्पूरण देखत सुंदर रैत सुखी राजारी ॥ ५ ॥
मरणेथ राजा रै धरणी रांणी रिद्ध तणों विस्तारो ।
मनरथ राजा रे जुग बाहु भाई माहो माहि छे धारो ॥ ६ ॥

**अन्तिम भाग–**

युग बाहू नै मयण रेहा राणी युगवल्लभ लघु भाई ।
च्यारां रा तो कारिज सरीया मणरथ दुरगति माहीं ॥ ५४ ॥
एक कुविल्ल मणरथ सेव्यो दुख पायो संसारो ।
सात कुविल्ल सेवे प्रांणी जिण रा दुख छै अंपारो ॥ ५५ ॥
विसन सातमो पर नारी रो जीव घात घर हांणी ।
मणरथ राजा नारकी पोहतो कुजस बांध्यौ प्रांणी ॥ ५६ ॥
विषया-रस तो विष जाण नै सद गुर सेवा कीजो ।
मणरथ राजा री वात सुणी नै पर नारी त्यागी जो ॥ ५७ ॥

( मेड़ता मध्यै )

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ४६ ) **महिपाल नरेन्द्र चरित** । रचयिता-विनयचंद । आकार-१०'२"×४'६" । पत्र-संख्या १८७ । पद्य-संख्या ३६२७ ।

आदि भाग-

श्री नाभेय युगाजि जिन, प्रथम नरेश्वर पाय ।
प्रणमुं मन वच काय सुं, संसेवित सुरसाय ॥ १ ॥
मारू देव मनमथ मथन, कथन गुणां की राशि ।
सूशांमो तुंथे सरस, पोहचे नाहि प्रयासि ॥ २ ॥
ऋषभदेव असरण सरण, पूरण सकल जगीस ।
केवलदरसण ज्ञानमय, तीन भुवन के ईश ॥ ३ ॥
शासन नायक सुखकरण, सुर गिरि सम प्रभू धीर ।
प्रणमूं जगनायक सदा, मति दायक महावीर ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

जयो जगत जीवराज गुरवर केवली धर्म प्रकासियो ।
धनराज धन सुम राय ऋषिवर स्याम आगम भासियो ॥
तास चंद्र अनुंप मुनिवर शिष्य विनय या भणी ।
चोपई महिपाल मुनि नी श्री संघ रंग वधामणी ॥ १ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ५० ) **मानतुंग मानवती रास** । रचयिता-मोहनविजय । आकार-६"×४" । पत्र-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३४ अक्षर हैं। लिपिकाल-संवत् १८५१ वर्षे पोष वदी ४ दिने श्री ।

आदि भाग-

ऋषभ जिणंद पदांबूजे, मन मधुकर करि लीन ।
आगम गुण सौरभ वर अति आदर थी लीन ॥ १ ॥
यान पात्र सम जिन वरूं, तारण भवनिधि तोय ।
आप तरथां तारे अवर, तेन प्रणमति होय ॥ २ ॥
भावे प्रणमूं भारती, वरदाता सुविलास ।
बावन अक्षर थी भरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥

शुक्र कथा के शनि थकी, एहवी जेहनी शक्ति ।
किम मुकामें तेहनइं, पदनी कोविद शक्ति ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

राज ऋद्धि गृहदास तणां सुख ते सुहिणे न विचारे हैं ।
जिम अहि कंचुकी विरमी अलगी जिम सफरी नैन तिहारे हैं ॥
मानतुंग जिमि ऋषि मानवती तिमि कोहादिक ने रो हे हैं ।
करे विहार जिन कल्पी भवियण ने पडि बोहे हैं ॥
अनुक्रमे सासतणी संलेखण करीने बेहूं गह गहता हैं ।
सय रे तेतीसमे आयु समये सर्वार्थ सिद्धे पूहता हैं ॥
तिहा थी पिणतें बिहूँ न चव सें महा विदेहे अवतरस्ये हैं ।
........................................................ ॥

पुष्पिका-

श्रीविजयसेन सूरीय सेवक कीर्तिविज उवकाया है ।
तत्सीस संजम गुण लीला मानविजय वधुराया हैं ॥
तास सीस पंडित मुंगटा मणि रूप विजय कविराया हैं ।
तास चरण करूणा थी करी नें अक्षर गुण में गाया हैं ॥
अणहिलपुर पट्टन में रहिने मानवती गुंण गाया हैं ।
दुर्गादास राठोड़ ने राज्ये आनंद अधिक उपाया हैं ॥
सड़तालीस ढाले करी ने कीधीरास रसाला हो ।
मोहन विजय कहे नित होज्यो घरि घरि मंगलमाला हो ॥

[ माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर ]

( ५१ ) **मुनियति चरित्र कथा** । रचयिता-सांखभद्र। आकार-१०" × ४"। पत्र-संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर हैं । पद्य-संख्या ५७३ । रचनाकाल-संवत् १५५० वैशाख कृष्ण सप्तमी रविवार ।

आदि भाग-

णमाय मग धर पाय पणमेवि नामि नवनिधि संपजइ ।
..........................सयल सिद्धि सेवकह थापइ ॥

एक मना जे उलगि धरइ ध्यांन तस्स लचथि आपई ।

........................................................ ॥ १ ॥

बेकर जोड़ी वीनविउ, देउ मझ वाणि विशेष ।

बोलेसु राउ मुनिपति वरी, कथा बंध सुविशेष ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

करइ सवि अति पश्चाताप । दीधू आलसहुस्यइ मुझ पाप ।

लाजिउ घणु हीया माहि तेह । भव बंधन सुं नहिं संदेह ॥ २ ॥

थयो वैराग सेविनइ घणु । करसुं काज हवइं आपणु ।

वणउं महोच्छव तिणि कीधी । रिषि मुनिपति नइं दक्षा दीधी ॥३॥

बेहू मुनिवर करइ विहार । पालइं पंच महाव्रत भार ।

धर्म ध्यानि तपि सोसीदेह देव लोक नइ गया बेह ॥ ४ ॥

तेहनु ध्यांन हीया माहि आण । बेहुए एकावतारी जांण ।

मुगति पंथि ते जाइ वही । सणउ कथा सांखभद्र कही ॥ ५ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

( ५२ ) **मेतारज मुनि चरित्र कथा।** रचयिता–चौथमल । आकार–९.६″×४.४″ । पत्र-संख्या ६ । रचनाकाल–संवत् १८६२ असाढ़ विद १३ । पद्य-संख्या २०१ ।

आदि भाग–

समरूं सासण रा धणी, पो उगंते सूर ।

अनंत चोवीसी वांदतां, जन्म–मर्ण जाय दूर ॥ १ ॥

श्री श्रीमंदर आदि दे, जेवंता जगदीस ।

केवल ग्यानी साधने, सदा नमाउ सीस ॥ २ ॥

चोखो चारित्र पालतां, करे दुगंछा कोय ।

मेतारज मुनी नी परे, नीच गत फल होय ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

तप जप कर सुध गत गयो, नेट जासी नीरवाण ।

आवागमन मेटायने, जनम मरण कर हाण ॥ ६ ॥

बध परीस(?) सही करी, मेता रज रिष राय ।
सिव सुख पांम्या सासता, रिष चोथमल गुण गाय ॥१०॥
ऊभा दे पन दूसरो, अधे न मेरा भाव ।
ग्यांनी देवी दीखीयो, चित धरीयां तिण रो डाव ॥११॥
समत १८६२ आसाढ वदि १३ जोय ।
सहंर मेड़ता मे करथा तणीया गुणीयो सुख होय ॥१२॥
कथा अनुसारे दाखीयो, केवली मील जोय ।
इधके उछो ज्यो करथो; तो मिछा मडकड(?) मोय ॥१३॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ५३ ) **मोहमरद राजा की कथा** । रचयिता--जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियां देखी गई जिनमें से चार का उल्लेख यहाँ दिया जाता है :—

प्रति १: आकार ४'५" × ३'१" । पत्र संख्या २५ । पद्य संख्या-१२५ ।

[ श्री रोशनलाल सामर, वकील, उदयपुर ]

प्रति २: आकार ६'२" × ४" । पत्र संख्या- १६ । पद्य संख्या-२७२ ।

[ रामद्वारा, धोलीबावड़ी, उदयपुर ]

प्रति ३: आकार ३" × २'४" । पत्र संख्या- २७ । पद्य संख्या-२७२ ।
प्रति ४: देखोः- जन सूरतराम वाणी संग्रह ग्रंथ १५ ।

विशेष- प्रति २ और तीन में रचनाकाल इस प्रकार दिया गया है-

'संवत् सत्रेहसौ छयोत्रे बरष' ।

अतः मिलाओ भाग १, १०२ । ( ६६ ) में उल्लिखित लिपिकाल ।

( ५४ ) **रत्नपाल रत्नावती रास** । रचयिता- सूरविजय । आकार- ६'४" × ६" । पत्र-संख्या ३८ । पद्य-संख्या ७८१ । रचनाकाल-संवत १७३२ । लिपिकाल संवत् १६३२ ।

आदि भाग-

दूहा

श्री ऋमादिक जिन नमुं, वर्त्तमान चौबीस ।
सीमंधर प्रमुख नमुं, विरहमांन वलिवीस ॥ १ ॥

पुंडरीक गोतम प्रमुख, गणधर हुआ गुणवंत ।
चउदैसै बावन नमुं, मोटा महिमावंत ॥ २ ॥
समए हुं श्रीसारदा, त्रिण जग मां जस ख्यात ।
वीणा पुस्तक धारिणी, शुभ मति आपो मात ॥ ३ ॥
निज गुरुनांम जपुं सदा, रिद्धि सिद्धि दातार ।
मूरख नइं पंडत करइ, ए मोटो उपगार ॥ ४ ॥
तास तणै सुपसाउ लै, रचस्युं रास रसाल ।
रतनपाल गुण गायवा, मुझ मन थयो उजमाल ॥ ५ ॥

**( ५५ ) राजनीति-हितोपदेश** । रचयिता-भैरवप्रसाद । लिपिकाल-संवत-१६२१, भाद्रपद वदि १३ चन्द्र । यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है- इसकी सूचना इसके निम्न-लिखित अंशों से ज्ञात हो जाती है—

आदि भाग—

"किसी समय श्रीनारायण पंडित ने नीतिशास्त्रों से कथाओ का संग्रह कर संस्कृत में एक ग्रन्थ बनाया और उसका नाम हितोपदेश रख्या सो संवत् १८६६ में ललूलाल कवि ब्राह्मण गुजराती आगरे वाले ने उसका आशय ले व्रिजभाखा कर नाम राजनीति रख्या। सो अब उसे भैरवप्रसाद इंदोर के हिंदी मदरसे के गुरु ने हिन्दी बोली में रचा ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

दोहा

पंडित हे ते जानिये, कथा प्रसंग प्रवोन ।
मूरख मन मे मांनि हे, लाल कहाय हकीन" ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

"बांदर सें यह उपदेस सुन मगर अपणै घर गया और उसने नया विवाह किया, औ घर बसाया, सब दुख छोड़ा आनंद से रहने लगा ।"

उदाहरण—

"कहा है- जिस सभा में वृध न होय सो सभा न पावे। और ओ वृध नहीं जो धर्म नहीं पहिचानता हो । और वह धर्म नहीं जो सत्य न होय। वह सत्य नहीं जहां दया न होय । ऐसे समझाय मंत्री ने राजा का क्रोध सांत किया ।"

[ अन्तारणी संग्रह, उदयपुर ]

**( ५६ ) राजा चोर बकचूलजी की कथा** । रचयिता-खेम । आकार-४'५" × ३'१" । पत्र-संख्या ४० । प्रति पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६

अक्षर हैं। पद्य-संख्या १७१। इसमें किसी चोर बकचूल नाम के राजा के यहाँ चार साधुओं के ठहरने, उनका राजा द्वारा पहले सम्मान न होना, फिर इसके लिये राजा द्वारा क्षमा याचना आदि का वर्णन है। रचना सामान्य कोटि की है।

रचनाकाल -१७५० के उत्तरार्द्ध की अनुमानित।

आदि भाग-

गुर प्रमेस्वर कौं श्रु प्रनांम । बरनौ कथा धरम सुख धांम ॥
करौं चौपाई कहि समभांऊं । सब को मन आनंद बढाउँ ॥ १ ॥
सिब बिरंचि नारद सनकादिक । बंदौ कल्प व्रुदत सुकादिक ॥
सकल साध जे है निज संत । नमो तास को भगतिअनंत ॥ २ ॥
एक प्रसंग कहूं अब सोई । साध संगति को सो फल होई ॥
राजा एक चोर बकचूल । ताके विविध भांति की भूल ॥ ३ ॥
चारि साध पुनि आयें जहाँ । उतर आइ बाग में तहां ॥
बरिषा चतुर मास रूति आई । साध रहे यह मति ठह राई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

राजा चोर बकचूल की बरनौ सहठ विधान ।
साधन के सतसंग तैं, पायौ पद निरवान ॥ १७० ॥
चारि बचन साधन कहै, नृपति उचारयौ सोइ ॥
खेम कहै धनि धनि हुवै, नित प्रति सेवे सोइ ॥ १७१ ॥

[ रोशनलालजी सामर, उदयपुर ]

( ५७ ) **राजा भोज चरित्र पनरमी विद्या री वात।** रचयिता-व्यास भवानीदास। आकार- ५'५" × ४'२"। पत्र-संख्या ७२। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २० अक्षर हैं। यह वार्त्ता गद्य-पद्य में है। पद्य-संख्या-३२६। हठीमल लोढ़ा ने इसको संवत् १८२१ जेठविद ६, सोमवार को लिपि बद्ध किया। भाषा-राजस्थानी।

आदि भाग-

अथ राजा भोज धारा नगरी रो धणी तिणरी पनरमी विद्यारी वार्त्ता लिख्यते । व्यास भवानीदास कृत । दूहा, चन्द्रायण, रेखता, नीसांणी, रूपालंकृत लिख्यतें ।

दूहा

श्री गणपत सरस्वति शिव, विसन रवी गुरदेव ।
व्यास करै अरदास प्रभु, दीजै अक्षर भैव ॥ १ ॥
अविरत वाणी आपिजै, दीजै सुबुध सुग्यांन ।
त्रिया चरित वरणन करूं, धर सुभ वन.....ध्यांन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

छप्पय

श्री महाराजा भोज, आप मैह मांतन आयो ।
सुर न हुआ आणंद, प्रथी नव खंड सुहायो ॥
समिया हुआ सुगाल, काल अरीया सिर कोपै ॥
षट दरसण पोषिजै, रिधु आरोपारोपे ॥
जग जीत वात राखण, जगत पीत रीत पारख करी ।
सुण जो सुजाण नर नारियाँ, इल पर गलाँ ऊबरी ॥ १ ॥
गढ जोधांण सतोल, धांम आई बीलीडै ।
.............................................................. ॥
भोज चिरत जिण सुण कह्यौ कविगण सुख पावै ।
व्यास भवानीदास, कवित कर वात वणावै ॥
सुणियो प्रबंध चारण प्रते, भोजराज कवि यूं कह्यौ ।
कलियाणदास भूपाल को, धरम–धजा–धारी थयौ ॥ २ ॥

[ रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर ]

## ( ५८ ) राठोड़ वंश की उत्पत्ति साखातेरा की ।

रचयिता–कविराव करनीदान । आकार–१५″ × ६″ । पत्र-संख्या १०८ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ अक्षर हैं । ग्रन्थ, दोहे और छप्पयों तथा अन्य कई प्रकार के छंदों में रचित है । इस प्रति को खटाड़ी के खड़िया नरसिंगदास भेरूदासोत ने संवत् १६०७ और १६०८ के बीच में लिपिबद्ध किया । रचना डिंगल में है । पाठ बड़ा शुद्ध है ।

आदि भाग–

छंद बेअषरी

राम पाट कुस भूप बिराजे । सुज कुस पाट अनत न्रप साजे ।
स अम अतत न्रप सोहत । राजा नषद पाट नभ राजत ॥

अन्तिम भाग–

कवित्त

दिवस एक जयचंद, बीर भीसलत बीचारी ।
जीय किया सह जेर, धरा हिन्दु छत्र धारी ॥
अटक पारमो अगे, पलानह नमे बिलायत ।
जवन बसे जिण मांझ, आंप अगुर अस पत ॥
ज्याहणु काय पकड़ जीयां, प्रथी बदे तण पांणरी ।
षगपां पाण डंडलु तद षत्री, षीतछ षंड पुरसांणरी ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( ५९ ) **रात्रि भोजन री चौपई** । रचयिता–सुमति हंस । आकार–९.८″×४.८″ । पत्र संख्या २१ । पद्य-संख्या ४०३ । लिपिकाल-संवत् १९१३ । रचनाकाल-संवत्- १७२३, मगसर विद ६ गाम सरसा में लिखित ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६० ) **वल्लभाख्यात** । रचयिता-गोपालदास । आकार-७.५″×६.६″ पत्र-संख्या ११ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या १२६ । पुस्तक जीर्ण है ।

आदि भाग–

यज पुरुष हरि श्रुति गुण गायजी ॥ १ ॥ ढाल ॥
गाए स्तुति गुण रूप अहर्निस धरें ध्यांन विचार ।
आनन्द रूप अनूप सुंदर पावे नहीं कोई पार ॥ २ ॥
प्राण पति प्रगटया कारण काई कहूँ मति मंद ।
हर सुर विधाता नवल हें, सो ज्ञात अज्ञानंद ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

सोभा यमुना कवला देवका जेहना सात बंधु सौभाग्य रै रसना ।
एहना चरण स्मरण करी श्री विठ्ठल पद रज रति भाग्य रै रसना ॥
पुत्र पौत्र सुख किम कहुँ जो तू मुख मांए करे रे रसना ।
श्री विठ्ठल कल्पद्रुम फल्यौ तेहनी साखा परी अनेक रे रसना ॥ १४ ॥

[ अन्ताणी संग्रह, उदयपुर ]

( ६१ ) वात संग्रह । पत्र-संख्या ३६० । प्रति सजिल्द है और संवत् १७५४ में फाल्गुन वदि ५ को आदुणिगढ़ में लिखी गई है । इसके अंत में एक अपूर्ण सूची दी गई है जो महाराज वाघसिंहजी द्वारा संवत् १८३६ माह सुदी २ सोमवार को एक प्रहर दिन चढ़ते तैयार की गई । प्रति में अक्षरों की लिखावट समान नहीं हैं, कहीं अक्षर जमा कर लिखे गये हैं–कहीं नहीं । सम्पूर्ण प्रति एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई । वार्ता में राजस्थानी का परिमार्जित गद्य-पद्य मिलेगा । सब का आदि अन्त न देकर यहाँ केवल विषय सूची ही दी जाती है–

Indira Gandhi National Centre for the Arts

१ विक्रमादीत री उतपती
२ राजा गंधर्व सेन री वात
३ चोबोली राणी री वात
४ राजा सुसील री वात
५ राजा भोज री अर माघ पंडित री, राणी भाणवती लछीयातैं समयै री वात ।
६ वात राजा भोज री ४ चारणां बाबत
७ वात राजा भोजरी छीपण बाबत
८ बीरोचन ( द ) मौहते री वात
९ राजां चंद री वात
१० हरीदास चहवाण री वार्ता
११ वार्ता जेसे सरवही ये री
१२ रायधण री वार्ता
१३ पोपा बाई री वार्ता
१४ कोल्याइत रै साहरी वार्ता
१५ वार्ता श्री सूर्यजी री

१६ वार्ता राजा सालवहान री
१७ रतनमाणक साहिजादी री वार्ता
१८ बंग साहिजादे री वार्ता
१९ राजा पराक्रम सेन री वार्ता
२० वार्ता ओसाणे तणे सू भारथ हुवौ तेरी
२१ ओसानेरी वार्ता
२२ रजपूत आल्हण री अर सादे वाणीये री वात
२३ दीवाली री वार्ता
२४ भाटीयांरी नषां जुदी जुदी हुई तेरी वार्ता
२५ वेला जुरै री वार्ता
२६ भले बुरे री वात
२७ राजा भोज अर बाफरै चोर री वात
२८ मोरड़ी हार गिलीयौ तैरी वात
२९ दिल्ली रै हौसनाषा री वात
३० कुंवर चित्रसेण री वात
३१ पातसाह बंग रे बेटे री वात
३२ लुद्रवै पाटण माहे ब्राह्मण चोरी कीवी तेरी वात
३३ अपछरानू इन्द्र सराप दीन्हौ तेरी वात
३४ कुंवर भूपति सेन री वात
३५ ज्ञानै साह री वात
३६ वंसी ब्रह्मभाट री उतपत री वात
३७ दीन मांन रा फलां री वात
३८ वात नरबद जी री अर नृसंघ सीवल री पियारदे बाब्रत
३९ सिधराव जेसंघदे री वात
४० राजा भोज री अर मंत्र सेन री बेटी री वात
४१ वात राजा भोज री बाफरे चोरा पासा चोरी सीषी तेरी
४२ राजा भोज अर भाणवती रे वाद री वात
४३ चार परधांनां री वात
४४ वात अचलदास षीची री ऊंमादे सावतीं परणीयौ तेरी **( यह प्रथम भाग में प्रकाशित रचना से भिन्न है )**

Indira Gandhi National Centre for the Arts

४५ तिलोक सी जस डोत री भाटी री अर कुगंडे बलोच री वात
४६ राजा विजैपति री वात
४७ राव नरपतजी री वात
४८ रावल जामनू साह मिलीयो तेरी वात
४९ मोगल मैंहंदरै री वात
५० राजा रो बेटो देसौटै नीसरीयो छै तेरी वार्त्ता
५१ राजा रे बेटै रै महल री वात
५२ वावड़ै बछैरे री वात ( बाघ और बछेरे री वात )
५३ पंच मार री वात
५४ चांपे सींव री अर वीरे भायल री वात
५५ सिषरेई देउगड़ावत री वार्त्ता
५६ सादे मागली येरी वार्त्ता
५७ दांमौ देवड़ो (अर) सांमो सखहीये री वात (इसके अंत में सं० १७५४ लेख मिलता है।)
५८ षयौं चीते ( तौ ) री अर विजे देवडै री वात
५९ देवसी रबारी री बात
६० वात रबारी रतन ही रहे अर प्रीत ही रहै
६१ कापे रजपूत री वात
६२ भलै भलौ बुरे बुरौ री वात
६३ वार्त्ता राजा मंत्रसेन री
६४ तांत वाजी अर राग बूझी तेरी बात
६५ रजपूत री स्त्री री सहटी बोली तेरी वार्त्ता
६६ बांधी बुहारी री वार्त्ता
६७ सो नारी री र सुतारी री वार्त्ता
६८ वार्ता साहुकार री अर सूवेरी
६९ वात राजा केरधनरी
७० राजा विजे राव री वार्त्ता
७१ सतवंती री वार्त्ता
७२ बात मोरड़ी मतवाली री
७३ वात मुहतै सुमत कुंर मंगलू रुपरी

७४ श्री महादेव जी पार्वती री वात

७५ साहूकार री वात

७६ साहरी स्त्री रे तपावस री वार्त्ता

७७ गांव रे धणी री वार्त्ता

७८ राजा रे बेटे री वात

७९ राजा सिंधराव जैसिंघ देव री बात ( हेमचन्द्राचार्य और सिद्धराज जयसिंह )

८० कुंवरपाल पाटण रे धणीरी वार्ता

८१ कुंवरु साहिजादा री वात

८२ लालमेण कुंवर री वार्त्ता

८३ मदन कुंवर री वार्त्ता

८४ पातसाह अलावदीन री अर हंमीर हठीले री वात

८५ मिहमद खांन साहिजादे री वात ( गजनी के पिरोशाह का बादशाह का पुत्र )

८६ सलेमखांन साहिजादेरी वात

८७ सांवल साह रे बैटे री स्त्री री वात

८८ चारण मदमै ( मौ ) मनोहर री वात

८९ रत्न मंजरी री तृतीय वार्त्ता

९० नवरत्न कुंवर री वार्त्ता

९१ लूण साह री बेटी री वार्त्ता

[ स्वरुपलालजी, जगदीश चोक उदयपुर ]

( ९२ ) **वैष्णव वार्ता संग्रह** । आकार-९" x ७" । पत्र अस्त व्यस्त है। इसमें ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्ताएँ सम्मिलित है। इसके साथ नाभादास कृत भक्तमाल की टीका भी है। प्रति, पानी से कहीं कहीं बिगड़ गई है।

[ उदयसिंह भटनागर, उदयपुर ]

( ९३ ) **विक्रम चरित्रे चोबोली सती नी चउपई** । रचयिता-अभयसोम। आकार-१०'२" x ४'७" । पत्र-९। पद्य-३३५ । रचनाकाल-सं० १७२४। लिपिकाल-सं० १८८२।

आदि भाग-

वीणा पुस्तक धारिणी, हंसासन कवि-साय ।
प्रह उगंतई नित नमुं, सारद तोरा पाय ॥ १ ॥

हुइ पंचासे बाँधियो, कोई नवो भंडार ।
बाथां भरिनइ काढ़तां, किण ही न लाधो पार ॥ २ ॥
तो हूंती नव निद्धि हुवइ, तो हूँती सह्र सिद्धि ।
आज अनइ आगा लगइ, मूरख पंडित किद्धि ॥ ३ ॥
तिण तौनै समरी करी, कहि स्यु ं विक्रम-वात ।
मइ ं तो उद्यम मांडीयो, पूरो करिस्यइ मात ॥ ४ ॥
सोनइ किणनइ छेतरयौ, मइ ं जग ठग्या अनेक ।
मो कलियुग नइ छेतरयौ, राजा विक्रम एक ॥ ५ ॥
चउबोली राणी चतुर, शीलवंति सुखकार ।
विक्रम परणी जिण विधइ, कथा कहिस्यु निरधार ॥ ६ ॥

**अन्तिम भाग–**

च्यारे पुहर बोली चतुर, चारे वाट सुखकार ।
कहे सबे ही सुंदरी, जय जय आणंदकार १ ॥
फल्यो मणोरथ बिहुंजणा, उलसीया मन मांहिं ।
आलसूया रै आंगणै, आयो गंग प्रवाह ॥ २ ॥
जे मन राखै जेह सुं, तेहनै मिलै ज तेह ।
मुंह मांग्या पसादल्या, दूधे वूवा मेह ॥ ३ ॥
हुंती एक पंखी धणी, ताठी गाठी प्रीति ।
तपी विक्रम लाहोर ज्यो, जोडी करी इत चीत ॥ ४ ॥
परतग्या पूरी थई, मांहरी रही ज भांम ।
मैं जाएयो नांही मिलै, पूरण हारो सामि ॥ ५ ॥
लीलावतीइ ं झठी नै, कंठ ठवी वरमाल ।
रलीयां तोरण बांधिजै, रच्यो वीवाह रसाल ॥ ६ ॥
परणी बहु मंडाण करी, पुण्य तणै परमांण ।
मन सुं विक्रम हरखियो, भाग फल्यो निरवाण ॥ ७ ॥

........................................................

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६४ ) **विक्रमसेन चतुपदी** । रचयिता-परमसागर । आकार-८″ × ४.५″। पत्र संख्या–१३२ । छंद संख्या–१३०६ । लिपिकाल–संवत् १६२७, कार्तिक कृष्णा ६ शनिवार । यह प्रति उपरोक्त प्रति से भिन्न है । इसकी भाषा भी जैन शैली की है ।

**अन्तिम भाग–**

तप गच्छ . अंबर तणी सरीषो, विजयदेव गुणधारी ।
तसपाटें संप्रत गुरु प्रतपे, श्री विजय प्रभ सुखकारी रे ॥ ६ ॥
तस गघे गुण मणि आगर, जयसागर उवभाया ।
तस पद सेवे सुर नर वृंदा, नामे नव निधि पायारे ॥ १० ॥
तास सीस पंडित जिन नायक, लावण्य सागर गुरु राया ।
महिपल महमा जे नो पसरयो, दिन चढ़त सवाया रे ॥ ११ ॥
तस पद सेवक परम सागर, कवि रचियो रास रसाल ।
भाव धरीने सुंणता रसीया, लहस्यो मंगल मालरे ॥ १२ ॥
तिंहां लगे चोपी थिर थाज्यो, जिंहां लगे सूरज चंदा ।
राग धन्यासी ढाल चोसठमी, परम सागर आणंदारे ॥ १३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६५ ) **विक्रमादित्य चउपई** । रचयिता-अभयसोम ।

आकार– १०½″ × ४½″ । पत्र संख्या ६ । इसके प्रत्येक पत्र पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । अक्षर जैन पाटी के प्राचीन नागरी हैं । इसमें कुल २८५ छंद हैं । संवत् १७२३ जेठ मास में सिरोही में इसकी रचना हुई और संवत् १८१० आसोज सुदि ७ को यह प्रति लिपिबद्ध हुई । भाषा परिमार्जित जैन शैली की राजस्थानी है ।

**आदि भाग–**

दूहा

सरसति माता समरियै, नित प्रति लीजै नांम ।
चित माहि जे चिंतवै, सीझै वंछित कांम ॥ १ ॥
पय जुग प्रणमी तेहना, विक्रम चरित्र कहेस ।
सानिध करज्यो मामड़ी, हुं तुझ विनय वहेस ॥ २ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६६ ) **विक्रम वेलि** । रचयिता–मतिसुन्दर । आकार–४.३" × ३.६" । पत्र संख्या–१४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं। पद्य संख्या–२८० । रचनाकाल–१७२४, आसाढ़ कृष्णा १० ।

आदि भाग—

दोहा

दुह पंचासे बंधियो, कोइ नवो कोठार।
बाप भरीने कांटतां, किणही नलथो पार॥ १ ॥
तोऊ तिन वनिथ हुवे, तोहु तिसहुं सिद्ध।
अभु अने आगा लगै, मुरिष पंडित किद्ध॥ २ ॥
तिन तोने समरी करी, कहस्यु विक्रम वात।
मे तो उद्यम मंडिउ, पूरो करस्यो मात॥ ३ ॥

अंतिम भाग–

कलियुग मांहि विक्रमराय नो, सोहग सुंदर महिमां गाऊ तो।
तेहनि सानिध सिव करै, आगा लडती आपद अपहरे॥
अपहरे आपद चरित सुनावै, नाम थी नवनिधि मिलै।
षरतर गछ श्री जिनचंद सद गुरु, सेविता वंछित फलै॥
सतरे चोवीस कृष्ण दसमी, आदि आसाढ़े सही।
वाचना चारभ्र अभय सोमे, मति सुंदर काजे कही॥

[ पं० उमाशंकर द्विवेदी, 'विरही' उदयपुर ]

( ६७ ) **विमल साहरो सलोको** । रचयिता– विनीत विमल । आकार– ६.८" × ४.२" । पत्र संख्या– ५ । छंद संख्या–१०७ । लिपिकार–हेमंत विज । विषय– विमल शाह ने ग्यारहवीं शती में आबू पर एक जैन मन्दिर बनवाया, उसकी कथा इनमें दी गई है। भाषा जैन शैली की है और बोलचाल की है।

आदि भाग–

सरसति समरु बेकर जोडि । वांह वर काणो गिरनार गौडि ।
भाईण सेत्रुंजै संषेसर दोडि ! कवितां ने कुसल कल्याण कोड़ि ॥ १ ॥

मरुधर मांहि तीरथ ताभा । आंबू नव कोटि तेहनो राभा ।
गढ़ मढ़ नई देवल दरवाभा । चऊमष चंपाने ऊपर भाभा ॥ २ ॥
असल आचारभ धर्म्मघोष सूरि । या कीधि पिण भायें अधूरी ।
देवल विण मु'गरि दीसइ न नूरी । थ्यांनइ' तिहां छै छायद मासण पूरी ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

मन ना मनोरथ संबलाई सीधा । बारे ही पतिसाहरा बिरुध लीधा ।
पाटण छोड़ेंने चंद्रावें आयो । वडायी यामें नें छत्र धरायो ॥ ४ ॥
पतिसाह बांधें ने डंड भरायो । आबू ने ऊपरि देवल करायो ।
पोरवाड़ प्राक्रम पांच में आरे । नाणों खरच ने न्यात वधारे ॥ ५ ॥
पंचाणु' ए बांध्या पतिसाह, बारें । एक सपूत आवो कुल तारें ।
कहसी वांणी तू कांई वंखाणु' । धन पामें ने खरचितु नाणो ॥ ६ ॥

वि० जैन गुर्जर कविओ भा० ३ पृ० १३४३ के अनुसार इसके पद्य ११५ हैं ।

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ६८ ) सतवंती री वात । रचयिता-जांन कवि ।

यह 'वात संग्रह' ( ६१ ) में प्राप्त हुई है। रचना दोहा, सोरठा और चौपाई में है । इसका रचनाकाल इसके अन्तिम भाग के अनुसार संवत १६७८ है । इसकी भाषा पिंगल है । रचना सरस और मधुर तो है ही पर भाषा भी बहुत परिमार्जित और प्रवाह पूर्ण है । रचना के आदि भाग से ज्ञात होता है कि इसका रचयिता मुसलमान है और सूफी मत का अनुयायी ज्ञात होता है। संक्षेप में रचना की कथा इस प्रकार है ।

मनसूर एक व्यौपारी है। इसकी स्त्री का नाम सतवंती है। जैसा उसका नाम है-वैसी ही वह रूपवती और पतिव्रता भी है । मनसूर अपने मित्रों के साथ व्यौपार के लिए विदेश जाता है। उसकी स्त्री विरह में दुःखी होती है । बहुत दिन बीत गये । एक धूर्त ने इसके सौंदर्य के विषय में सुन कर इसे छलने का विचार किया। अतः उसने चार दूतियों-पँनवारिन,कलाली, मालिन और छलिनी योगिन को बारी बारी से उसके यहाँ उसे छलने को भेजा । सब बारी बारी से हार कर और मारखाकर लौटी। उसका धैर्य इन चारों से विचलित न हुआ ।

तब धूर्त हताश होकर वह किसी धूर्त श्वेताम्बर के पास जाता है। जो तंत्र, मंत्र और टोना करने में सिद्ध है। कुछ दिनों तक वह उसकी सेवा कर के उसे प्रसन्न कर लेता है और उससे रूप पलटने की क्रिया सीख लेता है। फिर मनसूर बन कर सतवंती के साथ रहने लगता है। सतवंती को कुछ संदेह होता है। अतः वह कुछ दिन तक टालती रहती है। इतने में उसका पति भी आ जाता है। एक रूप के दो व्यक्ति राजा के पास न्याय के लिये जाते हैं। राजा दोनों से तथा सतवंती से अपने अपने विवाह की तिथि लिखवा लेता है। सतवंती और मनसूर की तिथि एक मिलने पर धूर्त को प्राण दण्ड मिलता है।

आदि भाग-

चौपई

प्रथम समिरौं सिरजन हार। अलष अगोंचर एकंकार॥
अधम उधार अधार निरंजन। मलिनरसन सुमिरन तिह मंनन॥
व्याध असाध महा अपराध। विधि सुमिरन तैं-होत समाध॥
जिह रसना सुमिरन रसरसी। प्रगट भयो ज्यों-सबिता ससी॥
सुमिरन रसना रसना पीजै। तिरसना षट रस कत दीजै॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सोरठा

हार हार समरारि, पारा प्यार अपार कह्यो।
कंसै करै विचार, जांन कबि इक रसना सौं॥

चौपई

दूसरौ सुमिरौ नाम नबी कौ। सर्व रसूलन को है टीको॥
रच्यौ महंमद सब तै आद। रचना सफल ताहि परसाद॥

उदाहरण-

( सतवंती का विरह )

सुन सवती वरिषा आई। अब पिय बिन कैसें रह्यौ जाई॥
दादुर कोकिल मोर पुकारैं। बैंन वाण विरहिन कूं मारैं॥
अरध रैन बोलै है चात्रिग। मानो कामदेव के बासिग॥
स्याम घटा बग पंत दिषावै। करि दंते ले मारन आवै॥
घरी घरी घन वरसत फेरै। मलन वसन हंमारी तेरै॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

सतवंती मनसूर, अमर भये या जगत में ।
जगमगात ससि सूर, तैसे प्रगटै सील तैं ॥
सोलै सैज्ञ अठतरै, ससि सहस इकतीस ।
सतवंती सत जांन कवि, बांध्यो विसवा वीस ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ६९ ) **श्रीपाल चतुष्पदी** । रचयिता- जिन हर्ष ।

आकार- १०.२" × ४.६" । पत्र संख्या- ५० । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३६ । ४२ अक्षर हैं । लिपिकाल- सं० १८४८ । रचनाकाल- सं० १७४० ।

विषय- जैन- जीवन चरित्र । रचना उत्तम कोटि की है । भाषा जैन शैली की परिमार्जित राजस्थानी है ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

आदि भाग-

श्री अरिहंत अनंत गुण, धरिये हियडे ध्यान ।
केवल ग्यान प्रकास करि, दूर हरण अगन्यान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

संवत सतरैसै चालीसै, चैत्रादिक सुंजगीसरे ।
सातिम सोमवार सुभ दिसै, पाठण विसवा वीसरे ॥ ११ ॥

× × ×

कहे जिन हरष भाविक नर सुण ज्यो, नव पदमहिमा गुण ज्योरे ।
उगण पचासै टाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्योरे ॥ १३ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर ]

( ७० ) **श्रीपाल रास** । रचयिता-विनयविजय तथा जसविजय आकार- १०.१" × ४.४" । पत्र- ७४ । लिपिकाल-सं०१८६४ रचनाकाल-सं०१७३८ ।

आदि भाग-

कल्प वेलि कपि अवतणी, सरसति करि सुप साय ।

सिद्ध चक्र गुण गवतां, पूरि मनोरथ माय ॥ १ ॥

सूचना-इसमें चार खण्ड हैं। जिनमें प्रथम दो तो विनय विजय तथा अंतिम दो जसविजय कृत है।

[ वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर ]

( ७१ ) श्री मंधर स्वामी विज्ञप्ति स्तवन। रचयिता- अज्ञात। आकार- १०'१" × ४'२"। पत्र-संख्या- ४। पद्य-संख्या- १०५। विषय- जैन धर्म।

[ वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर ]

( ७२ ) साधु ( मुनिसरकी ) गुण माला। रचयिता- जैमल।

आकार- १०" × ५"। पत्र संख्या- ३। पद्य संख्या- ६५।

[ वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर ]

( ७३ ) सामुद्रिकइं स्त्री पुरुष शुभाशुभं। रचयिता-अज्ञात।

आकार-८'४" × ५'८"। पत्र संख्या-३३। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं। और प्रति पंक्ति में २७-३१ अक्षर हैं। अक्षरों की लिखावट प्राचीन जैन पाटी की है, परन्तु अक्षर जमे हुए नहीं हैं। यह प्रति सम्वत् १५७६ कार्तिक विद ६ की लिपिबद्ध है। प्रति प्राचीन है, अक्षर भी प्राचीन हैं। अक्षर घिस गये हैं, जिससे पढ़ने में कहीं कहीं कठिनाई होती है। इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह 'सहज सागर' नाम के किसी ग्रन्थकार के संस्कृत ग्रन्थ 'सामुद्रिक' की टीका है। टीकाकार का नाम घिस गया है, परन्तु उसको सामुद्रिक का ज्ञान देने वाले का नाम 'गुण सागर' दिया गया है। ग्रन्थ का विषय सामुद्रिक शास्त्र है, जिसमें नायिकाभेद का भी ध्यान रक्खा गया है।

भाषा-प्राचीन जैन शैली की राजस्थानी है।

आदि भाग-

ॐ नमो श्री सरस्वती नमः तु गरु् सामुद्रिक शास्त्रो नराणांयत ।

शुभाशुभं । तदहंसंप्रवक्ष्यामि । नत्र केशाग्रपु मतेः ॥ १ ॥

टीका

सामुंद्रइ शास्त्र जोई नइ जे पुरुष स्त्री ना गुण नष केश लगइ मस्तक तणां-केश पाश अनइ बरण कमल तणां नष-अंत फलाफल बोलीसिइ ॥

उदाहरण-

सिंहव्याघ्रेषां कादि स्वे दंतच नायकाः ।
राक्षा वानर सुल्या च कटियें पांन शोभनाः ॥ ६ ॥

टीका

येहनइ कटि सिंह व्याघ्रना सरिषी हुइ । प्रस्वेद हुइ त सुखी हुइ । राक्स वानर नाश रीषी हुइ तेइ दुःखी हुई ज्ञाणिवी ।

अन्तिम भाग-

पद्मिन्यः प्रेम वांछंति । द्रव्यं वाछंति हस्तिनी । चित्रिण्यो मान वांछंति । कलहि वांछंते शखिनीं ॥ १२१ ॥

टीका

पद्मिनी स्त्री प्रेम वांछई । हस्तिनी स्त्री द्रव्य वांछई । चित्रिनी स्त्री मान वांछई । शंखिनी कलह करई ॥ ६ ॥ १२२ ॥

[ स्वामी केवलराम दादूपंथी, उदयपुर ]

( ७४ ) **सारासार पच्चीसी** रचयिता-शिवराम ।

आकार-६.३″×५.२″। इस में कुल ११ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं। अक्षरों की लिखावट साधारण है। इसमें कुल २५ पद्य हैं, इसका विषय नीति और शिक्षा है।

आदि भाग-

कवित्त

भाई के न बंधु के न वैन के सवस नी के
देवो नाम सुनै देषत अँनेसे हैं।
गिरवे रषाय वस्तु सबकूँ उधार देत
आपहूं कुनाज षाय पेट भरे तेसे हैं ॥
घर के सब एक पाग पनही सों काम काढ़े
तीरथ वरत व्याव मोसर में भैंसे हैं ।
मूरष धनाढ्य कहे देषि के रूपैये ओरू
ऐसे जो धनाढ्य तो कंगाल फेर कैसे हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

कवित्त

कंचन के नभ चुंबित अवास पाये
जर के वितान दिये किरने रवीन की ।
पारे हय वारे गयवारे रथवारे भट–
गनि कै सिरावै अैसी मंतना प्रवीन की ॥
भनै सिव रामद्वारै मीर रहे भूपन की
अगंना अनूप पाई मत कर पीन की ।
एतो सर्व पायो षर नाहक गमायो जन्म
रसना बसायो जोपै रसना कवीन की ॥ २५ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

## ( ७५ ) सिंघासन बत्तीसी । रचयिता–देवीदास ।

आकार–४·३″ × ३·६″ । पत्र-संख्या ३४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ७०० । रचनाकाल–संवत् १६३३ फागुण विद ८ रविवार । इसमें अवन्ति के राजा विक्रमसेन का वर्णन है ।

आदि भाग–

गणपति नमुं दोइ कर जोड़ि । देही बुधि मति बाधे मारि ॥
गोरी सुत मति तणो भंडार । नाग सहस्र गल सोहे हार ॥ १ ॥
सिद्ध बुद्ध अरधंगे वेस । जेहि ऊँसे तिहि बार सरेस ॥
जोऊँ स्वामी दया करीराय । तोऊँ कथुं अवंती राय ॥ २ ॥
सारद माऊ बद्यऊं आरि । देहि सुमति कवि करै विचार ॥
हंस चढ़ी कर सोहे वीण । नाद रंग सुरंगण मुनि लीन ॥ ३ ॥
मो कविऊँ भव से भा रही । तो कथ कथा करो सार ही ॥
गुण अणंत ऊँह सारद माय । जु ही प्रसाद मवि कथा सिर राय ॥ ४ ॥
मात पिता गुरु वचने लाग । कहे ऊन सरसै लेउ बुधि मांग ॥
सकल सभा को आयस लहो । नो सिंघासन बत्तीसी कहो ॥ ५ ॥
सोहलसें तेतीसो जांण । सिसीर महारव कहूं वषांण ॥
फागुण वदी अष्टमी विचार । सो मन योग सकल रविवार ॥ ६ ॥

देस मालवो कंचन षांण । नगर देवास महा सुभ जाण ॥
कवि जन तहां वसे देवीदास । बुडे देवी तणो नीवास ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग–

ऐसो विक्रमसेण भोवाल । तास सहाइ वीर वेताल ॥
नारी षाम रयो संहार । जित्या ताइको मिड्डहार ॥ १ ॥
पंच डंड सिर वज्र धराइ । सात उदधि लगि साके कराइ ॥
पंच जोण मंडप आवण्यो । नारी चरित तेहीतषं जाणीयो ॥ २ ॥
हरसि की सुरा करि मानियो । पर कीयो परवेस जु कीयो ॥
तींन लोक कीनो पेसार । बोल्या मुष यामे संसार ॥ ३ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

( ७६ ) **सिंहल सुत चौपई** । रचयिता– समयसुन्दर ।

लिपिकाल– १८८५

[ माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर ]

( ७७ ) **हंसराज बछराज चउपी** । रचयिता– जिनोदयसूरि ।

आकार– ६३/२″ × ४″ । पत्र संख्या–३८ प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३३ । ३४ अक्षर हैं । इसमें कुल ७१४ पद्य हैं ।

विषय– जैन धर्म जीवन–चरित्र है । भाषा राजस्थानी गुजराती है ।

आदि भाग–

आदिस्वर आदि करी, चउविसें जिण चंद ।
सरसती मन समरु सदा, श्रीजयतिलक सुरिंद ॥ १ ॥
सदगुरु पाय प्रणमीं करी, पायी गुरु आदेस ।
पुन्य तणा फल बोलस्यूं, कहस्यूं हूं लव लेस ॥ २ ॥

[ वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर ]

( ७८ ) **हरीचंद सत** । रचयिता–ध्यानदास ।

यह १३७ संतों के संग्रह में है । इसमें २४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन अध्यायों में विभाजित

है। प्रथम अध्याय में १६६ पद हैं, द्वितीय में १२१ और तृतीय में १०० । इस प्रकार इसमें १४ दोहे, २ सोरठे, ४ छंद और ३२० चौपाइयां है। जिनकी सर्व संख्या ३४० होती है। ग्रन्थ का विषय सत्य हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा है। इसका रचना-काल कवि ने इस प्रकार दिया है—

'उदधि दोत कर लीजिये लेखन भार अठार'
४ २ १८

जिसके अनुसार संवत् १८२४ या १८४२ ठहरता है।

इसके प्रथम अध्याय में राजा का राज्य त्याग और काशी में आगमन। द्वितीय अध्याय में सुत-रानी और राजा का वियोग, सुत-रानी का अग्नि सुशर्मा के यहां निवास और राजा का डोम के घर निवास। तृतीय अध्याय में रोहिताश्व की मृत्यु आदि शेष घटनाएं।

आदि भाग— दोहा

गोविंद गुर को नित नमौ, नमौ भक्त सब साध।
ता प्रसाद जस ऊचरूं, हरिचंद सत अगाध ॥ १ ॥

चौपई

अबगति अलप अनाहद भारी। उपत षपत महासुधि भारी।
नाव् न गांव् ठांव् कहा कहियै। आगम अगाध साध संग लहिये ॥ २ ॥

अन्तिम भाग दोहा

उदधि दोत करि लीजिये, लेखन भा अठार।
ध्यान दास बसुधा लिषै, भगवंत भगत अपार ॥ ६६ ॥
लषा वाकाज सुरस्वति लागैं, सब बुधिबंत कलि मांहि।
रोम समान न लष सके, हरि चरचा मति नांहि ॥ ६७ ॥
जो उचरे या ग्रंथ कूं, कोऊ सुनैं चितलाय्।
'ध्यान लहसो परम पद, पाप ताप त्रिय् जाय् ॥ ६८ ॥
हरीचंद सत कूं सुनैं (कोई), ऐसी टेक समाय्।
'ध्यान' लहे सो परम पद, या मैं संसे नाय् ॥ ६६ ॥
ध्याय् तीन या ग्रंथ की, धरम कथा बिसतार।
हरीचंद हिरदै धरे, सो जन उतरे पार ॥ १०० ॥

[ रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर ]

( ७६ ) हितोपदेश । रचयिता- नारायण- ब्राह्मण ।

आकार- ८″ × ६″ । इसमें ११५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ । १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ । २० अक्षर हैं । लिखावट साधारण है । ग्रन्थ पर चमड़े का जिल्द है । जिसके भीतर दोनों ओर हनुमान के रंगीन तथा सामान्य शैली के दो चित्र भी हैं, जिनका कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसमें हितोपदेश ( संस्कृत ) का गद्य में भाषान्तर किया गया है । यह प्रति संवत् १८७६, माह वदि ४, भोमवार को खवास बरदा द्वारा जहाजपुर (मेवाड़) में लिपि कृत हुई । भाषा अशुद्ध लिपि के कारण बड़ी अशुद्ध हो गई है ।

लल्लूलाल के गद्य की भाषा का आचार यही भाषा है—

'पुत्र सौही भयो जानीये, जीन कै भयै वंस मै ऊंचौ होय, नतर मुयेते संसार मै को नाही उपत । अरू जहा गुणी जण साधुगणी यही हैं, तहा आदर सौ जाकौ नाम पहले न लखी इं । ऐसे हु पुत्र की मातां कौ पुत्रवंती होये तो को हो धो ( तो ) वांझ कौन सौ कहीयै ।'

अन्तिम भाग-

'तब विसनु सरमा राजपुत्रन सों-कह्यो-अब तुमारे ओर सुनवे की अंछ्या होये सो कहो, सोहु सुनाऊ' तब राज पुत्र-कह्यो-तुमारे प्रसाधते सब राजनीत, सब क्रिया सीष सुख भयो । ज्ये हमारी आग्या रपुन हो । नयो जनम भयो । तब विसनु सरमा कही-तब हु ओर यह होऊ, सब राजनि सों । ओर संधी होऊ। अरू जय करि आनंद होऊ । सदा वृत प्रताप होऊ । सुक्रत की क्रीती बढ़ो । नित मंत्रिन के हिरदे मो क्रीड़ा करो । दिन दिन सब राजनि सों ऊंचो होऊ । जो लु' श्रीगोविंद जी के वक्ष्येस्थल मै लक्ष्मी रहे, अरू जो लु'गोरी नाथ के माथा पर चंद्रमा, जेसे मेघ मो बिजुलता, जो लु' सुमेर दावानल सो भूमंडिल मो विराजे, तो लु' नारायेण नांमी ब्राह्मण करि कीयो येहें हेतुपदेस नामा गंथ प्रथ्वी मो चल हु—

दोहा

राजनीत नै रीत सों, बांचो चत बढाय ।
बालक कु अति सुख बधे, सबै ग्यांन सरसाय ॥ १ ॥
जन्तु कथा जाणो मती, सुण जो सुरत लगाय ।
(श्री) हेतों को उपदेस है, सुर पंडित गुण साय ॥ २ ॥

[ कविराव मोहनसिंह, उदयपुर ]

# ( परिशिष्ट )

## मीराँ के अप्रकाशित भजन

निम्न लिखित भजन विविध गुटकों में लिखे हुऐ मिले हैं। यहाँ केवल वे ही भजन दिये गये हैं जो अब तक अप्रकाशित हैं। कुछ भजन ऐसे भी दिये गये हैं, जिनमें और प्रकाशित भजनों में पाठान्तर हैं। जिनका लिपिकाल मिला है, उसको उनके साथ नीचे कोष्टकों में दे दिया गया है।

१

जब कै तुम बिछड़े मेरे प्रभुजी, कहुएं न पायौ चैन ॥ १ ॥
व्रिह व्रिथा कासूं कहूं सजनीं, क्अत आवे अैन ॥ २ ॥
ऐक टगटगी पिया पंथ निहारूं, भई छै मासी रैण ॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनांसीं, दुःष मेलण सुष देण ॥ ४ ॥
( १८७६ )

२

मैं ती म्हारा रमईया नै देष बौ कंरूली ॥ टेक ॥
तेरौ ही सुमरण तेरौ ही उमरण, तेरौ ही ध्यान धरुंली ॥ १ ॥
जिहां जिहां पांव धरे मेरे प्रभूजी, तांहां तांहां वरतक करूंली ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अबनासी, चरणां में लिपट रहूँली ॥ ३ ॥
( १८७६ )

३

जावो नर मोहीयाजी भीणी तेरी प्रीतड़ी ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीतिंछी अब कछु अवली रीतड़ी ॥ १ ॥
ईम्रत पाइ विषे क्यूं पीजिये कोण गांव की रीतड़ी ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनांसी, जौ गायो किसकी मींतड़ी ॥ ३ ॥
( १८७६ )

४

जोगीयाज दरसण दीज्यो रा जी ।
कर जोड़था करणीं करूं म्हारी वाहा गहवा की लाज ॥ टेक ॥
लोक लाज जब सारी डारी, छाडथो जग उपदेश ॥
अह अग्नि में प्रान दाभे, ह्मारो सुधि लीज्यो आदेश ॥ १ ॥
साँच मुद्रा भाव कंथा, साज्यो नष सष साज ॥
जौगणि होइ जुग टूटस्यूँ, ह्मारी घर घर फेरी आस ॥ २ ॥
दरध दिवानी तन देषि आपनूं, मलीया परम दयाल ।
मीरां के मनि आनन्द हुंवा, रूम रूम खुसियाल ॥ ३ ॥
( १८७६ )

५

नातौ हरि नांव कौ माई ।
मोसूं तनक न विसरयौ पल न जाई ॥ टेक ॥
पाना ज्यूं पीली भई, लौग कहै पिंड रोग ॥
छांने लंगण मैं कोया, राम मिलण के जौग ॥ १ ॥
बाबल बैद बुलाईया, पकड़ि बताई म्हारी बाटि ।
मूरिष बैद न जाण हीं, म्हारे करक कलेजा मांहि ॥ २ ॥
बैद जावौ घर आपणै, म्हारो नांव न लेह ।
मैं दादी हरि नांव की, मौहि काहै को दुष देंह ॥ ३ ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ, कागा तू ले जाइ ।
जा देसा प्रीतम बसे, वे देषे तूँ षाइ ॥ ४ ॥
छनि आगणि छनि मंदरा, छनि छनि ठाढी होइ ।
छार ज्यूँ घूंमत फिरूँ, म्हारौ मरम न जाणै कोइ ॥ ५ ॥

तन सुकिचि पिंजर भयौ, सूंका व्रछ की छांहां ।
आगणि यालीं मूंदड़ी, म्हारै आगण लागी बांहां ॥ ६ ॥
रेरे पापी पपीवड़ा, पीव का नांव न लेह ।
पीव मिलै तो मैं जीऊँ, नांतरि त्यागूँ म्हारो जीव ॥ ७ ॥
कौइक हरजन सामलैरे, पीव कारण जीव देह ।
मीराँ व्याकुल ब्रहनीं, पीव बनि कसौ सनेह ॥ ८ ॥

( १८७६ )

६

जोगीयाजी आजोजी इण देस ।
नै जस्याँ देषू नाथ नै, धाइ करूँ आदेस ॥ टेक ॥
आया सावण भादवा, भरीया जल थल ताल ।
साई कूँ विलमाई राष्यौ, ब्रहहनि है बैहाल ॥ १ ॥
बसरयां बौहो दनि भया, बसरयौ पलक न जाई ।
ऐक बेरी देह फेरी नगरि, हमारै आई ॥ २ ॥
वा मूरत माहारै मन बसै, बसरयौ पलधून जाइ ।
मीराँ कै कौई नांही दूजौ, दरसण दीज्यौ आइ ॥ ३ ॥

( १८७६ )

७

देसडलौ रूडौ रूड़ौ । रांणाजी थांरौ ···भगत न भावै माहारा राम की ।
लौग बसै छै कूड़ौ ॥ टेक ॥
मेवा मसरी सब ही त्याग्या, त्याग दियौ छै बुरौ ।
तन की आस कबहुं न राषी, ज्यूं रण माहिं सूरौ ॥ १ ॥
भाई मात कुडंबो त्याग्यौ, त्याग दिवे छे चूंडौ ।
घूंघट को पटि दूरि कियो, सरि बांध्यौ छै जूडौ ॥ २ ॥
यौ संसार सब दुष कौ सागर, मैं हाकीयौ दूरौ ।
मीराँ कीके प्रभू हरि अबिनासी, बर पायौ छै पूरौ ॥ ३ ॥

( १८७६ )

८

ग्यान कूँ बाण षसी । हो म्हारा सतगुरजी हौ ॥ टेक ॥
बकतर फूटि हीय······अटकी, भीटर चालि घुसी ॥ १ ॥
बाहरी घाव दीसत नहीं कोई, उचि बचि पूरि षसी ॥ २ ॥
तत तरवारि भालिका भलका, सब्दी की बरछी धसी ॥ ३ ॥
रांम दीवांनी(मैं तो) पलकन बीरूँ,जणि'र करावौ जग में हँसी ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू हरि अबिनासी, अमरा पुर में बसी ॥ ५ ॥
( १८७६ )

९

मैं तो तोरे चरन लगी गोपाल ॥ टेर ॥
जब लागी तब कोऊ न जांने, अब जानी संसार ॥ १ ॥
किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो ततकाल ।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार ॥ २ ॥

१०

रांमजी पधारे धनि आज री घरी ।
आजरी घरी वौ भावरी भरी ॥ टेर ॥
गुर रांमांनंद अर माधवाचारज, नीभांनंद बिशन स्याम हरी ॥ १ ॥
आजि मेरौ आंगणूं सुहावणूं, बरसण लागे पीया पेम हरी ॥ २ ॥
अरसि परसि मिलि हरि गुण गास्यां, धनि मेरी इषी इन मात्र भरी ॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभू हरि अविनासी, पकडि पावौं प्याला पेम हरी ॥ ४ ॥

गुटका आकर–६·२″×४″ से—

११

राग कन्नड़ी दूजी

प्रभु मेरा बेडा पार लंघाज्यौ जी ॥ टेर ॥
मैं नुगणी में गुण नहीं प्रभूजी, औगुण चित्त मत लाज्यौ जी ॥
काड षडग राणाजी कोप्या, गरड चढ्या हरि आज्यौ जी ॥
बिस रा प्याला राणांजी भेज्या, चरणामृत कर पीज्यौ जी ॥
काया नगर में घेरा पड्या छै, ऊपर आयर कीज्यौ जी ॥
मीराँ दासी जनम जनम की, कंठ लगाय'र लीज्यौ जी ॥

१२

मैं मेरो मन हरिजी सूं जोरथा । हरिजी सूं जोर सबन सूं तोर्थौ ॥ टेर ॥
नाचन लगी तब घूंघट कैसो । लोक लाज तब काज्यूं तोडयौ ।
जब मैं चली साध के दरसण । तब राणों मारण कूं दौड्यौ ।
जहर देण कूं घात उपायौ । निरमल जल में ले बिस घोरयौ ।
जब चरणामृत सुणयौ तरवणां (१) । राम भरोसे मुख ढोरयौ ।
प्रगट निसांण बजाय चल जब । राणै राव सफल जुग जोरयौ ।
मीरां प्रबल घणी के सरणैं । का भयौ भूपति मुख मोरयौ ।

१३

सब जग रूठडा रूठड घो । येक रांम रूठो नहीं पावै ॥ टेर ॥
गरभ कीयो रतनागर सागर । नीर खारो कर डारयौ ।
गरभ कीयौ उन चकवा चकवी । रैण विछोवा पारयौ ।
गरभ कीयौ उन वन की कोयल । रूप स्याम कर डारयौ ।
गरभकियौ लंकापति रावन । टूक टूक कर डार्यौ ।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी । हरि के चरण तन वार्यौ ।

१४

पीया कूं बतादे मेरे, तेरा गुण मानूंजी ॥ टेर ॥
एसा है कोय आण मिलावे । तन, मन, धन, कुरवानूं जी ॥
रक्त रत्ती भर ना रह्यौ तनमैं, पीरी भई जैसे पानूंजी ॥
विहा मोकूं आन संतावै, कोयल सबद सुहानूं जी ॥
लाल बिना व्याकुल भई सजनी, प्रगट होत नहीं छांनूंजी ।

१५

रमईया बिन रयो न जायरी माय ॥ टेर ॥
खान पान मोय फीको सो लागै, नैन रहै दोय छाय ॥
बार बार मैं अरज करत हूं, रैण गई दिन जाय ॥
मीरां के प्रभु बेग मिलोगे, तरस तरस जीव जाय ॥

## राग परज

१६

जोगीया तूं मारे घर रमतो ही श्राव ॥ टेर ॥

कानां बिच कुंडल गला बिच सेली ॥ श्रंग भभूत रमाय ॥ १ ॥

तुज देख्यां बिन कल न परत है ॥ ग्रहै श्रंगणौ न सुहाय ॥ २ ॥

मीरां के प्रभु हरि श्रविनासी ॥ दरसण चौनैं मोकू श्राय ॥ ३ ॥

१७

मेरी कानां सुणज्यौ जी करूणां निधान ॥ टेर ॥

रावरो बिरद मोयरो डौसो लागै ॥ परत परायै प्रान ॥ १ ॥

सगौ सनेही मेरे श्रौर न कोई ॥ बैरी सकल जिहानां ॥ २ ॥

ग्रह गह्यौ गज राज उबारयौ ॥ बूडन दीनौं जान ॥ ३ ॥

मीरां दासी श्ररज करत है ॥ नही जी सहारो श्रान ॥ ४ ॥

१८

हरि मारी सुणज्यौं श्ररज महाराज ॥ टेर ॥

मैं श्रबला बल नाहिं गुंसांई ॥ राषो श्रब के लाज ॥ १ ॥

रावरी होय कर कणी रे जाऊँ ॥ है हरि हिव राडारौ साज ॥ २ ॥

हेय कोव पूधर दैत संघा रचौ ॥ सारूयौ देवन काज ॥ ३ ॥

मीरां के प्रभू श्रौर न कोई ॥ तुम मेरे सिर ताज ॥ ४ ॥

१९

पीयाजी थे तो कटारी मारी ॥ टेर ॥

जिनकौ पीव परदेस बसत है ॥ सो क्यूँ सोवै नारी ॥ १ ॥

मकनं मिन नही भावत ॥ श्राकूँ सदे देहारी ॥ २ ॥

जैसे भवगत जत कांचरी ॥ सो गत भई है हमारी ॥ ३ ॥

बिन दरसण कल नहीं परत है ॥ तुम हम दीये बिसारी ॥ ४ ॥

मीरां के प्रभू तुम्हारे मिलन कूँ ॥ चरण कवल पर-वारी ॥ ५ ॥

२०

## राग पूर्वी सोरठा

गिरधर के मन भाई हो राणांजी ॥

२४.

राग पुमायची

पतीयां मैं कैसे लषूं ॥

लिष्योरी न जाय ॥ टेर ॥

कलम भरत मेंरो कर कंपत है ॥ नेन-रहै भड़ लाय ॥ १ ॥

बात कहूँ तो कहत न श्रावै ॥ जीवरयो डर राय ॥ २ ॥

बिपत हमारी देष तुम चाले ॥ कहिया हरिजी सूं जाय ॥ ३ ॥

मीरां के प्रभू सुष के सागर ॥ चरण ही कवल रषाय ॥ ४ ॥

२५.

माइ मानैं रमईयो देगया भेष ॥ टेर ॥

हम जाने हरी परम सनेही ॥ पूरब जनम को लेष ॥ १ ॥

अंग भमूत गल अघ छाला ॥ घर घर जपत अलेष ॥ २ ॥

मीरां के प्रभू हरि अविनासी ॥ सांई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

२६.

मेरे घर श्रावौ सुन्दर स्यांम ॥ टेर ॥

तुम आया बिन सुष नहीं मेरे । पीरी परी जैसे पान ॥ १ ॥

मेरे श्रासा श्रौर न स्वामी ॥ येक तिहारो ध्यांन ॥ २ ॥

मीरां के प्रभु बेग मिलौ अब ॥ राषो जी मेरो मान ॥ ३ ॥

Centre for the Arts

राग सुलतानी सोरठ

२७

ऐरी मेरे नैनन बान परी ॥ टेर ॥

चित चडी प्यारे दी मूरत ॥ उर बीच श्रांन अरी ॥ १ ॥

कबकी में ठाड़ी ठाड़ी पंथ निहारूँ ॥ अपने भवन षरी ॥ २ ॥

जब देषूं तब जीऊं मेरी सजनी ॥ जीवन मूल जरी ॥ ३ ॥

कैसे मैं राषूं प्रांन पिया बिन ॥ सरबस देन बरी ॥ ४ ॥

मीरां तो प्रभु के हाथ बिकानी ॥ लोक कहे बिगरी ॥ ५ ॥

२८

गोबिंद गादा छोजी दीलरा मिंत ॥ टेर ॥

बार नीहारूँ पंथ बुहारूँ ॥ ज्यूं सुष पावे चित ॥ १ ॥

मेरा मन की तुम ही जानौं ॥ मेरो ही जीवनीचंत ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी ॥ पूरब जनम को कंत ॥ ३ ॥

२६

मारे आज्यौजी रांमां ॥
थारै आवत आस्यां सामां ॥ टेर ॥
तुम मिलियां मैं बोहो सुष पाऊं ॥ सरै मनोरथ कामां ॥ १ ॥
तुम बिच हम बिच अंतर नाही ॥ जैसे सूरज घामां ॥ २ ॥
मीरा के मन और न माने ॥ चाहे सुन्दर स्यांमां ॥ ३ ॥

३०

पीया मैं बैरागन हूंगी हो ॥
जां जां भेषां मारो सायब रीझै ॥ सोय सोय भेष धरूँगी हो ॥ टेर ॥
सील संतोष धरूं घट भीतर ॥ समता पकड़ रहूंगी हो ॥
जाकौ नांव निरंजन कहीये ॥ जकौ ध्यांन धरूंगी हो ॥ १ ॥
गैरु ग्यांन रंगू तन मेरो ॥ मन मुदरा पहरूँगी हो ॥
प्रेम प्रीत सूं हरि गुण गाऊँ ॥ चरणां लिपट रहूंगी हो ॥ २ ॥
या तनकी मैं करूँ की गूरी ॥ रसनां रांम रटूंगी हो ॥
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी ॥ सांधां संग रहूंगी हो ॥ ३ ॥

३१

को ब्रिहन कौ दुख जाणैं हो ॥
जा घट ब्रिहा सोय लखि हैं ॥ के कोय हरी जन मानैं हो ॥ टेर ॥
रोगी आतर बैद बसत है ॥ बैद हि औषद जानै हो ॥
ब्रिह कर दउर अंतर मांही ॥ हरि बिन सब सुख कानैं हो ॥ १ ॥
दुगधा आरण फरै उदासी ॥ सुरत बसी सुत मानै हो ॥
चात्रग स्वांत बूंद मन मांही ॥ पीव पीव उक लानैं हो ॥ २ ॥
सब जग कूडो कुट्ट मैं दुनीयां ॥ मेरोदर धन जाणैं हो ॥
मीरां कै पति आप रमईया ॥ दूजो कोय नही जानैं हो ॥ ३ ॥

३२

सांईयां अरज बंदी की सुन हो ॥
मैं नुगणी तुम सुगणां सायब ॥ औगुणगारी रा गुण हो ॥ टेर ॥
हूं दासी तेरी जनम जनम की ॥ तुम हो हमारे बर हो ॥
दीन दयाल दया कर मोपैं ॥ मोटो सब ही डर हो ॥ १ ॥

रांणाजी बिसरो प्यालो भेज्यो ॥ मारै भगति रो पण हो ॥
जांकू राखें रांम गुसांई ॥ तो मारण हारो कुण हो ॥ २ ॥
आंन देव मारी दायन आवै ॥ तुम सूं लागौ मेरो मन हो ॥
जैसै चंद चंकोर निहारै ॥ यूं सुमरूँ छिन छिन हो ॥ ३ ॥
बेर बेर मोहि त्रिह संतवै ॥ ज्यूं काठै लागौ घूण हो ॥
मीरां नांव पीया लै छाकी ॥ कांई जाणूं राणौजी कूण हो ॥ ४ ॥

३३

अधर नांम कुंजर लीयो ॥ वाकी अवधि घटांणी हौ ॥
गरुड़ छांड हरी ध्याईया ॥ पसू जूंण मिटांणी हौ ॥ २ ॥
अजा मेल से उधरे ॥ जम त्रास हटांणी हौ ॥
पुत्र हेत पदवी दई ॥ जुग सारै जांणी हौ ॥ ३ ॥
नांव महातम गुरु दीयौ ॥ सोई वेद बखांणी हो ॥
मीरां दासी वारणै ॥ अपनी करि जांणी हो ॥ ४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

३४

पीया मोहि आरत तेरी हो ॥

आरत तेरी तेरी नांम की ॥ मोइ सांभ सवेरी हौ ॥ टेर ॥
पटीयां पाड़ं ग्यांन की ॥ बुधि मांग सवारूं हौ ॥
तो परि मेरा सांईयां ॥ धन जोबन वारूं हो ॥ १ ॥
यातन कौ दिवलौ करूं ॥ मनसा की बाती हौ ॥
तेलज पूरूं प्रेम कौं ॥ बालूं दिन राती हौ ॥ २ ॥
सेभड़ीयां बौहो रंगीया ॥ चंगा फूल बिछाया हौ ॥
रैण घटी तारा गिणत ॥ पीव अज ऊन आया हो ॥ ३ ॥
आयौ सांवण भादवौ ॥ विरखा रत आई हौ ॥
बीज भला मल हो रही ॥ नैनां भड़ लगाई हौ ॥ ४ ॥
तुम पूरा तुम पुरवा ॥ पूरा सुख दीज्यौ हौ ॥
मीरां व्याकुल व्रेहनी ॥ अपनी करि लीज्यौ हौ ॥ ५ ॥

३५

साजन वेगा घर आज्यौ हौ ॥

आदि अंत का मित हौ ॥ हम कुं सुख लाज्यौ हौ ॥ टेर ॥
हरी बिन सुरती कहां धरूँ ॥ जिस मारग जोऊँ हौ ॥
तेरे कारण सांईयां ॥ भरि नीद न सोउं हौ ॥ १ ॥
अविनासी आया सुणु ॥ जब नो निधपाउं हौ ॥
साइब सुंमन मोंइलौ ॥ दुष टेर सुणाउं हो ॥ २ ॥
वा विरीयां कब होवसी ॥ कोइ कहे सनेसा हो ॥
मीरां कहै इस बात का ॥ मोइ खरा अंदेसा हो ॥ ३ ॥

३६

अैसे जन जावन दीजे हो ॥
आतो मिलो सहेलड्यां ॥ बाता सुख जीजे हो ॥ टेर ॥
नैन सलूंने सांइयां ॥ देष्यां सुं जीजे हो ॥
तन धन जोवन वारि कैं ॥ नछ रावल कीजे हो ॥ १ ॥
आरंत अपणी कारणै ॥ वाकै पाइ परीजे हो ॥
चंदन केरा रूंष ज्यूं ॥ चरणां लपटी जे हो ॥ २ ॥
हाथ जोरि बिनती करूँ ॥ मेरी अरज सुणीजे हो ॥
मीरां व्याकुल ब्रेहनी ॥ जाकुं दरसण दीजै हो ॥ ३ ॥

३७

पीया मैं तेरी बंदी हो ॥
गरक भई गुण ते रडै ॥ बिन मोल वंकदी हो ॥ टेर ॥
मैं ब्रेहन तूं बहुगुनी ॥ दोउ सिंध मिलंदी हो ॥
जो तुम की प्रीतम नां मिलौ ॥ तो मैं बह जंदी हो ॥ १ ॥
रूप लुभांनी लोयनां ॥ मैं चलु तेरी छंदी हो ॥
गुझि की बाता तुझि सुं ॥ ऊंल जूं कहंदी हो ॥ २ ॥
प्रांण सनेही सज्जनां ॥ दुष टालन दंदी हो ॥
मीरां के प्रभु रांमजी ॥ तेरी चेरी कहंदी हो ॥ ३ ॥

३८

जोगीया तैं जुगत न जोगी हो ॥
मेंतो आसिक तेरडी तोने दया ने आंणी हो ॥ टेर ॥
तुंभी स्वारथ कौ सगौ ॥ पर दुष न जांनी हो ॥

तो मो बीच बिछोह मौ ॥ कोई दांग्यां पांणी हो ॥ १ ॥
तुम बिन कल मोइ नां पडै ॥ मछी बिन पांणी हो ॥
तुम बिन मैं केसें जीउं ॥ रेण तलफ बिहांनी हो ॥ २ ॥
जा दिन तें तुम बीछड़े ॥ मेरे मइ हांनी हो ॥
तो कारण बन बन फिरूं ॥ होय प्रेम दिवांनी हो ॥ ३ ॥
षांन पांन की सुध नही ॥ काया कुमलांणी हो ॥
अब तो बांकी नां रही ॥ पिंड त्यागै प्रांणी हो ॥ ४ ॥
पतित पावन तो बिउद है ॥ याही बेद बषांनी हो ॥
मीरां कु अब धौ दरस ॥ प्रभुजी सुष दीनी हो ॥ ५ ॥

३६

रमईया मेरे तोही सूं लागो नेह ॥
लागी प्रीत जिन तौ डेरे बोला ॥ अधिको कीजे नेह ॥ टेर ॥
जैहूं औसी जांनती रे बाला ॥ प्रीत कीयां दुष होइ ॥
नगर ढंढ़ोरो फेरती रे ॥ प्रीत करो मत कोय ॥ १ ॥
षीर न षाजे आरो रे ॥ मूरष न कीजे मिंत ॥
षिणता ताषिण सीलवारे ॥ षिंण वैरी षिण मिंत ॥ २ ॥
प्रीत करै ते बावरां रे ॥ करि तोड़ै ते कूर ॥
प्रीत निभावण दल के षंभण ॥ ते कोई बिरला सूर ॥ ३ ॥
तुम गज गीरी कौ चूंतरो रे ॥ हम बालू की भीत ॥
अब तो म्यां केसे बणै रे ॥ पूरव जनम की प्रीत ॥ ४ ॥
एकै थांणै रोपीया रे ॥ इक आंबो यक बूंल ॥
वाकौ रसनी कौ लगै रे ॥ वाकी भागै सूल ॥ ५ ॥
ज्यूं डूंगर का बादला रे ॥ यूं ओछा तणां सनेह ॥
बहता बहैजी उतावला रे ॥ वेतो भटक बतावैं छेह ॥ ६ ॥
आयो सांवण भादवौ रे बाला ॥ बोलज लगा मोर ॥
मीरां कुं हरिजन मिल्या रे ॥ लेगया पवन भकोर ॥ ७ ॥

४०

ब्रह लहर तनमांइ उठै ॥ काया कुं सोषण हारो ॥
ओषद पुरी कोई मूल न मांगै ॥ लागत नही भारी ॥ १ ॥

रांम हमारे गारडू हैं ।। जीव कौ प्रांन अधारो ।।
उन आयां मेरी पीर हरत हैं ।। उनकौ पतीयारो हा ।। २ ।।
मन हमारो प्रभु मोहि लियौ तुम ।। उलागत है घारो ।।
दासी मीरां रांम भजि करि ।। विष कियौ न्यारो ।। ३ ।।

४१

सांवरा की दृष्टि मांनूं ।। प्रेम री कटारी हें ।। टेर ।।
लगन बेहाल भई ।। घर हू की सुधि नही ।।
तनह में व्यापी पीर ।। मन मतवारी हें ।। १ ।।
चकोर चाहत चंद ।। दीपक जलत पतंग ।।
जल बिना मरै मीन ।। अैसी प्रीत प्यारी हें ।। २ ।।
सखी मिली दोय च्यारी ।। बावरी भई हें सारी ।।
निस दिन म्रेह लीयां ।। आसिक अकारी हें ।। ३ ।।
बिन देष्यां कैसें जीवै ।। कल न पड़त हीयै ।।
जाय वाकूं अैसें कहियौ ।। मीरां तो तिहारी हें ।। ४ ।।

४२

म्हारे घर आवौ स्यांम गोठडी कराई हैं ।। टेर ।।
आनंद उछाव करूं ।। तन मन भेट धरूं ।।
में तो हूं तुमारी दासी ।। ताकूं तो चीतारी ए ।। १ ।।
गिगन गरंज आयो ।। बदरा बरस भायौ ।।
सांरग सब दसुनि ।। ब्रेहनी पुकारी हैं ।। २ ।।
घर आवौ स्यांम मेरे ।। मे तो लगूं पाय तेरै ।।
मीरां कूं सरन लीजे ।। बलिबलि हारी हें ।। ३ ।।

४३

आव सजनियां बाट मैं जोऊं । तेरे कारण रेण न सोऊं ।। टेर ।।
जक्न परत मन बहुत उदासी ।। सुंदर स्याम मिलौं अबिनासी ।। १ ।।
तेरे कारण सब हम त्यागे ।। षांन पांन पैं मन नहीं लागे ।। २ ।।
मीरां के प्रभू दरसण दीज्यौ ।। मेरी अरज कांन सुंण लीज्यौ ।। ३ ।।

४४

आय मिलौ मोहि प्रीतम प्यारे ।।

हम कूं छांड़ क्यूं न्यारे ॥ टेर ॥
बौहौत दिनन की बाट निहारूं ॥ तेरे उपर तन मन बारूं ॥ १ ॥
तुम दरसन की मो मन मांही ॥ आय मिलौ कर क्रिपा गुसांई ॥ २ ॥
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ आय दरस धौ सुख के सागर ॥ ३ ॥

४५

काई कहीयौ रे बिनती जाय कैं ॥
म्हारा प्रांण पीयारा नाथ नैं ॥ टेर ॥
जा दिन के बिछुरे मन मोहन ॥ कल न परत दिन रात नैं ॥ १ ॥
देस विदेस संदेस न पूगै ॥ बिरहन झूरे स्याम नैं ॥ २ ॥
दिल दां मरहम दिल ही जांने ॥ और न जांणै दूजौ वात नैं ॥ ३ ॥
मीरां दरसण कारण झूरै ॥ ज्यूं बालक झूरै मात नैं ॥ ४ ॥

४६

म्हारा सुगण साजन बोलो भुषां । बोलो भुषां जरा बैठो नषां ॥ टेर ॥
कर करपा मेरी सेझ विराजो ॥ माफ करो जी सब भूलां चूकां ॥ १ ॥
के तुम उपर कामण कीया ॥ के भरमाया थांने दूजी सोकां ॥ २ ॥
यो न पति मेरी दाय न आवै ॥ छोड़ दीयौं जी मैं तो हकां धकां ॥ ३ ॥
मे तो दासी थांरी जनम जनम की ॥ तुम ठाकुर मारे सीस रषां ॥ ४ ॥
जो श्रोगण तोही तुमरी बाजूं ॥ मीरां कहां जाय पीव थकां ॥ ५ ॥

४७

मारो मनड़ो हरि सूं राजी ॥ टेर ॥
कांई करोगा मारो दुरजन पुरजन ॥ झब मारो झूठा पाजी ॥ १ ॥
कांई करेगा मारो राजा रांणा ॥ काई करेगा मुलां काजी ॥ २ ॥
रंगीला प्रीतम सें दिल मिल खेलां ॥ पर तन हारां बाजी ॥ ३ ॥

४८

गोबिंदा नें आंख मिला ज्योजी ॥
साईयां मारी यतनी अरज पहूचा ज्योजी ॥ टेर ॥
बिनती तौ कीज्यौं मारी पायन पारिकें ॥ सारी सुध जणा ज्योजी ॥ १ ॥
बिरह बिथा की बेदन कीज्यौ ॥ मारी तन की तपन बुझा ज्योजी ॥ २ ॥
ब्रज नंद हित सूं हिय उमग्यौ है ॥ मारी अरज मत बीसरा ज्योजी ॥ ३ ॥

४६

राम मारी लागी प्रीत निभाज्यौ जी ।। टेर ।।
थे छोजी म्हारी सुष का सागर ।। मारा आंगण सारूँ मत जाज्यौ जी ।। १ ।।
लोगन धीजै मारो मत न पतीजै ।। मुषडारा सबद सुणा ज्यौ जी ।। २ ।।
मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ।। मेरो बेड़ो पार लगा ज्यौजी ।। ३ ।।

उधोजी माधो कैसी कीनी ।। टेर ।।
आज काल कुबज्या बड़ भागण ।। मे बुध की मुत हीणी ।। १ ।।
आप तौ जाय द्वारका छारा ।। हम कुं पाती नही दीनी ।। २ ।।
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर ।। बिधना या लष दीनी ।। ३ ।।

५१.

गिरधर रीसांणा कौन गुणां ।। टेर ।।
कछुक औगण हम मैं काढौ ।। मे भी कान सुणां ।। १ ।।
में तो दासी थांरा जनम जनम की ।। थे साइब सुगणां ।। २ ।।
मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ।। थांरोई नांम भणां ।। ३ ।।

५२.

थे मारे घर आवोजी प्रीतम प्यारा ।। टेर ।।
तन मन धन सब भेंट करूंगी ।। भजन करूंगी तुमारा ।। १ ।।
मो नुगणी ने गुंण नहीं प्रभूजी ।। तुमहो बगसण हारा ।। २ ।।
थौ हौ गुणवंता सायब कहिये ।। मुझ में औंगुण सारा ।। ३ ।।
सेझ संवारी आप नहीं आये ।। कबकी करूँजी बिचारी ।। ४ ।।
मीरां के प्रभू गिरधर प्रीतम ।। थां बिन नैण दुष्यारा ।। ५ ।।

५३.

सुणज्यौ चित दे कांन ।। टेर ।।
भगत प्रकास करो हिरदा मैं ।। जासे मिटे अग्यांन ।। १ ।।
तुम चरणां में लीन रहै मन ।। ज्यूं मछी जल ध्यांन ।। २ ।।
मीरां दासी दोउ कर जोडां ।। ए मांगत वरदांन ।। ३ ।।

२

अब नहीं बीसरूँ म्हांरै हिरदै लष्यौ हरि नांव । पतिन बीसरूँ ॥ टेर ॥

मीरां बैठी महल मैं, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्यां साध की और न दूजो कांम ॥ १ ॥
रांणैजी बतलाईया, काई देणो जुबाब ।
मन लागौ हरि नाम सूं, दिन दिन दूणो लाभ ॥ २ ॥
सीप भर्यौ पांणी पीवै रे, टांक भर्यौ अनषाइ ।
बतलायौ बोलै नहीं, रांणौ गयो रिसाइ ॥ ३ ॥
बिस का प्याला भेजिया, दीज्यौ मेडतणि के हाथि ।
करि चरणाम्रत पी गई, सबल धणीं के साथि ॥ ४ ॥
रांणौ मो पर कोपीयौ, मारूँ एकण सैल ।
मार्यां पराछत लागसी, दीज्यौ पीहर मेल ॥ ५ ॥
बिस का प्याला पीगइ रे, भजन करै अस ठौर ।
थांरी मांरी ना मरूं, राषण हारो और ॥ ६ ॥
रांणौ मो पर कोपीयौ रती न राष्यौ मोद ।
ले जाती बैकुंठ मैं समभयो नहीं सी समोद ॥ ७ ॥
मीरां महल सूं ऊतरी, राणै पकर्यौ हाथ ।
हथ लेवा को साहिणौ, और न दूजी बात ॥ ८ ॥
माला हमारे दोवड़ौ, सील बरत सिंणगार ।
अब कै किरपा कीजीयौ, तो ( फिर ) बांधू तरवारि ॥ ९ ॥
रथ्यां बैल जुपाइया रे, ऊँटां कसीया भार ।
कैसे तोड्रूं रांम सूं ( म्हारौ ) भो भो को भरतार ॥ १० ॥
राणै सांड्यो मोकल्यौ रे, जाज्यौ एकै दौडि ।
कुल की तारण असतरी, (यातो) मुरडि चली राठोड ॥ ११ ॥
सांड्यो पाछो फेर दे, धरतिन देस्या पांव ।
सूरापण धरी नीसरी ( म्हारै ) कुण राणौं कुण राव ॥ १२ ॥
संसारी नंधा करै, दुषीयौ सब पिरवार ।
कुल सारो ही लाज्यो, मींरा हुई षुवार ॥ १३ ॥
छापा तलक बणाइया, तजीयौ सब सिंणगार ।

मीरां सरणै रांम के, भलि नीदो संसार ॥ १४ ॥
राती मांती प्रेम की, बांधि भगति को मोड ।
रांम अनल राती रहै, धंनि मीरां राठोड ॥ १५ ॥

३

भाभी मीरां क्यूं रै लियौ बैराग ।
क्यूं रे लीयो बैराग माया थैं क्यूं तजी ॥ टेर ॥
ऊँचा थारा बैठणा, ऊँची थारी जात ।
रांणां सरीसो बर पाइयौ थांरो सहंस मेवाड़ मे राज ॥ १ ॥
एतो मोती ओस का जैसे यो संसार ।
आयौ झिकोलौ पवन को जातांन लागै बार ॥ २ ॥
खीर षांड को भोजनि जीमता, ओढौ दिषणी चीर ।
रांणां सरीसो बरत्यागीयो, ( थारो ) सब भुलकासे सीर ॥ ३ ॥
षीर षांड सा भोजन त्याग्या, त्याग्या, दिषणी चीर ।
रांणां सरीसो बर त्यागीयौ ( म्हारै ) सब संता में सीर ॥ ४ ॥
क्यूं पावौ ठंडा टूकड़ा, क्यूं रै पीवौ षाटि छाछि ।
भैसूवां भूषा मरौ, कदि मिलसी दीना नाथ ॥ ५ ॥
मीठा लागै ठंडा टूकड़ा, इम्रत लागै छाछि ।
भैसूवां भूषा मरौं, जदी मिलसी दीना नाथ ॥ ६ ॥
लाजै पीहर सासरौ, लाजै माइ मोसाल ।
नित का आवै ओलंबा, थारो भरम धरै संसार ॥ ७ ॥
आग लगाऊं पीहर सासरै, जत जीवे मो साल ।
मीराँ सरणै राम कै, भख मारौ संसार ॥ ८ ॥

[ ओलीबावड़ी रामद्वारा, उदयपुर ]

———×———

# शुद्धि-पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | ७ | हेमा चरिज | हेमाचारिज |
| ४ | १० | ग्रथ | ग्रन्थ |
| ६ | २८ | पृष्ट | पृष्ठ |
| ७ | २१ | उधव | ऊधव |
| ८ | ६ | घेरजो | घेर जो |
| ८ | १८ | नसीतनामा | ( १ ) नसीतनामो |
| ८ | १८ | ( १ ) अनेकार्थ | ( २ ) अनेकार्थ- |
| ९ | १६ | ( २ ) 'पाषडव .. | ( ३ ) 'पाण्डव'·· |
| १० | २२ | प्रगस्या | प्रगल्या |
| १२ | २ | प्राता | प्रातां |
| १५ | ७ | फूटकर | फुटकर |
| १५ | २६ | समजन | रामजन |
| १६ | २३ | गजेन्द | गजेन्द्र |
| १८ | २५ | रगीला | रंगीला |
| १८ | २८ | भलराम | बलराम |
| २१ | १७,२०,२६ | जन गोपाल | जनगोपाल |
| २५ | १४ | आणभै | अणभै |
| २६ | २४ | हरिद्वारा | हरि-द्वारा |
| २८ | १३ | साध | सार |
| २८ | १६ | ग्रथ | ग्रन्थ |
| २९ | १६ | (३६) | ( ३७ ) |
| ३० | १० | बकचूरजी | बकचूलजी |
| ३१ | २० | जातिन | जाति न |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३२ | ६ | राम चरण | रामचरण |
| ३२ | ११ | 'चा | चा' |
| ३८ | ६ | मेर | मेरे |
| ३८ | १६ | आकार वाले | आकारवाले |
| ४२ | १४ | . २ | ३ |
| ४४ | ४ | ल | लै. |
| ४४ | २३ | कीजै रसना | रसना कीजै |
| ४६ | २६ | वारा | वार |
| ४७ | २ | मैं | में |
| ४७ | १६ | अणमै वाणी | १. अणभै वाणी |
| ४७ | २२ | चहूंटा ईये. | चहूंचाईये. |
| ५७ | १०-११ | इस प्रति में १०६। कम है | इस प्रति में १०६ कम हैं |
| ५७ | १६ | राख | राखै |
| ५८ | २२ | छीतभ | छीतम |
| ५९ | २४ | चर पहनाथ | चरपटनाथ |
| ६० | ५ | भीडकी पाव | मीडकीपाव |
| ६१ | ८ | भयो | भयो |
| ६६ | १५ | कोंसो | कों सो |
| ६८ | २६ | ...राम तज | ....तज राम... |
| ६९ | १ | आन | आनै |
| ७० | ५ | त्रप्त राय | त्रप्तराम |
| ७१ | २१ | ( ७५ ) | ( ७५ क ) |
| ७५ | ७ | सुन्दरदासजी सवैया | सुन्दरदासजी का सवैया |
| ७६ | २७ | आव | आवैं |
| ७७ | २३ | प्रमहंज जू | प्रमहंसजू |
| ७९ | २ | रामभजन....दिन | राम-भजन....दिन करै |
| ७९ | ८ | पदपात | पद पात |
| ७९ | ९ | पत्र-संख्या | पत्र-संख्या–९ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७६ | २४ | फकीरो | फकीरी |
| ८१ | ६ | अजेसी,'लषमसी... | 'अजेसी, लखमसी.... |
| ८२ | ३ | कव्रि | कवि |
| ८३ | ५ | भण्डार | भण्डारकर |
| ८३ | २४ | अव तरिउ | अवतरिउ |
| ८४ | २ | मिलइ ।...टलइ | मिल' इ। ...टल' इ |
| ८५ | ४ | अथवा (लब्धोदय | (अथवा लब्धोदय |
| ८५ | ५ | ढाल में | ढालों में |
| ८५ | ६-१०. | +२ ) ६१८ | +१) ६१७ |
| ८७ | १० | ।।। १० ।। | ॥ ६१०॥ |
| ८६ | ५ | शलिभद्र | शालिभद्र |
| ८६ | २७ | भटालज | भटात्मज |
| ६४ | ७ | ( तान ) | तान |
| ६४ | २४ | निझरियं | निझरयं |
| ६४ | २६ | नारदयंनदयं | नारदयं न दयं |
| ६५ | २३ | अपभरा | अपभर |
| ६५ | २५ | कनवाज्ज | कनवज्ज |
| ६६ | २७ | कीनी ।....तर फे | कीनौ ।....तरफे |
| ६६ | २८ | केनीचे × | जोड़ो-'दोहा' |
| ६७ | १५ | सज्जिव,अरष...सब्बड | सज्जिव अरष,....सब्बऽ |
| ६७ | १६ | दिब्ब | दिब्बऽ |
| ६८ | १७ | करून | करूना |
| ६८ | २१ | रचनसी | रयनसी |
| ६८ | २८ | प्रवत्तमाने | प्रवर्त्तमाने |
| १०१ | १ | केवार | केदार |
| १०४ | ३ | आव ओरी मैं आरडी | आव' ओ री मैंआरड़ी |
| १०४ | ४ | उमी रे रे मैं आरी | ऊभी रे' रे मैंआरी |
| १०४ | ५ | जांढो | जांणे |
| १०४ | ७ | मला | भला |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १०४ | ८ | ने षेडो | नै छेड़ो |
| १०४ | २५ | उ द्ध रें | उद्धरें |
| १०५ | १ | चुडा | चुंडा |
| १०५ | १२ | रेणसा वधाइ वधाइ | रेणसी वधाइ वधीइ |
| १०५ | १७ | भिंदिर | मिंदिर |
| १०५ | २६ | भ डमोटा | भड मोटा |
| १०७ | ८ | आस्या | आस्यो |
| १०७ | १५ | डिंगल | डिंगल् |
| १०७ | २७ | सन्नातह हि | सन्नाह तहि |
| १०८ | २५ | भरवदत्त | भैरवदत्त |
| १०६ | ८ | चाविगेद् | चाविगदे |
| १११ | ५ | संपात | समपत्ति |
| ११७ | ४ | कुल पति | कुलपति |
| ११७ | २२ | का किल | काकिल |
| ११७ | २३ | धरर्नी | धरनी |
| ११७ | २७ | कीन्ह कीलृणदे | कील्हणदे |
| ११८ | १० | चावले | चाव ले |
| १२० | २६ | द्व | है |
| १२१ | १ | नांन्हूंरांभ | नांन्हूंरांम |
| १२१ | १५ | गदये | मध्ये |
| १२२ | २२ | हैसारनि | हे सारनि |
| १२३ | ६ | कवि प्रियाभरन | 'कवि-प्रियाभरन' |
| १२५ | १ | पगो | –पयो– |
| १२५ | ६ | वाज | काज |
| १२५ | १३ | सीस्वि | सीखि |
| १२६ | २६ | भांडर | भींडर |
| १२७ | ६ | पर बंद | परबंद |
| १२८ | २ | दंहो | दोहो |
| १२८ | २४ | सुख माधरी | सुखमा धरी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२८ | २५ | कोम | कौन |
| १३० | १२ | करहुं | कर |
| १३२ | ११ | स्स | रस |
| १३३ | १३ | पंक्ति में और प्रतिपंक्ति | अक्षर और प्रतिपंक्ति में |
| १३३ | १६ | देसही | दे सही |
| १३३ | २० | अंत | अंत |
| १३४ | २२ | हरा | हरो |
| १३५ | ४ | जय साहि | जयसाहि |
| १३५ | २७ | क्काट""भ | काट...भी |
| १३६ | १२ | सषो | सषी |
| १३६ | १४ | नन | मन |
| १३६ | २१ | ढांव | ठांव |
| १३६ | २३ | महंत | महंत |
| १३६ | २४ | ताततैं | तात तैं |
| १३६ | २५ | आननं | आंनन |
| १३६ | ८ | रस वंत""थरी | रसवंत...धरी |
| १३६ | १६ | अवरथा | अवस्था |
| १४० | १ | रह्योन | रह्यो।न |
| १४१ | २६ | कुंदन रंग | कुंदन को रंग |
| १४२ | ३ | अनयिष | अनमिष |
| १४३ | १७ | प्रो षत पति का | प्रोषितपति । |
| १४४ | ४ | प्रवसित पतिकाये | प्रवसितपतिका ये |
| १४७ | ८ | शृंगारा | शृँगारी |
| १४७ | १६ | क रत | करत |
| १४७ | २३ | ह्यावरने | ह्यां वरने |
| १४८ | ५ | पे | के |
| १४६ | ३ | परदेंत | परदतें |
| १४६ | २२ | नहीं | नहीं |
| १५० | २२ | अनेकार थो | (६२) अनेकारथी |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५२ | १४ | पर भावथं | परभाव थी |
| १५५ | २१ | कविज न | कवि जन |
| १५६ | १६ | धवनी म, प्रथम | धरनीम प्रथम, |
| १५६ | २० | ना भेय | नाभेय |
| १५६ | २६ | उवभावाजी | उवझायाजी |
| १५७ | २ | प्रतिष्ट | -प्रतिष्ठ |
| १५७ | १० | मोहन विजयें वर्ण व्यांगुण | मोहनविजये वर्णव्यां गुण |
| १५८ | ६ | क्रिया वंत | क्रियावंत |
| १५८ | २६ | मति कुशल | मतिकुशल |
| १५८ | २७ | चंद्र लेहा | चंद्रलेहा |
| १५६ | ५ | छरित्र | चरित्र |
| १५६ | २५ | नामेंजे, महिमा हिमहंताजी | नामें जे महिमा हि महंता जी |
| १६० | १ से ८ | ——— | अंतिम शब्दों में 'जी' अलग करें |
| १६० | ३ | व्रत आचारोजी | व्रत आचारो'जी |
| १६० | १० | हंस कुमार | हंस कवि |
| १६१ | ८ | नदी ) | नदी । |
| १६१ | ६ | त्यौहार | त्यौहार । |
| १६१ | १० | छाँडा | छोड़ा |
| १६१ | ११ | अमरेस | अमरेस । |
| १६० | २३ | समकं | समरू |
| १६१ | २६ | सिक | सिक्त |
| १६३ | १४ | कर कंडुनो, सामील ज्यो | करकंडुनी, सामलिज्यो |
| १६३ | १७ | समय सुन्दर | समयसुन्दर |
| १६४ | ६ | नारि सूँ | नारि सूं |
| १६४ | १६ | वर्ण व्यो | वर्णव्यो |
| १६४ | २३ | । १६१४ | १८१४ । |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६५ | २ | सुणाथो | सुणायो |
| १६५ | ७ | बहेते | बहंते |
| १६६ | ११ | तर वर हारवै | तरवर हारव |
| १६६ | १२ | साखैं | सारवै |
| १६६ | १५ | उतरा ··प्रलैवन खंड | उत्तरा ..प्रलै-वन खंड |
| १६६ | १६ | समारैं | समाऽरे |
| १६६ | २० | निवारैं | निवाऽरै |
| १६७ | १ | हला हलै | हला' हलै |
| १६७ | ३ | कायाभरै | काया भरै |
| १६७ | २६ | जोतानवरस | जोता नव रस |
| १६८ | ११ | ढ़ोला | ढोला |
| १६८ | १२ | ससने ही | ससनेही |
| १६६ | ३ | आगस्वार | आगरवार |
| १६६ | २७ | उपाडीयौं | उपाडीयो |
| १७० | ८ | नवीसरसी | न वीसरसी |
| १७० | २० | कुरझा, सो मारू जोवनलागी | कुरझा सामा मारू जोवण लागी |
| १७१ | २० | ऊमउ | ऊभउ |
| १७२ | १ | ससर्ग्य | संसर्ग्य |
| १७२ | २४ | आयभिउ | आथमियउ |
| १७३ | ५ | देवो | देवी |
| १७३ | २८ | करें | करे |
| १७४ | ६ | सालिद्रजी | सालिभद्रजी |
| १७७ | १८ | झक्त | भक्त |
| १७८ | १४ | सुणें | सुणें |
| १७६ | २८ | संयरव | संख्या |
| १८१ | १७ | नामकेत | नासकेत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १८१ | २३ | सुख देव | सुखदेव |
| १८२ | ११ | दूसरी और | दूसरी और |
| १८२ | १२ | चित्र पर | पर चित्र |
| १८३ | ६ | आम्या | आग्या |
| १८५ | १८ | वर दाअनी | वर दाअन |
| १८६ | १३ | सुण | सुणे |
| १८७ | १० | रसालकृत | रसालंकृत |
| १८८ | ८ | काभिनी | कामिनी |
| १८६ | २३ | करूण | करुण |
| १६० | ४ | चोबसमा | चोबीसमा |
| १६२ | १३ | पलागा | पलाणा |
| १६२ | २४ | जेस लमेर | जेसलमेर |
| १६५ | ६ | केवलदरसण | केवल दरसण |
| १६७ | ११ | सोसीदेह | सो सीदेह |
| १६८ | १ | मेता रज | मेतारज |
| १६६ | १ | गो तम | गोतम |
| २०० | १ | बरूचूल | बकचूल |
| २०१ | २६ | शुद्ध | अशुद्ध |
| २०२ | ४ | स भ्रम अतत | सभ्रम अंततः |
| २०४ | ६ | ओषानेरी | ओषाणेरी |
| २०४ | १४ | हौसराषा | हौसनषां |
| २०४ | २६ | साबर्ती | सांषली |
| २०५ | १३ | सरवहीये | सर वहीये |
| २०६ | १६ | स्वरूपलालजी जदीश चोक | कविराव मोहनसिंह |
| २०६ | २२ | भक्तमाल की टीका | भक्तमाल |
| २०६ | १८ | वाचना चारम अभय सोमे, मति सुंदर | वाचनाचारम अभयसोमे, मतिसुंदर |
| २०६ | २१ | हेमंत विज | हेमंतविजय |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २०६ | २५ | वर काणो | वरकाणो |
| २११ | १२ | मलिनरसन | मलिन रसन |
| २१२ | ५ | सोलै सैजु | सोलैसै जु |
| २१२ | २० | जिन हरष | जिनहरष |
| २१२ | २१ | उगण पचासै | उगणपचासै |
| २१३ | १ | कल्प वेलि कपि अणतणी ..सुष साय | कल्पवेलि कविअणतणी ·· सुपसाय |
| २१४ | ५ | सिंहत्याग्रेषां कादि स्वे॑दंतच | सिंह व्याग्रेषांकादि स्येदं त च |
| २१४ | ६ | सुल्या | तुल्या |
| २१४ | २६ | ओरू | ओरु |
| २१७ | २० | लषा वकाज | लषाव काज |
| २१८ | ६ | वदि | वदि |
| २१८ | ६ | आचार | आधार |
| २१६ | ३ | निम्न लिखित | निम्नलिखित |
| २१६ | ६ | कत्रत...अैन | कहत...अै न |
| २१६ | १० | छै मासी | छैमासी |
| २२० | २ | नर मोहीयाजी | नरमौहियाजी |
| २२० | ११ | सुषि | सुणि |
| २२१ | २ | आगणि याली | आगणियाली |
| २२१ | ५ | सामलैरे | सामलै रे |
| २२१ | १२ | बैहाल | बैहाल |
| २२१ | २२ | बुरौ | बूरौं |
| २२१ | २७ | करिके | के |
| २२२ | ३ | भीटर | भींतर |
| २२३ | ३ | तव काज्यूं | तणका ज्यूं |
| २२३ | ७ | चल | चली |
| २२३ | ८ | घणी ···। ···मुब... | धणी ···। ···सुष ·· |
| २२३ | १० | घौ | द्यौ |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | |
|---|---|---|---|
| २२४ | १० | जिह्वानां | जिह्वान |
| २२४ | १६ | होय कर'''।'''हिव राडारौ | होयकर'''।'''हिवरा डारो |
| २२४ | १७ | हेय कोव पूधर''' संघा रचौ | हेय को वपू धर'''संघारयौ |
| २२४ | २२ | आकूँ सदे देहारी | आकूँ स दे दे हारी |
| २२४ | २३ | भवगत जत | भवंग तजत |
| २२४ | २५ | तुन्हारे | तुम्हारे |
| २२६ | १ | जीवनीचंत | जीव नीचंत |
| २२६ | २ | मीरा | मीरां |
| २२६ | २२ | कर दउर | करद् उर |
| २२६ | २४ | उक लानैं | उकलानैं |
| २२६ | २५ | मेरोदर धन | मेरो दरध न |
| २२७ | १० | अजा मेल | अजामेल |
| २२७ | २२ | अज ऊन | अजऊन |
| २२७ | २४ | झला मल | झलामल |
| २२७ | २५ | पुरवा | पूरवा |
| २२८ | ४ | निधपाउं | निध पाउं |
| २२८ | १२ | नछ राषल | नछरावल |
| २२६ | ८ | बिउदहै | बिरूद है |
| २:६ | १६ | षिणता ताषिण सीलवारे | षिण ताता षिण सीलवा रे |
| २२६ | २६ | झारी | झारो |
| २३१ | ४ | भीरां | मीरां |
| २३२ | ३ | म्हारी | म्हारा |
| २३२ | ५ | ० | ५० |
| २३३ | ६ | उदिन | ऊ दिन |
| २३४ | ६ | कीनिधा | की विधी |
| २३४ | २६ | कहूंपलो | कहूं पलो |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | |
|---|---|---|---|
| २३४ | २६ | चवासहर | चवासहर |
| २३५ | १० | लाज सीजी | लाजसी जी |
| २३५ | ३० | दोसन | दोस न |
| २३८ | १० | जातांन | जातां न |
| २३८ | १२ | बरत्यागीयो……… भुलकामे | बर त्यागीयो…मुलकां मैं |

———

I.G.N.C.A. LIB.
S-8563
Deptt. of Arts
Indira Gandhi National Centre for the Arts
GOVT. OF INDIA